वाजिद अली शाह

उन भारतीय नरेशों को ससम्मान समर्पित जो स्वातन्त्र्य
संग्राम के पहिले सूत्रधार थे और जिन्होंने स्वतन्त्रता
प्राप्ति के पश्चात् महान त्याग के उदाहरण से
इतिहास में अपना नाम अमर किया।

—लेखक

वाजिद अली शाह

[शामे अवध]

आनन्दसागर श्रेष्ठ

नेशनल पब्लिशिंग हाउस
नई सड़क, दिल्ली

प्रथम संस्करण
अगस्त १९५१

मूल्य
५.००

मुद्रक-
राजकमल इलेक्ट्रिक प्रेस
सब्जी मण्डी, दिल्ली

अपनी बात

रूखे इतिहास की घटनाओं को कल्पना के शहद में भिगोने पर ऐतिहासिक उपन्यास की सृष्टि होती है। पाठक चाहते हैं, इतिहास इतिहास रहे और उपन्यास उपन्यास। यह काम कठिन है किन्तु लोग दुस्साहस करते हैं और अवश्य करते हैं। उन्हीं में एक मैं हूं। कृति में दोष होना आवश्यक है। अत अपने मित्र पाठकों से अग्रिम क्षमा याचना करने के पश्चात् आगे कलम उठाना मेरा कर्तव्य है।

रहा पुस्तक के विषय के सम्बन्ध में। वाजिद अली शाह' मैंने क्यों चयन किया अथवा मुझे क्यों प्रिय हुआ, इसका एक कारण है। अभागे नवाब के प्रति इलियट जैसे प्रसिद्ध इतिहासज्ञों द्वारा विदेशी कूटनीति के आधीन फसाए गए मिथ्यारोपों का खंडन बड़ा आवश्यक जान पड़ा मुझे। लम्पट व्यसनी, अयोग्य अदूरदर्शी अदूरदर्शी विलासी आदि न जाने क्या-क्या लिखा गया है उस बेचारे के बारे में। यहां तक, घटिया मनोवृत्ति के लोगों के लिए उसकी उपमा दी जाती है 'अजी आप तो वाजिद अली शाह हैं।' कैसा अन्याय है यह! प्रश्न यह है क्या यह बातें सच हैं? अगर नहीं तो लोगों का भ्रम समाप्त होना चाहिए। अब हम स्वतन्त्र हैं विदेशी कूट

नीति का भार हमारे कन्धों से छूट गया। हमें दूध का दूध और पानी का पानी करने का पूरा अधिकार है। यही इस पुस्तक का लक्ष्य है।

कम्पनी सरकार की आंखों में अवध की हुकूमत बहुत दिनों से खटक रही थी। सन् १८०१ के सुलहनामे के आधीन अवध का आधा राज्य निगल लेने के बाद शेष आधे को अपनी हड़प नीति का ग्रास बना लेने पर कब से वह तैयार बैठी थी। उक्त सुलह्नामे की एक कुचक्री धारा के अनुसार राज्य का पदाधिकारी जब भी दुर्गुणी होता तो कम्पनी को इच्छापूर्ति का अवसर निकल आता। वाजिद अली सिंहासनासीन हुए तो सब्र का प्याला टूट गया। बस तभी निष्कपट शाह के विरुद्ध षड्यन्त्र का सूत्रपात करने के लिये कर्नल स्लीमन जैसे धूर्त रेजीडेंट वहां भेजे गए। स्लीमन ने क्या किया क्या नहीं यह स्वयं उपन्यास का विषय है। यहां इतना कह देना भर यथेष्ट होगा कि अभागे वाजिदअली शाह के सितारे डूबे नहीं डुबाये गये। लूट-खसोट, अपमान, कुपथ्य की तिहेरी मार का लक्ष्य बना उसका शरीर बेध डाला गया। संसार के सम्मुख अपनी न्यायप्रियता की साख बनाये रखने के लिए कम्पनी सरकार ने शाह पर ऐसा घोर अन्याय किया जिसका उदाहरण अन्यत्र मिलना असम्भव है।

वाजिद अली शाह एक बादशाह था और बादशाहों का-सा जीवन व्यतीत करता था। उसमें अवगुण रहे हों असम्भव नहीं। विलासप्रियता बादशाहों का भोजन है। अनेक राजाओं,

महाराजाओं और नवाबों के रनिवासों और हरमों की कहानियाँ हम सभी जानते हैं। पर उनमें कोई इतना बदनाम नहीं जितना वाजिद अली। आखिर क्यों? केवल इसलिए कि उस पर बदनामी जानबूझ कर मढ़ी गई।

काम की बात मैंने प्रारम्भ में ही लिख दी है। उपन्यास के अधिकतर पात्र ऐतिहासिक और प्रामाणिक हैं इसी प्रकार घटनाएँ भी। मीर मुन्शी के परिवार में एक लड़की और उसके प्रेमी की कल्पना मेरी अपनी है। इससे कई घटनाओं का विश्लेषण करने में सहायता मिली है। वे न होते तो लखनऊ के युवा समाज के उन १५००० व्यक्तियों के मनोभावों का ज्ञान न हो पाता जो बादशाह के लिए रुधिर की नदियाँ बहाने पर आकुल थे। इसी प्रकार रेज़ीडेंसी में चोरी की घटना का महत्व भी ठीक-ठीक समझ में न आता।

पुस्तक की भाषा के सम्बन्ध में एक निवेदन है। विषय के प्रतिकूल ठेठ हिन्दी का प्रयोग मैं चाह कर भी कर नहीं पाया। कथोपकथन और कहीं-कहीं वर्णनों में भी मैंने उर्दू शब्दों का खुला प्रयोग किया है। यह उर्दू वह भाषा है जो मैंने पढ़ी नहीं। ज्ञान जितना है केवल उर्दू भाषा भाषी क्षेत्र में लम्बे निवास एवं वहाँ के लोगों के सम्पर्क के कारण। अतः उसके प्रयोग के सम्बन्ध में भूल हो जाना साधारण बात है। किन्तु क्षमा याचना मैं पहले ही कर चुका हूँ।

उपन्यास की प्रेरणा का आधार आदरणीय परिपूर्णानन्द

श्री वर्मा लिखित 'वाजिद अली शाह और अवध राज्य का पतन' है। शेष सहायता मैंने रजा लाइब्रेरी रामपुर से प्राप्त स्लीमन की जुसम डायरी हमिल्टन के इतिहास व मेजर बर्ड की पुस्तकों से ली है।

शेष आपके सम्मुख है। उपन्यास से आपका किंचित् मनोरंजन हो सका एवं वाजिद अली शाह के प्रति आपके हृदय में तनिक भी सहानुभूति जागृत हुई तो मैं समझ लूंगा मेरा प्रयत्न निष्फल नहीं गया।

महल्लराम नं० १
ज़िला रामपुर
दिनांक, जेठी दशहरा
२१ ६ ६१

आनन्दसागर श्रेष्ठ

एक

प्रातः की सुनहली आभा अभी अन्धकार के झीने आवरण के पीछे मुस्कुरा रही थी। सूर्य का रक्तिम प्रकाश लखनऊ की धरती को आलिंगन-बद्ध करने की तैयारी कर रहा था। और एक-एक कर लोगों की विशाल संख्या छतरमंजिल से मफ्रबसमंजिल आने वाली बेलीगारद रोड पर उपस्थित हो रही थी।

आठ बजते-बजते सड़क के दोनों ओर कतारें की कतारें जमा हो गईं। एक के पीछे एक ठुंसे हुए, दबे हुए और कहीं कहीं एक के ऊपर एक चढ़े हुए लोग उत्सुकता से छतरमंजिल की ओर देखने लगे।

सर्द हवा के तेज झोंके कंपकंपा देने की अपूर्व क्षमता से उपस्थित व्यक्तियों की सहनशक्ति का बल मापने आते और चले जाते। गरीब जिनके शरीर पर फटी पुरानी रुई की बंडियां थीं, कांपते कुड़कुड़ाते और फिर सामने सड़क की ओर देखने लगते। और वह सम्पन्न रईस जिनके साथ एक-एक दो-दो नौकर थे या जिनकी सवारी के तामझाम कहारों सहित सड़क से कुछ फासले पर छोड़ दिये गये थे सुनहरी कामदार गर्म वस्त्रों में हवा के साथ-साथ अपने किसी साथी से बातें करते करते सहसा खिलखिला देते। इस प्रकार एक भगवान के क्रूर विधान के सम्मुख नतमस्तक अपनी दीन-हीन दशा से पराजित और उदास था जबकि दूसरा अपनी सम्पन्नता के बल उसी विधान के प्रथम प्रयत्न से उत्साहित खिलखिलाता हुआ भगवान का उपहास कर रहा था। पर दोनों की दृष्टि सामने सड़क से मिली हुई थी और उनमें उत्सुकता की चमक थी।

गोमती के किनारे जहां सड़क का मोड़ था प्रतीक्षकों की पहली कतार में पैंतालिस-छियालीस वर्ष का एक अधेड़ देर से छतरमंज़िल की ओर दृष्टि जमाये खड़ा था। उसके सर पर दोपल्ली टोपी, पैरों में मामूली जूता और सारे शरीर पर वही अति साधारण छींट का जामा लबादा था उसके कपड़ों में सुवास का अभाव था उंगलियों में अंगूठी और हाथों में रेशमी रूमाल न था जिससे उसकी मध्यम स्थिति का भान स्पष्ट था। उसकी आंखों में उत्सुकता अवश्य थी किन्तु देर तक प्रतीक्षा करने के बाद अब वह शायद ऊब चुका था और बार बार अपने चारों ओर किसी जाने-पहचाने आदमी की तलाश में देख लेता था।

एक बार उसने जैसे ही चारों ओर दृष्टि दौड़ाने के बाद सामने सड़क की ओर मुंह किया सहसा उसकी पीठ पर किसी का हाथ पड़ा और वह चौंक कर पीछे देखने लगा। दूसरे क्षण हल्की मुस्कराहट चेहरे पर सजीव हो उठी और अपने बराबर स्थान निकालने के लिये थोड़ा खसकता हुआ वह पीछे खड़े व्यक्ति से कहने लगा—आओ चौबे आओ जगह है।—और उत्तर में पिछला व्यक्ति जिसके चौड़े माथे पर चन्दन की लम्बी रेखा सुशोभित थी एवं जिसने अपने कीमती ऊनी अंगवस्त्र से निकले हुए तोंदीले पेट को ढांपने की व्यर्थ चेष्टा की हुई थी, आगे दुपल्ली टोपी वाले मुसलमान सज्जन के बराबर आ खड़ा हुआ।

"समय तो हो चुका मियां खान किन्तु सवारी अब तक नहीं आयी बात क्या है?' आते ही उसने पहले वाले अधेड़ सज्जन से सवाल किया।

"घबराते क्यों हो" मुसलमान सज्जन किंचित मुस्करा कर कहने लगे, 'भाई नवाब की सवारी कोई मामूली बात नहीं है। बेचारे की सलामती की दुआ करो। कहीं चलते चलते भी छींक आ गई तो "

"कैसी बातें करते हो मियां खान?— चौबे भी मियां खान के शब्दों में छिपा व्यंग्य ताड़ गये और समझाते हुए से कहने लगे "वाह वाह

के लिये खुलेआम ऐसी बातें नहीं करते। किसी ने सुन लिया तो—आखिर वह हमारे बादशाह हैं।"

'बादशाह हैं इसीलिए चौबे जी" मियाँ खान का विक्षोभ इस बार स्पष्ट हो उठा "इसीलिए वह अच्छे और बुरे की परख नहीं कर सकते। इसीलिए चापलूसों और नादानों की बातों पर जरूरत से ज्यादा कान देते हैं। तुम जानते हो आज पूरे दो महीने बाद वह अहमदनगर तशरीफ़ ले जा रहे हैं?"

जानता हूँ।' चौबे जी गर्दन झुका धीमे से बोले—'और तुम्हारे विचार भी जानता हूँ मियाँ खान। लेकिन मलिका क़िश्वर उनकी माँ हैं तुम यह बात शायद भूल रहे हो।"

"सियासत और जंग में माँ की ममता छोड़नी पड़ती है चौबे मन।" मियाँ खान का कड़वा उत्तर आया "शाह अब बच्चे नहीं हैं। वक्त की नज़ाकत उन्हें इजाज़त नहीं देती कि जानते बूझते आग को पनाह दें।"

"तुम्हारा कहना है वह बीमार नहीं थे और उन्हें —"

'बीमार थे। लेकिन इस क़दर नहीं जितना उनके चापलूस हकीमों ने साबित करने का बीड़ा उठा रक्खा था। क़िश्वर बेगम एक माँ हैं। उनके हुक्म पर लगातार दो महीनों तक दरबार से जुदा रहना एक बेटे के लिए मुनासिब रह सकता है लेकिन एक बादशाह के लिए नहीं। इस अरसे में रियासत के इंतज़ाम में बड़ी से बड़ी खराबियाँ पैदा हो सकती हैं। बड़े से बड़े मुल्क निकल सकते हैं। क्या हमारे शाह नहीं जानते कि यह खराबियाँ यह मुल्क उनके और उनकी हुकूमत के लिए कितने खौफ़नाक साबित हो सकते हैं? क्या फ़िरंगियों के भारी क़दमों का दबाव कम करने में इस तरह कोई मदद मिल सकती है?'

"बस बस मियाँ खान"—चौबे जी ने सहमी हुई आवाज़ में उन्हें रोकने की कोशिश की—"भगवान के लिए तुम अपना क्रोध इस समय

शान्त रखो। आते जाते सिपाहियों ने सुन लिया तो ग़ज़ब हो जायेगा।"

"मैं ग़ज़ब का बहुत दिनों से इन्तज़ार कर रहा हूँ चौबे जी। काश, वह दिन आए जब शहंशाहे अवध मेरे एक-एक अलफ़ाज़ पर ग़ौर करें और मतलब के परिस्तार उन बिरादराने यूसुफ़ की तरफ़ से आँखें खोल दें जो सामने मोहब्बत और पीछे दुश्मनी का दम भरते हैं। जो वक्त आने पर हमारे भोले शहंशाह की पीठ में छुरा भोंकने की तैयारियाँ कर रहे हैं। चौबे भाई फिरंगियों ने साज़िशों के घेरे में उलझाकर शाहे अवध को बेकार और बेज़ार बनाने का फ़ैसला कर रखा है।—उनकी मामूली तकलीफ़ को सिर्फ़ इसलिए तूल बना दिया जाता है, कि वह कम से कम वक्त रियासती मुआमलों पर सर्फ़ कर सकें। यह मुजस्सिम धोखा है, फ़रेब है, साज़िश है। और हमारे शहंशाह बेख़बर हैं; अनजान और नादान हैं। नहीं जानते चापलूस ओहदेदारों की ज़ुबान पर अब फिरंगियों की आवाज़ होती है। उनके नखरे फिरंगियों के नखरे होते हैं। उनके अहसास फिरंगियों के इशारे पर उठते और बैठते हैं। ख़ुदा जाने क्या होने वाला है अवध का, क्या होने वाला है अवध के शाह और अवध की रियाया का।

मिर्ज़ा जान कुछ और कहते। लेकिन चौबे जी ने दूर इशारा किया। सड़क के एक छोर पर गुबार का बादल सा उठता नज़र आने लगा था। और यह बादल इसी तरफ़ बढ़ा आ रहा था। सवारी क़सर मंज़िल से रवाना हो चुकी थी। लोगों की धारणा पुष्ट हो चली।

पुल का काफ़िला धीरे-धीरे सरकने लगा। लोग व्यवस्थित होने का प्रयत्न करने लगे। इसी बीच चारों ओर से उत्साहित आवाज़ें आनी आरम्भ हुईं— शहंशाह की सवारी आ रही है—वह क़सरमंज़िल से चल दिये हैं— 'शहंशाहे अवध ज़िन्दाबाद—क़ैसरे ज़मां ज़िन्दाबाद—

सुलताने अवध जिन्दाबाद—वाजिदअली शाह जिन्दाबाद !' नारों का स्वरूप और पकड़ता गया। सवारी पल पल नज़दीक आती गई। फिर ढोल और ताशों की सम्मिलित आवाज़ में ताल देता घोड़ों की टापों का स्वर भी सुनाई देने लगा। लोग भी और भी बाग उत्सुकता से देखने लगे। काफ़िला और निकट आ गया।

सब से आगे अली रज़ा ख़ाँ कोतवाल का घोड़ा था। उस पर सवार रोबदार अली रज़ा ख़ाँ की पैनी नज़र इधर उधर झाँकती जा रही थी। उन नज़रों में ललकारने जैसा भाव था। शाहे अवध की महफ़ूज़ी के लिए जैसे अकेली बड़ी बड़ी से बड़ी आफ़त का मुक़ाबला करने को बेचैन हो। उनके पीछे आठ ताशे वाले एक साथ ताशों पर हाथ मारते आ रहे थे। फिर ढोल वाले थे। उनके बाद सामान बरदारों की बारी थी। वह हल्के हाथों सड़क पर गुलाब और केवड़े से महकता पानी छिड़क रहे थे। फिर दो मुश्की घोड़ों पर दो और दो महान हस्तियां चली आ रही थीं। इनमें एक शाही पोशाक में वज़ीर अमीनुद्दौला और दूसरे फ़ौजी वेश में जनरल उस्मान ख़ाँ थे। और तब आ रहे थे शाही तामझाम का लम्बा आसरा उठाये आठ उठाईदार जो एक गति से मशीन की तरह एक हाथ आगे एक पीछे इस सावधानी से ले जा रहे थे जिससे तामझाम का स्तर स्थिर और एकसा रहे। इसी तामझाम पर अबुल मुज़फ़्फ़र नासिरुद्दीन सिकन्दर जाह बादशाहे आदिल क़ैसरे ज़मा सुल्ताने आलम, वाजिद अली शाह बहादुर बादशाहे अवध रौनक़ अफ़रोज़ थे।

इस समय वह मुस्करा रहे थे और बार बार अपना दायां हाथ उठाकर भीड़ से उठने वाले सेहरे और मुबारकी के सम्मिलित स्वरों की स्वीकृति देते जा रहे थे। २९ १० साल के शाह की गर्दन उठी हुई चेहरा मूर्त और रोबदार, आँखें मासूम और शरीर हृष्ट पुष्ट और बनाठना था। उनकी छटी हुई काली स्याह दाढ़ी, मुछीसी

पतली मूँछें और घुँघराले बाल उन्हें और भी अधिकतम सुन्दरता और आकर्षण प्रदान कर रहे थे। उन्होंने मखमली कामदार अचकन, लाल सिल्लीदार पगड़ी, हरा कश्मीरी शाल और कीमती जूता पहन रखा था। देखने पर वह बहुत भोले नेक और गरीबपरवर, किन्तु सुन्दर और आकर्षक व्यक्तित्व वाले जान पड़ते थे।

तामझाम का पिछला आसरा फिर पहले की तरह आठ कहारों के कन्धों पर था और उनके हाथ बंधी हुई गति से आगे पीछे आ जा रहे थे। तब कुछ विशेष दरबारी अपने अपने घोड़ों पर सवार थे। इनमें राजा बालकृष्ण म्याम मन्त्री, राजा बिहारी लाल हाकिम माल वाजेह अली लगान विभाग के सुपरिन्टेन्डेंट; अली नकी खाँ हाकिम इन्तजाम खास जैसे रफीउद्दौला और शरफुद्दौला खास थे। इनके पीछे चार पैदल सिपाहियों के बीच विशेष प्रकार की एक गाड़ी में चला आ रहा था जनता के लिये खुला शिकायतों का बक्स। नाम था मसलहते नौशेरवानी। सवारी का अभिन्न अंग। जनता का कोई भी इस प्रकार चलती सवारी के पीछे आने वाले इस मसलहते नौशेरवानी में वह हुकूमत के हर शख्स, चाहे वह खुद शाहे अवध क्यों न हों की शिकायत पेश कर सकता है। अपने दिन वह खुद बादशाह के हाथों खुला करता था और हर शिकायत की भरपूर जाँच की जाती।

लगभग सौ पग का यह जुलूस आहिस्ता आहिस्ता अब से दो माह पूर्व तक इसी प्रकार छतरमंजिल जाया करता था। शाह का नियम था वह खुद फौज की कवायद करवाने के बाद छतरमंजिल जाया करते थे और वहाँ से सवारी जुलूस की शक्ल में मच्छमनमंजिल जाती जहाँ हर महकमे के आला अफसरान अपनी अपनी रिपोर्ट और

कागजात लिए शाहे अवध के हुक्म के पाबन्द रहते। पिछले दिनों उन्हें दिल धड़कने की नयी बीमारी हुई और तब से अब तक पूरे दो माह लोग इस सवारी के लिए बेचैन और परेशान रहे। आज वह सब लगातार वाजिद अली शाह की सेहत के लिए नारे बुलन्द कर रहे थे जिससे उनके उत्साह का ज्ञान होता और शाह की लोकप्रियता स्पष्ट हो जाती।

सवारी ज्यों ही मियां बाग और चौके की के करीब आई एक तेज स्वर हुआ और चलता हुआ जुलूस जहाँ का तहाँ रुक गया।

किसी स्त्री कण्ठ ने शाहे अवध के इंसाफ को भरी पूरी जनता में ललकार कर उत्साहित भीड़ को हैरान और परेशान कर दिया। लखनऊ के इतिहास में पहली बार किसी ने चलते जुलूस को रोकने का दुर्दमनीय साहस किया था। चारों तरफ हलचल और फुसफुसाहट आरम्भ हो जाना बिल्कुल मामूली बात थी।

सवारी रुकी और वजीर अमीनुद्दौला की त्योरियों पर बल पड़ गये। उन्होंने घोड़े की रास फेरी और चारों ओर प्रश्न सूचक दृष्टि से पूछा। फिर वह एक जमाते शाहे अवध के तामझाम के बिल्कुल निकट आ गये।

फरियादी अब तक अज्ञात था। कण्ठ किसी स्त्री का था और लोग अपने-अपने मस्तिष्क से विभिन्न कल्पनायें कर रहे थे। वजीर की भवें पल प्रतिपल चढ़ती जा रही थीं। शाहे अवध ने तामझाम के दोनों बाजू अपनी मुट्ठियों से पकड़ लिये थे और आश्चर्य से अपने चारों ओर घूर रहे थे।

तभी एक निस्तान स्त्री वजीर के घोड़े के निकट आ खड़ी हुई। उसने विदेशी कपड़े का नीचा साया और पैरों में चप्पल पहन रखी थी। उसकी आँखें उदास गम्भीर और परेशान नज़र आईं। वह वजीर

को सलाम करने के बाद खामोशी से खड़ी-खड़ी शाह को देखने लगी।

"खातून—क्या सवारी आपने रोकी है?" उसकी खामोशी देख वज़ीर ने सवाल किया "क्या आप कोई शिकायत पेश करना चाहती हैं?"

'नहीं आला हज़रत नहीं। शिकायत नहीं मैं शहंशाहे अवध के रोबरू अपनी फरियाद पेश करना चाहती हूँ। सवारी मैंने रोकी है, मैं इकरार करती हूँ।—" स्त्री ने निडरता से वज़ीर को उत्तर दिया।

"मगर फरियाद के लिए आप लिखकर अपनी दरख्वास्त मसनदे मोहरखानी में डाल सकती थीं खातून। वह सवारी के पीछे आ रहा है।"

"बजा आला हज़रत बजा। लेकिन मुझे यकीन नहीं मेरी शिकायत इस वक्त के ज़रिये शाह तक पहुँच भी सकेगी या नहीं। मैं खुद उनसे कुछ अर्ज़ करना चाहती हूँ। इसलिये यह जुर्रत करने का हौसला किया है।"

"तब शायद आप यह भी जानती होंगी कि इस तरह शाही सवारी को रोकना शाहे अवध की ज़बरदस्त तौहीन है, जिसकी सज़ा मिला करती है, जो अक्सर सख्त होती है।—"

"नहीं" औरत इस बार जैसे चीख पड़ी "मैं रहम की तलबगार हूँ मेरे आका मेरी मुसीबत ने मुझे नाकारा कर दिया है। मैं कुछ सोचने-समझने के काबिल नहीं हूँ। मैं शाह की तौहीन नहीं कर रही। मुझे इंसाफ चाहिए इंसाफ।"

"खातून" अमीनुद्दौला का भारी स्वर इस बार तेज़ हो गया। वह हिकारत औरत की ओर क्रोध से देखते हुए बोले "गोया तुम कहना चाहती हो हमारी हुकूमत में बेइंसाफी होती है? तुम्हें यकीन नहीं शाहे अवध तुम्हें इंसाफ से महरूम नहीं रखेंगे? नहीं नहीं खातून हमारी नज़र में यह बात बेअदबी और गुस्ताखी है। इससे पहले कि तुम्हारी शिकायत या फरियाद पर गौर किया जाए हम तुम्हें शाही

हिरासत में लिए जाने का हुक्म देते हैं। हमें सोचना होगा आयन्दा लोगों को इसकी हासिल हो और वह सवारी का एहतमाम भुलाने की ग़लती न कर बैठें ऐसी कौन सी सजा तुम्हारे लिए तजवीज की जाये?"

"नहीं नहीं सुल्तानें आली।" औरत सजा का नाम आते ही बिफर गई और शाही लामम्माम के बिल्कुल निकट आ गिड़गिड़ाने लगी। "खुदा के लिए मुझ पर रहम कीजिए। मुझे कैद में लिए जाने का हुक्म वापस लीजिये शाहे सुल्तान मुझ पर तरस खाइए।"

"नहीं।" वज़ीर साहेब ने भारी आवाज़ में कहने के बाद सिपाहियों की ओर इशारा कर दिया। सिपाही शाही लामम्माम के पास खड़ी खिस्ताल औरत की तरफ बढ़े। तभी वाजिद अली शाह ने उन्हें रोकने के लिए अपना सीधा हाथ उठाकर इशारा किया और वज़ीर साहेब से बोले—'इमदाद हुसैन' "

अमीनुद्दौला फौरन शाह के लामम्माम के बिल्कुल करीब आए। शाह ने उन्हें अपना पूरा आदेश दिया खातून को हमारे रोबरू पेश किया जाए।"

"बहुत खूब!" वज़ीर ने कहा और औरत को सामने आने का इशारा किया। वह अपनी बाली दोनों हाथ से आँसू पोंछती शाह के सामने आ खड़ी हुई।

"तुम कैसी फरियाद पेश करना चाहती हो खातून? हम जानना चाहते हैं। क्या तुम्हें हमारी हुकूमत के किसी आदमी से शिकायत है?"

"नहीं आलमपनाह नहीं।" उस औरत ने सिर हिला दिया।

"क्या तुम्हारे शौहर बरोज़गार हैं?"

"हुजूर का सदका—" औरत ने कहा "सल्तनत की मिट्टी पर रोटियों की बरसात होती है। मुझे यह शिकायत भी नहीं है मेरे आक़ा।"

"तब—हमें जरा अपनी शिकायत सुना दो खातून—"

"मैं मुसीबतज़दा हूँ आलमपनाह—' औरत सिर्फ इतना कह सकी। इसके बाद कुछ देर उसकी आँखों से आँसू टपकते रहे।

"बयान करो। क्या चाहती हो।" शाह ने उसे सान्त्वना दी। तब वह पीछे घूमी और दूर एक लड़की की ओर इशारा करते हुए कहने लगी— 'यह मेरी लड़की है आलम पनाह।—मरियम—

"मरियम" शाह ने उधर देखा। एक लड़की अपनी दोनों हथेलियों से अपना मुँह ढपि अगली कतार में खड़ी-खड़ी सुबक रही थी। वह फिर मरियम की माँ की तरफ देखते हुए पूछने लगे 'हाँ तो उसे क्या तकलीफ है? हम जरूर उसका इंसाफ करेंगे खातून।'

"गुस्ताखी मुआफ आलम पनाह। इस वक्त वह सिर्फ रो रही है। लेकिन और रोज जब सवारी निकलना बन्द हो गई थी वह सूनी राह पर टकटकी बाँधे भूखी प्यासी सारा-सारा दिन यहाँ गुजार दिया करती थी। आलमपनाह अगर मेरा इंसाफ न हुआ तो मैं बरबाद हो जाऊँगी। मेरी एक ही बेटी है।—

'हम तुम्हारा मतलब नहीं समझ सके खातून। शाह ने इस बार मुस्कुराकर कहा— अच्छा हो अगर तुम हमें तफ्सील से सब कुछ बता दो।"

"तो सुनिये शाहे आला। आप की सवारी मेरी और मेरी लड़की की मौत है—

"खातून! अमीनुद्दौला वजीर ने तेजी से औरत को रोकने की चेष्टा की। लेकिन शाह ने इशारा किया "इन्हें कहने दो—" तब अमीनुद्दौला रास खींच घोड़ा दूसरी तरफ ले गये। औरत ने आगे बयान किया— 'पूरा एक साल गुजरा यहाँशाहे आली एक साल। आप के दरबारियों, मुसाहबीनों में से किसी के साथ मरियम की आशनाई हुई। वह बफा निकला। मरियम से मोहब्बत के वादे करने के बाद

शायद वह मरियम को भूल चुका है। लेकिन मेरी बेटी रोज़ाना उसका इन्तज़ार करती है। शाहे आला यह बेवकूफ लड़की आज भी उससे उतनी ही मोहब्बत करती है जितनी एक साल पहले। रोज़ाना यह सवारी निकल जाने के बाद निकाला मुँह ले नीचे उतरती है। और पिछले दो महीने शाह "हुजूर" "मुलतान आला म हुजूर की सवारी आई और म इसने खाना खाया। हुई कि यह बीमार पड़ गई। मरते मरते बची। बमुश्किल तमाम इसे शिफा बख्शा गया। अब पूछने पर यह उस बदबख्त का नाम नहीं बताती। कहती है उसने मना किया है। मैं आप से फरियाद करती हूँ आलम पनाह। मेरी लड़की की ज़िन्दगी में उसने कांटे बिखेर दिये हैं। मैं इस लड़की को उसके माथे छोड़ अपनी ज़बरदस्त ज़िम्मेदारी से सुबकदोश हो जाना चाहती हूँ। आला हज़रत इंसाफ कीजिए इस बावरा लड़की का जिसने किसी नामालूम शख्स की मोहब्बत में कुरबान तक हो जाने का फैसला कर लिया है और दीजिये सज़ा उस बदबख्त को जो इसकी ज़िन्दगी को रास्ते का पत्थर समझ कर उठा फेंकने की कसम खा चुका है।"

औरत ने लम्बी तकरीर समाप्त करने के बाद लम्बा सांस लिया तो शाहे अवध की नज़र दोबारा लड़की पर उठी। अब उसने रोना बन्द कर दिया था और वह सहमी-सहमी इसी तरफ देख रही थी। शाहे अवध ने चन्द सैकिण्डों में बुलबुली पलकों मरियम की बड़ी आँखों से झांकते बिल्लौरी डोरों को उसके चेहरे के सुफैद चीनी जैसे रंग से मिलाया और प्रशंसायुक्त स्वर में सुबहानअल्लाह 'मरहबा' बुदबुदा दिये। फिर वह बिरहान स्त्री की ओर घूमे और पूछने लगे 'हम खातून की शिकायत सुन चुके। अब क्या खातून का नाम भी जान सकते हैं?'

"मिसेज़ बालबज "आलमपनाह मैं डाक्टर बालबैंज की बीबी हूँ।"

"और यह लड़की डाक्टर बालबैंज की बेटी है?"

व्यापारी जो भारतीय नरेशों के कृपापात्र बन हमारी धरती पर भीख-सी मांगते आये हमारे शाह और बादशाह की उपाधि से विभूषित हो जाते।

वाजिद अली आरम्भ में उस संधि से भयभीत हुए किन्तु मलिका किश्वर और वज़ीर अमीनुद्दौला ने उन्हें समझा दिया। और तब वह निश्चय कर चुके कि किसी भी अवस्था में उस कहानी को दुहरायेंगे नहीं जो शराब की प्यालियों हरम की विलासिता और चापलूस दरबारियों की सहायता से आज तक अवध के पीछे शाहों ने दोहराई है। वह जानते थे और समझते थे कि हुकूमत के लिये विलासिता का अजगर मृत्यु का आवाहन कर देगा। हरम की परमसुन्दरी यौवनाओं के गेसू फिरंगी राजनीति की मधुर बीन के आगे मस्त सांप बनकर अवध, अवध के हाकिम और अवध की हुकूमत को एक साथ डस जायेंगे। वह नहीं चाहते थे कि युगों से चली आने वाली उनकी बादशाहत, पलों में उनके हाथों से निकल जाये और वह मंगतों की तरह सिर्फ तमाशा देखते हुए खाली रह जायें।

लेकिन इंगलैंड के कुटिल राजनीतिज्ञ इस तमाशे के लिये न केवल तैयार थे वरन् बहुत दिनों पूर्व इसकी नींव रख चुके थे। उनकी दृष्टि में भारत का हरा भरा प्रदेश वर्षों से खटक रहा था जहां उनके व्यापारी भीख मांगते पहुंचे और राजा बन कर वापिस गये। वह चाहते थे इस देश में न केवल वस्तुओं का व्यापार करना और अपनी जेबें भरना, वरन् महान् ईसाई धर्म की आस्था के अनुचित उपयोग से यहां के लोगों का धर्म खरीद लेना। वास्तव में उनका लक्ष्य व्यापार तक सीमित नहीं था उन्हें करनी थी तिजारत अपने धर्म की और यहां के राजाओं महाराजाओं की हुकूमत की।

मुगलों के कन्धे कमज़ोर थे और ईस्ट इंडिया कम्पनी के अफसरान अपने मक़सद के निकट आते गये। कलकत्ते में दीवानी अदालतों के

अधिकार प्राप्त होते ही सफलता की चढ़ाई आरम्भ हुई और छोटे-मोटे राज्यों के विलीनीकरण के साथ आगे बढ़ने लगी। आपसी फूट की कलह से पीड़ित नवाब और राजे-महाराजे कहीं हारे, कहीं भाग गये और कहीं घुटने टेक नीति से चिपक गए। कम्पनी के बढ़ते हुए कदम किसी के रोके न रुक सके। हजारों मील दूर बैठे राजनीतिज्ञ भारत के शरीर पर जहां-तहां पड़े-सड़े रियासती फोड़ों की कहानी न केवल जानते थे वरन् समझते भी थे। उनकी फूट और उनकी कमजोरी के बल फोड़ों को नामाहीन कर देने के बाद कम्पनी का एकछत्र राज्य कायम हो सकता था। इस नीति का भारत के प्रत्येक गवर्नर जनरल ने खुलकर समर्थन किया। साम दाम दण्ड भेद चारों उपायों से सफलतायें प्राप्त की जाने लगीं। कहीं राजाओं-महाराजाओं की अयोग्यता सिद्ध की, कहीं जनता का समर्थन मांगा, कहीं उत्तराधिकारी के प्रश्न पर बेईमानी पर उतरे और कहीं विलासिता के कुएं में नवाबों और उमरावों को कम्पनी सरकार का मोहताज बना दिया। शेष रह गईं कुछ बड़ी-बड़ी रियासतें अवध झांसी, ग्वालियर और पंजाब के कुछ उपजाऊ प्रदेश। १८०१ की सन्धि में अवध का आधा भाग कम्पनी में विलीन किया जा चुका था। शेष आधा भाग था शाहे अवध का आधा निवाला अभी बाकी था। शाह भली प्रकार समझते थे इस निवाले की ओर विरोधियों की भूखी नजरें देर से घूर रही हैं। एक न एक दिन इसका भी तमाशा बनने वाला है जो बनकर रहेगा और जरूर रहेगा।

यह सच्चाई आज से बहुत पहले अपने पिता के शासन काल में एक मामूली बखेड़े पर वाजिद अली शाह पर स्पष्ट हो चुकी थी। फिरंगी हुक्कामों की मर्जी के खिलाफ अवध की हुकूमत करना कितना कठिन है, उस समय उन्हें भली प्रकार अनुभव हो गया। शाह अमजद अली खां के ज्येष्ठ लड़के मुस्तफा अली एक उग्र स्वभाव और अयोग्य विलासी व्यक्ति थे। अमजद अली शाह अपनी मृत्यु के बाद उन्हें राज

नहीं थी। वे लखनऊ के बाजारों में नासिरुद्दीन हैदर के काल के बेहूदा किस्सों की पुनरावृत्ति नहीं करना चाहते थे। वाजिद अली जनता के प्रिय योग्य और समझदार व्यक्ति थे। उन्होंने ऐलान करवा दिया, वही सभी मुहर करार दिये जाते हैं। तत्कालीन रेजीडेंट को इस ऐलान से क्रोध आया। मुस्तफा अली शाह की बादशाही के बाद वह अपनी चिरसंचित अभिलाषा की पूर्ति के स्वप्न देख रहे थे। वाजिद अली उनकी इच्छा के प्रतिकूल स्वभाव का ठोस व्यक्ति था। उसने इस ऐलान के विरुद्ध पूरी शक्ति से हाथ पैर पटकने प्रारम्भ कर दिये। शाह की स्थिति शोचनीय हो उठी। सारा परिवार समझ गया अब अवध के दो बादशाह हो गये हैं। एक जिसका नाम है और जिसके बारे हुकूमत में मुहरें चलती हैं पर जो कमज़ोर है और दूसरा वह जो पर्दे के पीछे से हुकूमत करता है ताकतवर है। लिखापढ़ी में अमजद अली ने गवर्नर जनरल को बार-बार गोल शब्दों में अपनी इच्छा स्पष्ट की और उनका समर्थन प्राप्त करने का प्रयत्न किया। लेकिन जितना रेजीडेंट समझता था उससे कहीं ज्यादा गवर्नर जनरल समझता था। अवध को हस्तगत करने में पहले काफी देर हो चुकी थी। अब उन्हें चाहिये था कोई ऐसा बहाना जो १८०१ की सन्धि की शर्तों के विपरीत अपने आपको अयोग्य और विलासी सिद्ध कर सके। उनके लिए वाजिद अली के रंग ढंग बेहूदे थे। मुस्तफा अली उनकी नज़रों में नाकामयाब हो सकते थे। अमजद अली शाह ने उसी को वली अहदी से अलग कर दिया था। गवर्नर जनरल ने शाह की सभी दलीलों की काट कर दी। शाह की जरा सी इच्छा का इतना घोर अपमान आज से पहले कभी नहीं हुआ था। उस समय वाजिद अली केवल बारह वर्ष के थे। लेकिन फिरंगी और फिरंगी हुकूमत के प्रति इस घटना से उनके मन में भय व्याप्त हो गया। अमजद अली शाह जैसे दूरदर्श व्यक्ति जब इन जालिमों के पंजे में जकड़े हुए थे, वह अपनी स्थिति पर क्या सोच सकते

थे। वह समझ गये कि हमारी हुकूमत के दुर्दिन निकट आ गये हैं। इतना निकट कि हम टालना चाहें तो भी ज्यादा दिन नहीं टाल सकते।

कठिनाई से अली अहद की समस्या सुलझ सकी। सोच-विचार के बाद अमजद अली शाह की ओर से सरकारी ऐलान हुआ जिसमें अपने फैसले का कारण व्यक्त किया गया। उन्होंने जाहिर किया मुस्तफा अली उनके रक्त से बालक नहीं है। जिस समय उसकी माँ को रनिवास में लाया गया वह अठारह महीने का उनकी गोद में था। रेजीडेन्ट मुँह देखता रह गया। इस अकाट्य दलील का गवर्नर जनरल भी कोई उत्तर न दे सका। लेकिन अब मन ही मन वह उस समय की बेचैनी से प्रतीक्षा करने लगा जब अमजद अली शाह के बनाये वारिसे को लात मार कर गिराने के साथ-साथ वह अपने इस अपमान का बदला ले सकता।

इधर तख्तपोशी के शुभ दिन जो अपशकुन हुआ उससे वाजिद अली शाह का रहा-सहा हौसला जाता रहा। वह प्रारम्भ से वहमी और भूत प्रेत को माना करते थे। पुरानी चली आने वाली शकुन की बातों पर उनका दृढ़ विश्वास था। और उस दिन उनका दिल दो टूक हो गया जब खास तख्तनशीनी के मौके पर तख्त ताज तक पहुँचाने वाली सीढ़ी चढ़ते समय उनके बोझ से टूट कर दो टूक हो गई। क्या यह अपशकुन नहीं? इस दुर्घटना के पीछे शाह को भविष्य के बहुत बदतर दिनों का दृश्य दिखाई दिया। अवध के शाह की तख्तनशीनी के समय ऐसा अशुभ लक्षण? उन्हें विश्वास-सा होने लगा जैसे अवध के सम-मानात सूर्य का अस्त करीब आ पहुँचा है। शायद यह तख्तनशीनी का जश्न उसके इतिहास का आखिरी जश्न और अली अहदों के इतिहास में उनका नाम आखिरी हो। सीढ़ी के रूप में टूटा है अवध का भाग्य जो फिरंगी हुक्कामों की आँखों में जाने कब से खटक रहा है। भोले बादशाह के मनोबल को इस असाधारण घटना ने सचमुच अस्थिर कर दिया और सिर पर शाही के हाथों ताज पहनते समय वह यही सोचते रहे

कि अवध के पतन के लिए खुदा ने उन्हीं के कन्धों बदनामी का बोझ क्यों डालना निश्चय किया जबकि उनके पूर्वजों में एक से एक अधिक ऐयाश बुद्धि और अयोग्य शासकों का समय बीत चुका है। क्या है उनका अपराध जो उन्हें इतना भारी दण्ड दिया जाना निश्चित हुआ है। यही कि वह सही मायनों में अपने देश की सेवा का उत्साह लिए तख्त पर बैठने को आतुर हैं, या फिर फिरंगी हुक्कामों की कूट नीति को छिन्न-भिन्न कर देने का उन्होंने फैसला किया है? खुदा जाने क्यों किसलिये उनके साथ एक बड़ा बहुत बड़ा विश्वासघात होने जाता है।

दोपहर तक शाह अवध अफ्जलुम मजलिस में सरकारी काम करते रहे। विभिन्न महकमो के अफसरान उनके सामने पेश हुए, अपनी-अपनी कैफियतें गुजारिश की और शाह द्वारा दिये गये नये-नये आदेशों को हृदयंगम करते रहे। अन्त में वहाँ का काम समाप्त हुआ। तब सहसा शाह की दृष्टि गठीले बदन के चालीस-पचासीस वर्ष के नकी खाँ पक-तरे बाल पर पड़ी जो वजीरेआज़म अमीनुद्दौला के साथ सर झुकाये शाह के हुक्म का पाबन्द खड़ा था और उन्होंने पुकारा "नकी खाँ!"

नकी खाँ ने अपनी बहुत चमकदार आँखें ऊपर उठाईं उनमें मर्यादा का भाव उत्पन्न किया और आज्ञा सुनने के लिये आगे आया— 'हुक्म शाहे आली।"

"क्या वह वही लड़की है नकी खाँ ?—"

नकी खाँ ने तुरंत स्वीकृति सूचक सर हिलाया। शाह आगे कुछ कहने जाते थे। वजीरे आज़म ने तत्परता से तख़लिये का आदेश दिया। कमरा अकेला हो गया। वह स्वयं भी शाह की ओर उत्सुकता से देखने लगे। आज जो कुछ हुआ अवध के इतिहास की एक नयी बात था

परन्तु नकी खाँ और शाह अवध में उसके सम्बन्ध में पहले कोई बात चीत हो चुकी थी इसके प्रति उनकी बूढ़ी आँखें बिना सतर्क हुए न रहीं।

शाह ने आगे कहा—"हम समझते हैं तुम्हारी इत्तिला वहम नहीं एक हकीकत होगी नकी खाँ।"

"बदरनाक हकीकत आलमपनाह !—" नकी खाँ ने तनिक मुस्कराने के बाद उत्तर दिया।

"पाक मुहब्बत का जज़बात भरा दिल जुदाई और नाफरमाबरदारी का सदमा कतई बर्दाश्त नहीं कर सकता हुजूरे आला। आज खुद आलमपनाह खुद इसका अन्दाजा फरमायेंगे।"

बसीर साहेब का मन उल्लसित हुआ। उस क्रिस्तान लड़की के बारे में नकी खाँ की सिफारिश कुछ मायने रखती थी। आज खास शाही आदेश से उसे शाह के हुजूर में पेश किया जाना था ताकि उसकी माँ की फरियाद पर इंसाफ के लिये मरियम से उसके प्रेमी का नाम मालूम किया जावे और उस बदमाश प्रेमी को दण्ड दिया जावे। बसीर की बुद्धि ने तत्काल किसी रहस्य की गन्ध प्रतीत की। नकी खाँ जिसे बयारव की परी का असीम मोह था शाह को किसी नये उलझावे में तो नहीं फाँस रहा उन्हें ऐसा विश्वास होने लगा। बड़ा भावुक और भीत रहा था। पल-पल पर अपनी कुचालों से अवध और अवध की हुकूमत को अपनी बुद्धि के घेरे में सुरक्षित बनाए रखने के लिये बसीर हर घड़ी हर पल उत्सुक रहते थे। वह आगे आये और शाह के कुछ बोलने से पहले स्वयं कहने लगे—"गुस्ताखी मुआफ हुजूरे आली। खाँ साहेब की गुफ्तगू से मालूम हुआ इस लड़की का मसला पुराना है। हमदर्दी न हो तो गुनाह भी जानने का ख्वाहिशमन्द है हुजूर ने खाँ साहेब के जिस वहम को हकीकत बयान किया है ?"

शाह ने साधारण से उत्तर दिया—"हाँ हाँ इमदाद हुसेन। नकी

खाँ का कहना था, हमारे जुलूस के रास्ते में एक लड़की पिछले साल से बराबर हमारी राह में आँखें बिछाये खड़ी रहा करती है और हमसे मुहब्बत करती है। आज सुबह जिस खातून ने हमारे समक्ष फरियाद की वही उस लड़की की माँ है।—"

आलमपनाह क्या यह मुहब्बत की फरियादी है?—

'हमने पहले इसे नकी खाँ का वहम माना था वजीर साहेब। मगर आज देखने पर महसूस हुआ जैसे इनका कहना गैर मुनासिब नहीं। हम मजबूर हैं अपनी रिआया की ऐसी हस्तियों की कद्र करने को जो सालों अपने महबूब का दर्द दिल में छिपाये खामोशी से बर्दाश्त करती रहें। इसीलिये हमने उसे अपने हुजूर में हाजिर होने की दावत दी है।—"

वजीर साहेब इसके बाद खामोश हो गये। नकी खाँ और शाह में फिर बातचीत शुरू हो गई। वजीर सुनते रहे। तात्पर्य एक ही था। नकी खाँ शाह को विश्वास दिलाने को भरसक प्रयत्नशील थे कि मरियम उनसे सच्चा प्यार करती है और उनके वियोग में घुट-घुट कर अपनी जान गंवा देगी। शाह इशारों-इशारों में नकी खाँ से इसका उपाय पूछने लगते। तब नकी खाँ वैसे ही इशारों में शाह को मरियम के साथ मुता (विवाहिता पत्नि के अतिरिक्त अन्य स्त्रियों को हरम में प्रतिष्ठित रूप से दाखिल करने की रस्म) कर लेने की दावत देते नजर आये।

कुछ देर पश्चात् शाही समय शहंशाह मंजिल रवाना हो गये। नकी खाँ वजीर से बिछुड़ते समय आँखों में विजय की विचित्र मुस्कान लिये पायबोस कर गया। तब इमदाद खाँ विचारमग्न सीधे मलका किश्वर के महल जा पहुँचे। बयालीस बेगमों के पश्चात एक नयी स्त्री के हरम में पदार्पण की घटना साधारण नहीं। बूढ़ी बेगम न केवल वजीर साहेब की सलाहगीर थी बल्कि कमउम्र शाह की मशीर थीं।

उनके पास हुकूमते अवध की मलिका आलिया और वाजिद अली बेटे की माँ दोनों का दिल था। अवध पर आने वाली हर दुर्घटना के लिये तब वह दूसरे वेश से क्यों न सुरक्षा-सन्नद्ध रहतीं। ये ही तो व्यक्ति थे जिनको बच्चे बादशाह की बदकामी आदतों से सर्वाधिक परेशानी होती। एक मलिका किश्वर और दूसरे वजीर इमदाद खां। जन्मदायिनी धरती माँ की स्वतन्त्रता पर विपत्तियों के मंडराते बादलों का इन्हीं दोनों को पूर्वानुमान था और जब कभी कोई अवसर उपस्थित होता यही दोनों उसका हल ढूंढ निकालने में व्यस्त होते।

मलिका किश्वर ने पूरी कहानी सुन लेने के पश्चात् वजीर से प्रश्न किया – "क्या मामूली लड़कियों की तरह वह वाजिद अली से माली फायदा उठाने के लिये मुहब्बत का नाटक कर रही है वजीर साहेब ?"

'शायद नहीं मालिका हुजूर।" इमदाद हुसेन ने उत्तर दिया "मुझे डर है कहीं कोई साजिश न हो।"

"कैसी साजिश ?"

"अंग्रेजों की कोई नयी चाल। आला मलिका नकी खां वजारत की ललक में अच्छा बुरा सब कुछ भूल चुके हैं और कुछ जाने किस दिन अपनी चाहत के लिए अंग्रेजों से कोई सौदा कर बैठें। आज मैंने उनकी और शाह की कुछ इस लड़की के मुतास्लिक बातें सुनी। रुपया बटोरने वाली मामूली औरत के लिए नकी खां की सिफारिश नामुमकिन बात है। क्या पता इस गैर कौम लड़की में मुल्क के ऊपर कोई नया दिमाग उठ खड़ा हो और फिरंगी कोई नया बखेड़ा खड़ा करे।"

"यकीनन। मगर आप नकी खां को समझाते क्यों नहीं वजीर साहब कि वह ऐसी हरकतों से बाज आय ?"

"मैं सिर्फ समझाने तक महदूद नहीं मलिका आलिया। मैं उनके लिये वजारत भी छोड़ने को तैयार था। अफसोस शाह अवध इसके लिये तैयार नहीं। लेकिन इसके मुतास्लिक अलग समझाना नकी खां को

नहीं खुद शाह अवध की है। आज तक बिना एक लफ़्ज़ कहने का मौका दिये हमने लगातार हुकूमत की है और किसी को उंगली नहीं उठाने दी। उन्हें चाहिए वह वक़्त को पहचानें और कोई ऐसा गलत काम न करें जिससे ज़माना उन्हें नुकसान पहुँचाने का मनसूबा इरादा कर सके। मलिका आलिया बहुत नाज़ुक है और दुश्मन मक्कार। क्या यह मुमकिन नहीं कि आ हुज़ूर खुद शाह को इस मुद्दा से आगाह रक्खें ?"

"नहीं नहीं वज़ीर साहेब। हम बगावत और बुढ़ापे की नाकामयाब बन के अपनी इज़्ज़त नीलाम होने के हक़ में नहीं। सल्तनत की तवारीख़ में हरम की शिकायतों की बेशुमार गिनती बढ़ते चले जाना कोई बात नहीं। हम कैसे और क्या कह कर वाजिद अली को रोक सकते हैं। नतीजे में हाथ लगेगी बदनामी परेशानी बेइज़्ज़ती और दुश्मनख़ुशी। नवी वां का माल मामूली नहीं। इसके लिये खुद आपको कोई तरीका निकालना होगा।

वज़ीर सोच में डूब गये। मलिका की कनीज़ खुशबूदार हुक्का सामने रख गई। मलिका ने नली मुँह में लगाई और गुड़गुड़ाने लगीं। तब सहसा वज़ीर चौंक उठे और उनके चेहरे पर मुस्कुराहट दिखाई दी।

वह कुछ देर और मलिका आलिया से बातें करते रहे और तब उठ कर कोर्निश बजाते वहां से चले गये।

दोपहर ढल चुकी थी। वज़ीर अपने दीवानखाने में गहरे सन्नाटे के खामोश आलम मिस्कीनी जैसे सोच में बैठे हुए थे। मलिका आलिया से बातचीत के बाद आगे आगे गई मलिका से कम भी मगर तैयारी का तमाम भार अपने कन्धों उठा लाने के बाद अब तक न वह चैन से बैठ सके थे और न कोई ठीक उपाय सोच सके थे। दस्तरख्वान पर ममता मन बहला बहला रहा। कनीज़ों ने अपने हमदर्द मालिक को

नाराज और परेशान पाया । कौन जानता था अवध का दीवाना वज़ीर अवध की बिगड़ने वाली किस्मत सँवारने के लिये भी ध्यान से कोई रास्ता सोचने में बुरी तरह मसरूफ है । रास्ता न मिला तो वह जानता था ज़रूर कोई मुसीबत आयेगी और नयी आने वाली मलिका मरियम वह ईसाई लड़की अपने साथ लायेगी शाह अवध की कोई बदतर मुसीबत कोई बदचलनी कोई बेहरमती या कोई सियासी शतरंज को न बच सकने वाली खतरनाक चाल ।

कारण यह थी कि शाहे अवध अपनी कमजोरी से मजबूर थे । नकी खाँ की नमकीनी बातों में उन्हें कभी उसके सिवाय चालाकी और मक्कारी का आभास नहीं होता था । खुशामद और जी हुजूरी की आड़ में वह बगावत की अथाह चाह के बदले अवध की हुकूमत तक का सौदा कर सकता है वाजिद अली कभी स्वप्न में भी सोचने की मूर्खता नहीं कर सकते थे । यह नकी खाँ चाहता क्या था ? सिर्फ अवध का वज़ीर होना । और इसने अपनी इच्छापूर्ति के लिए क्या क्या नहीं किया । रेज़ीडेंट के इशारे पर वह उनका जरख़रीद गुलाम बन जाने पर तैयार हो गया । शाहे अवध के अतिरिक्त सारा संसार जानता था रेज़ीडेंसी के प्रत्येक कुचक्र में उसके पक्के और मित्र-सम सम्बन्ध थे । क्यों ? भविष्य की काली तस्वीर में अपनी बगावत का मन्द बिन्दु सुरक्षित बनाये रखने के लिये वह दूरदर्शिता से अंग्रेज मित्रों का हमदर्द बना रहना ठीक समझता था । दुःख यह है शाह इसे नहीं समझते । नहीं जानते यह दूरदर्शिता कितने भयानक विनाश की सूचक है । क्या नकी खाँ अपने मोह में पूरे अवध का मोह बेच खाने को आतुर नहीं ? है और अवश्य है । किन्तु कौन शाह को समझाए ? कौन उन्हें इसकी सूचना दे ? वह है कितने लिये सारा संसार भोला और निश्छल है । जो हमेशा दूसरों को अच्छा और भला समझने का मूर्खतापूर्ण निर्णय करते हैं । नकी खाँ तो नकी जिनकी दृष्टि में स्वयं रेज़ीडेंट भी

एक अच्छा मित्र सच्चा हमदर्द और भला सहयोगी सिद्ध होता है।

आज प्रातः की घटना से वज़ीर साहेब के सम्मुख अगर अकेले नकी खाँ की एकमात्र इच्छा का प्रश्न उपस्थित होता तो सम्भवतः वह न मलिका किश्वर के यहाँ जाते और न अधिक परेशान होते। अब नहीं आज से बहुत पहले वह नकी खाँ के हक में अपना ओहदा छोड़ देने के लिये तैयार थे। भरे दरबार में उन्होंने इस प्रकार की घोषणा कर दी थी कि अवध के किसी भी सच्चे मित्र के पक्ष में वह अपनी गद्दी सदैव छोड़ने को उत्सुक हैं। परन्तु नकी खाँ आदर दान से अधिक छीनने या प्राप्त करने के पक्ष में था। उधर शाह ने कुछ असमर्थता प्रकट की और इधर स्वयं नकी खाँ ने अमीनुद्दौला से आग्रह कर डाला कि वह ऐसी अशुभ सूचनाओं से अवध के कलेजे में तीर न मारा करें।

नकी खाँ छोटा दूध पीता बच्चा नहीं था। पासा उलटा पड़ रहा था तो उसने स्वयं इमदाद हुसैन साहेब के दाँव को अपना दाँव बना डालने का निश्चय किया और उसमें वह सफल हुआ। सारे अवध ने उसके फैसले की दाद दी और उसे अवध और अवध के हुक्कामों का सच्चा हमदर्द माना। कैसा कुटिल नीतिज्ञ सिद्ध हुआ नकी खाँ। फिर सहसा सारे अवध में प्रसंग उठ खड़ा हुआ नकी खाँ की पुत्री अलमकु-स्सुलतान शीघ्र ही अवध की बेगम बन जाने वाली है। यह बात निराधार नहीं थी। छीनने और प्राप्त करने के लिये नकी खाँ ने नया दाँव खेला था जिसके अनुमान पर वज़ीर मन ही मन बहुत डरे। लड़की मलिका बने दामाद बादशाह हो तो कौन शक्ति नकी खाँ को वज़ीर बनने से रोक सकेगी? ठीक-ठीक इमदाद हुसैन खामोश रहे। अब उन्हें सन्तोष था। वज़ीर हो जाने के बाद अवध की हुकूमत इस निकाह के बाद उनकी अपनी हुकूमत हो जायेगी। उनकी अपनी लड़की की हुकूमत। और यकीनी तौर पर तब नकी खाँ अवध का सौदा आसानी से करने पर तैयार न हो सकेंगे। शाहे अवध के साथ साथ

उनकी बेटी की किस्मत का फैसला भी खुद उनके हाथ आ जायेगा और वह कोई गलत कदम न उठाने पर मजबूर होंगे। इसलिये वह खामोश रहे। मगर किस्मत को नकी खां का यह दांव भी पसन्द न आया। सुल्ताना उनकी बेटी ने निकाह से साफ इन्कार कर दिया। वह आजाद ख्याल लड़की थी जिसे नकी खां ने मां के बाद बड़े लाड़ प्यार से पाला था। उसने साफ कह दिया वह एक ऐसे बादशाह की बीबी बनने के स्थान पर जिसकी पहले ही अनगिनत पत्नियां हों किसी फकीर की औरत बनना ज्यादा पसन्द करेगी जो अपनी एकमात्र पत्नी के सुख और सन्तोष के लिए अपनी शक्ति भर प्रयत्न करेगा। नकी खां उसे मजबूर न कर सके और फिर एक बार वजारत की कुर्सी के लिये नकी खां को वक्त का इन्तजार करना पड़ा।

आज जो हुआ, कल जो होने वाला था ईसाई लड़की के साथ निकाह के बाद नकी खां कौन साजिश अपनाने की राह देख रहे थे असलियत क्या थी इन सब विचारों से अधिक इसदार खां को भय था अवध के दुर्भाग्य का। नकी खां वजारत के लिये ऐसा करते साधारण बात थी वजारत उन्हें मिल जाती। यह और अधिक साधारण बात थी। लेकिन वजीर जानते थे इस चाल के पीछे महज वजारत की कुर्सी ही लक्ष्य नहीं। पिछली बार एक नये मुता के अवसर पर शाह के विरुद्ध रेजीडेंट ने गवर्नर जनरल को लम्बा चौड़ा विरोध पत्र भेजा था जिसके उत्तर में शाह के पास बड़े शब्दों में शिकायत भेजी गई कि वह सन् १८०१ की सन्धि के अनुसार एक अच्छा शासक सिद्ध होने के लिये वांछित बल पर कोई ध्यान नहीं दे रहे। जैसे अपमानजनक शब्द थे। शाह सलतनत के पूर्व-शासकों ने कदम कदम पर वतन के लिये अय्याशी और मस्ती के दौर में अपने फरायज भुला देने के लिये अमर बन रहे हैं। यह मुता नहीं किया जा रहा दावत दी जा रही है अवध की बरबादी को। एक पलंग के ऊपर शाही अवध का लाखों रुपये साल

खर्च करते होते हैं जो रियाया के लिये किसी अच्छे काम में खर्च किये जा सकते हैं। शाह इस मामूली बात पर कभी ध्यान नहीं दे पाते। और न जाने क्या गया। लेकिन शाह भी अड़ गये। उन्होंने गवर्नर जनरल को रूस कर जवाब भेजा। यह उनका निजी मुआमला है। निकाह से पहले निकाह के बाद होने वाले फिजूल खर्च का ग़लत बढ़-चढ़ाया मसाला शायद रेज़ीडेंट को चैन नहीं देता। अवध की रियाया खुश है या नाखुश यह गवर्नर जनरल खुद यहाँ आकर देख सकते हैं। गवर्नर जनरल का जवाब न मिला। शादी हो गई। नयी मलिका ने महलों में कदम रखा। शाह पहले के समान काम काज करते रहे। सचमुच हुकूमत में कहीं कमज़ोरी पैदा न हुई। बात टल गई

पर इस बार ऐसा नहीं हो सकेगा। लड़की पर फरियादी अभी टेसू बहाने वाली कोई गैर मज़हब और मनचाही लड़की शाही हरम में कदम बोसी करे तो न सिर्फ मुल्ला मौलवियों में विद्रोह की अग्नि प्रज्वलित होगी बल्कि स्वयं रेज़ीडेंट को बहुत कुछ कहने का अवसर मिल जायेगा। यह है अवध का शानदार बादशाह जो हुस्न की चाह में लड़कियों का चुनाव करते वक्त न मज़हब देखता है न खानदान न नाम देखता है और न इज़्ज़त और जिसके दरबार में हर ऐरी गैरी नत्थू खैरी लड़की की हर फरियाद के जवाब में खुद बादशाह का शाही हरम का दरवाज़ा खोलने की नम्रता रहता है। बदनामी और बदनामी ! शायद नबी भी अपनी हार से थक कर रेज़ीडेंट से मिल गये हों और इसी फजीहत से शाही अवध की बेइज़्ज़त करना चाहते हों। हमदार भी को नहीं छोड़ा था। यही राज़ अख़्तर पिया को आज सुबह से बार बार उनकी आँखों के आगे घूमता रहा। बात बहुत बुरा है। पहले के वक्त का गवर्नर जनरल को सही और मुनासिब जवाब देकर उसका मुंह बन्द कर दिया गया था मगर इस बार क्या जवाब दिया जायेगा, जब सवाल पैदा होगा कि क्या वाजिद शाह ने किसी

ऐसी लड़की से निकाह किया है जो न मुसलमान है और न हिन्दू, जो न किसी अच्छे खानदान की है न किसी बड़े बाप की बेटी। बल्कि जिसकी नकली मोहब्बत का दम भरते उसकी माँ ने बादशाह के चलते हुए काफले को रोक कर दिया था। भला क्या जवाब होगा इसका ? यही कि कुछ नहीं। शाह अवध मूर्ख है या फिर है ऐय्याश बदचलन और हुकूमत करने के बिल्कुल नाकाबिल ! ठीक वैसे जिसके खिलाफ सन् एक की सन्धि में उस समय के ब्रिटिश नीतिज्ञों ने स्पष्टोक्ति की थी कि ऐसे शासकों के तख्तनशीन होते ही कम्पनी सरकार सचमुच मजबूर हो कर अवध की हुकूमत अपने कब्जे में ले लेगी। आह ! क्या वजीर इमदाद हुसैन के जिन्दा रहते ऐसा दिन कभी आयेगा ? कभी अवध की हुकूमत अवध के सच्चे हाकिमों से निकल कर झूठे और फरेबी व्यापारियों की टट में छिप जायेगी ? हाँ। नकी खाँ यही चाहते हैं और मलिका किश्वर ने इसी की रोकथाम का उत्तरदायित्व वजीर को सौंपा है। देखना यह है जीत होगी तो किसकी।

नकी खाँ की बेटी अख्तरमहलुस्सुल्तान जितना अपने पिता को समझती थी उतना ही वजीर इमदाद खाँ और अवध के बादशाह वाजिद अली शाह को भी।

उसे किसी ने बताया नहीं किन्तु अपने और शाह के मुता का प्रसंग उठते ही वह तुरन्त भाँप गई इसके पीछे उसके पिता की कौन सी मनोवृत्ति काम कर रही है।

अवध की भूमि पर उसका जन्म हुआ था लखनऊ के जर्रे-जर्रे में उसे गहरा लगाव था अतः अपने लोभी पिता के हाथों अवध की अस्मि-रत के चाबुक से हुकूमत को मर्माहत होने से बचाने के लिये उसने विवाह से साफ इन्कार कर दिया। कारण यही था। वह इमदाद ख

जैसे योग्य व्यक्ति के हाथों हुकूमत की बागडोर छीन कर नकी खां जैसे स्वार्थी और अयोग्य व्यक्ति के हाथों सौंपने में तनिक सहायक नहीं होना चाहती थी। उसने बहाना किया वह बहुपत्नीक पति की विवाहिता नहीं होना चाहती हालांकि यह एकदम निर्मूल था चूंकि मुगल मानी तहजीब के अनुसार उच्च-मुस्लिम परिवारों में कोई एक घर ऐसा न होगा जहां पति एक और पत्नियां अनेक न हों। उन दिनों यह लखनऊ की शान थी कि साधारण जन-समाज में शाह की देखा देखी अनेक पत्नियों और उप पत्नियों का स्थान बना रहे।

सुल्ताना इमदाद खां को बहुत मानती थी। देशप्रेम की असाधारण अनुभूति से उस बूढ़े वजीर के प्रति अनायास मन में आदर का भाव उत्पन्न हो चुका था जो नकी खां की अनर्गल शिकायतों के बावजूद सुल्ताना के हृदय में दिन प्रति दिन पनपता रहा। यूं वजीर नकी खां के सब से बड़े प्रतिस्पर्धी थे वजारत पर उन्होंने नाम के समान अपना धन कमाया हुआ था किन्तु नकी खां और उनके परिवार में आना जाना और मेल मिल्लत थी। नकी खां ऊपरी भाव से कदाचित यह प्रकट नहीं होने देना चाहता था कि उसमें इमदाद खां के प्रति कोई दुर्भावना है। सुल्ताना से वजीर अक्सर मिला करते और राजनीति की बहुत सी बातें हुआ करतीं। नकी खां उस समय उपस्थित रहते या अनुपस्थित होने पर सुल्ताना अपनी तीक्ष्ण विचार शक्ति से बूढ़े वजीर का दिल जीत लेती। जिस समय उसके विवाह का प्रसंग उठा, नकी खां के अनेक प्रयत्नों के बावजूद सुल्ताना तत्पर न हुई, तब इस बार वह नकी खां की सिफारिश पर उसे मनाने गये। उस समय सुल्ताना का अन्तर्मुख तपती हुई भाप के समान यौवन के प्रेम में बह उठने लगा और उसने जो कुछ कहा वजीर उससे विमुग्ध रह गये। वास्तव में साधारण लड़कियों के समान नारी हृदय का बोध सुल्ताना में भी कम नहीं था किन्तु उसके पीछे जिस भावना के अन्तर्गत सुल्ताना

के लिये एक बार उसने अस्वीकृति देकर सदा के लिये प्रसंग समाप्त कर दिया था। एक बार फिर वज़ीर के मुख से वही बात सुनी तो सुल्ताना सहसा अपने सौन्दर्यशाली मुख से अपनी चिन्ता व्यक्त किये बिना न रह सकी।

वज़ीर बोले 'तुम अच्छी तरह जानती हो बेटी शाह के साथ निकाह में तुम्हारे इन्कार की वजह क्या थी। तुम अवध से मोहब्बत करती हो। इस सरज़मीन के लिये तुम्हारे दिल मे बड़ी से बड़ी कुरबानी करने के जज़बात मौजूद हैं। उन्हीं जज़बात का वास्ता देकर मैं तुमसे तुम्हारा कौल मांगने आया हूँ। वादा करो तुम शाह से मुता करने पर अब इन्कार नहीं करोगी। अगर यह कुरबानी है, तो खुशी इस पर तैयार हो जाओगी।"

'नहीं' सुल्ताना ने दृढ़ता से उत्तर दिया "गुस्ताखी मुआफ़ बन्दा जान मैं कतअन ऐसी कुरबानी के हक में नहीं जिससे खुद अपना घर तबाह हो। मेरी तरह आप भी जानते हैं, इस मुता से अब्बाजान का मुद्दआ क्या था। क्या आप की ख्वाहिश है उसे पूरा होने दिया जाये? अवध की हुकूमत एक काबिल अफसर से महरूम कर दी जाये। फिरंगी अफ़सरान के एक गुमाश्ते के हाथ यहां की नेकी बदी की किस्मत सौंप दी जाये? नहीं मैं ऐसा कभी न कर सकूंगी।"

तुम हालात से नाक़िफ़ हो सुल्ताना बेटी। नहीं जानती यहां क्या कुछ होने वाला है। वज़ारत के लिये नहीं अब खुद शाही खानदान की खुशहाली और हुकूमत की बेहतरी के लिये तुम्हें यह कुर बानी देनी होगी।"

'क्यों भला बुजुर्गवार? मैं समझी नहीं।"

'खुदा जाने यह क्या साज़िश है और कौन इसे समझ सका है। फिलहाल हमारे सामने ऐक ऐसी किस्तान लड़की का मसला दरपेश है जो तुम्हारे वालिद साहेब के बकौल शाहे अवध की मोहब्बत में

पिछले एक साल से शाही जुलूस के रास्ते में आँखें बिछाये उनका मजरे इनायत की ख्वाहिशमंद थी। आज उसका सब्र पूरा हुआ और जल्द शाही हरम का दरवाजा फिर एक नयी मलिका के लिये खुल जायेगा। तुम समझीं इसका मतलब क्या है?"

"नहीं अब्बाजान।'

'शायद नकी खाँ इस बार वजारत की लालच से कहीं आगे बढ़ कर फिरंगी रेजीडेंट के इशारों पे नाचने का फैसला कर चुके हैं। यह लड़की हरम में पहुँचने पर क्या कुछ करेगी खुदा जाने मगर जाहिर है, नकी खाँ शाहे अवध को किसी नयी मुसीबत में उलझाने की तैयारी कर रहे हैं।"

"यह अब्बा हुजूर का हुक्म है।'

एक बेटी के नाते तुम्हें ऐसा कहने का कोई हक नहीं पहुँचता। नकी खाँ तुम्हारे खाविंद हैं और हमेशा तुम्हारी और अपनी भलाई के बारे में सोचते होंगे।'

"हम दोनों की भलाई के बाद कुछ और भी है अब्बाजान जिसके लिये उन्होंने कभी सोचना गंवारा नहीं किया। पूरे अवध की बेहतरी क्या अब्बा हुजूर के कन्धों पर उसका कोई बोझ नहीं?'

'शायद यही बोझ है जो वह न सिर्फ अपने बल्कि शाही कन्धों से भी उतारना चाहते हैं। बहरहाल बेटी अवध को तुम्हारी कुरबानी मंजूर है। मरियम हरम में आ रही है। उसकी मोहब्बत से शाहे अवध पहले ही मुतास्सिर हैं। खुदा न करे, मरियम के दिल में गुनाह हुआ तो वह वाजिद अली शाह को बुराइयों में गुमराह कर जायेगी। बड़े बड़े मसले दरपेश हैं। शाह को सही मश्वरा देने वाली एक भी मलिका शाही हरम में मौजूद नहीं। कहीं यह मरियम उन सब में ऊपर उठ गई तो गजब ही हो जायेगा। उसके खूबसूरत और हसीन चेहरे की आग में शाहे अवध के फैसले खाम और मगहूम साबित हो सकते हैं। उसके

तीन

शाह के इस मुता की चर्चा सारे लखनऊ में ज़ोर शोर से उठ खड़ी हुई। लोग हैरान और परेशान थे। एक मामूली लड़की अचानक आये और शाह को इतना प्रभावित कर ले कि वह चार दिन तक बराबर उसके महल में पड़े रहें, और सरकारी काम की तरफ से मुंह मोड़े रहें उनके विचार का विषय था। आवाजें उठीं किन्तु ज़ोर न पकड़ सकीं। आन्दोलन का रूप लेने से पहले-पहले मल्का किश्वर का ऐलान निकला जिसमें उन्होंने मुता पर अपनी रज़ामन्दी ज़ाहिर कर दी। नगर वज़ीर की सख़्ती और इन्तज़ाम में तत्परता दूसरा कारण थी जिससे लोगों का विक्षोभ साकार होने से रह गया।

लेकिन कुछ समझदार व्यक्ति ऐसे थे जिन्होंने शाह का यह आचरण विलासिता की ओर नया कदम मान लिया और मन पर भार प्रतीत किया। वे बेचारे नहीं जानते थे असलियत क्या है। बादशाह की अकेली जान जिसमें ज़माना का गर्म खून और जिसकी बुद्धि से सब कपट कोसों दूर रहे, आसानी से किसी के चंगुल में उलझ सकता है यह नहीं समझ सके। उनमें मुख्य मियां खान भी थे। वही मियां खान जिन्होंने सवारी के समय चौबे जी के सम्मुख शाह के विरोध में स्पष्ट रूप से अपना दृष्टिकोण प्रकट कर दिया था।

मियां खान का मकान सराय मोहल्ले के आखिरी हिस्से में था। वह साधारण स्थिति के आदमी थे। उनके बुजुर्ग अवध के नवाबों की खिदमत करते-करते परलोक सिधारे थे। कुछ महीने पहले खुद मियां खान शाही बावर्चीखाने में मुलाज़िम के ओहदे पर काम करते थे। फिर अचानक एक दिन बादशाह वाजिद अली के हुक्म से वह

रेज़ीडेंसी में तैनात किये गये। रेज़ीडेंट ने अपने हिन्दोस्तानी मेहमानों की तवाज़ेह के सिलसिले में यह एक भारी मुसीबत बताई थी कि उनके पास कोई काम का आदमी नहीं जो बावरचीख़ाने की देख-भाल कर सके। मियाँ जान को शाही आज्ञा पर इस नयी नियुक्ति का स्वागत करना पड़ा। किन्तु कुछ ही दिन बीतने पर उनका मन रेज़ीडेंट से ऊब गया। वह बहुत बदमिज़ाज साबित हुआ। अवध के वासियों के लिये उसके दिल में न कोई मोहब्बत थी और न इज़्ज़त। यहाँ तक कि शाह के लिये अक्सर ऐसे शब्दों का प्रयोग कर बैठता जो मियाँ जान को बुरे लगते। वह अभी सोच रहा था कैसे वापिस महल पहुँचे कि एक दिन भोजन के समय किसी मामूली बात पर रेज़ीडेंट से झगड़ा हो गया। वास्तविकता शाही मानापमान की थी। मियाँ जान से सहा न हुआ और उसने रेज़ीडेंट को मुँह तोड़ जवाब दे दिये। परिणाम स्वरूप शाह तक उसकी शिकायत पहुँची और उसे नौकरी से निकाल दिया गया। तब से वह बेकार घर बैठा है। पत्नी का बहुत दिन पूर्व स्वर्गवास हो चुका था एक जवान लड़का था जिसे उसने मर-मर कर तालीम दी थी और अब उसी के साथ अपनी जमा पूँजी के सहारे गुज़र-बसर कर रहा था।

लेकिन मियाँ जान को नौकरी से निकाले जाने पर ज़्यादा विक्षोभ नहीं था। यह कहना एकदम ग़लत होगा कि वह इस घटना से शाह का शत्रु बन बैठा हो। नहीं बल्कि अपने शाह से वह अब भी मोहब्बत करता था और उस प्यार में दुगनी और चौगुनी बढ़ोतरी उस समय से हो गई जब रेज़ीडेंसी-काल में उसने फ़िरंगी दृष्टिकोण का कुछ-कुछ अनुमान कर लिया। वहाँ उसे प्रतीत होता रहा था जैसे यह लोग शाहे अवध के सब से बड़े दुश्मन हों और उनके ख़िलाफ़ कोई भारी षड्यन्त्र करने की तैयारी कर रहे हों। अपने बादशाह की बरबादी के बारे में तो सोचना तक उसके लिये गुनाह था। लेकिन जब

वह देखता कि उनकी तरह उनका बादशाह इस बदमाश पोलेगावी से वाकिफ़ नहीं है तो वह रुष्ट हो जाता। हर उस शाही ऐलान या शाही आचरण पर उसे क्रोध आता जिसमें चट-सी मसालवाली से शाह को गहरा नुकसान पहुँचाने की सम्भावना रहती। उस दिन सवारी के समय भी इसी प्रेरणा से वह चीफ़ जी को अंगवर देने पर उतावल हो गया था और मरियम के निकाह के समाचार पर भी वह उसी तरह आग बबूला हो उठा जिस तरह भट्टी में प्रवेश करते ही चमकदार लोहा भयानक तरल के रूप में हाथ पैर झुलसाने की तैयारी करता है।

चोबे जी मिर्ज़ा खान के पड़ोसी थे। फिरंगियों से उन्हें विशेषतया इसलिए घृणा थी क्योंकि उनके आचरण हमारे सनातन से चले आने वाले आचरण से सर्वथा विपरीत थे। और शाह से प्रेम होना उनके लिये भी आवश्यक था चूंकि वह और उनके माता-पिता सब अवध की धरती पर जन्म लेने का गौरव मानते थे। फिर भी भयभीत रहा करते कि खुलेआम किसी पक्ष का समर्थन या विरोध करना उनकी सामर्थ्य से बाहर था।

मरियम के बारे में मिर्ज़ा खान और चोबे जी में बहुत से तर्क वितर्क हुए थे। एक का मत था बादशाह बालिग होने का पट्टा है तो दूसरा उसी पक्ष से इसका समर्थन करता किन्तु कहता कि जनता को शाही जीवन पर टीका टिप्पणी करने का कोई अधिकार नहीं। मिर्ज़ा खान की दृष्टि में किसी ईसाई महिला को मुसलमान बना विवाह कर लेना न केवल राजनैतिक अपराध था वरन् सामाजिक भी क्योंकि इस संमति से उत्पन्न होने वाली औलाद का रक्त दोनों संस्कृतियों के मिश्रण से एकदम दूषित और घृणास्पद हो जायगा। चोबेजी का कहना था ईसाई हो जाने पर भी भारतीय स्त्रियों के रक्त में भारतीयता की पवित्रता शेष रहेगी और रक्त दूषित मानना बेकार है। कहने का तात्पर्य यह कि मिर्ज़ा खान ने पूरी शक्ति से इस मुद्दा का विरोध किया और चोबे जी

ने अपनी आदत के अनुसार इस विरोध को अपने पीढ़िय के बल से समर्थन करने के बावजूद ऐसा कोई शब्द स्वीकार नहीं किया जो उन्हें शाह या नयी मलिका सुल्तान मरियम की दृष्टि में अभियुक्त घोषित करा सके।

एक और व्यक्ति थे जिन्होंने इस मुता का विरोध किया। वह थे बैग्सन। शाही मुलाज़मत में किसी ओहदे पर थे। लेकिन इसके साथ वह अपना व्यापार अलग करते थे। वर्षों से लखनऊ में रह रहे थे। वाजिद अली शाह के ज़माने में उन्होंने 'सैन्ट्रल स्टार' नामी एक अखबार निकाल लिया था। इसके अतिरिक्त वह शाह के सच्चे हमदर्द और मित्र थे मरियम के निकाह पर उन्होंने शाह को समझाने का प्रयत्न किया। अमीनुद्दौला को जिस दिन शाह ने अपना आदेश दिया था जिसमें मरियम का विवाह और उसके इन्तज़ाम आदि की तफ़सील थी उसी दिन अमीनुद्दौला बग्सन के पास दौड़ आए। वज़ीर बैग्सन की नेकनीयती और इन्सानियत जानते थे। सोच विचार के बाद बादशाह को रोकने का एक यही रास्ता उन्हें दृष्टिगोचर हुआ। बैग्सन वज़ीर की शंका पर सहमत हो गए और अगले दिन शाह से मिलने आए। शाह के साथ शतरंज की बाज़ी खेलने बैठे और उसी वक्त इसका ज़िक्र किया। बादशाह बैग्सन के प्रतिवाद को आरम्भ में मज़ाक समझते रहे, परन्तु जब बैग्सन ने गम्भीरता के साथ शाह से निवेदन किया कि वह इस मुता के द्वारा अंग्रेज़ों को कुछ कहने का मौका न दें तो शाह अवश्य क्रुद्ध हो गए। बैग्सन की मरियम वाली बात पीछे रखकर वह बैग्सन के ऊपर आरोप लगाने लगे कि उन्होंने क्यों बादशाह अवध की तौहीन यह कह कर की कि रेज़ीडेंट उनके निजी मुआमलात में दख़ल देने की जुर्रत कर सकता है। बैग्सन के पास इसका कोई उत्तर न था। फिर भी उन्होंने समझाना चाहा 'एक बादशाह के लिए क्या कुछ बातें निजी होते हैं क्या नहीं इसकी तफ़्सील मोर मजेस्टी को समझाना नामुमकिन

है। आज न सही लेकिन कल यह मुमकिन है रेज़ीडेंट गवर्नर जनरल को जिस वक्त आपके खिलाफ कुछ रिपोर्ट लिखे तो उसमें एक यह वाक्या भी शामिल कर ले कि बादशाह ने एक ऐसी ईसाई लड़की से मुता कर लिया जो न तो आला खानदान से ताल्लुक रखती है और न ऊँची तालीम से मुज़ैन है।"

बादशाह बोले—'मिस्टर बैंगम किसी लड़की की मोहब्बत की परख उसके ऊँचे खानदान से ताल्लुक रखने पर ही की जाती तो हम आपकी बात पर तवज्जोह करते। लेकिन हमारा ख्याल है जहां पर वफ़ा और मोहब्बत का सवाल पैदा हो वहां किसी का खानदान नहीं उसकी अपनी पैरव और उसकी अपनी शख्सियत काम देती है। अगर हम की मोहब्बत ने हमें वाकई मुतासिर किया है, हम तसलीम करते हैं और अब हमारा यह फैसला किसी सूरत बदल नहीं सकता।'

इतने ठोस उत्तर के बाद बैंगम के लिए आगे का रास्ता बन्द था। वह उठ कर चले आए। लेकिन उन्होंने मुता होने से पहले दो बार अपने अखबार में इस मुता के सम्बन्ध की अपनी टिप्पणियाँ सम्पादकीय के रूप में लिख डाली। बादशाह का खबरनवीस रोज़ नियम से बादशाह को खबरें सुनाया करता था। उन्हीं खबरों में बैंगम के अखबार की चर्चा थी। शाह सुनते ही आग बबूला हो गए और उन्होंने फ़ौरन बैंगम को अपने हुज़ूर में पेश किए जाने का हुक्म दिया। बैंगम इसकी आशा कर रहा था। वह शान्ति से शाह की बातें सुनने की प्रतीक्षा करने लगा। शाह ने जवाब मांगा तो बड़ी शाइस्तगी से जवाब दे दिया—"मेरी नज़र में जो चीज़ जँची है मैं अपने अखबार में उसे वैसी ही छापा करता हूँ। और मैजेस्टी उससे खफ़ा हुए इसका मुझे सख्त अफ़सोस है।"

बादशाह ने सवाल किया 'और अपनी ताक़त से हम आपका अखबार बन्द करवा सकते हैं मिस्टर बैंगम आप यह भी जानते होंगे।"

'जानता हूँ।' बैंगम ने कहा 'लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि

मैं सच्चाई से मुंह मोड़ लूंगा। आप मेरे बादशाह नहीं मेरे दोस्त भी हैं। मैं अपनी जानकारी में आपको ऐसा कोई काम नहीं करने दूंगा जो आपकी शान के खिलाफ हो।"

वाजिद अली शाह इस उत्तर के बाद कुछ समय शान्ति से सोचते रहे और तब अपने स्थान से उठ कर स्लीमन के करीब आ गये। उन्होंने इस विदेशी मित्र को अपने अंक में भर लिया और मुस्कराते हुए कहने लगे "हो सकता है हम गलती पर हों और मरियम बेगम के बारे में हमारा फैसला गलत हो। लेकिन दोस्त तुम जैसे वजीरों पर हमें ताउम्र फख्र रहेगा। तुम हमारे सच्चे हमदर्द हो। कुछ देर के लिये हमारे सिर शैतान सवार हो गया था और हम तुम पर खफ़ा हो गये थे। मिस्टर स्लीमन हमें इस गुस्ताखी के लिए मुआफ करना।"

स्लीमन की आंखों में आंसू छलकने लगे। वह शाह के हाथों को अपने हाथों में ले जोर-जोर से हिलाने लगे। इस प्रकार शाह का क्रोध समाप्त हो गया मगर मरियम की समस्या ज्यों की त्यों रही। बादशाह ने स्लीमन को बता दिया अब वह अपना फैसला नहीं बदल सकते चूंकि इसका बाकायदा ऐलान हो चुका है। स्लीमन नेक और शरीफ बादशाह की इस दलील पर नतमस्तक हो गये और कोई उत्तर न बन पड़ा। अवसर मिलने पर उन्होंने अमीनुद्दौला से भी कह दिया "अवध के शहंशाह के खिलाफ शायद अल्लाहताला भी साजिश करने का फैसला कर चुका है वजीरे आला। उनकी सबसे बड़ी बदकिस्मती यही है कि वह बावफा नेक और भोले हैं। दुनियां उनको तबाह करने के लिए चाहे जैसा धोखा क्यों न दे और वह खामोशी से सब कुछ सिर्फ इसलिए देखने पर मजबूर रहेंगे कि उन्हें किसी पर नाएतबारी नहीं है।

वज़ीर खुद इस तथ्य से भलीभांति परिचित थे। अतः उन्होंने अपना सिर झुका लिया और स्लीमन के कथन की स्वीकृति दी।

जुमा के बाद भी दावत में रेजीडेंट और बादशाह के सभी दोस्त

उपस्थित हुए, लेकिन स्लीमन ने उसमें जाने से इन्कार कर दिया। और इसके बाद आगे चल कर चार-पांच ही दिन बीतने पर जब शाह ने परिश्रम का प्रभाव अपने आप पर बखूबी स्वीकार कर लिया और बिना कारण शाही काम-काज से छुट्टी लेकर बैठ रहे तो स्लीमन को बहुत ज्यादा दुख हुआ। उन्होंने 'पैन्टूब स्टार' का खाका खींचा फिर बादशाह की कमजोरी पर लिख डाला। इसकी सूचना शाहे अवध तक पहुंची। लेकिन इस बार उन्हें क्रोध आने के स्थान बड़े जोर की हँसी आई। और उसके ही दिन वह बाकायदा छत्तरमंजिल जाकर अपना काम-काज देखने लगे।

मिर्ज़ा साहब के साहिबज़ादे का नाम इसरत था। पिता की जमा-पूंजी के सहारे आराम और ऐश की जिन्दगी गुज़ारना उनका काम था। मौलवियों के चक्कर में बहुत दिनों कुरानेपाक के कलाम रटने के बाद जनाब का रुझान अंग्रेजी तालीम और अंग्रेजी सभ्यता की ओर हुआ और आपने एक अंग्रेज से अटपट दो-चार पुस्तकें पढ़ डालीं। लेकिन इधर भी ज्यादा दिनों तक आकर्षण नहीं टिका। यह वह दिन थे जब शाहे अवध के कारण लखनऊ में शेरो शायरी और संगीत व नृत्य का बोलबाला था। गली-गली और घर-घर शायर मौजूद थे और हर चौराहे पर पेशेवर नाटक मंडलियों के दफ्तर थे जो बुलाने पर दूर-दूर अपने फन की दाद पाने जाती रहती थीं। शायरों, तवायफों और नर्तकियों को भी भरपूर बढ़ावा मिल रहा था। इसरत साहेब को जिस मंडली को भी इसी का शौक चर्राया। पहले शेरो शायरी का दौर रहा और अन्त में नाच गाने की प्रवृत्ति पैदा हुई। प्रारम्भ हुआ तवायफों के नाचने से। फिर एक नाटक मंडली की नींव डाली गई। नाम पड़ा इशरत नाटक कम्पनी। पढ़ा लिखा तो था ही था इस मंडली के चक्कर में धीरे धीरे

गूंजा जाने लगा। प्रतिदिन इसका प्रभाव इस मित्र मंडली पर पड़ने लगा। धीरे धीरे अवस्था यहाँ तक पहुँची कि घर से दो-दो चार-चार दिन गायब रहने के बाद रियाज़ किया जाने लगा। इशरत ने उसके सराहा। और मानना पड़ेगा कुछ दिनों बाद शाहाना नाटक मंडली का नाम लखनऊ में प्रसिद्ध हो गया। इशरत साहेब खुद कोई काम नहीं करते थे। किन्तु उन्हें निर्देशक कहा जा सकता है। मियां जान उनके पागलपन से तंग आ चुके थे। कई बार काम धाम करने के लिये कहा, लेकिन उनका शौक न कम होना था और न हुआ। अब हालत यह हो गई थी कि सरेशाम वह शाहाना नाटक मंडली के दफ्तर तशरीफ ले जाते थे और रात के तीन-तीन चार चार बजे तक वहीं रहा करते। फिर घर आकर दोपहर एक बजे तक सोया करते। मियां जान उनके इस प्रोग्राम से एकदम परेशान आ चुके थे।

उस दिन मियां जान चौबे जी से तर्क-वितर्क के बाद बहुत झल्लाये हुए घर आये। शाम हो चुकी थी। इशरत इस वक्त तक घर से चला जाया करता था। आज खुशकिस्मती से घर मौजूद था। उसके साथ बाहर के बैठकखाने में एक सांवला नौजवान और बैठा हुआ था। उसके हाथ में अंग्रेजी का अखबार था। दोनों कुछ विचार विमर्श कर रहे थे जब मियां जान ने बैठकखाने में प्रवेश किया।

दूसरा नौजवान जिसने बिलकुल रईसज़ादों की पोशाक पहन रखी थी और हैट हाथ में रखा था मियां जान को देखते ही अपने स्थान से उठ खड़ा हुआ। लेकिन मियां जान उसकी शक्ल से चिढ़ गये। उन्होंने एक बार उसे घूरा और तब इशरत की ओर क्रोधपूर्ण दृष्टि डालते हुए पूछा "क्या आज जनाब नाच गाने का रियाज़ मकान पर ही करने का इरादा कर रहे हैं जो इस नचकइया शिहाब को बुलवा लिया है?"

शिहाब नाम था उस नौजवान का जो इशरत के साथ बैठा हुआ था। मियां जान की बात सुनते ही उसके चेहरे पर सफ़ेदी सी आ गई और

क्षण भर चिमुट पड़े रहने के बाद इशरत के उत्तर देने से पहले पहले वह जल्दी से कहने लगा 'नहीं नहीं चचा जान हम तो वैसे ही बातें कर रहे थे।"

इशरत ने भी उसका समर्थन किया "हम लोग तो एक अकरी मसले पर गौर कर रहे थे अब्बा हुज़ूर। और अब तो सिराज ने खुद नाचना गाना छोड़ दिया है।

"बड़ी गलती की। मियां खान ने व्यंग्य किया। "भला यह काम कोई छोड़ने का है। च च। अरे अहो बंदवाहे नाचना खुद हीजड़ों की तरह रक्स और नाटक में मुर्ख़रू हासिल करते हों वहां उनकी रिआया पीछे क्यों रहे? सिराज बेटा खुदा के लिये तुम नाच गाना मत छोड़ देना। हां मेरी एक दरख्वास्त ज़रूर है। मुझ पर इतना करम करो कि इशरत को इस बहुदा शौक में मत फांसो। मैं नहीं चाहता काम-धाम करने की जगह यह भांडों और नचनियों की तरह नाचता फिरे।"

इशरत ने रहस्यपूर्ण दृष्टि से अपने मित्र की ओर आंखों ही आंखों आश्वासन दिया और कुछ मुस्कुरा कर पिता से बोला "आप भी कमाल करते हैं अब्बा हुज़ूर। नाच-गाना कोई बुरी बला नहीं है। यह तो एक फन है। ऐसा फन जिसकी कद्र बड़े-बड़े नवाब करते हैं। आप देखि येगा एक दिन हमारी मंडली हिन्दोस्तान के पहले नम्बर पर कायम होगी और हम इससे लाखों रुपए का फायदा उठायेंगे।"

"बस-बस बर्खुरदार, बस।" मियां खान क्रोध प्रकट करते हुये "खुदा के लिए ज्यादा डींगें मत हांको। मैं बहुत जल्द तुम्हारा इन्तजाम किए देता हूं। अब मैंने फैसला कर लिया है। या तो मैं रहूंगा या तुम्हारी नाटक मंडली और तुम्हारे दोस्त।"

मियां खान इतना कहने के बाद भीतर जनाने में चले गए। बीवी के बाद उनके रिश्ते की एक बूढ़ी बहन थी बस और वेसहारा थी उनके

पास जाकर उनकी देखभाल करने लगी थी। भीतर उस बातून में वह देर तक इशरत और सिराज के बारे में गुनगुनाते रहे। इशरत चुपचाप रोता हुआ सब कुछ सुनता रहा।

इसी बीच बैठकखाने में चार पाँच नौजवान और आ गये। इशरत ने उनका इस्तकबाल करते हुए उन्हें समझा दिया कि किस तरह जनाब वालिद साहब चौबे जी के साथ अपनी बैठक इतनी जल्दी खत्म कर अचानक ही आ टपके हैं और अभी अभी सिराज की खैर-खबर लेने के बाद भीतर गए हैं। मतलब यह कि वह सब खामोश रहें और ज्यादा धूम धड़ाका न करें। आनेवाले मित्रों ने इसे स्वीकार किया और तब उनमें से एक ने इशरत से कहा "हम यहाँ बहस नहीं आए हैं। इस अखबार के बारे में तुम्हारी राय जानना चाहते हैं। तुम कहो तो फिरंगियों की तरह किसी गरीब बादशाह की हुकूमत खत्म कर इस शहर को हज़म कर जायें और कहो तो उस बेवकूफ अंग्रेज से जाकर सवाल करें कि वह हिन्दोस्तानी तहज़ीब का अलिफ बे पे भी नहीं जानता तो उसके मामलों पर अपनी कैंची जैसी ज़बान क्यों चलाता है।"

"जवाब नहीं प्यारे असलम।" एक दूसरे साथी ने संबोधन किया। इस पर बहुत रोकते रोकते भी सब ने मिल कर ठहाका लगा दिया। इशरत ने बार २ उस दरवाज़े की तरफ देखा जिधर उसके वालिद हुज़ूर तशरीफ ले गए थे। और कुछ पल बीतने न बीतने मियाँ जान वहाँ तशरीफ ले आए। मगर इस वक्त सिराज के अलावा एक हुजूम और जमा था। वह जैसे आए वैसे चले गए। इशरत शर्मिन्दा होगया। उसने अपने साथियों की ओर सम्बोधन कर कहा "राय जो दोस्तों की है वही अपनी है। बहरहाल 'हर्ने स्टार' या 'सेन्ट्रल स्टार' का जो अखबार है बहुत बुरा है और आजकल मालिक कम्पनी का नाम डुबोने। तैयारियाँ कर रहा है।"

"यही तो बात है।" सिराज बोला "हमने तो मर-मर कर

और कोई प्रतिवाद न पाया तो सिस्टी से कहने लगा "जनाब हम अखबार के सिलसिले में ही बैस्टन साहेब से मिलना चाहते थे।"

"तब फरमाइये, मैं आपकी क्या खिदमत कर सकती हूँ?"

"अजी बात यह है कि " सिहाब अटक अटक कर कहने लगा "कि 'हम लोगों ने अभी कुछ दिन हुए कम्पनी बाग के सामने वाले मैदान में एक नाटक खेला था किरसन लीला। बड़ी मेहनत की थी हमने उसमें। और आपने अपने अखबार में उसके बारे में मेरा मतलब है कि

सिहाब कहते कहते कभी रुक्मा और सिस्टी को देखने लगता और कभी अपने साथियों की तरफ आँखें उठा देता। उसकी ज़बान से जैसे बातें नहीं निकल रही थीं। सिस्टी बड़ी दिलचस्पी से उसकी तरफ आँखें गड़ाए हुए थी। इससे सिहाब का हौंस और भी जाता रहा था। रफ़्तर ने जब यह कैफियत देखी तो सिहाब को डाँटता हुआ सिस्टी को अपनी ओर आकर्षित करने के लिए कहने लगा 'जनाब सिहाब साहेब खुदा के लिये आप अपनी ज़बान को लगाम ही दें तो बेहतर होगा। हाँ मिस साहबा इजाज़त हो तो मैं अर्ज़ करूँ कि हम लोग यहाँ क्यों तशरीफ लाये हैं। हम आपके वालिद साहेब से दरयाफ्त करना है कि उन्होंने किरसन जी के बारे में कभी कुछ पढ़ा भी है या नहीं।"

लड़की सुन कर मुस्कराई और बोली—"जनाबमन! गुस्ताखी मुआफ़ हो तो मैं याद दिलाऊँ कि अखबार का सब काम मैं करती हूँ। रहा किरसन जी के बारे में कुछ पढ़ने का तो आपकी इजाज़त से अर्ज़ करना होगा कि सवाल पूछने से पहले आप कुछ कृष्ण के नाम का सही बोलना सीख आते तो ज्यादा मुनासिब होता। आप को शायद यही शिकायत है कि हमारे अखबार में उनकी बुराई क्यों छापी गई है?"

है उसने इसका इस्तेमाल किया है जिस तरह हमारा बादशाह करता है। दिल बहलाने के जरिये जिससे आदमी खुश और ताजा हो सकता था अब हम सब की कमजोरी बनते जा रहे हैं। यही थी मेरी परेशानी मेरी रिपोर्ट जो मेरे अखबार की इस खबर से जाहिर हुई। बरखुरदार—बुजुर्गों का कहना है हंसी-खुशी नाच रंग गाना-बजाना उसी वक्त अच्छा लगता है जब कोई खुशी हो। और आजकल अवध पर चारों तरफ से मुसीबत छाई हुई है। इसके दुश्मन मुंह बाये इसकी तरफ देख रहे हैं। हम ऐसे मौके पर मस्ती से नाचते झूमते नाटकों में उलझे रहें तो क्या हश्र होगा। सिर्फ हमारी और हमारे मुल्क की बरबादी—"

"हजरत" सहसा हजरत की जुबान से निकल गया 'आप कहना क्या चाहते हैं, हम कुछ समझ नहीं सके।

"कुछ नहीं कहना चाहता" गम्भीर अंदाज मे उदासी से उत्तर दिया 'सिर्फ अर्ज करना चाहता हूं। आप सब अवध और अवध की हुकूमत की जान हैं। आप ने रहस और नाटक को अपनी जिन्दगी की एक जरूरियात में शुमार किया हुआ है। खुदा न करे किसी दिन इन्हीं फिजूलियात में खोये खोये वह अपनी आखिरी सांसें गिन जायें। लेकिन आप को जिन्दा रहना है। बहुत दिन जिन्दा रहना है। अगर आप चाहते हैं आप शानदार जिन्दगी बसर करें आजाद मुल्क के आजाद बाशिन्दे बन शान से जिन्दा रहें तो यह रहस और नाटक छोड़ दीजिए छोड़ दीजिए उस गलत तरीके को जिसे दिल बहलाने का नाम देकर आपने अपनी कमजोरी का बायस बना रखा है। कीजिए तैयारी एक जंग की। उस जंग की जो किसी भी वक्त उठ सकती है। उस जंग की जो आप और आपकी जमीन के लिए, आपके बादशाह और बादशाह की इज्जत के लिए एक दिन यकीनन उठेगी। और आप ही—आप ही इस दौलत से इस दौलत से कुछ दस्तयाब करेगी कुछ मांगेगी।—आपका

रियाज़ नाम या पाने का नहीं बल्कि मुल्क की खातिर मर मिटने की तमन्ना पैदा करने का हो। मेरे बच्चो मैं नहीं देख सकता कि समसद के बाज़ारों में जवान लड़के नाचते गाते फिरें। नाटक और रक्स करें। मैं देख सकता हूँ उन्हें फ़ौजी पोशाकों में परेड के साथ में तलवारों और शमशीरों के मुकाबले म बन्दूक और गोलियों के निशानों में।

इँग्लन के यहाँ से मित्र मंडली उदास और परेशान लौटी। विशेष कर दो व्यक्ति बहुत दुखी थे। एक इशरत जिसने इँग्लन का एक एक शब्द ध्यान से सुना था और दूसरा शिहाब जिसने इँग्लन की तकरीर के दौरान किसी भी समर्थन करती दो नीली पुतलियां बेचैनी से परखी थीं। यहाँ तक अगले दिन नाटक मंडली के कार्यक्रम में यह लोग बाकी मित्रों से अलग-अलग देर तक कुछ सोचते और विचार करते रहे। शेष मित्रों का उत्साह कुछ गिर गया था। किन्तु अगली ईद पर उन्हें एक नया नाटक खेलना था। वह आधी तैयारी के बाद उसकी तरफ़ से मुंह नहीं फेरना चाहते थे।

इशरत के लिए सब से बड़ी समस्या इँग्लन के मनोभावों को ठीक ठीक समझना भी थी। वह शिहाब के साथ बिल्कुल सहमत था कि इँग्लन के शब्दों में बड़ा आकर्षण और बेहद भारी प्रभाव था। इशरत यह विश्वास करता था कि प्रभाव करने वाली हर बात और हर घटना अपने अन्तर्तम में कोई न कोई सच्चाई ज़रूर छिपाये हुए होती है। इँग्लन ने उनके सामने अपने ही किसी मुसीबत का ज़िक्र किया था। शिहाब से बातें करते हुए उसने स्वीकार किया यह भी अपने का वाकिफ़ है। अब सवाल उस मुसीबत का था जिसका इँग्लन ने इतने पुरदर्द शब्दों में ज़िक्र किया था और जो अपने के बावजूद रहने पर भी इशरत और इशरत के दोस्तों को ज्ञात न थी। शिहाब

का कहना था जब अँग्रेज हम जैसे नौजवानों से दिलचस्पी रखता है तो हमारा भी फर्ज हो जाता है कि जिस जमीन पर हम पले हैं बढ़े हुए हैं उसके बारे में कुछ सोचें और कुछ करें। यह बात दूसरी थी कि करने वाली समस्या पर सिहाब या इशरत दोनों कोई सुझाव इस लिए न दे सके चूँकि इस बारे में उन्हें कुछ ज्ञात न था।

आखिर सिहाब ने एक तरीका बताया। उसने कहा, इसका उत्तर अँग्रेज की लड़की लिल्ली से मांगा जावे। उसकी चतुरता और बुद्धिमता पर तो इशरत को तनिक सन्देह न था। लेकिन सिहाब के प्रस्ताव पर वह बिना हँसे नहीं रह सका। मन ही मन उसने अपने पिता मियाँ जान से बात करने का फैसला कर लिया।

सिहाब एक दिन मौका देखकर लिल्ली के यहाँ जा पहुँचा। इससे पहले वह बहुत देर तक मकान के सामने आड़ में खड़ा देखता रहा था कि कब अँग्रेज का कोचवान बग्घी लेकर जाता है और कब वह कहीं जाता है। आखिर देर तक इन्तजार करने के बाद नम्बर आया। ज्यों ही अँग्रेज गया वह लिल्ली के सामने पहुँच गया। वह समझदार लड़की उसे देखते ही पहचान गई। स्वागत करते हुए उसने बिना तकल्लुफ सिहाब से मजाक किया—"कहिये आप का आना कम ही रहा है?" सिहाब ने बना कर उत्तर दे दिया "जब से आप लोगों की बातें सुनी हैं तभी से दिल उचट गया।" लिल्ली मुस्कराकर हँस दी।

उसने नौकर को भीतर भेज कर पान मंगवाये और सिहाब के अपना बयान करने लगी "कहिये मैं आपकी क्या खिदमत कर सकती हूँ?" सिहाब हिचकिचाया। वह सोच कर कुछ और आया था। लिल्ली से कुछ देर बातें करने को उसका मन बहुत बेचैन था। लिल्ली ने बड़ी चालाकी से मतलब की ओर कदम बढ़ा दिये। अतः कुछ समय तो सिहाब को सोचने बीत गया और वह कोई उत्तर न दे सका। तब तक लिल्ली ने अपनी बात [illegible] खोलकर दिया।

तब शिहाब को कहना पड़ा "उस दिन आपके वालिद बुजुर्गवार ने लम्बी तक़रीर में बार-बार अवध की किसी मुसीबत का इशारा किया था। हम खासकर मैं उसके बारे में खुलासा जानने को बहुत बेचैन हैं। आपको इसीलिए तकलीफ देने चला आया।"

"आप बहुत अच्छे हैं।" सिब्ती ने प्रशंसायुक्त भाव से उत्तर दिया हर वह आदमी अच्छा होता है जो वक्त को पहचानने की कुव्वत रखता हो। बहरहाल आपके सवाल का जवाब मेरे पापा नहीं दे सकते। दे सकते हैं एक और बुजुर्ग। मैं पापा से आप के बारे में अर्ज कर दूंगी। आप फिर कभी आ जाइये तो शायद वह उनसे आपको मिलवा दें।"

शिहाब को और क्या चाहिए था। वह स्वीकार करने के बाद दोबारा आने की कसम खाता चला आया। सिब्ती की ओर चलते चलते जो हसरत भरी नजर डाली तो उस बेचारी को भी शर्म आ गई। शिहाब ने कुछ कहा नहीं लेकिन मन में बहुत खुशी। शिहाब बिना रुके आप आया।

इशरत में मिर्ज़ा खान से सवाल किया—"अवध में कौन बहुर शामिल होने वाला है अब्बा? आज हमसे किसी ने कहा है कि हम नाटक और रक्स छोड़कर तोप और बन्दूकों का रियाज़ करें।"

अपने बेटे के मुख से यह अनिश्चित बात सुनकर पहले तो मिर्ज़ा खां को यकीन नहीं आया लेकिन दूसरे क्षण उसका चेहरा उत्साह से चमकने लगा।

"किसी ने ठीक कहा है बरखुरदार। पेट के लिए नौकरी-चाकरी नहीं करते तो न सही, मुझे फक्र होगा अगर अपने मुल्क और बादशाह की खिदमत करते-करते तुम अपनी जिन्दगी सर्फ कर दो।" मिर्ज़ा खान ने जवाब दिया।

इशारत फिर भी न समझा। उसने अपना सवाल फिर दोहराया। तब मिर्ज़ा जान गम्भीरता से समझाने लगे— तुम जानते हो इशारत मैंने बादशाह का नमक खाया है। मेरे और मेरे दीगर बुज़ुर्गों के जिस्म में भी यही नमक रिसा रहा। उसके बाद मैंने कुछ दिनों रेज़ीडेन्ट साहब के यहाँ काम किया। वहाँ अन्दाज़ा हुआ जैसे वह लफ़्ज़े हमारे और हमारी ज़मीन के दुश्मन हैं। बरख़ुरदार हमारा अवध पचास साल पहले आज से बहुत बड़ा था। इन लुटेरों ने सआदत नवाब के ज़माने में इसके जिस्म के टुकड़े कर दिए। अब महसूस होता है जैसे वह लोग बाकी आधे टुकड़े पर भी नज़र कर रहे हैं। जिसने भी तुम्हें अवध की आयन्दा मुसीबत का ख़्वाब दिखाया है उसकी दूरन्देशी काबिले तारीफ़ है। वह अच्छी तरह जानता और समझता है, जैसे कि मैं खुद समझता हूँ कि हमारे भाई अवध इन लुटेरों से पार पाने के काबिल या तो हैं नहीं और या बेकार कर दिये जायेंगे। तब अपनी आज़ादी के लिए अवध के बाशिन्दों को अपने हौसलों से काम लेना होगा। उसी वक़्त यहाँ के नौजवानों की ज़रूरत पड़ेगी। वह नाटक और रक्स में उलझे तो हम क्या होगा तुम समझ सकते हो। उन्हें बारूद तोप और बन्दूक का रियाज़ करना चाहिये। एक पुरानी कहावत मशहूर है बेटा जब बादशाह के हाथों रियाया की ख़ुशहाली महफ़ूज़ न रह सके तो रियाया न सिर्फ़ अपनी ज़िम्मेदार आप हो जाती है बल्कि अपने बादशाह की खुशहाली भी अपने हाथों महफ़ूज़ कर लेती है। कई मुल्कों में यह वाक़या हो चुका है। ख़ुदा न करे अवध पर ऐसी बुरी घड़ी आई तो सचमुच तुम्हारी ज़रूरत पड़ेगी। तुमसे मेरा मक़सद अवध की मशहूर से है। और अवध भी ममनून अपने दिलपसन्द शाह को बरबाद होने से पहले-पहले बचा लेगी।

न जाने क्यों इसके बाद नाटक और रहस से इशरत की दिलचस्पी दिन-दिन कम होने लगी। उसका मित्र समुदाय उसे मकान से पकड़ कर नाटक के दफ्तर में लाता किन्तु वह उत्साह न दिखा पाता। उधर शिहाब ने वहां जाना एक प्रकार से बन्द कर दिया था। वही इशरत का महरम मित्र था। दो बार उसके घर गया किन्तु वह मिला नहीं। नाटक मंडली के दफ्तर में जब वह अकेला एक ओर बैठा-बैठा कुछ सोचा करता। गाने का रियाज होने पर पहले वह झूम झूम कर तान लिया करता था। अब उसे ऐसा लगता जैसे यह गीत न होकर अवध की बरबादी का मृत्यु संगीत है।

उसके सोचने का विषय विशेषकर इसी सम्बन्ध में हुआ करता था। एक परेशानी की समस्या बार-बार उसके दिमाग में आती और कोई हल न निकलने के कारण पीड़ित करने लगती। शिहाब ने उसके पौरुष को ललकारा था और अवध के शाह की हमदर्दी में कुछ करने की सलाह दी थी। मियां खान भी कुछ ऐसा ही कह चुके थे। लेकिन उसकी बुद्धि में यह बात नहीं बैठ सकी कि उन लोगों ने बन्दूक और तोपों के चलाने का रियाज करने के लिये कहा है। क्या उनका मतलब फौज में भर्ती हो जाने से है या चुप छिपे छिपे इसका प्रयोग करने के लिए कहा है या कोई और इशारा किया है जिसके पीछे शाह अवध की बेहतरी के लिये कोई नया रास्ता निकलता हो?

अब मियां खान से वह राजनीति पर बातें करने लगा था। इसी सिलसिले में उसे ज्ञात हुआ था कि उसका फौज में दाखिल हो जाना भी बिल्कुल व्यर्थ होगा। मियां खान का कहना था सआदत अली खां के जमाने में लखनऊ की फौज करीब अस्सी हज़ार थी। वरना तो फिरंगी हुक्कामों की बदनीयती का इतना असर [illegible] ई सकते थे कि वह क्यों तक अवध की ओर आंख उठाने की जुर्रत न करते। जिस पर फौज बेकार साबित हुई और सआदत अली ने खुशी

इशरत फिर भी न समझा। उसने अपना सवाल फिर दोहराया। तब मिर्ज़ा साहब गम्भीरता से समझाने लगे— 'तुम जानते हो इशरत मैंने बादशाह का नमक खाया है। मेरे और मेरे दीगर बुजुर्गों के जिस्म में भी यही नमक रिसा रहा। उसके बाद मैंने कुछ दिनों रेज़ीडेन्ट साहब के यहाँ काम किया। वहाँ मालूम हुआ जैसे यह सफ़ेद हमारे और हमारी ज़मीन के दुश्मन हैं। बरख़ुरदार, हमारा अवध पचास साल पहले आज से बहुत बड़ा था। इन लुटेरों ने सआदत नवाब के ज़माने में इसके जिस्म के टुकड़े कर दिए। अब महसूस होता है जैसे यह लोग बाक़ी आधे टुकड़े पर भी नज़र कर रहे हैं। जिसने भी तुम्हें अवध की आयन्दा मुसीबत का रुझान दिखाया है उसकी दूरन्देशी क़ाबिले तारीफ़ है। वह अच्छी तरह जानता और समझता है जैसे कि मैं खुद समझता हूँ कि हमारे शाहे अवध इन लुटेरों से पार पाने के क़ाबिल या तो हैं नहीं और या बेकार कर दिये जायेंगे। तब अपनी आज़ादी के लिए अवध के बाशिन्दों को अपने हौसलों से काम लेना होगा। उसी वक़्त यहाँ के नौजवानों की ज़रूरत पड़ेगी। वह नाटक और रक्स में उलझे तो हश्र क्या होगा तुम समझ सकते हो। उन्हें आगे सोच और समझ कर दिमाग़ करना चाहिये। एक पुरानी कहावत मशहूर है बेटा जब बादशाह के हाथों रिआया की खुशहाली महफ़ूज़ न रह सके तो रिआया न सिर्फ़ अपनी ज़िम्मेदार आप हो जाती है बल्कि अपने बादशाह की खुशहाली भी अपने हाथों महफ़ूज़ कर लेती है। कई मुल्कों में यह वाक़या हो चुका है। खुदा न करे अवध पर ऐसी बुरी घड़ी आई तो सचमुच तुम्हारी ज़रूरत पड़ेगी। तुमसे मेरा मतलब अवध की नस्ल से है। और अवध की मासूम अपने दिलपसन्द शाह को बरबाद होने से सहमे-सहमे बचा लेगी।"

न जाने क्यों इसके बाद नाटक और दृश्य से इशरत की दिलचस्पी दिन-दिन कम होने लगी। उसका मित्र मधुराम उसे मकान से पकड़ कर नाटक के दफ्तर ले जाता किन्तु वह उत्साह न दिखा पाता। उधर दिहात से यहाँ आना एक प्रकार से बन्द कर दिया था। वही इशरत का गहरा मित्र था। दो बार उसके घर गया किन्तु वह मिला नहीं। नाटक मंडली के दफ्तर में तब वह अकेला एक ओर बैठा-बैठा कुछ सोचा करता। गाने का रियाज होने पर पहले वह झूम झूम कर ताल दिया करता था। अब उसे ऐसा लगता जैसे यह गीत न होकर अवध की बरबादी का मृत्यु संगीत है।

उसके सोचने का विषय विशेषकर इसी सम्बन्ध में हुआ करता था। एक परेशानी की समस्या बार-बार उसके दिमाग में आती और कोई हल न निकलने के कारण पीड़ित करने लगती। बेगम ने उसके पौरुष को ललकारा था और अवध के शाह की हुजूरी में कुछ करने की सलाह दी थी। मियाँ साहब भी कुछ ऐसा ही कह चुके थे। लेकिन उसकी बुद्धि में यह बात नहीं बैठ सकी कि इन लोगों ने बन्दूक और तोपों के चलाने का रियाज यहाँ करने के लिये कहा है। क्या इसका मतलब फौज में भर्ती हो जाने से है या खुद दिन दिन इसका अभ्यास करने के लिए कहा है या कोई और इशारा किया है जिससे वह शाह अवध की बहतरी के लिये कोई नया रास्ता [illegible]?

अब मियाँ साहब से वह राजनीति पर [illegible] उसी सिलसिले में उसे [illegible] जाना भी बिल्कुल [illegible]। [illegible] अभी था कि कादिर के [illegible] थी। [illegible] है सकने [illegible] सकते। [illegible]

जूनी १८०१ की सन्धि में फ़ौज घटा कर तीस हज़ार कर दी। यही नहीं एक शर्त के मुताबिक अपनी फ़ौज के साथ-साथ उन्होंने कम्पनी की फ़ौज के एक रिसाले को अपने खर्च पर रखना स्वीकार कर लिया। इस तरह जानते-बूझते अपने हाथ-पैर कटा लिए। अवस्था आज भी वही थी। वाजिद अली के पास चाहे कितनी फ़ौज होती किन्तु मुकाबले का साहस हुए बिना वह सब बेकार थी। फ़ौज नहीं फ़ौजों का बादशाह ऐसा होना ज़रूरी था जो हिम्मतवर और दिलेर होता। तभी फ़ौज का काम हो सकता था।

लेकिन एक दिन अचानक उसकी बुद्धि में एक विचार उदय हुआ और वह बन्दूक न तोप चलाने के रियाज़ के पीछे दिये इशारे को जैसे समझने के योग्य हो गया। अपने मित्रों के सम्मुख उसने प्रस्ताव रखा क्यों न नाटक मंडली के स्थान पर ऐसी एक संस्था को जन्म दिया जाए जो समय आने पर शाह के लिए फिरंगियों को मारने-मरने पर उतारू रहे। मित्रों ने इस प्रस्ताव का अनादर किया। बल्कि इशरत को पागल और बेवकूफ़ साबित किया। इससे इशरत उन मित्रों के बिल्कुल विपरीत अपने विचार पर स्थिर हो गया। उसने नाटक मंडली में जाना आना समाप्त कर दिया और सिद्दीक के साथ मिलकर जल्द से जल्द इस नई सूझ पर विचार करने का इरादा करने लगा।

सिद्दीक मकान पर नहीं मिला करता था। उसके घर वालों से पता चला वह आजकल किसी अंग्रेज लड़की के साथ यहाँ-वहाँ चक्कर घूमता पाया गया है। वह समझ गया हैनरी की दुलारी मैम को सिद्दीक ने अपने दिले-महफ़िल में सजा लिया है। कई बार सोचा हैनरी के मकान पर उससे मिलने जाए। लेकिन स्वयं इस विचार को भी टाला करता। सिद्दीक का दिल बड़ा वहमी था। कहीं उस मेमसाहब के बारे में उसने इशरत को लेकर कुछ उल्टा-सीधा सोच लिया तो व्यर्थ दो प्यारे मित्रों में खाई पड़ जायगी।

नाटक मंडली के पश्चात् अब उसकी शाम गोमती के किनारे इमामबाड़े वाली सड़क पर बीता करती थी। सोचता विचारता दिन छिपने से बहुत पहले वह सड़क पर टहलता हुआ आगे निकल जाता और जब चारों ओर अंधेरा हो जाता तो वापस लौटता। कभी मन न लगता तो पुरखयंग चला जाता। और कभी व्यर्थ उस लोहे के पुल पर खड़ा गोमती का पानी निहारा करता जो वाजिद अली के पिता ने इंगलैंड से लाकर वहां लगवाया था।

इस पुल के दोनों ओर सड़कें थीं। बाईं ओर नदी के बराबर वाली सड़क आगे इमामबाड़े तक चली गई थी। दाईं ओर के रास्ते पर आगे तिराहा था जिससे आगमकिल रजीडेंसी आदि तक जाया जाता था। उस दिन मिर्ज़ा के मकान पर हाज़िरी देने के बाद इमरत जब गोमती के किनारे सैर की इच्छा से तिराहे के पास से गुज़र रहा था तो सहसा किसी व्यक्ति के पुकारे जाने पर उसे रुक जाना पड़ा। वह मुड़ा थी ज्योंही उसकी दृष्टि पुकारने वाले पर पड़ी वह विमूढ़ और अचरज ग्रस्त खड़ा रह गया। पुकारने वाला लम्बे-चौड़े डील डौल का बहुत ही विशालकाय व्यक्ति था। इसके अतिरिक्त उसका तवे जैसा काला रंग और बढ़े हुए सर के बाल बहुत अजीब थे। और सबसे अधिक ध्यान जिस वस्तु पर गया वह उसका पहनावा था। उसने अपने सर पर मुंडास जैसी पगड़ी लपेट रखी थी जो हिन्दुओं का आम रिवाज था किन्तु नीचे धोती के स्थान पर एक तहमद बंधा हुआ था। हिन्दु लोग तहमद का प्रयोग नहीं के बराबर करते थे। और उस तहमद पर खास उमत चौड़ी कसी हुई चमड़े की पेटी बंधी थी। इसी पेटी में कृपाण की म्यान भी दिखाई दे रही थी। सब मिलाकर वह कोई दुर्दमनीय डाकू जैसा प्रतीत हुआ और भयानक जान पड़ा।

डाकुओं का उन दिनों ज़ोर भी बहुत था। इमरत पुकार सुन लेने के बाद उसकी ओर बढ़ा अवश्य किन्तु उसने बार-बार उस नमदार [illegible]

की देखा तो उसके पास एकमात्र ऐसी वस्तु थी जिसे वह छीन सकता। फिर उसे यह विचार आया कि शायद वह डाकू न हो और डाकू होने पर भी शायद उसे छेड़ने का साहस न करे। अभी दिन छिपने में करीब एक घंटा बाकी था। लोगों का आना जाना बन्द होने में उतना ही समय और शेष रहता था। एक न एक व्यक्ति दस-पांच मिनट में उधर से गुजर ही जाता। शायद डाकू महोदय का विचार इस सच्चाई की तरफ चला जाए और वह इशरत की सूरत देखने के बाद उसे वापिस लौटने की आज्ञा प्रदान कर दे।

जो भी हो। वह ज्यों-ज्यों आगे बढ़ा त्यों-त्यों उसका विश्वास बढ़ता चला गया कि पुकारने वाला अवश्य तो डाकू नहीं और अगर है भी तो उसे लूटने को विशेष उत्सुक नहीं है। इशरत के कदमों के साथ उसके कदम भी आहिस्ता-आहिस्ता इधर ही आ रहे थे जिससे उसे महसूस हुआ उसे अवश्य कुछ पूछना या जानना है। अतः वह निश्चितता प्रतीत करता उसके निकट आ गया।

आगन्तुक व्यक्ति ने इशरत को हिन्दुस्तानी ढंग से नमस्कार किया और कुछ पूछा। इशरत को ऐसा लगा जैसे पास कहीं विस्फोट हुआ हो। किन्तु उसकी भारी और फटी हुई आवाज के बावजूद वह उसका प्रश्न समझने का प्रयत्न करने लगा।

आगन्तुक व्यक्ति ने फिर अपना सवाल समझाया—"मुझे जन्ट साहब के यहां जाना है। तुम बता सकते हो उसका रास्ता कौन है?"

इशरत ने सवाल किया—"जन्ट साहब से तुम्हारा मतलब रेज़ीडेंट से है?"

"हां" उस व्यक्ति ने उत्तर दिया "फिरंगियों का एक आदमी यहां रहता है न वही।

"रास्ता तो यही है।" इशरत ने बताया— लेकिन वहां तक मेरा ख्याल है इस वक्त वह मिलेंगे नहीं।"

उस व्यक्ति ने इशरत के उत्तर पर ध्यान नहीं दिया और इशरत के बताये रास्ते पर जाने लगा। इशरत ने भी आगे बहस में पड़ना अनुचित समझा और पुल की तरफ चलने लगा। तब फिर उस अपरिचित ने उसे दोबारा आवाज दी और रोककर पूछा—"मिलेगा क्यों नहीं क्या वह कहीं बाहर गया हुआ है ?"

"नहीं"—इशरत ने उत्तर दिया और ध्यान से अपरिचित की ओर देखा। वास्तव में इस बार पूछे गये उसके सवाल में इशरत को रेजीडेंट के प्रति अपमान और भर्त्सना की दुर्गन्ध आई। कहने वाले के भयानक चेहरे पर पलों में आने वाले खास क्रूरता के चिह्नों से रेजीडेंट के प्रति विक्षोभ और क्षोभ अनायास ही प्रकट हो गया। उन दिनों यह साहस कुछ मायने रखता था। जुबान तो क्या लोग रेजीडेंट के सम्बन्ध में गलत सोचना भी अपराध मानते थे। इधर उनके मस्तिष्क में रेजीडेंट विरोधी कोई भाव उदय हुआ और दूसरे क्षण प्रतिक्रिया स्वरूप रेजीडेंसी के कर्मचारियों ने उनके आस-पास चक्कर लगाना आरम्भ कर दिया। अतः अपरिचित ने अपने प्रश्न के पूछते ही इशरत को चौंका दिया, इसमें कोई आश्चर्य नहीं।

इशरत के साधारण उत्तर से अपरिचित को सन्तोष न हुआ तो उसने फिर वही सवाल दूसरे शब्दों में दोहराया। तब इशरत बताने लगा—"साहेब बहादुर इस वक्त शराब के जाम चढ़ाने की तैयारियां कर रहे होंगे। मुलाकात का वक्त मुकर्रर है। इसके बाद अपने खास दोस्तों के अलावा उनके पास और कोई नहीं पहुँच सकता।

"लेकिन रोकने वाला कौन है ? क्या उसने बंगले के बाहर सिपाही तैनात रखे हैं ? —अपरिचित ने अगला सवाल किया।

"हाँ। इशरत ने बताया—"उसे अपनी जान का बहुत खतरा रहता है। इसलिये पूरी एक गारद बंगले के बाहर मौजूद रहती है।"

अपरिचित इसके बाद और कुछ न पूछ कर अनिश्चित मनोस्थिति

गाड़ी को गोली का निशाना बना कोई क्रूर व्यक्ति अब उसे लूटने खसोटने का कुप्रयत्न कर रहा है। दूसरे क्षण उस भयानक व्यक्ति का चित्र आँखों के सामने सजीव हो गया। और तब बिना एक क्षण गंवाये वह तेजी से बग्घी की ओर दौड़ा जिसके घोड़े गोली की आवाज से बिदक कर भागने को आतुर होकर किसी मजबूरी से खड़े खड़े थे।

निकट पहुँचने पर वास्तविकता कुछ और मालूम हुई। गाड़ी का कोचवान वास्तव में जमीन पर मृत पड़ा था। घोड़ों की रास जरूर कसी खींची हुई थी मगर रास खींचने वाला वह हिन्दोस्तानी डाकू अपरिचित नहीं था जिसकी इसरत को कल्पना थी। वरन् उसके स्थान पर कोई फौजी था जो बग्घी के भीतर बैठी सलमे सितारे की चुनरी ओढ़े किसी लड़की को टूटी फूटी हिन्दोस्तानी में कोई आदेश दे रहा था। वह लड़की जो वेशभूषा से मुस्लिम सम्भ्रान्त घराने की मालूम हुई, भयभीत दृष्टि से गोरे को घूरती सुबक रही थी।

इसरत के ललकारने पर गोरे ने रास छोड़ दी और अपने बायें तरफ की जेब से रिवाल्वर निकाल उसे खूँखार दृष्टि से घूरने लगा। लड़की सहसा चौंक गई तथा इसरत को सहायता के लिए खुदा का वास्ता देने लगी। तब इसरत सावधानी से आगे बढ़ा।

लेकिन अंग्रेज फौजी शराब के नशे में बिल्कुल चूर नहीं था। उसने खतरा निकट आने से पहले इसरत को कोचवान की तरफ उंगली उठाकर सावधान किया 'आप बोलता उधर रहना मांगता नहीं तो हम का आपक हीमारा भूल कर देगा।

इसरत रुक कर कोचवान की मृत देह देखने लगा। बल्कि सिपाही के हाथ का रिवाल्वर देखने के बाद उसने कुछ फैसला कर लिया था और दो कदम पीछे भी हट आया। बग्घी में बैठी लड़की यह देखते ही चिल्ला दी 'नहीं—खुदा के लिए इस दरिन्दे से मुझे बचा लीजिए। मुझ पर करम कीजिए मेहरबान मैं आप के हाथ जोड़ती हूँ।" इसरत

ने सुना और पसोपेश में डूब गया।

अब दम तक नम्बरिंग करेगा। उसका बाद इधर रोकना मांगता तो गोली छोड़ देगा। हम इसको बीबी बनाना मांगता। तुम्हारा मरजी नहीं मांगता। समझा अन——द——श्री——

अब वहां रुकना खतरे से खाली नहीं था। इमरत एकदम वापिस लौटने लगा। लड़की की सिसकियां जोरों से बढ़ गईं। गोरा सन्तुष्ट नजर आया। और जब इमरत काफी दूर निकल गया तो गिनती बंद करने के बाद उसने अपना रिवाल्वर जेब में डाल लिया। उसी समय ऐसा लगा जैसे कहीं से कोई बोरी गोरे पर आ गिरी हो। इमरत इस फुर्ती से जाने के बाद वापिस लौटा था कि गोरा अपना रिवाल्वर तक न निकाल सका। और अब उसका बायां हाथ इमरत की बलिष्ट उंगलियों में दबा हुआ था। दोनों गुथ कर एक दूसरे को परास्त करने की चिन्ता में थे। लड़की बग्गी से उतर आई थी और कुछ फासले पर खड़ी तमाशा देख रही थी।

पहले गोरे ने सप्रयत्न इमरत की पकड़ से अपना हाथ छुड़ाने की चेष्टा की ताकि रिवाल्वर निकाल सके। लेकिन सफलता न मिली तो उसने अपने बायें हाथ से इमरत के पेट पर बाक्सिंग आरम्भ कर दी। अब स्थिति यह थी कि घूंसेबाजी से बचने के लिये इमरत अपना सीधा हाथ प्रयोग में लाता तो रिवाल्वर निकलने का भय था और बायें से उस अभ्यस्त घूंसेबाज के घूंसों का वार रोकता तो दुर्दशा हो जाती। कुछ देर इसी अवस्था में एक पीटता और दूसरा पिटता रहा। फिर अचानक एक घूंसा इस जोर का पड़ा कि इमरत का दिमाग चकरा गया। पर गोरे को भी लड़ाई छोड़ कर अपना पेट पकड़ लेना पड़ा। तेज सिसकारी स उसका दर्द स्पष्ट हो गया। और इतने समय में गोरा तेजी से अपनी जेब में हाथ डालने लगा।

मौत बिल्कुल सामने थी। इमरत ने अपनी पीर का ध्यान छोड़ा

की बात होती तो मुम्किन था दो मन वजन रखा होता। उस दिन आपने मेरे लिये क्या कुछ नहीं किया। मामूली बातों पर उस मनहूस जिन्न के लिये अगर आप इसी तरह मजबूर करते रहे तो बड़ी बदमजगी होगी। वास्ते की बात थी और आपने बेकार याद दिला दिया आप और मैं एक दूसरे के कर्जदार हैं। क्यों?

"नहीं बानो बेगम कर्जदार आप नहीं मैं हूं। और मैंने यह जुर्रत कभी नहीं की कि आप को अपने अहसान की बात याद दिलाता। बहरहाल आयन्दा ऐसी गलती कभी नहीं करूंगा।"

"एक बात और। दूसरी गलती आप यह करते हैं कि अपने से उम्र में कम और कद में कम यानी लड़की को आप और जनाब का खिताब देते हैं। खुदा के लिए मेरा सीधा सीधा नाम लेकर पुकारा कीजिये।"

"यह कैसे हो सकता है? आप ठहरीं मीर मुन्शी की दुलारी बेटी। भला उनके मातहत एक अदना मुन्शी में इतनी हिम्मत कहां?"

"अजी बेगम। आप ने मीर मुन्शी की दुलारी बेटी को नोरे के नीचे से नहीं छुड़ाया था। वो बानो थी। बानो आज भी बानो रहेगी। आप को गलतफहमी कैसे हुई?"

"आप से बातों में नहीं जीता जा सकता। अच्छी बात है। अगर यही मर्जी है तो मैं आप को तुम कह लिया करूंगा।'

"शुक्रिया।" बानो हंसती हुई बोली "अब नाश्ता कर लीजिये।"

इसरार से मना करते न बना। वह रकाबियों का तकीया साफ करने लगा। बानो दिलचस्पी से उसे देखती रही। जब नाश्ता खतम हो गया और इसरार हाथ पोंछ कर बैठ गया तो अचानक बानो ने एक सवाल किया अगर बुरा न मानें तो मैं एक सवाल करूं। उस दिन आपके बरताव देख कर पता चलता था आप अपने मुल्क और मुल्क के रहने वालों के सामने वर्तमान संदर्भों को अपना दुख न मानते हैं फिर आज

क्यों उन्हीं दुश्मनों की नौकरी करने आ गये ?"

इशरत ने छोटा जवाब दिया "पेट सब कुछ करा लेता है।" लेकिन बानो सन्तुष्ट नहीं हुई। उसने आगे कहा "पेट एक बहादुर आदमी को गैरत बेचने पर मजबूर नहीं कर सकता। उस रात के रास्ते पर मैंने आप के मुताल्लिक बार-बार सोचा तो मुझे बड़ा अजीब सा लगा कि क्यों आप रेज़ीडेंसी में नौकरी करना चाहते हैं। मगर कोई जवाब न सूझ सका। अब आप कहते हैं

इशरत ने बात फ़ौरन काट दी। वह मुस्कुरा दिया और बोला—"क्या आप की नज़र में रेज़ीडेंसी की नौकरी बुरी है ?

"बुरी न हो मगर गैर ज़रूरी है। अवध की शराफ़त फिरंगियों की गुलामी करे मुनासिब नहीं लगता।

इशरत ने हँस कर व्यंग्य किया— "आप ने अपने शाहिद साहेब को नहीं समझाया बानो बेगम। वह रेज़ीडेंसी के मीर मुन्शी हैं मालूम होगा।"

"आदमी लालच में सब कुछ भूल जाता है इशरत साहेब। आज तक आपको इसका तजुरबा नहीं है इसलिए आप मेरी बातें सुनने की ताब भी रखते हैं। कुछ दिन बीतते न बीतते आप भी अब्बा हुज़ूर की तरह मेरी बातों पर मज़ाक उड़ाया करेंगे। रेज़ीडेंसी की नौकरी ऐसी होती है।"

"और आप ने इसे गैर ज़रूरी कह दिया।" इशरत हँसता रहा— "बानो बेगम आदमी को जहाँ ईमानदारी की नौकरी मिले वहीं अच्छा है। रहा गैरत बिकने का मसला और शराफ़त को गुलाम करने का सवाल। तो उसके लिये महज़ इतना अर्ज़ करूँगा जो आदमी गुलामी कुबूल कर लेता है उसकी शराफ़त नमकहलाली के सुर्ख रंगों में और ज़्यादा चमकने लगती है। जो गुलाम जितना वफ़ादार साबित होता है उतना ही शरीफ़ कहा जाता है। और इस तरह उसकी गैरत को भी

जा सकती है ?"

इशरत को फिर खामोश हो जाना पड़ा। वह बानो से इस प्रसंग पर कोई बात नहीं करना चाहता था। अब मुनासिब यही लगा कि वह दफ्तर चला जाये। बानो से कहा तो वह तैयार हो गई। उसे साथ लिए इशरत दफ्तर के दरवाजे तक आ गया। वहां से बानो वापिस लौट गई।

मीर साहेब अपनी जगह विराजमान थे। गावतकिए पर टेक लिए वह आराम से हुक्के की निगाली का आनन्द लूट रहे थे। इधर से इशरत पहुँचा और उधर से तीन व्यक्तियों ने मुन्शी जी के कमरे में प्रवेश किया। मीर साहेब ने घबरा कर हुक्के की नली दूर फेंकी और खड़े हो कर अदब से सलाम बजाते हुए आगन्तुकों का स्वागत किया।

उनमें से एक लम्बे चौड़े डील-डौल का अंग्रेज था। उसकी आयु रही होगी लगभग ६० साल बाल पके हुए मगर अच्छी प्रकार सवारे गये थे। बदन चुस्त और फुर्तीला नजर आ रहा था। चेहरा टमाटर की तरह सुर्ख था। चलते समय वह सीना तान कर चल रहा था। उसने फौजी पोशाक पहन रखी थी किन्तु उस पर सरकारी बिल्लों का अभाव था।

दूसरा दुबला-पतला व्यक्ति भी अंग्रेज ही था। उसके बाल बड़े-बड़े और काले थे। नाक-नक्शा पहले व्यक्ति से अधिक प्रभावशाली और व्यक्तित्व में ओछापन। वह सादा कोट और पतलून पहने था। उसके हाथ में एक बेंत था।

तीसरा आदमी उनके पीछे-पीछे आने वाला कोई हिन्दुस्तानी नौकर था।

मीर साहेब इशरत को कमरे में आते देख चुके थे किन्तु उनका ध्यान उसकी ओर न जाकर इन अंग्रेजों की ओर गया। इन दोनों ने सलाम का उत्तर भी न दिया और मीर साहेब को फटकारना शुरू किया

"तुम को अपना तरीका बदलना होगा मीर मुन्शी। रिचर्डसन साहब के ज़माने में रिसाले को मक्के की डबलरोटी मिलती हो या चने की। हमारे ज़माने में यह बेईमानी नहीं चलेगी।" लम्बे गोरे अंग्रेज़ ने त्यौरियाँ चढ़ा कर कहा। मीर साहब ने कोई उत्तर देना चाहा लेकिन दूसरे पतले अंग्रेज़ का स्वर आया— 'सर, हिन्दोस्तान में बिना रिश्वत कोई काम नहीं होता। ठेकेदार जब मीर साहब को मोटी रकमें देकर ठेका हासिल करेगा तो अच्छी डबलरोटियाँ कैसे सप्लाई करेगा। क्यों मीर साहब?"

'हम मुन्शी को सबक सिखा देंगे।' वही अंग्रेज़ फिर बोला— 'एक बार हिन्दोस्तानी फौज को गन्दी खुराक मिले तो हम बर्दाश्त कर सकता है, लेकिन अंग्रेज़ी रिसाले के साथ कोई गड़बड़ हुई तो हम एक-एक को सज़ा देंगे।"

"हुज़ूर' 'माई बाप' मुन्शी जी हकलाये—"आयन्दा एहतियात रखूँगा।"

"नहीं मीर मुन्शी!" दूसरे अंग्रेज़ ने कहा—"एहतियात सिर्फ इतनी रखिए कि रिश्वत में कमी हो जाए। आप तो दिनों दिन तरक्की करते जा रहे हैं। ऐसे किस तरह काम चल सकता है।"

"कसम लीजिये साहब' आप कहें तो ठेकेदार को सामने ला खड़ा करूँ। मैंने उस कमबख्त से एक पाई वसूल नहीं की। हुज़ूर को धोखा ग़लतफ़हमी हुई है।"

"नहीं मुन्शी।" दूसरे विदेशी ने डांटा "हम यह सब नहीं सुनेगा हमारे कान में दोबारा यह शिकायत आई तो हम तुमको नौकरी से निकाल देगा।"

मुन्शी जी कुछ न बोले। दोनों अपनी बात कहने के बाद वापिस जाने लगे तभी बड़ी आयु वाले अंग्रेज़ की दृष्टि इमरत पर पड़ी और उसने सवाल किया— 'यह कौन है?" मुन्शी जी ने इमरत देखा तो जल्दी से कहा— 'सरकार यह वही आदमी है जिसका मैंने तज़्किरा

रह सकती है ?"

इशरत को फिर खामोश हो जाना पड़ा। वह बानो से इस प्रसंग पर कोई बात नहीं करना चाहता था। अब मुनासिब यही लगा कि वह दफ्तर चला जावे। बानो से कहा तो वह तैयार हो गई। उसे साथ लिए इशरत दफ्तर के दरवाजे तक आ गया। वहां से बानो वापिस लौट गई।

मीर साहेब अपनी जगह विराजमान थे। गावतकिए पर टेक दिए वह आराम से हुक्के की निगाली का आनन्द लूट रहे थे। इधर से इशरत पहुंचा और उधर से तीन व्यक्तियों ने मुन्शी जी के कमरे में प्रवेश किया। मीर साहेब ने घबरा कर हुक्के की नली दूर फेंकी और खड़े हो कर अदब से सलाम बजाते हुए आगन्तुकों का स्वागत किया।

उनमें से एक लम्बे चौड़े डील-डौल का अंग्रेज था। उसकी आयु रही होगी लगभग ६० साल बाल पके हुए मगर भली प्रकार संवारे गये थे। बदन चुस्त और फुर्तीला नजर आ रहा था। चेहरा टमाटर की तरह सुर्ख था। चलते समय वह सीना तान कर चल रहा था। उसने फौजी पोशाक पहन रखी थी किन्तु उस पर सरकारी निशानों का अभाव था।

दूसरा पतला-दुबला व्यक्ति भी अंग्रेज ही था। उसके बाल बड़े-बड़े और काले थे। शक्ल-सूरत से पहले व्यक्ति से अधिक प्रभावशाली और व्यक्तित्व में भोलापन। वह सादा कोट और पतलून पहने था। उसके हाथ में एक बेंत था।

तीसरा आदमी उनके पीछे-पीछे आने वाला कोई हिन्दुस्तानी नौकर था।

मीर साहेब इशरत को कमरे में आते देख चुके थे किन्तु उनका ध्यान उसकी ओर न जाकर इन अंग्रेजों की ओर गया। उन दोनों ने सलाम का उत्तर भी न दिया और मीर साहेब को खटखटाना शुरू किया

"तुम को अपना तरीका बदलना होगा मीर मुन्शी। विलमोट साहब के ज़माने में रिसाले को घटिया की डबलरोटी मिलती हो या चने की। हमारे ज़माने में यह बेईमानी नहीं चलेगी।" लम्बे चौड़े अंग्रेज़ ने त्यौरियां चढ़ा कर कहा। मीर साहब ने कोई उत्तर देना चाहा लेकिन दूसरे पतले अंग्रेज़ का स्वर आया—"सर, हिन्दुस्तान में बिना रिश्वत कोई काम नहीं होता। ठेकेदार जब मीर साहब को मोटी रकमें देकर ठेका हासिल करेगा तो अच्छी डबलरोटियां कैसे सप्लाई करेगा। क्यों मीर साहब ?"

"हम मुन्शी को सबक सिखा देंगे।" वही अंग्रेज़ फिर बोला—"एक बार हिन्दोस्तानी फौज को गन्दी खुराक मिले तो हम बर्दाश्त कर सकता है लेकिन अंग्रेज़ी रिसाले के साथ कोई गड़बड़ हुई तो हम एक-एक को सज़ा देंगे।"

"हुज़ूर माई बाप मुन्शी जी हकलाये—"आयन्दा एहतियात रखूँगा।"

"नहीं मीर मुन्शी। दुबले अंग्रेज़ ने कहा—"एहतियात सिर्फ इतनी चाहिए कि रिश्वत में कमी हो जाए। आप तो दिनों दिन तरक्की करते जा रहे हैं। ऐसे किस तरह काम चल सकता है।"

"कसम लीजिये साहब प्यार यहीं तो ठेकेदार को सामने ला खड़ा करूँ। मैंने इस कमबख्त से एक पाई वसूल नहीं की। हुज़ूर को ज़रूर गलतफहमी हुई है।"

"नहीं मुन्शी।" दूसरे विदेशी ने डांटा, "हम यह सब नहीं सुनेंगे हमारे कान में दोबारा यह शिकायत आई तो हम तुमको नौकरी से निकाल देगा।"

मुन्शी जी चुप न बैठे। दोनों अपनी बात कहने के बाद वापिस जाने लगे तभी बड़ी आयु वाले अंग्रेज़ की दृष्टि इस्लाम पर पड़ी और उसने सवाल किया—"यह कौन है ? मुन्शी जी ने इस्लाम देखा तो जल्दी से कहा—सरकार यह वही आदमी है जिसका मैंने तज़किरा

किया था।"

"ओह! हमारा नया खादिम?" अंग्रेज़ जवाब देने के साथ-साथ इसरत की ओर घूम गया। उसने इशारे से इसरत को नज़दीक बुलाया और सवाल किया—"तुम नौकरी करने आए हो?"

"जी माई बाप।" इसरत ने फौरन अपना सर झुका लिया।

"तुम्हारा नाम?"

"गुलाम को इसरत कहते हैं।"

"और मुन्शी को कब से जानते हो?"

"साहब यह मेरा दूर के रिश्ते का भानजा है।" मुन्शी जी ने झट से जवाब दिया।

"ठीक है।" अंग्रेज़ ने पूछा—"मगर हम जानना चाहते हैं यह क्या काम कर सकता है?"

इसरत ने जवाब दिया—"गुलाम को जो भी हुक्म मिलेगा उसको सोलहों आने पाव रत्ती बजा लायेगा। हुक्म होगा तो हुक्का भरेगा पाँव दबाएगा और जो माई बाप चाहेंगे बिला उज्र करता रहेगा।"

"पहले कहीं काम किया है?"

"नहीं मालिक। बाप की हालात ने नौकरी पर मजबूर कर दिया है। पहले हम शाही मुलाज़मत में थे। वहाँ से बेगुनाह जवाब मिल गया। अब आपकी खिदमत में आया हूँ।"

"गुड।" अंग्रेज़ ने कहा—"हम तुमको मुलाज़िमत ज़रूर देंगे। कल से तुम हमारे खास मुन्शी होंगे।"

"परवरिश हुई आक़ा। जान की बाज़ी लगा कर भी आप का हुक्म बजा लाऊँगा।"

"मगर यह बात हमेशा याद रहे कि तुम हमारे नौकर होंगे और हमारा नमक खाओगे। कोई गड़बड़ नहीं चाहते।"

"ऐसा ही होगा मालिक।" इसरत ने जवाब दिया तो अंग्रेज़ कमरे

से जाने लगे। लेकिन चलते-चलते वह फिर एक बार उसकी तरफ घूमे और पूछा "तुम अंग्रेज़ी बोलना जानते हो?" "नहीं?" इशरत ने जवाब दिया। तब वह चले गये। और मुन्शी इशरत की ओर घूमे और कहने लगे "यही बड़े साहेब स्लीमन हैं। ज़बान का कड़ुआ ज़रूर है मगर आदमी बड़ा अच्छा है। इनकी दिल लगा कर ख़िदमत करना।"

"हज़रत वह दूसरा अंग्रेज़ कौन था?" इशरत ने सवाल किया। मीर साहेब ने चेहरे पर घृणा व्यक्त की। उत्तर दिया "छोटा साहेब बर्ड है। साले को हर वक्त रिश्वतों के ख्वाब आते हैं। उसी ने बड़े साहेब को चढ़ा दिया होगा। लेकिन मेरा भी नाम मीर अली खाँ नहीं जो इसका बदला न लूँ। साला शहंशाह का वफ़ादार बनता है। पहला रेज़ीडेन्ट तो बड़ा ख्याल करता था इसका और इसके बच्चों का। मगर इस बार जहाँ शाह गया वहीं बर्ड साहेब से इसकी मिज़ाज पुरसी करता होगा। जब देखो तब मेरी शिकायतें करता है। जैसे मैं इसके बाप का कुछ खाता होऊँ।"

इशरत मुस्कुरा दिया। मीर साहेब देर तक अपनी फ़ारसी ज़बान से दुबले-पतले मंझले अफ़सर मेजर बर्ड, सहायक रेज़ीडेंट, को याद करते रहे।

अगले दिन से वह बाकायदा नौकरी पर आने लगा। और जैसा मीर साहेब ने समझाया था परिस्थितियों को वैसा ही पाकर उनकी हिदायतों के अनुसार काम करने लगा। उसने प्रकट किया जैसे स्लीमन के अलावा उसका दुनियाँ में कोई और हो ही नहीं। उसकी खुशी के लिये जैसा कहा जाता वह इतनी फुर्ती से उसे पूरा करता कि देखने वाला हैरान रह जाता। हुक्का उठाना हो, शराब का प्याला देना हो, किसी की बुराई करनी हो, खुशामद करनी हो, गरज़ यह कि स्लीमन की भौंह का इशारा मिला और इशरत ने मशीन के पुर्ज़े की तरह काम ही करना शुरू कर दिया। इसका असर अच्छा पड़ा। स्लीमन —

खुश रहने लगा। महीना-पन्द्रह दिन बीतते न बीतते उसकी तनख़ाह में बढ़ोतरी हो गई। फिर कुछ दिनों बाद उसे हुक्म मिला वह रेज़ीडेंसी के क्वार्टरों में आकर रहे। और इसके बाद स्लीमन उसे हर वक्त अपनी खिदमत में रखने लगा। कहीं जाना है तो इशरत को बुलवा भेजा किसी से बातें करनी हों तो इशरत से वक्त मुकर्रर करवाया। टहलने गये तो इशरत साथ है। किसी ज़रूरी कागज़ की ज़रूरत पड़ी तो इशरत कोठी से लेकर आया। मेम साहेब ने सामान मंगवाया तो इशरत की पुकार पड़ी मतलब यह कि बहुत जल्द इशरत रेज़ीडेंसी में स्लीमन का खास आदमी कहलाने लगा।

और करीब बीस दिन बाद तो एक ऐसी घटना हुई कि स्लीमन और इशरत एक दूसरे के बहुत करीब आ गये। मालिक और नौकर का रिश्ता कायम रहा लेकिन अब वह एक दूसरे के राज़दार भी बन गए।

स्लीमन नियमित जीवन का आदी था। वह प्रातः पाँच बजे उठने के बाद रोज़ टहलने जाया करता था। इशरत को साथ रहने की हिदायत थी। आगे-आगे साहेब और पीछे-पीछे इशरत कभी गोमती तक चक्कर लगाते और कभी जल्दी लौट आते। मन होता तो पैदल जाने के स्थान पर घोड़ा ले लिया जाता। स्लीमन का सफ़ेद अरबी घोड़ा हवा से बातें करता था। इशरत को साथ दौड़ना पड़ता। लेकिन वह इस कष्ट की परवा किये बिना अपने साहेब की आज्ञा पालन ज़रूर करता। उन दिनों तेज़ सर्दी पड़ने लगी थी। इशरत का क्वार्टर मीर साहेब के बराबर था। सुबह चार बजे उठने में उसे कठिनाई होती। वालो ने एक बार चर्चा की तो वह खुद तीन साढ़े तीन बजे इशरत के दरवाज़े पर दस्तक दे दिया करती। इस तरह इशरत सर्दी में कुनमुनाता हुआ अपने साहेब के जागने से बहुत पहले उनके बंगले पर हाज़िर हो जाया करता था।

उस दिन वह दोनों घोड़ों पर घूमने गए। स्लीमन को न जाने क्या

सूझा कि उसने इशरत को दूसरे घोड़े पर पीछे आने की हिदायत दे दी। इशरत को मन मांगी मुराद मिली। वह घुड़साल से एक काला घोड़ा ले आया। दोनों उसी रास्ते आगे बढ़े जो लोहे के पुल की तरफ जाता था। अभी दिन निकलने में कुछ देर थी। आहिस्ता-आहिस्ता दोनों के घोड़े आगे पीछे बढ़ रहे थे कि अचानक एक जगह किसी के "ठहरो" की पुकार सुनते ही स्लीमन को रुक जाना पड़ा। इशरत चारों ओर आवाज देने वाले की तलाश करने लगा। तब सामने से एक ऊँचा तगड़ा आदमी हाथ में छुरा जैसा लिए स्लीमन की ओर बढ़ता नजर आया। अँधेरे के कारण उसे पहचानना कठिन था किन्तु ज्यों ही वह नजर आया त्यों ही इशरत ने देखा उस व्यक्ति के चेहरे पर घृणा के चिह्न थे और वह बड़ी खूंखार दृष्टि से स्लीमन को घूर रहा था।

नमकहलाल नौकर के समान इशरत फौरन घोड़ा आगे बढ़ाता स्लीमन के सामने और उस व्यक्ति के मध्य आ गया। स्लीमन को इस प्रकार आड़ में लेने के बाद उसने उस लम्बे चौड़े व्यक्ति से सवाल किया "क्या चाहते हो? साहिब को क्यों रोका है?"

उस अपरिचित ने उत्तर में जमीन पर थूकने जैसा भाव दिखाया और बड़ी कर्कशी आवाज में कहा "मुझे इस से पुराना हिसाब चुकता करना है। इशरत आवाज सुनते ही सोच में पड़ गया। उसे याद आया जैसे उसने यह आवाज कहीं सुनी हो। मगर कहां? समझ न सका। तभी उस व्यक्ति ने आगे कहा 'तू अपनी जान की खैर चाहता है तो सामने से हट जा। मैं नहीं चाहता कि किसी के गुनाह की सजा में तू हलाक हो।' लेकिन इशरत नहीं हटा। स्लीमन के चेहरे पर हवाइयां उड़ रही थीं। प्रातः भ्रमण में रिवाल्वर या कोई और हथियार लेकर साथ तक निकलने का विचार भी उसे नहीं आया था। इशरत की आड़ में सुरक्षित समझते रहने पर भी वह सामने खड़े भयंकर व्यक्ति से भयभीत था। अतः मौका मिलते ही उस आदमी को इशरत से बातों

उलभा देख वह भाग निकला। घोड़ा मोड़ कर उसने एड़ लगाई और घोड़ा सरपट दौड़ चला। हमलावर ने देखा और तेजी से इशरत के बराबर आया। उसने अपने बलिष्ट बाजुओं से इशरत को जोर का धक्का दिया। इशरत दूर जा गिरा। तब तेजी से घोड़े की पीठ पर सवार वह स्लीमन के पीछे भागा। इशरत देखता रह गया। सब पलों में हो गया।

दोनों घोड़ों का अन्तर पचास चालीस गज का था। हमलावर कुशल घुड़सवार साबित हुआ। स्लीमन का घोड़ा तेज दौड़ रहा था लेकिन उसका घोड़ा उससे भी तेज था। इशरत को गिरने के कारण हल्की धमक लगी थी। लेकिन इसकी चिन्ता किए बिना वह उठ खड़ा हुआ पूरी शक्ति से उन दोनों के पीछे दौड़ा। अब तक सूर्य की पहली किरण आकाश में प्रकाशित होने लगी थी। घोड़े नजर आ रहे थे। और पीछा करने वाला हमलावर भी। उस पर दृष्टि पड़ी त्यों ही इशरत को उस दिन के एक अपरिचित का विचार आ गया जिस दिन उसने बानो को किसी क्रूर बोरे से बचाया था। हमलावर निस्सन्देह वही भयंकर व्यक्ति होगा जिसके डाकू होने की कल्पना उस समय इशरत को अनायास हो गई थी। उसके पैर बहुत तेजी से आगे बढ़ने लगे।

भयंकर हमलावर ने अपने हाथ से रस्सी इस अन्दाज से फैंकी कि स्लीमन की गर्दन उलझी और दूसरे पल वह घोड़े की पीठ से बाईं तरफ टाँग के बल उलट पड़ा। 'प्रात' की बेला में शान्त प्रकृति उसके आर्त नाद से गूंज उठी। टाँग पकड़े वह बुरी तरह कराहने लगा। पीछा करने वाला उसे परास्त करने और आराम से घोड़ा रोकने के बाद आहिस्ता आहिस्ता उसकी ओर बढ़ रहा था। इस बीच उसने अपने हाथ में अपनी पेटी में लटका छुरा भी ले लिया था।

'बचाओ बचाओ' पुकारता इशरत स्लीमन के गिरने से कुछ बाद वहां पहुंच गया। उसने दोनों हाथ उठाते अपरिचित को रोकने का प्रयत्न करते हुए कदम आगे बढ़ाये। और तब वह अपरिचित से बिना अपनी

...क की परवाह किये घुस गया। दायें हाथ से उसने उस अपरिचित का छुरे वाला हाथ कस कर दबा लिया।

अपरिचित इसरार से कहीं अधिक और चुस्त नज़र आया। उसने बड़ी चालाकी से अपना छुरे वाला हाथ छुड़ा लिया किन्तु स्लीमन की खुशकिस्मती है इस प्रयत्न में उसका छुरा हाथ से छिटक कर कुछ दूर जा गिरा। और इसरार ने मौके का लाभ उठाते हुए अपरिचित को अपने बाहुओं में दबोच लिया। स्लीमन कुलबुलाता हुआ तमाशा देख रहा था। उसके पैर की हड्डी टूटी हुई थी इसलिए स्वयं उठने या इसरार की सहायता करने का साहस न था। फिर भी वह ज़ोर ज़ोर से चीख कर किसी सहायता की अपेक्षा में लगा रहा।

अपरिचित ने चन्द ही क्षणों में इसरार को नीचे पटक दिया। अपने हाथ से उसके पेट पर ज़ोर से दो-तीन हाथ मारे। इससे इसरार एकदम पस्त हो उठा। और उसकी ओर से निश्चिन्त होने के बाद अपरिचित फिर उठा तथा छुरा उठाता हुआ स्लीमन की ओर बढ़ा। वह बुदबुदाता भी जा रहा था—"गंगा बख्श सिंह डाकू को गिरफ्तार कराने का मज़ा दिखाए बिना मैं नहीं जाऊँगा साहेब के बच्चे। समझे।"

स्लीमन हाथ हिलाकर क्षमा माँगने लगा। इसरार ने फिर साहस लिया और उठकर दोनों के बीच में आ गया। गंगा सिंह ने ललकारा "क्यों अपनी जान गंवाना चाहता है रे मूर्ख। मैं तेरे प्यारे साहेब से बदला लिए बिना नहीं मानूँगा।" लेकिन इसरार हटने के स्थान हाथ जोड़ते हुए बोला "किस बात का बदला लेना चाहते हो भाई, यह तो बेचारे कुछ ही दिन हुए यहाँ आए हैं।"

"बकवास बन्द कर।" गंगा सिंह ने कहा "मैं स्लीमन के बच्चे को खूब पहचानता हूँ। इसने सोचा होगा गंगा सिंह को जेल की हवा खिलाने के बाद यह ज़िन्दा बच जाएगा। मगर मैं इसको और इस अमीनुद्दौला वज़ीर को जान से मारे बिना नहीं छोड़ूँगा। जेल की दीवारें मेरा

नहीं रोक सकती थी।"

"तुम भूलते हो यह रिचमौण्ड साहेब नहीं है।" इशरत इस बार उत्साह से कहने लगा "उनका तबादला हो गया है। यह नए रेजीडेंट स्लीमन साहेब हैं। नाहक इनके खून से अपने हाथ क्यों रंगते हो भाई। करे कोई और सजा किसी को मिले यह कहां का इंसाफ है?"

गंगा सिंह इतना सुनते ही रुक गया। छुरे वाला हाथ नीचे गिरा वह आगे बढ़ा और ध्यान से स्लीमन की आकृति देखने लगा। फिर उसकी नज़र इशरत पर गई। कुछ देर बाद जैसे उसे इशरत के कहने का यकीन हो गया और छुरा अपनी पेटी में लपेटते हुए वह वापिस लौटने लगा। स्लीमन का चेहरा मृत्यु का भय समाप्त होते ही निश्चिन्त नज़र आया। किन्तु टांग के दर्द से अब भी वह कराह रहा था। और उसी कराहट से उसने जाने वाले को रोका 'सुनो' सुनो मिस्टर गंगा सिंह।"

गंगा सिंह रुक गया। इशरत अपने साहेब को हाथ का सहारा देते हुए उठाने लगा। जब डाकू निकट आया तो बरछी से थोड़ा सा ऊपर उठ स्लीमन ने उसकी आंखों में आंखें डाल सवाल किया "क्या तुमको अमीनुद्दौला वज़ीर से बदला लेना है?"

'हां' गंगासिंह बोला 'रिचमोण्ड और अमीनुद्दौला दोनों से बदला लिये बिना मुझे चैन नहीं।"

"उन लोगों ने तुम्हें गिरफ्तार करवाया था?" स्लीमन ने अगला सवाल किया। गंगा सिंह ने स्वीकार किया तब रेजीडेंट ने अपने कष्ट की चिन्ता किये बिना मुस्कुराते हुए अपना दांया हाथ आगे बढ़ा दिया और कहा "तुम मेरे दोस्त हो। क्या तुम मेरे साथ बंगले चल सकते हो।"

गंगा सिंह हँस पड़ा और बोला "बेवकूफ समझते हो मुझे। शेर की मांद में जान बूझ कर क्या जाऊँ ताकि तुम अपनी इस चोट का बदला"

"मैं तुम से बदला नहीं लूंगा मेरे दोस्त। स्लीमन ने कहा 'हम

धर्मेम् जिसे एक बार अपना दोस्त कह देते हैं, उसके लिए जान की बाजी लगा देते हैं।"

"मगर यहाँ आने की कोई वजह तो हो।" गंगा सिंह विचारग्रस्त हुआ और पूछने लगा "आप लोग अचानक इतने मेहरबान क्यों हो रहे हैं?"

"हम क्राइस्ट की कसम खाकर वादा करते हैं दोस्त। तुम्हें कोई नुकसान न होगा। तुमने हमारी जान बख्श दी है हम इसका अहसान नहीं भूलेंगे। हमारे साथ चलो हम तुम्हें वजीर से बदला लेने का तरीका बतायेंगे। बोलो, चलोगे हमारे साथ।

गंगा सिंह कोई उत्तर न दे सका। स्लीमन इशरत का सहारा ले उठ कर खड़ा हो गया। लंगड़ाते हुए अपने घोड़े के पास तक आया। गंगा सिंह अब तक किसी निश्चय पर न पहुँच सका था। स्लीमन ने अपने खादिम को विशेष इशारा किया। तब इशरत गंगा सिंह की पीठ पर हाथ रखता हुआ कहने लगा "गुस्सा न करो भाई। हमारे साहेब ज़बान से कह कर मुकरने वाले नहीं हैं। तुम इनके दोस्त बन चुके हो। चलो हमारे साथ।" तब गंगा सिंह जैसे निश्चय पर पहुँच गया और उछल कर काले घोड़े पर सवार हो गया। इशरत ने स्लीमन को सहारा देकर सफ़ेद घोड़े पर चढ़ाया। इसके बाद खुद भी स्लीमन के पीछे सवार हो गया। इस तरह दो शरणार्थी एक नये दोस्त को साथ ले रेज़ीडेंसी वापिस आये।

स्लीमन घूम कर लौटने के बाद दूध पीता था। आज उसके पैर की हड्डी टूटने के कारण बहुत कष्ट था। इशरत का विचार था दूध से पहले वह तुरन्त अपनी मरहम पट्टी कराता। किन्तु उसने इसके लिए पीत स्लीमन को मारने की उत्तम तैयारियों का आदेश देते पाया। वह अपने मेहमान को सन्तुष्ट करने का प्रयत्न करना चाहता था। उसकी पत्नी हालांकि टांग टूटने से बहुत विचलित हो उठी थी किन्तु स्लीमन बहुत उत्साहित नज़र आ रहा था। रेज़ीडेंसी का डाक्टर बुलवा

नहीं रोक सकती थी।"

"तुम भूलते हो यह रिचमोण्ड साहेब नहीं हैं।" इशरत इस बार उत्साह से कहने लगा "उनका तबादला हो गया है। यह नए रेज़ीडेंट स्लीमन साहेब हैं। नाहक इनके खून से अपने हाथ क्यों रंगते हो भाई। करे कोई और सज़ा किसी को मिले यह कहां का इंसाफ है ?"

गंगा सिंह इतना सुनते ही रुक गया। छुरे वाला हाथ नीचे गिरा वह आगे बढ़ा और ध्यान से स्लीमन की आकृति देखने लगा। फिर उसकी नज़र इशरत पर गई। कुछ देर बाद जैसे उसे इशरत के कहने का यकीन हो गया और छुरा अपनी पेटी में लपेटते हुए वह वापिस लौटने लगा। स्लीमन का चेहरा मृत्यु का भय समाप्त होते ही निश्चिन्त नज़र आया। किन्तु टांग के दर्द से अब भी वह कराह रहा था। और उसी कराहट से उसने जाने वाले को रोका 'सुनो' सुनो मिस्टर गंगा सिंह।"

गंगा सिंह रुक गया। इशरत अपने साहेब को हाथ का सहारा देते हुए उठाने लगा। जब डाकू निकट आया तो धरती से ज़रा सा ऊपर उठ स्लीमन ने उसकी आंखों में आंखें डाल सवाल किया "क्या तुमको अमीनुद्दौला वज़ीर से बदला लेना है ?"

'हां" गंगासिंह बोला 'रिचमोण्ड और अमीनुद्दौला दोनों से बदला लिये बिना मुझे चैन नहीं।"

'इन लोगों ने तुम्हें गिरफ्तार करवाया था ?" स्लीमन ने अगला सवाल किया। गंगा सिंह ने स्वीकार किया तब रेज़ीडेंट ने अपने कष्ट की चिन्ता किये बिना मुस्कुराते हुए अपना दाया हाथ आगे बढ़ा दिया और कहा "तुम मेरे दोस्त हो। क्या तुम मेरे साथ बंगले चल सकते हो।"

गंगा सिंह हँस पड़ा और बोला 'बेवकूफ समझते हो मुझे। शेर की मांद में जान बूझ कर चला जाऊं ताकि तुम अपनी इस चोट का बदला "

"मैं तुम से बदला नहीं लूंगा मेरे दोस्त।" स्लीमन ने कहा "हम

पठान जिसे एक बार अपना दोस्त कह देते हैं, उसके लिए जान की बाजी लगा देते हैं।"

'मगर यहाँ आने की कोई वजह तो हो।' गंगा सिंह विचारग्रस्त हुआ और पूछने लगा 'आप लोग अचानक इतने मेहरबान क्यों हो रहे हैं?'

"हम कुरान की कसम खाकर वादा करते हैं दोस्त। तुम्हें कोई नुकसान न होगा। तुमने हमारी जान बख्श दी है हम इसका अहसान नहीं भूलेंगे। हमारे साथ चलो हम तुम्हें वजीर से बदला लेने का तरीका बतायेंगे। बोलो, चलोगे हमारे साथ।

गंगा सिंह कोई उत्तर न दे सका। स्लीमन इमरान का सहारा ले उठ कर खड़ा हो गया। लड़खड़ाते हुए अपने घोड़े के पास तक आया। गंगा सिंह अब तक किसी निश्चय पर न पहुँच सका था। स्लीमन ने अपने खादिम को विशेष इशारा किया। तब इमरान गंगा सिंह की पीठ पर हाथ रखता हुआ कहने लगा "घबरा न करो भाई। हमारे साहब जबान दे कर मुकरने वाले नहीं हैं। तुम इनके दोस्त बन चुके हो। चलो हमारे साथ।" तब गंगा सिंह जैसे निश्चय पर पहुँच गया और उछल कर अपने घोड़े पर सवार हो गया। इमरान ने स्लीमन को सहारा देकर उसके घोड़े पर चढ़ाया। इसके बाद नूर भी स्लीमन के पीछे सवार हो गया। इस तरह वो अग्रगामी एक नए दोस्त को साथ ले रेजीडेंसी वापिस आए।

स्लीमन घूम कर लौटने के बाद चुप बैठा था। उसका दायां पैर की हड्डी टूटने के कारण बहुत कष्ट था। इमरान का विचार था कि सबसे पहले वह तुरन्त उसकी मरहम पट्टी करायेगा। किन्तु उसने इसके विपरीत स्लीमन ने खाने की उत्तम तैयारियों का आदेश दे डाला। वह अपने मेहमान को सन्तुष्ट करने का प्रयत्न करना चाहता था। उसकी अपनी हालांकि टांग टूटने के कारण विचलित हो रही थी किन्तु स्लीमन बहुत प्रसन्नचित नजर आ रहा था। रेजीडेंसी का डाक्टर तुरन्त

लिया गया था। कराहता हुआ पलंग पर भी आ बैठा था। किन्तु नाश्ते की ओर से तैयारियां करने वाला आदेश ज्यों का त्यों रहा। हजरत को इस पर आश्चर्य हुआ। डाक्टर आया तो उसने पलंग पर लेटे-लेटे ही अपनी मरहम पट्टी करवाई। लेकिन उस वक्त गंगा सिंह सामने बैठा मालिश कर रहा था।

डाक्टर कह गया था बायीं टांग के घुटने की हड्डी कुछ चटक गई है और स्लीमन को भरपूर आराम करना चाहिए। मगर वह इसकी परवाह किये बिना अपने नये मेहमान की खातिर तवाजो में लगा रहा। तब हजरत ने उसे रोकने का प्रयत्न किया "साहेब आपकी तबियत नासाज है। बेहतर होगा अगर आप इस वक्त आराम करें और गंगा सिंह से कुछ देर बाद बातें कर लें।

लेकिन स्लीमन ने इस पर ध्यान नहीं दिया। हां इसके स्थान पर उसने हजरत को आदेश दिया कि वह किसी से आज की घटना का जिक्र न करे और पूछने पर यही बताये कि टांग की हड्डी घोड़े से गिरने के कारण टूटी है। और इसके बाद उसने कहा गंगा सिंह को यहीं छोड़ हजरत यहां से चला जावे। स्पष्टतया अब स्लीमन गंगा सिंह से कोई खास बात करना चाहता था जिसके लिये उसे यहां लाया गया था। वह उक्त बातचीत सुनने के लिए मन ही मन बेचैन तो बहुत हुआ किन्तु अवसर देखते हुए वहां से सिर झुकाता चला आया।

गंगा सिंह के साथ स्लीमन ने पूरे दो घण्टे गुजारे। इस बीच उसके कष्ट की चर्चा चारों तरफ फैल चुकी थी। मीर साहेब दौड़े हुए आए। रेजीडेंसी के और नौकरों ने भी खुशमिजाज़िये मिज़ाज में सलाम पेश करने की आज्ञा चाही किन्तु स्लीमन ने भीतर से कहलवा दिया वह आज तक किसी से नहीं मिलेंगे। वे लोग लौट गए और भेंट के लिए तैयार बड़े

अली नकी ने कहा—"लेकिन हम क्या कर सकते हैं। यह उनका निजी मुआमला है।"

"जनाब का फरमाना बजा है।" अली नकी बोले—"लेकिन मैंने इत्तलाअन यह दस्तखत वज़ीर की काबिलियत दिखाने की गरज से किया है। क्या अमीनुद्दौला साहब शाहे अवध को रोक नहीं सकते थे। क्या उन्हें दिखाई नहीं दे रहा था कि औरतों को गले पर डालना कितने जुल्म की बात है।"

अली नकी के खामोश होते ही स्लीमन के सुर्ख चेहरे पर मुस्कुराहट दौड़ गई और वह हँसता हुआ कहने लगा—"ओह, हम समझे नकी खाँ! आप का मतलब अब हम समझ गये।"

"गुलाम का कोई खास मतलब नहीं है जनाब। गुजारिश यही थी कि शाहे अवध के जिस मुआमले को आप निजी कह रहे हैं, वह वज़ीर के लिए खतरनाक साबित हो सकता है। गवर्नर साहब तक मरियम बेगम के दावे जाने की इत्तला जाये और उन्हें लिखा जाए कि वज़ीर की काबिलियत से यह जुल्म बच सकता था तो "

"तो वहाँ से शाहे अवध को मशवरा आएगा वह अपना वज़ीर फौरन बदल दे। यही न? लेकिन नकी खाँ इन ओछे तरीकों से आपको कामयाबी नहीं मिल सकती।"

नकी खाँ घबरा गये। दरअसल स्लीमन का ढंग देखते हुए न चाहने पर भी मुस्कुरा दिया था। अब नकी खाँ उसकी ओर से नज़र बचाते हुए से कहने लगे—"मेरा यह मतलब कतई नहीं है। मैं तो कह रहा था"

"आप हमेशा यही कहते हैं।" स्लीमन की मुस्कुराहट पलों के लिए रही और फिर बुझने वाले चिराग की रोशनी के समान एकदम गायब हो गई। वह सहसा गम्भीर हो गया और नकी खाँ से बड़ी रहस्यमयी आवाज़ में बोला—"दोस्तों से बात छुपाई जाए मगर असलियत छुपा नहीं करती। हमें अफसोस तो यही है आप अपनी दोस्ती का हाथ हमसे

बहुत दूर रखे हुए हैं।"

"क्या फरमाते हैं जनाब?" नकी खाँ भी उत्तर में इसी प्रकार गम्भीर होता हुआ कहने लगा— मैं तो आपका खादिम हूँ।

"सब यही कहते हैं नकी खाँ साहब। हिन्दुस्तान की जमीन में कुछ ऐसी बात है। इधर मतलब निकला और उधर सलाम हुआ बन्द।

"हुजूर ऐसा नहीं है। कुरान-पाक की कसम खाकर कहता हूँ जनाब कि मैं दोस्तों का सच्चा दोस्त और दुश्मनों का पक्का दुश्मन हूँ। आदमी की जात का पता परखने पर लगता है हजरत।'

"अच्छी बात है।" स्लीमन ने कहा—"मौका आया तो यह भी देखेंगे।"

इसके बाद आगे कोई विशेष चर्चा नहीं हुई। नकी खाँ चले गये। उनके जाते ही स्लीमन ने रेजीडेंसी के बड़े साहब को बुलवाया। एक गुलाम हुक्म का पालन करने चला गया। तब स्लीमन ने अपने कोट की भीतरी जेब से कोई कागज निकाला और बार-बार उसे पढ़ा। इशरत नजदीक खड़ा रहा। कागज फिर तह करने के बाद स्लीमन ने सामने पलंग पर डाल दिया और इशरत से बोला— 'तुम मोती बाई को जानते हो इशरत?"

कौन मोती बाई?" इशरत नहीं जानता था इसलिए पूछने लगा।

स्लीमन ने बताया—"शाही तवायफ जो बादशाह को गाना सुनाया करती है?"

वह फौरन समझ गया। मोती बाई लखनऊ की प्रसिद्ध नाचनेवालियों में थी। चौक में बड़ा-सा मकान था जिसमें खानी रकम से मौज मस्ती कर रखी थी। उसकी मुर्शिदजमन शाह पन्थ था उसकी बेगमात को गाना सुनाने को थी। स्लीमन ने उसी के बारे में पूछा था।

"जानता हूँ हुजूर।" उसने जवाब दे दिया।

"तुम आज रात उसके मकान जाओगे और हमारा सलाम बोलोगे।"

'बहुत खूब !' इमरत ने कहा। लेकिन स्लीमन का आदेश इसी सीमा तक सीमित रहा। मोती बाई को सलाम करने के बाद क्या कहना होगा यह उसे नहीं बताया गया। इससे इमरत को बड़ा आश्चर्य हुआ। स्लीमन चूँकि इतना हुक्म देने के बाद चुप हो गया था इसलिए वह समझ गया इतना ही कुछ इमरत को बताने लायक स्लीमन के पास रहा होगा। मगर एक सम्भावना उसकी बुद्धि में कुरमुरा गई। हुजूर पुराने पापी हैं। इतने कष्ट में भी तबियत की रंगीनी से मजबूर हो गये हैं। सलाम देने के बहाने शायद मुझे बुलवाने का इशारा उसकी मार्फत पहुँचाना चाहते हैं।

आधा घंटा बीतते न बीतते बड़े साहब तशरीफ ले आये। इमरत उस वक्त डाक्टर का दिया कोई तरल स्लीमन के घुटनों पर मल रहा था। कुर्सी पर स्थान ग्रहण कर कुछ समय तक वह स्लीमन के हाथ पाँव घूरते रहे। अन्त में याद किये जाने का कारण जानना चाहा।

स्लीमन ने बताया—"मेरी तबियत ठीक नहीं है। गवर्नर-जनरल का यह खत शाहे अवध के नाम आया है। मैं खुद नहीं जा सकता इसलिए आप को सुपुर्द करता हूँ। आप आज रात कैसरबाग में जिल्ले इलाही से मुलाकात करें और यह खत दे आयें।"

बड़े ने स्लीमन के हाथों खत लिया और उसे पढ़ने लगा। इमरत खत के बारे में जानने को बहुत बेचैन था। लेकिन बड़े की खामोशी से मंशा पूरा होना सम्भव न था। वह मन ही मन ईश्वर से प्रार्थना करता रहा कि उसे भी खत का मतलब सुनने को मिल जाये। और उसकी दुआ स्वीकार कर ली गई। खत समाप्त होने से पहले-पहले बड़े की आकृति में अजीब तरह का परिवर्तन आया और वह सिर हिलाते हुए स्लीमन से बोला—'सर क्या आप यह काम किसी और के सुपुर्द नहीं कर सकते?"

'क्यों?' स्लीमन ने अंग्रेजी में सवाल किया। चूँकि बड़े का यह

उत्तर गम्भीर था और आगे होने वाली किसी महत्त्वपूर्ण बातचीत का द्योतक भी था। मगर इमरत की उपस्थिति में अंग्रेजी का प्रयोग उसे सुविधाजनक लगा। बर्ड भी समझ गया। उसने उत्तर अंग्रेजी में ही दिया। लेकिन इमरत चतुर था। वह अंग्रेजी बातचीत बहुत कुछ समझ लेता था। अपने काम में दिल लगाये वह अपने कान इसी तरफ लगाए रहा।

बर्ड ने स्लीमन के पूछे जाने पर सिर्फ इतना उत्तर दिया— 'मुझसे ऐसा कोई काम नहीं हो सकता जिसको मेरी आत्मा स्वीकार न करे।'

इस पर स्लीमन एकदम बिगड़ गया। उसने बर्ड के सम्मुख सोटा मोग सेंचकर के कहा— 'हमें अपने मन से नहीं गवर्नर-जनरल की हिदायतों से काम करना है। मिस्टर बर्ड! आपको इस तरह इन्कार से अपनी वफादारी पर दाग नहीं लगाना चाहिए। यदि बात गवर्नर जनरल तक पहुँची तो वह नाराज हो सकते हैं।'

"यह तो ठीक है सर, लेकिन इस खत में सिर्फ बादशाह को जलील करने की कोशिश की गई है। इसकी जबान में अदब की बजाय बदकारी का सहारा लिया है। गवर्नर जनरल ने ईमानदारी के खिलाफ कुछ लिखा है। मैं किस तरह हिज हाइनेस के सामने पेश कर सकता हूँ?"

तुम बहुत ज्यादा जज्बाती हो बर्ड। सच और झूठ का नहीं हमें कम्पनी-सरकार के मकसद का फर्ज अदा करना है। तुम अच्छी तरह जानते हो अवध में आज चोरों और ठगों की भरमार है। तुम यह भी जानते हो यहाँ की हुकूमत कहाँ खिलवाड़ की तरफ मस्त है। इसलिए जरूरी नहीं है कि रियासत खुदमुख्तार हो जायगी और हुक्कामों को सुधारेगी। दरबार में नवाबों नर्तकों और हिजड़ों की गिनती तुमसे छिपी नहीं। ऐसी हालत में चाहे अवध में खून हो "

"यही तो मुश्किल है सर मैं कैसे जाकर उन्हें गवर्नर का पैगाम दे सकता हूँ कि उनसे भाग लेकर हुकूमत छीन ली जायगी बुद्धि वह

ऐयाश और नाकारा है। पर, आप न जानते हों यह दूसरी बात है लेकिन मैं इस सच्चाई से कैसे मुँह फेर सकता हूँ। मैंने हिज हाइनेस को बहुत दिनों से देखा है। वह ऐयाश नहीं है, नाकारा और आवारा नहीं है। चोर और डाकू किस मुल्क में नहीं होते ? कौन हुकूमत उन्हें पनाह देती है ? और गवर्नर-जनरल साहब ने लिखा है वह हालात हमारे मुआयदे सन् १८०१ की शर्तों के खिलाफ है। यह सरासर जुल्म है। उन्हें जलील और बेइज्जत करने की होप है।"

स्लीमन इस असामयिक वार्ता से बहुत गंभीर हो गया। उसने एसप्ल के हाथों से अपना चुरुट खींच लिया और सीधा उठते हुए कहने लगा—"इसका मतलब यही हुआ मिस्टर बर्ड कि तुम्हें अपनी सरकार और अपने हमवतनों से ज्यादा शाह और शाह की हुकूमत में दिलचस्पी है ?"

"नहीं मैं सच्चाई का तरफदार हूँ। जो बात है नहीं उसपर कैसे हामी भर सकता हूँ। आपने यहाँ आते ही शाह अवध के खिलाफ गवर्नर जनरल को न जाने क्या-क्या लिख मारा है। उसी का नतीजा इस खत में जाहिर है। लेकिन सर यह इंसाफ नहीं कहा जा सकता। हमें जो भी करना हो इंसाफ और ईमानदारी से करना चाहिए। क्या आपको यकीन है इन छोटी मोटी बातों से अवध में कोई तब्दीली की जा सकती है ?"

'यह बातें छोटी नहीं मिस्टर बर्ड। दरअसल तुम हर चीज को फेर में समझने के आदी हो गये हो। शाह अवध एक अच्छे आदमी हैं मैं खुद भी मन्जूर करता हूँ। लेकिन हमारे सामने कम्पनी की पालिसी और उसकी हुकूमत भी मुकर्रर है। तब्दीलियाँ होने वाली हों तो छोटी-छोटी बातों से भी मुमकिन है। और इस खत में तो उन तब्दीलियों का जिक्र भी नहीं। कम्पनी-सरकार हकीकतन अपने वाजिब हुकूक से काम ले रही है। जो चीज हमें नापसन्द है या जिसमें रियाया का भला नहीं उसके बारे में शाह अवध को वक्तन-फवक्तन याद दिलाते रहना हमारा फर्ज

है। यह तुम्हारी मार्फ़त खत का भेजना। अगर तुम नहीं चाहते तो मीर मुन्शी से अमीनुद्दौला के पास भिजवा दूँगा। लेकिन इसमें फँसने से पहले तुम्हें सोच जरूर लेना चाहिए कि आगे इसका नतीजा क्या होगा। मुमकिन है मैं तुम्हारे जज़बात के बारे में भी गवर्नर जनरल को लिख भेजूँ और वह समझे तुम इतने ऊँचे ओहदे पर काम करते हुए भी कम्पनी-सरकार के वफ़ादार नहीं।"

उस की गर्दन झुक गई। वह कुछ देर खामोशी से सोचता रहा। आखिर में स्लीमन की ओर देखते हुए उसने कहा "यही तो मुसीबत है सर। मैं बादशाह के सामने अपना सर झुकाना नापसन्द करता हूँ तो अपने मुल्क के खिलाफ़ गद्दारी भी नहीं कर सकता। शाह मेरे दोस्त और एक मोहब्बत भरे दिल के इंसान हैं जिन्हें किसी किस्म तकलीफ़ पहुँचाना मेरी ताकत से बाहर है तो दूसरी तरफ़ उस सरकार के अहकाम हैं जिससे मेरा और मेरे बच्चों का पेट पलता है और जिनको टालना मेरे फ़र्ज़ के खिलाफ़ है। इसलिये हमेशा की तरह इस बार भी कम्पनी सरकार का ताज़ा फ़रमान मैं अपने ही हाथों शाह के सीने में भोंकूँगा। लाइये खत मुझे दीजिये, और भूल जाइये मैंने इन्सान होने के नाते शाह के हक़ में कुछ अर्ज़ किया था।"

"गुड।" स्लीमन ने खत देते हुए कहा "मैं तुम्हारे जज़बात को पहचानता हूँ। तुम बहुत अच्छे अफ़सर साबित हो सकते हो। बशर्ते तुम्हारे दिल में औरतों जैसी कमज़ोरी न रहे।"

वह बिना कुछ कहे-सुने वहाँ से चला गया।

छः

अवध में उस समय राजनैतिक रस्साकशी हो रही थी। जिसमें भाग लेने वाले एक ओर थे फिरंगी हुकूमत के नुमायन्दे रेजीडेंट और गवर्नर जनरल और दूसरी ओर थे मलिका किश्वर और वजीर अमीनुद्दौला। दोनों पक्ष अपने ढंग से अपने आप को विजेता घोषित करने का प्रयत्न कर रहे थे। रेजीडेंट और गवर्नर-जनरल की नीति सुस्पष्ट और स्थिर थी जिसका एकमात्र चरम लक्ष्य था अवध को हस्तान्तरित कर लेना। दूसरी ओर इसे बचाने वाले शाह के हमदर्द वजीर और दूसरे दरबारी-गण अपनी ही फूट के कारण न तो एक नीति पर चल सकते थे और न अपने लक्ष्य की पूर्ति का कोई सुगम उपाय तलाश कर सकते थे। और मजा यह कि जिसके लिये यह सब कुछ किया जा रहा था वह खुद निश्चिन्त और निर्द्वन्द्व बैठा हुआ वजीर का सब से बड़ा अवसाद था। उसे संसार में किसी पर अविश्वास नहीं था और अपनी हुकूमत के बारे में मन से चाहे जितना चिन्तित रहा हो किन्तु जिसकी जबान पर हर बार यही धारणा प्रकट होती थी कि अंग्रेज़ों से उसकी मित्रता है और वह कभी धोखा नहीं दे सकते। इस तरह कहा जाए कि एक पक्ष बहुत सबल और दूसरा पक्ष बहुत निर्बल था तो अतिशयोक्ति नहीं है। कुछ और भी तो यही कि निर्बल पक्ष के साथ कानून इंसाफ और हक की दुहाई थी जब कि दूसरा पक्ष जोर-जबरदस्ती और बेईमानी से अपना काम निकालने का इच्छुक था। अवध कम्पनी सरकार की आँखों में खटक रहा था और इसे कब्जे में लेने के लिये अंग्रेज हर उचित-अनुचित उपाय पर कटिबद्ध थे।

कई बार यह धमकियाँ आ चुकी थी कि शाह का शासन खराब होता

का रहा है और हुकूमत ने उन शर्तों को पूरा नहीं किया जो १८०१ की विशिष्ट सन्धि के अनुसार उनके लिए जरूरी थीं। गवर्नर-जनरल के पास रेजीडेंट के जरीये जाते जिनमें ऐसा मालूम दिन रोज कर हुआ करता। दरबार के गायक और गायिकाओं को लेकर कई बार आक्षेप उठाये गए। फ़िजूलखर्चियों का ब्योरा दिया जाता रहा। अवध के डाकुओं का रोमांचकारी वर्णन होता। और इन सब की सूचना शाह के पास उस समय जाती जब उसके कहने को कुछ शेष न रह जाता। स्पष्ट है अगर रेजीडेंट के खतों के साथ शाह का उत्तर भी जाता तो स्थिति स्पष्ट होती चली जाती किन्तु जैसे कहा जा चुका है दूसरा पक्ष तो अपने लक्ष्य की पूर्ति के लिए सभी सम्भव उपायों का काम में ला रहा था। अन्त में अवस्था यहाँ तक पहुँची कि गवर्नर-जनरल के पत्रों में उनका असीम असन्तोष जाहिर होने लगा। उन्होंने प्रकट किया कि जैसे वह सिर्फ रहम मुरव्वत और मित्रता के वश शाह जैसे नाकारा अधिकारी को अवध में राज्य करने की आज्ञा दे रहे हैं।

साथ शासन के ऐसे पत्रों का आना दस्तूर जारी था कि शाह को एक बार उनके कानपुर आने की सूचना मिली। यद्यपि कानपुर पहुँचने की कोई सूचना शाह को नहीं मिली थी, लेकिन अपनी मर्यादा त्याग उन्होंने बिन बुलाए साहब से बातचीत करने का फैसला किया। एक बड़ी रियासत के शाह के लिए इतना बढ़ कर और अपमान की बात क्या थी कि वह रेजीडेंट के उल्टे-सीधे पत्रों से प्रभावित गवर्नर-जनरल के सम्मुख अपनी सफाई पेश करने जाएं। किन्तु फिर भी वह गये। गवर्नर जनरल से ऊँचे स्तर की भेंट हुई। भेंटें और निमन्त्रणों का आदान प्रदान हुआ। कुछ देर बातचीत हुई। गवर्नर जनरल शाह के स्पष्टीकरण से सन्तुष्ट और प्रभावित नज़र आये। अन्त समय उन्होंने विश्वास दिलाया आइन्दा रेजीडेंट की शिकायतों पर ध्यान देने से प्रथम शाह को उत्तर देने का मौका दिया जाया करेगा। और रेजीडेंट स्लीमैन के खिलाफ

नाराजगी जाहिर करते हुए यह भी कहा गया कि वह उसे तस्लीम कर देंगे। शाह वापिस आ गए। उन्हें गवर्नर-जनरल पर विश्वास हो गया। किन्तु कुछ दिन बीतने पर गवर्नर जनरल का दूसरा स्मृतिपत्र आया। कानपुर की भेंट का हवाला देते हुए पिछले आरोपों की पुष्टि करते हुए गवर्नर-जनरल ने साफ लिख दिया कि वह शाह के उत्तरों से सन्तुष्ट नहीं हैं। शाह पर पत्थर पड़ा। यह कैसा इंसाफ है। मुंह पर कुछ बगल में कुछ। कानपुर की भेंट के दौरान कहाँ तो गवर्नर जनरल ने शाह के प्रति अपनी निष्ठा और प्रेम व्यक्त किया था और कहाँ अपनी जबान से इस तरह मुकर जाना। मगर हो क्या सकता था। शाह ने गवर्नर-जनरल की ओर से ज्यादा सावधान रहने की कोशिश की। हुकूमत की देखभाल में और ज्यादा वक्त लगाना शुरू किया। इसी बीच लार्ड हार्डिंग के बाद दूसरे गवर्नर जनरल आए, जिन्होंने आते ही शाहे अवध को दोस्ती भरा खत लिखा और भोले बादशाह ने फिर समझा मुसीबत टल गई। गवर्नर जनरल उनका दोस्त बन गया है।

कई बार ऐसे फुस्फुसे हुए। शाह को जमता बैठे अंग्रेज उनकी हुकूमत खत्म करने की योजना बनाए बैठे हैं, फिर अपने स्वभाववश वह सन्तुष्ट हो सोचने लगते ऐसा नामुमकिन है। कोई बेइन्साफी और बेतुकी बात नहीं कर सकता। खासकर अंग्रेज जो उन्हें अपना दोस्त मानते हैं।

और इन दोस्तों का क्या हाल था इसकी कल्पना इसी बात से हो सकती है कि रेजीडेंट रिचमण्ड एवं स्लीमन जो उस समय लखनऊ की रेजीडेंट एडवाइजरों की मौत के नाम से प्रसिद्ध हो चुका था और गवर्नर-जनरल ने आउट्रम के स्थान भरती व उसे लखनऊ भेजते समय सिर्फ यही लिखा था कि अवध में वहाँ निकट भविष्य में कुछ बड़े परिवर्तन होने वाले हैं वहाँ आप जैसे काबिल और सख्त रेजीडेंट की आवश्यकता है। वाजिद अली नहीं समझते थे किन्तु स्लीमन भली प्रकार जानता और समझता था, लखनऊ में रेजीडेंट के ओहदे पर काम करने वाला कम्पनी-सरकार

का शायद यही आखिरी मुकाबिला होगा जिसे साथ-साथ यह सौभाग्य भी प्राप्त होगा कि उसने एक होनहार रेजीडेंट की तरह अवध जैसी बड़ी रियासत को पलों में मटियामेट कर डाला।

स्लीमन का जन्म ब्रिटेन के कार्नवाल जिले में स्टाटन नामक गांव में हुआ था। बाल्यकाल उसी गांव में बिताने के बाद उसकी पहली कामनायें लिए वह बंगाली फौज में भर्ती हो गया। भारत की बंगाल सेना में पैदल सवार तैनात होने पर जब वह यहाँ आया तो उसके अधिकारियों ने उससे सौगन्ध उठवाई कि वह हमेशा कम्पनी-सरकार और अपने हमवतनों का हमदर्द और वफादार रहेगा। स्लीमन ने सच्चे हृदय से सौगन्ध ली और भारत आने पर उसे भरपूर निभाया। आत्मोन्नति की अटूट भावना और साहस व योग्यता से दिनों-दिन उसे तरक्की मिलती गई। और आखिर पैदल फौज का साधारण सिपाही एक दिन रेजीडेंट के पद तक जा पहुँचा। झांसी में अपनी धाक बैठा देने के बाद अब अवध का नम्बर था। गवर्नर-जनरल को विश्वास था १८०१ के बाद आज तक जिस काम को कोई रेजीडेंट नहीं कर सका उसे स्लीमन बिना शर्त और आसानी से पूरा कर लेगा।

अवध के हस्तगत करने में दो बड़े अवरोध थे। एक वहाँ का काबिल वज़ीर अमीनुद्दौला और दूसरे शाह की तत्परता व योग्यता जिस से वह हुकूमत का काम सम्हाल रहे थे। रिश्वतखोर हकीमों और ज्योतिषियों की सहायता से शाह को बीमार घोषित करने के बाद उन्हें विमुख करने की चेष्टा भी किन्तु सफलता न मिल पायी। स्लीमन इन तरकीबों को थोथी बता रखता था। वह ठोस उपायों पर ज्यादा यकीन करता था। और अपने लखनऊ आने के कुछ दिनों बाद उसने अनुभव किया उसके ठोस उपाय एक निश्चित खरे उतर रहे हैं।

अतिरिक्त मुस्लिम महिलाओं के महल में वाजिदशाह अपना अधिक से अधिक समय बिताने के आदी बन चुके थे। इन नवागन्तुका रमणी के प्रेम

का नशा ज़ोर-शोर से बढ़ा और बढ़ा। पहले कहा जा चुका है प्रारम्भ में वह सुबह-सुबह उठ कर परेड देखने शुरू जाया करते थे। मरियम के पहुँचने के कुछ दिनों बाद इस नियम में ढील पड़ गई। मरियम न जाने किन तरकीबों से उन्हें रोक लेती। मनुष्य सुख-आराम का अनुभव करते ही बहुत जल्द उसका आदी हो जाता है। परेड में सुबह की उपस्थिति धीमे-धीमे शाह को अखरने लगी। उन्होंने यह काम अपने भाई मेजर सिकन्दर हशमत के सुपुर्द कर दिया।

शाह शराब नहीं पीते थे। मरियम ईसाई परिवार से सम्बंध रखती थी। उसके यहाँ शराब जायज़ थी। बादशाह की इजाज़त से उसने मदिरा सेवन पहले शुरू प्रारम्भ किया। फिर शाह को प्रेरित करती रही। वाजिद अली इस बीमारी से प्रत्यक्ष दूर थे। लेकिन मरियम का विनय पूर्ण अनुरोध न टाल सके। एक दिन अनायास कसम टूट गई। उसके बाद अक्सर शराब के दौर चलते। शाह बेगम एकान्त में शराब की खुमारी लिए मरियम के आलिंगन में जीवन का सुख लेते। मरियम ने सावधानी इतनी बर्ती कि शराब की बात बाहर न जा सकी। लोग यही जानते थे खुद मरियम पिया करती है। शाह इस सुविधा से और ज्यादा प्रसन्न हुए। नशा सुखदायी मालूम देता था। माँ मलिका किश्वर से उन्हें भय लगता था किन्तु मरियम की कुटिलता से यह भय साकार होने से बचा रहा। धीरे-धीरे वह शराब को ज्यादा और ज्यादा पसन्द करने लगे।

आगे चल कर मरियम राज्यकार्यों में अपना मत भी व्यक्त करने लगा। गवर्नर जनरल के स्मृतिपत्र आते तो शाह उदास अपनी आराम गाह में आते तब मरियम फिरंगियों को बुरा-भला कहने के साथ-साथ शाह को रास्ते सुझाती कि किस तरह हुकूमत को अच्छा और निर्दोष बनाया जा सकता है। शाह के लिये यह नुस्खे रामबाण सिद्ध होते। मरियम के मुख से आश्वासनपूर्ण बातें भली मालूम देतीं। जो सरकार

रंगीन शाम मोहक लगती। तब वह अपनी प्रतिष्ठा का अपमान भुलाने के लिये मरियम से हँस-हँस कर बातें करते प्यार की बातें करते शराबें पीते और अन्त में इतने मदहोश हो जाते कि उन्हें याद न रहता उस दिन दरबार में उनके प्रति रेजीडेंट की ओर से कितनी भर्त्सना की गई थी। यह प्रतिक्रिया आगे चल कर अपमान से बचने की साधारण तरकीब बन गई। स्लीमन जैसे धूर्त अफसर ने अवध में पहुँचते ही बाद शाह को परेशान करना आरम्भ कर दिया था। जहाँ मौका लगता वहीं कोई न कोई ऐसी हरकत कर बैठता जो बादशाह को परेशान करती। लेकिन मुसीबत थी उसका कोई उपाय न था। दरबारी जो शाह से अप्रतिष्ठा पाते स्लीमन द्वारा मान्यता प्राप्त कर रेजीडेंसी में नौकर हो जाते। जिस सिपाही को बेअदबी या किसी और आरोप पर शाही मुला जमत से हटाया गया वह तुरन्त अफसरी दस्ते में शामिल हो गया। और तो और आगे चल कर स्लीमन ने खुद अपना दरबार लगाना और लोगों से प्रार्थनापत्र लेना भी शुरू कर दिया था। वाजिद अली को जब-जब इन बातों की सूचना मिलती वह मन ही मन कुढ़ जाते। लेकिन असमर्थता की औकनी में सिवाय फुंकने के दूसरा उपाय न था। तब मरियम की आरामगाह में शराब का जाम लेते और उसके घुंघराले बालों में अपनी उंगलियां फेरते कभी-कभी उन्हें ध्यान आ जाता जब मौत निश्चित है तो फिर जिन्दगी के इस सुख से वंचित क्यों रहें। आज अपमानित करने वाला स्लीमन कल यहाँ कोई नया उत्पात करने के बाद हमें बेदखल कर दे तो भी हम कुछ कर न सकेंगे। इसलिये क्यों न मरियम के हाथों से जीभर मदिरा का सेवन करें और जीवन का सुख लें। जो वस्तु असार है उस सारहरूप देने से सिवाय अपना मन दुखित करने के और कोई लाभ नहीं। अतः शाह भरसक अपने अपमान और अपनी प्रतिष्ठा को मरियम के सान्निध्य में डुबाने के प्रयत्न में लीन रहते। उधर मरियम का यही एक लक्ष था। वह अब भी शाह को किसी राजनैतिक

उठी उसके पीछे यही एक भाव होता जिससे शाह अपने
र, असहाय और अपनों की दया के आश्रित समझें ।
म बड़ी सफ़ाई से शाह के दो ज़बरदस्त सहकारियों में से
कर रही थी । उसकी दृष्टि में वह दिन ज़्यादा दूर नहीं
लखनऊ में आग लग जाने का समाचार पाकर भी शाह
अठखेलियाँ करते रहते और राज्य की ओर से उदासीनता
। और वह जानती थी जिस रोज़ ऐसी नौबत आई,
यों को यह दावा करने से कोई नहीं रोक सकता कि वह
नाक़ाबिल है । नाकारा और ऐयाश है उसे तुरन्त तख़्त
देना चाहिये ।

र समय की बादशाहत का दूसरा बड़ा समर्थक वज़ीर
। मरियम उससे वैसे भी अप्रसन्न थी । गर्दन का ताज़
का था । किन्तु उसकी पीड़ा में वज़ीर की कुटिल आकृति
र सदैव के लिये अंकित हो गई थी । वह कोई उपाय सोच
ौर रेज़ीडेंसी की ओर से किसी आदेश की अपेक्षा भी कर
भी उसे मोती बाई नामक सरकारी तवायफ़ ने आकर एक
के दरबार की सुबह चर्चा में उसे किसी व्यक्ति-विशेष से
।

मती के महल में पर्दा रहा करता था । हरम में ख़्वाजा
लावा किसी को जाने की आज्ञा न थी । ख़ास दासियाँ बाँदी
य बेगमात की सेवा में रहती । मरियम ने उनमें से अपने
ख़ुद को इनाम इत्यादि से अपनी ओर मिला रखा था ।
न सलीमन के मुआवज़े से ख़ास हरम और महल के भीतरी
ऐसे दास-दासियाँ मौजूद थे जो समय पाते ख़बर का

और उससे भेंट करने वह अक्सर यहाँ आ जाया करती। वह बूढ़ा मरियम को बेटी कह कर पुकारता और अच्छी-बुरी सीख देता। मस्जिदाधिकारी को इस भेंट पर कोई ऐतराज न था। धर्म परिवर्तन के बाद मरियम ने चर्च की प्रार्थनाओं में सम्मिलित होना बन्द कर दिया था। पादरी से वह अपने पुराने सम्बन्धों के आधार पर मिल-बैठकर बातें कर ले इसमें कोई दोष न दिखाई दिया। लेकिन इसके पीछे वास्तविकता क्या थी मस्जिदाधिकारी को यह ज्ञात होती तो शायद कभी उसे वहाँ आने की आज्ञा न देती। पालकी वाले चर्च के बाहर खड़े-खड़े मरियम की प्रतीक्षा करते। पादरी भी अपने कमरे में लुप्त हो जाता। लोग समझते बूढ़ा अपनी मुँहबोली बेटी से बातें कर रहा है। और मरियम पिछले रास्ते से चुपके से बाहर निकल कर नज़दीक के मोहल्ले रोमपुरे में एक मकान में पहुँच जाती। किसी पर यह बात प्रकट हो चुकी थी। पालकी वालों तक को पता न चलता मरियम किस से बातचीत करने के बाद कहाँ से वापिस लौटी है।

उस दिन भी वह रोमपुरे के उसी मकान में एक कमरे का द्वार बन्द किये सामने पड़े एक तीस-बत्तीस साल के गौरवर्ण व्यक्ति से बातें कर रही थी जो देखने में सुन्दर और बलिष्ठ था। अंग्रेज़ी पोशाक से स्पष्ट होता था कि वह ईसाई है। गौरवर्ण जाहिर कर रहा था उसके माता पिता में से एक अवश्य विदेशी है।

इसका नाम जोसेफ टार्ट था और जोसी बाई ने इसी की भेंट का समाचार मरियम को पहुँचाया था।

मरियम ने बहुत सी बातें उसके साथ कीं किन्तु उन सब से तात्पर्य न रख हम उस वार्तालाप का विवरण दे रहे हैं जो बातचीत समाप्त होने के बाद चलने से कुछ पूर्व उन दोनों में हुई। मरियम जाते-जाते एकदम वापिस लौट पड़ी थी और जोसेफ के सामने आ कहने लगी थी "यह सब कब तक होगा जोसेफ? मैं इस ज़िन्दगी से तंग आ चुकी हूँ।

खुदा के लिए मुझे यहां से बुला लो मेरे दोस्त !'

"अभी से ?" जोसेफ ने हँस कर कहा— शायद यहां के ऐशो आराम ने तुम्हें अपने मुआफिक नहीं बनाया मेरी । लेकिन घबराने से काम नहीं चलेगा । अभी तुम्हें बहुत दिनों वाजिद अली के साथ मौज मारनी है ।"

"मुझे ऐसी मौजों से नफरत है जोसफ । तुम्हारे कहने पर मेरी मां ने मुझे मुसीबत में फँसा दिया है । जिन्हें तुम मौज समझते हो वह जहनी परेशानी है । तुम नहीं समझ सकते कि मैं किस तरह अपने दिन गुजार रही हूँ । अम्मी के साहब और तुम्हारे लोग ने मुझे बरबाद करने का फैसला कर लिया है ।"

'पागलपन की बातें क्यों करती हो मेरी । यह साहब नहीं अपने हमदर्दों की मदद है । सब हमारे मजहब को मानने वाले हैं । तुम समझती क्यों नहीं कि जब इस बादशाह की हुकूमत खत्म हो जायगी तो तवारीख तुम्हारा नाम कितने अदब से लेगी । तुम अपने मजहब के लिए कुरबानी कर रही हो । मैं

"प्यारे जोसेफ । मरियम जोसेफ के बिल्कुल सट कर खड़ी हो गई और बड़ी बड़ी आंखों से झांकते हुए कहने लगी— 'मुझे नाम नहीं चाहिए, इज्जत या मरतबा नहीं चाहिए । खुदा के लिए इजाजत दो कि मैं यह नाटक खत्म कर दूँ । अम्मी के पास शाही मुहरों के ढेर लग चुके हैं । तुम्हें जितना चाहिए तुम मुझ से मांग लो । मगर मुझे हरम से निकाल लो । तुम जानते हो मैं तुमसे मोहब्बत करती हूँ । तुम्हारे बिना एक पल जिन्दा नहीं रह सकती । फिर क्यों तुमने जानबूझ कर मुझे "

'मुझे रुपया जो कमाना है जानिम ?' जोसेफ ने हँस कर कहा ।

आखिर कितना ?" मरियम बोली—"जितना रुपया तुम्हें चाहिये मैं तुम्हें पहुँचा सकती हूँ । मगर "

"लेकिन मेरी नीयत न भरे तब क्या करोगी ?" जोसेफ ने कहा ।

देखना यही है यह तख्त कैसे और क्योंकर खतम होता है। और सोचना भी है ऐसे गाढ़े समय बादशाह इतना भयकर खतरा क्यों उठावेंगे। अमीनुद्दौला वज़ीर को हटाने जाने का मतलब फिरंगी चालबाजियों की सफलता से था। और उन चालबाजियों की सफलता को दूसरे शब्दों में अवध की बरबादी कहा जा सकता है। क्या शाह अवध इतने नादान बन जायेंगे कि वह खुद अपने पैरों में कुल्हाड़ी मार लें? नहीं मन नहीं चाहता कि ऐसी दुखदायी सत्यता पर विश्वास किया जावे। ऐसा मन दुख प्रसंग सोचा या समझा जावे।

वज़ीर अमीनुद्दौला बहुत तत्परता से अपना काम अंजाम दे रहे थे। उन्हें ज्ञात नहीं था अब उनकी परीक्षा प्रारम्भ होने वाली है। वाजिद अली शाह की वफ़ादारी और हमदर्दी उनका लक्ष्य था। राजनीति के वह महान पंडित थे। और अपनी स्थिति तो बालक भी समझ सकता है। एक ओर तो नकी खां की पुत्री से वाजिद अली के नये विवाह की सम्भावना सत्य सिद्ध करने के लिए वहां वह मल्लिका किश्वर, नकी खां और खुद शाहे अवध को तैयार कर चुके थे वहीं फिरंगी हुक्कामों की चापलूसी से भी बाज़ नहीं आते थे। उन्होंने प्रकट करने की कोशिश की थी कैसे रेज़ीडेंट स्लीमन जैसा काबिल आदमी उनके भुलावे में आकर उन्हें अपना हमराज़ समझने की मूर्खता करने लगेगा। मगर इसका असर बिल्कुल उलटा हुआ। स्लीमन तो उनका लक्ष्य पहले से जानता था। शाह को अवश्य सोचने पर मजबूर किया गया कि वज़ीर ने यह नयी नीति क्यों अपनायी है। वह वज़ीर की मनःस्थिति अच्छी प्रकार नहीं समझ सके। इसलिए जिस दिन महरियम ने बातों बातों में वज़ीर की फिरंगी समर्थक नीति पर आलोचना की उन्हें लगा वह भाव तक पोंचे में हैं। डूबते सूर्य को कौन पूछता है। वज़ीर मौका और वक्त देख कर

बात कर रहा है। ताकि हुकूमत चले जाने पर भी कम से कम उसे कोई न कोई नौकरी मिल जाए। यह ज़हर भरने में नकी खां ने भी पूरा योग दिया। वह तो पहले ही अमीनुद्दौला का पक्का विरोधी था। अब बादशाह का ज़रा सा इशारा पाया तो आसानी से इसे सिद्ध करने के प्रयत्न में जुट गया।

अमीनुद्दौला पर बादशाह का रुख बहुत जल्द प्रकट हो गया। लेकिन उन्होंने परवाह नहीं की। वह बराबर अपना कर्त्तव्य ईमानदारी से निभाते रहे। हुजूर तहसील का लगान वसूल होने में दुश्वारी हुई। स्लीमन के पास ज़मींदारों ने पहले ही प्रार्थनायें लिखित रूप में दे दी थीं। वज़ीर के पास कागज़ात आये तो शाह से बहस हुई। शाह ने कहा इस बार स्लीमन को तगड़ा जवाब दिया जाये कि उन्हें ऐसी प्रार्थनायें लेने का कोई हक नहीं। वज़ीर इसके पक्ष में नहीं थे। उन्होंने शाह को ऊँच नीच समझाई। बेकार उलझना लेने से कोई लाभ नहीं। आप हुक्म दें तो लगान की वसूली के लिये मैं खुद ज़मींदार से मिल लूं। बादशाह ने कहने को कह दिया वज़ीर जो चाहे करें। मगर मन में गांठ पड़ गई। उन्होंने सोचा वज़ीर स्लीमन को नाराज़ करने के पक्ष में नहीं। ज़हर भीतर जमा था। बाहर आ गया। लेकिन मरियम ने उन्हें समझा बुझा कर शांत कर दिया।

अमीनुद्दौला ने खुद लगान की वसूली में दिलचस्पी ली और दो हफ्ते में पचास हज़ार रुपया जमा कर लिया। तहसील से रुपया ला कर उनके मकान पर रखा रहा। वज़ीर साहेब का विचार था वह इकट्ठा सरकारी खज़ाने में जमा कर देंगे। उन्हें क्या मालूम अब कौन सी नयी साज़िश रची जाने वाली है। नकी खां ने वाजिद अली शाह के कानों में डाल दिया वज़ीर साहेब मालगुज़ारी का पचास हज़ार रुपया वसूल कर लाये हैं मगर अपने मकान में ले लिया है। बदकिस्मती की बात वज़ीर साहेब किसी ज़रूरी काम में अटक कर बाद पहर से दो

तीन दिन तक मिल भी न सके थे। नकी खां ने कहा—अब वह ज़ामिनदार वगैरह से मिलकर तरकीब कर रहे हैं कि सरकार में ग़लत रिपोर्ट कर दें ताकि रुपया भरने से बच सकें।

रात को मरियम ने बड़ी ख़ुशी से ऐसी बात कही। शाह पहले से जले भुने बैठे थे। मरियम ने जब यह कहा कि उसने वज़ीर साहेब के बारे में कुछ ऐसा सुना है कि उन्होंने सरकारी रुपये से कोई मकान ख़रीद लिया है तो वह फूट पड़े। वैसे वाजिद अली शाह को क्रोध नहीं आया करता था। लेकिन जब आता तो आंखों से चिंगारियां बरसतीं। मरियम उन चिंगारियों पर ओस का काम करती। जब बहुत देर वह वज़ीर को सुना चुके तो उसने समझाया—"इससे काम नहीं चलेगा आका। साफ़ बात यह है कि उन्हें तलब फ़रमाकर रुपया जमा करने का हुक्म दें अगर वह जमा कर दे तो ठीक है वरना फ़ौरन वज़ारत से बरतरफ़ कर दें।" वाजिद अली ने इसका समर्थन किया। वज़ीर की चौथी तलबी हुई। उस वक्त सुबह के पांच बजे थे जब नमाज़ के बाद शाह ने यह आदेश दिया। वज़ीर साहेब आश्चर्य करते हुए घर से निकले। बात उनके कानों में भी आ चुकी थी कि शायद लगान की वसूलयाबी के रुपये की तलबी हो इसलिए रुपया उन्होंने साथ ले लिया।

जब उनकी बग्घी कानपुर जाने वाली सड़क से गुज़र रही थी तो अचानक उनके ऊपर चार-पांच आदमियों ने हमला बोल दिया। वह इस आफ़त के लिये तैयार नहीं थे। घबरा गये। किन्तु धैर्यवान नौकरों ने मालिक को बचाने के लिये कोई कसर उठा न रखी। एक बेचारे का हाथ कट गया। दूसरे पर तलवार का वार पीठ पर पड़ा। तब वह चीख़ते चिल्लाते भाग निकले। अब हमलावरों म से एक ने वज़ीर को बग्घी से नीचे उतारना चाहा। तेजबुद्धि वज़ीर उसे तुरन्त पहचान गये। यह जंगबहादुर सिंह डाकू था। यही जिसे उन्होंने एक बार रेज़ीडेंट रिचमौन्ड की सहायता से रँगे हाथों नक़ब करते और डाका मारते पकड़ा

था। उस भयंकर व्यक्ति की आँखों से आग बरस रही थी। वज़ीर शरीर के इतने चुस्त और शक्तिशाली नहीं थे। बग्घी से नीचे धकेल गये। शोर मचाया। तमाशबीनों की भीड़ लग गई थी। किन्तु किसी ने आगे आने का साहस न किया। रुपयों की थैली बगा सिंह के हाथों पहुँच चुकी थी। निकट था कि उसकी कटीली कटार वज़ीर की आँतें चीर देती कि तभी पास से रेज़ीडेंट हाथी पर सवार उधर से गुज़रा। बगा सिंह के कानों में शोर आया। उस समय रेज़ीडेंट के साथ सिपाही भी थे। वह भाग निकला। उसने अपने साथियों को भी भागने का इशारा किया। किन्तु कम्पनी के सिपाही दौड़े और बगा सिंह के अतिरिक्त उसके साथियों को पकड़ लिया। वज़ीर की जान जाते-जाते बची। रुपया बस बचा बचा गया। यहाँ वहाँ बहुत घाव हो आये थे। उठने और चलने फिरने के सर्वथा अयोग्य हो गये।

रेज़ीडेंट उन्हें हाथी पर डलवा कर रेज़ीडेंसी ले आया। कम्पनी का डाक्टर उनकी सेवा में लग गया। बाहर किसी को इस घटना का समाचार न दिया गया। हमलावर गारद में बन्द रहे। आठ दिन इस तरह बीत गये। बादशाह को इसकी भी सूचना मिली। उन्होंने रेज़ीडेंसी खबर भेजी कि वज़ीर और उनके हमलावर हवाले किये जायें। लेकिन रेज़ीडेंट तो चुप और सोचे बैठा था। उसने वज़ीर तक शाह का समाचार भी न पहुँचाया। बादशाह को इन्कार लिखवा दिया कि वह मुजरिम शाही हिरासत में नहीं दिये जा सकते। साथ वज़ीर की तरफ़ से भी पैग़ाम लिखवा दिया कि उन हमलावरों को उन्होंने मुआफ़ कर दिया है। शाह के तन बदन में इस अपमान से आग लग गई। कहाँ तो वह वज़ीर की हमदर्दी में उनके हमलावरों को सज़ा दिलाना चाहते थे कहाँ वज़ीर की तरफ़ से ऐसा उत्तर आया। ऊपर से रेज़ीडेंट ने उन हमलावरों को दिलवाने से इन्कार किया और इस तरह उनका घोर अपमान किया। उन्होंने तब अपने हाथ से रेज़ीडेंट को खत लिखा और

कहा यह हमारे हुक्म की तौहीन है। गुनाहगार को सरकारी कानून के तहत सजा मिलनी चाहिये। मुजरिमों को हमारे हवाले कीजिए। लेकिन रेज़ीडेंट ने इस पर भी कोई कार्यवाही नहीं की। बादशाह परे शान हो गये। उनकी समझ में इसका कोई कारण नहीं आया। रुपया छीने जाने की घटना वज़ीर ने रेज़ीडेंट को जरूर बता दी थी किन्तु रेज़ीडेंट ने शाह को इसकी सूचना नहीं भेजी। फिर भी उन्हें यह खब- बर जरूर मिल गई कि हमलावर वज़ीर के हाथों रुपया भी छीन ले गये हैं।

इधर मरियम ने मौके से फायदा उठाया। रात को शाह जब उसकी आरामगाह में आये तो उसने वज़ीर के खिलाफ आग उगली। इस घटना से शाह तो पहले ही अपने को अपमानित अनुभव कर रहे थे। वज़ीर पर उन्हें क्रोध था कि उसने क्यों हमलावरों को अपनी तरफ से मुआफ करने की जुर्रत की और रेज़ीडेंट के द्वारा हमें ज़लील करवाया। इधर मरि यम ने इस घटना का जो नया रूप दिया उससे शाह बिफर गए। उसने इस प्रकार इस घटना का विश्लेषण किया 'वाक्या दरअसल कुछ और है हुजूरे अनवर। आप ने वज़ीर साहेब को तलब करवाया था रुपये की खातिर। रुपया उनके पास था नहीं। इसलिये अपने दोस्त रेज़ीडेंट से मिल कर उन्होंने यह फर्ज़ी हमला तजवीज किया है। अब हुजूर के सामने पेश होने पर जाहिर करेंगे कि उनका रुपया लूट लिया गया और बात खत्म समझिये। ऐसी दीदादिलेरी तो कभी देखने में नहीं आई। उनकी मदद पर रेज़ीडेंट साहेब साफ नजर आ रहे हैं। चोर के भाई गिरहकट। मुझे तो पहले ही शक था कि वज़ीर साहेब रेज़ीडेंट से साठ- गाँठ रखते हैं। अब साबित हो गया।"

शाह ने यह बात गाँठ बाँध ली। पाँच चार दिन बाद रेज़ीडेंसी के डाक्टर ने वज़ीर साहेब को तन्दुरुस्त करार दिया और वह बाहर निकले। इस बीच चारों हमलावर शाही हिरासत में लिये जा चुके थे। उन्होंने

एक स्वर से कहा कि हममें से कोई रुपया नहीं लूटा गया। शाह तक यह बात ज्यों की त्यों पहुँच गई। मरियम की सम्भावना सच नज़र आई। वह समझ गये हों न हों यह कोई चाल थी। वज़ीर साहेब सामने आये तो उन्होंने आरोप लगा दिया। बेचारे सात बार चीख चीख कर अपनी बेगुनाही का सबूत देते रहे। मगर शाह ने एक न सुनी। उनका कहना था जब रुपया लूटा नहीं गया तो गया कहाँ। वज़ीर के पास इसका कोई उत्तर न था। वास्ते तो वह देते कि गया सिंह भी इनका वर्कों में शामिल था और उसी ने रकम पर हाथ मारा है। मगर नक्कारे की आवाज़ों में तूती की सुनवाई कहाँ। बादशाह तो पहले से भरे बैठे थे। इज़्ज़त इसी में थी कि वह वहाँ से चले जाते। अगले दिन उनकी बरतरफ़ी का आदेश निकल गया। वज़ीर ने एक बार भी प्रतिवाद न किया। वह मलिका किश्वर के पास गए और अपना रोना रोने लगे। लेकिन मलिका किश्वर के मुख से भी जब उन्होंने निराशाजनक बातें सुनीं तो उनकी आँखों से आँसू आ पड़े। उन्होंने कहा—"अवध की बरबादी नज़दीक आ गई है मलिका हुज़ूर—" और वहाँ से लौट आये।

और इस तरह सचमुच अवध की बरबादी का वास्तविक अध्याय आरम्भ हुआ। अमीनुद्दौला के बाद मुफ्ती साहेब वज़ीर बनाये गए। मगर उन्होंने दो चार ही दिन में अपना पुराना मज़हब नया कर लिया एक मन्दिर गिरवा कर मस्जिद तामीर करवा दी और पचासों ऐसे व्यक्तियों को दुबारा नौकरी पर बुलवा लिया जो शाह ने निकाल दिए थे। फिर उनकी वज़ारत को भी दाग़ लग गया और उन्हें तुरन्त हटा कर नकी खाँ की नियुक्ति हुई। नकी खाँ के घर में भी वे दिन जमे। नियाज़ वही दावतें और महफ़िलें जुड़ीं। उनकी बरसों की अभिलाषा पूर्ण हुई। वह गुण थे और बहुत गुनी थे। उसी शान उनकी प्रसन्नता को चार चाँद और लग गये। किसी दरबारी ने बातन में यह प्रसंग छेड़ा कि शाह को उनकी बेटी मुस्ताना पसन्द है। शान को मुस्ताना से यही बात

आये और न उसके साथी दरबारी। इस तरह उत्सव में जमघट उन लोगों का जुड़ा जो स्लीमन के सच्चे सहायक या मित्र थे और जिनकी हमदर्दी बादशाह के साथ सिर्फ मुंहदेखी थी। दुर्भाग्यवश बैग्रन अकेले दल के विरोधी वहां रहे।

भोजन के समय अली खां की सफलता और अमीनुद्दौला की असफलता को लेकर अजीब-अजीब चुटकुले छोड़े गये। जैसा स्वाभाविक था अली खां के हमदर्दों ने मिजाजपुर्सी में एक का अपमान और दूसरे का सम्मान किया। लेकिन उन लोगों की भाषा मजाक की थी और शाहे अवध को बचा कर वह बड़ी मनोरंजक रीति से स्लीमन को प्रसन्न करने का प्रयत्न कर रहे थे। शराब की अंग्रेजी बोतलें अनगिनत प्रयोग में लाई गईं। बैग्रन भी पीता था। किन्तु उसकी आँखें खुली थी और कान सचेत थे एक बार किसी ने कह दिया 'अब शाहे अवध हरम में मौज करेंगे और उनका काबिल वज़ीर हुकूमत की बागडोर सम्हालेगा। चारो तरफ खुशहाली नजर आयेगी। रियाया अमन की सांस लेगी। तब उससे न रहा गया और कहने वालों को उसने आड़े हाथों लिया। स्लीमन को भला यह कब सहन हो सकता था। अली खां की जबान को तो ताला लगा रहा किन्तु वह खुद मैदान में उतर आया और बोला—"हमने तो सुना था मिस्टर बैग्रन कि आप शाहे अवध से नाराज़ हैं और उनकी नयी शादी पर अपने अखबार में आप ने बहुत कुछ लिखा था। फिर आज आप को क्या हो गया कि आप इस हाजरीन की ज़रा सी बात का बुरा मान गये?"

"मिस्टर स्लीमन! बैग्रन ने सोच विचार के बाद संक्षिप्त सा उत्तर दिया—"मैं अपने पेशे में ईमानदार रहने की कोशिश करता हूँ और ज़रूरत पड़ने पर अपने दोस्तों की नुक्ताचीनी करने से भी बाज नहीं आ सकता।"

'लेकिन लोगों का ख्याल है, हिज़ मैजेस्टी इस बात पर आप से खफा

हो गये थे और उन्होंने अपना अखबार बन्द करने की धमकी दी थी।

बैंडन इस प्रश्न पर बहुत गम्भीरता से अपने हमवतन की शक्ल देखने लगे और अन्त में किंचित झुंझलाये स्वर में बोले 'ताज्जुब है मिस्टर स्लीमन आप को यहाँ आये कुछ ही दिन बीते हैं और आप जरूरत से ज्यादा बातों की जानकारी कर चुके हैं। वरना उनका आपके फर्ज से कोई ताल्लुक हो या न हो।

आप नाराज़ हो गये मिस्टर बैंडन! मेरा यह मतलब नहीं था। मैं तो समझता हूँ कि मैजेस्टी का मिजाज बच्चों के मिजाज की तरह कच्चा है। आप तो उन को बहुत दिनों से जानते हैं। मेरी राय है आपको उनके मुआमलों में टांग अड़ाना गैर जरूरी था।

टांग अड़ाने का अपमानजनक शब्द सुनते ही बैंडन के मुख चेहरे पर क्रोध के लक्षण प्रकट हुए। किन्तु कठिनाई से उन्होंने स्वयं पर संयम किया। दूसरे क्षण स्लीमन को उपयुक्त उत्तर देने के लिए उन्होंने कह दिया— 'आज तक मुझे महज शक था लेकिन आज यकीन हो गया नरगिस बेगम के साथ निकाह पर आप को किस वजह खफगी हुई है।"

"क्या मतलब" स्लीमन चिढ़ गया। बैंडन ने कुची चोट की थी। इसकी आशा असम्भव थी। यहाँ की हर बात शाह के कानों तक पहुँचनी जरूरी थी। फिर पर भी बैंडन मुंह आम इतनी बात कह देंगे स्लीमन नहीं समझता था।

"मतलब बिल्कुल साफ है।" अब बैंडन ने हंसते और स्लीमन को नोच लिया 'आप जिस कम्पनी के मुलाज़िम हैं उसके जहन में बेईमानी और बदनामी के सिवा कुछ नहीं। उसकी हमेशा यही साध होगी कि हमारे वाजिदअलीशाह रोज़ एक नयी बेगम से निकाह करते जायें और अपनी बांदियों की गिनती हजार दो हजार कर लें। इस तरह रात दिन इन बेगमात से निपटारा करने में ही एक दो साल का वक्त गुजर जायेगा। और यह वक्त आपकी कम्पनी को दखल पूरे तौर करने के लिये काफी होगा।"

के बाद मौत को गले लगाने से पहले पाप को मिटा डालेंगे। बरदाश्त कर देंगे अपने ऊपर होने वाले एक-एक जुल्म का बदला लेंगे। यह मेरी नहीं मेरे मजहब की आवाज है। मेरे मुल्क मेरी मुल्कपरस्ती की आवाज है। खुदा आपको नेक रास्ते दे। खुदा आपकी बन्द आंखों से लालच का पर्दा दूर करे। आमीन।

बैंग्सन ने इसके बाद उपस्थित सभा को देखा जो मौत की तरह शान्त थी। वह अपने स्थान से उठ गये और चलने को उद्यत हुए। तभी कप्तान बड आगे आ गया। उसने बैंग्सन को शान्त करने और रोकने का प्रयत्न करना चाहा। लेकिन स्लीमन ने चीख कर उसे मना किया और कहा 'जाने दो बड जो अंग्रेज अपने भाइयों की बरबादी के लिए खुदा से दुआ करे उसका यहां से दफा हो जाना ही ठीक है। मिस्टर बैंग्सन आज की एक-एक बात याद रहे। खुदा ने ताकत दी तो मैं तुमसे इसका जवाब मांगूगा।"

बैंग्सन ने कोई जवाब न दिया और वहां से चले आए। स्लीमन ने सामने रक्खा शराब का जाम गले से नीचे उतार दिया। बड कुछ कहने उसके पास आया किन्तु उससे पहले पहले स्लीमन जोसेफ को कुछ इशारा करता हुआ भीतर रेजीडेंसी के दफ्तर में चला गया। उसके पीछे जोसेफ और बाद में नकी खां ने भी उसका अनुसरण किया।

'तुमने देखा नकी खां बैंग्सन किस कदर गुर्रा कर बरसता है?" भीतर पहुंच कर स्लीमन ने वजीर से कहा।

"गीदड़ की मौत आने वाली होती है तो वह शहर की तरफ भागता है।" नकी खां ने हथेलियां मलकर जवाब दिया "आप की हिम्मत को शाबाश है हुजूर जो आपने इस खूबी से बर्दाश्त किया।"

"हम जबान के शेर नहीं नकी खां।" स्लीमन बोला "बैंग्सन को

इसका माकूल जवाब दिया जायेगा। लेकिन अभी नहीं। मौका आने पर।'

"मेरे लायक कोई हुक्म हो तो फरमायें जनाब।" नकी खां ने खुशामद भरे शब्दों में पूछा—"कहें तो लोगों से कह कर किसी मुआमले में लड़वा दूं।"

"हम ऐसे हेय तरीकों के कायल नहीं।" स्लीमन सोच विचार करता कहने लगा। "हम ईमानदार कुत्ते को ब्रिटिश मैजेस्टी की वफादारी का दम भरता है। भला वह दिन होगा जिस दिन यही बादशाह इसे दूध की मक्खी की तरह निकाल फेंकेंगे। तब यह समझ सकेगा हिन्दोस्तान के लोग ईमानदार और शरीफ नहीं बेवकूफ हैं जिनको हुकूमत करने की तमीज नहीं।"

"जी हां जी हां।" नकी खां ने जल्दी से जैसे बिना समझे समर्थन कर दिया।

"सुनो।" स्लीमन अब उसकी ओर घूमा और गम्भीरता से कहने लगा—"तुम वजीर बन चुके हो नकी खां। हमने अपना कहा पूरा किया।"

"गुलाम अहसान मानता है। हमेशा जनाब का फरमाबरदार रहेगा।"

"हमें तुम्हारी मदद चाहिए।"

"हुक्म दीजिए।"

"गवर्नर जनरल ने हमें अवध का दौरा करने की हिदायत भेजी है। हम देखना चाहते हैं यहां कैसी हुकूमत है। उसके बाद अन्त हमारी रिपोर्ट जायेगी। हम चाहते हैं तुम दौरे को इत्मीनान दिलवाने में हमारी मदद करो।"

"बहुत खूब।" नकी खां ने जवाब दिया—"परसों मेरी बेटी का ब्याह जनाब के साथ निकाह है। रस्म के बाद आपके यहां से खबर आते ही मैं शाही मंजूरी मालूम कर लूंगा।"

'निकाह ?" स्लीमन सुनते ही चौंका और वज़ीर की ओर घूरते हुए बोला— क्या तुम अपनी बेटी को हिज़ मैजेस्टी के सिपुर्द कर रहे हो ?"

"यह मेरी खुशकिस्मती है।"—वज़ीर ने अपना सिर झुका लिया—बरता मैं इस काबिल कहा।

"तुमने हमारी इजाज़त नहीं ली ? स्लीमन ने अगला सवाल किया।

"इसका मौका नहीं मिला—"नकी खाँ घबरा कर जल्दी से बोला—'अचानक शाह का पैग़ाम आया और मैंने उसे मन्ज़ूर कर लिया।

हूँ। स्लीमन कुछ देर सोचता रहा। अन्त में हँसता हुआ बोला—"शायद इस नये रिश्ते के बाद तुम हमें भूल जाओगे।"

"खुदा न करे। कैसी बातें करते हैं जनाब। गुलाम हमेशा आपका गुलाम रहेगा।

"ठीक है।" स्लीमन ने कहा—'लेकिन याद रहे। तुम वज़ारत के लिए जितनी काबिलियत रखते हो हम जानते हैं। तुम्हारी वज़ारत उसी दिन तक महफ़ूज़ रहेगी जिस दिन तक हम चाहेंगे। हम याद नहीं दिलाना चाहते मगर तुम भूल न जाओ इसलिए कह देते हैं अवध में अनक़रीब एक ज़बरदस्त तब्दीली होने वाली है। तुम अपने बादशाह को अपना दामाद मान कर अपनी और अपनी लाडली बेटी की ज़िन्दगी का जुआ खेल बैठे तो ज़िम्मेदारी तुम्हारी होगी। हम अपने दोस्त के दोस्त और दुश्मन के दुश्मन हैं। पिछले वज़ीर का अंजाम तुम्हारे सामने है। कहीं ऐसा न हो कि हमें गवर्नर जनरल को शाह अवध के साथ-साथ तुम्हारे लिए भी कुछ लिखना पड़े।'

नकी खाँ सहम गया। उसने बार बार कोर्निश बजा कर अपने समझने का भाव दिखाया और बिना रुके वहाँ से भाग आया। उसके जाते ही स्लीमन ज़ोर से हँसने लगा और कोलेन्ड की तरफ़ देखने लगा जो बारीकी से परिस्थिति का अध्ययन कर रहा था।

अन्त में स्लीमन का कहकहा समाप्त हुआ तो जोसेफ ने आगे बढ़ कर कहा—"आप वजीर से बड़ी लम्बी बातें करते हैं सर, क्या यह खतरनाक नहीं ?"

"तुम पागल हो जोसेफ। क्या कोई तोपची उस तोप से खौफ कर सकता है जिसका रुख दूसरी तरफ हो और जिसका पलीता उसके हाथ में हो। मेरा ख्याल है नहीं।

"मगर तोप खतरनाक है सर, जिसका रुख बदला जा सकता है।"

"महज एक ठंडा गोला खतरनाक कैसे हो सकता है। तोपची उसमें मसाला न डाले तो तोप बेकार है। वजीर न बजात खुद की कांफिडन्स का मसाला डालने वाला तोपची मैं खुद हूँ। जोसेफ इसकी कांफिडन्स या कान्फिडन्स शाह की सरकारी और कम्पनी की मसलहतों के लिए है। इसको ऐसे समझो जैसे बाजे की भोंपू का सुराख देता। ऊपर से रंगा हुआ खूबसूरत और अन्दर से खाली। उठा दिया तो किसी के सिर जा लगा वरना सड़क पर पड़ा है। यह मसनवी और मसाले वही गरम है। हुक्म तलवार की तरह यह बेकार है।"

जोसेफ इन उपमाओं से हँस पड़ा। स्लीमन उसे देखने लगा। दोनों कुछ देर के लिए खामोश हो गए।

"सुनो जोसेफ।" अन्त में स्लीमन ने कहा—"तुम्हें मलिका से मिलना होगा।"

"ओ हुक्म सर। क्या काम है ?"

"हाँ। मेरे दौरे के बाबत उस हिफाजत करनी होगी।"

कर दूँगा लेकिन सर "

"इसकी भी फिक्र न करो मेरे दोस्त। अवध कौम को तुम जैसे हमदर्दों पर फख्र है। अवध की मौजूदा हुकूमत खत्म होते ही तुम्हें अच्छा ओहदा दिया जायगा।"

"आपकी इनायत है सर। लेकिन मुझे इसकी जरूरत नहीं।

मरियम कमज़ोर दिल साबित हो रही है। उसे खौफ है, कहीं बादशाह की मोहब्बत मेरी मोहब्बत पर हावी न हो जाये।"

'अच्छे" स्लीमन ने जोश में कहा—"हमें अभी उससे बहुत काम लेने हैं। उसे तो चाहिए इतना पुरअसर हमला कि बादशाह अपने उसके ज़ोर से हमारे पर हुकूमत सौंपने वाले इकरारनामा पर हमारे हक में दस्तखत कर डाले।

'कोशिश करूंगा।" जोसेफ ने कहा।

स्लीमन ने जेब से रुपये निकाल कर उसे दिये और पूछा— तो कब मिल रहे हो?

"सोचना होगा। सर, सुनता हूँ पिछले दिनों से उसकी तबियत कुछ खराब है। वह बाहर नहीं आ सकेगी।"

"तुम महल में जा सकते हो। मैं इसका इन्तज़ाम कर दूंगा। मोती बाई से कहो वह मरियम को रेज़ीडेंसी का डाक्टर बुलवाने के बाबत खबर दे। डाक्टर के साथ तुम न सिर्फ जा सकते हो बल्कि इत्मिनान से बातें भी कर सकते हो।"

जोसेफ इस प्रबंध से सन्तुष्ट हो गया। तब स्लीमन उसे साथ ले बाहर आ गया। निमन्त्रित सज्जन सब बैठे उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे। उसके पहुँचने पर एक एक कर सब ने विदा मांगी। जोसेफ भी चला गया। अन्त में मीर मुन्शी और बर्ड रह गये। इमारत बराबर खड़ा था। स्लीमन ने बर्ड को नज़दीक बुलाया और कहा—

"बहुत जल्द तुम हिज़ मैजेस्टी के पास गवर्नर जनरल का नया हुक्म लेकर जाओगे बर्ड। हमारी लिखापढ़ी के बाद उन्होंने हमें मुल्क का दौरा करने के बाद रिपोर्ट देने का हुक्म दिया है। मेरा ख्याल है तुम इसकी अहमियत समझते हो।"

बर्ड ने उत्तर न देकर अपना सिर झुका लिया। स्लीमन इतना कहने के बाद अपने बंगले की तरफ चलने लगा। तभी इमारत आये

जाकर दो दिन की छुट्टी मांगने लगा—"मेरा बाप बीमार है हुजूर। उसकी देख भाल के लिए जाना चाहता हूं।"

स्लीमन आज्ञा देता वहां से चला गया।

इसरत रात देर तक स्लीमन के आखिरी शब्द याद करता रहा। मुल्क का दौरा और उसकी रिपोर्ट। और खुद उसके मुंह से उसकी मुहब्बत। एक बजे का लेटा-लेटा वह चार बजे तक सो न सका।

सुबह आठ बजे किसी न झकझोर दिया तो उसकी आंख खुली। बानो बराबर खड़ी मुस्कुरा रही थी।

"रात ज्यादा शराब पी बैठे थे क्या" उसने पूछा—'अभी घोड़े बेचकर सो रहे हो।"

"शराब नहीं खाना खाने के बाद पानी बहुत पी गया था।" इसरत ने जवाब में प्रश्न किया "मालूम होता है तुमने रात भर लिया जरूर ज्यादा खाई थी जो सुबह जल्दी फिर रही हो।"

"जनाबेमन इस वक्त सुबह नहीं है। दिन का देर हो गई है। करीब तीन घंटे दिन बीत चुका है। क्या आज साहब के यहां हाजरी नहीं देनी है?"

"नहीं मैंने दो दिन की छुट्टी ले ली है।

"क्यों?" बानो ने पूछा।

"वालिद साहब की तबियत कुछ नासाज है। उनकी देखभाल के लिए कोई दूसरा है नहीं। इसलिए

"ओह!" बानो ने कहा और गम्भीरता से कुछ सोचने लगी। फिर तपाक बोली 'तब तो तुम अपने दोस्त के यहां भी न जा सकोगे?"

"दोस्त? कौन दोस्त? इसरत ने पूछा।

"अभी कुछ देर पहले आया था तुमसे मिलने। मैंने कहा अभी शायद तुम काम पर गए हो तो बेचारा लौट गया। उसने कहा कह गया था

आज दोपहर उससे जरूर मिलना । कुछ जरूरी काम है । मैंने अब्बा हुजूर से पूछा तो पता चला तुम दफ्तर नहीं गए । यहाँ देखने पर जनाब को बैठा पाया ।

"मगर बीबीजान, उस दोस्त शरीफ का नाम क्या है, आपने पूछा ?"

"जी हाँ । शिहाब है ।

"शिहाब ! हसरत चौंककर बोला "वह कम्बख्त क्यों आया था ?"

"शायद आपके अजीज वाजिद के बारे में कोई इत्तला लाया हो बहरहाल आपको उसने बुलवाया है । क्या आपका मकान पुराने पुरवे में है ?"

"पुराने पुरवे में　　क्या उसने हकीम बरेलवी के यहाँ बुलवाया है ?"

"नाम नहीं बताया था ।"

हसरत उठ खड़ा हुआ और हाथ-मुँह धोने लगा । बानो नजदीक आ गई और बोली "हकीम बरेलवी के यहाँ आपके वाजिद का इलाज हो रहा है शायद ?"

"खुदा जाने ।" हसरत जल्दी से कहने लगा "मैं तो बहुत दिनों से वहाँ गया नहीं । आज पता चलेगा ।

"मैंने अब्बा हुजूर से इजाजत ले ली है । मैं तुम्हारे साथ तुम्हारे दौलतखाने चलूँगी ।"

"मेरे साथ ।" हसरत चौंक कर बोला "तुम वहाँ क्या करोगी ?"

"कुछ नहीं । बुजुर्गों की दुआएँ लेना बुरा नहीं है !"

"नहीं मेहरबान । खुदा के वास्ते मुझे अकेला जाने दो । मैं तुम्हें साथ नहीं ले जाऊँगा ।"

"क्यों ? कोई नुकसान होगा ?"

"नहीं मगर मुझे पहले हकीम साहब के मकान पर जाना है ।"

"मैं वहाँ भी चली चलूँगी । मुझे भी अपने दिल धड़कने की दवा

मेरी है।"

"ओफ़ ओ बानो मैं तुम्हें कैसे समझाऊँ। तुम्हारा वहाँ जाना नामुमकिन है।"

"आख़िर कोई वजह बताओ? क्यों नामुमकिन है?"

इशरत ने मुँह धो लिया और कपड़े से चेहरा साफ़ करने लगा। बानो के सवाल पर उसने कुछ देर ख़ामोशी धारण की। फिर कपड़ा एक तरफ़ फेंकते हुए उसने कहा—"देखो बानो तुम अभी लड़की हो और लड़की घर के काम-काज की बाबत ज़्यादा समझ सकती है। मैं तुम्हें वहाँ ले जाना भी नामुनासिब समझता हूँ। कुछ ख़ास काम है उन हकीम साहेब से। तुम्हारा जाना ठीक नहीं।"

"यह तुम्हारा ख़्याल है। मेरी समझ में हम दोनों अब इतना क़रीब आ चुके हैं कि कोई पर्दा नहीं रख सकते। क्या तुम इससे इनकार कर सकते हो?"

"नहीं। मैं सब समझता हूँ और जानता भी हूँ। लेकिन बानो कुछ काम ऐसे होते हैं जो मजबूरन मुख़्फ़ी रखने पड़ते हैं।"

"मैं बातों से नहीं हार सकती। मुझे साफ़-साफ़ बताओ। विश्वास दो ऐसा क्या काम है जो तुम मुझ से छिपा कर करना चाहते हो? इशरत क्या तुम्हें मुझ पर भरोसा नहीं?"

"भरोसा है पगली।" इशरत उसे अपनी बाहों में समेट कर बोला "लेकिन तुम जिस की बेटी हो यह भी जानती हो। हो सकता है मैं जिस काम के लिए जा रहा हूँ उसमें तुम्हारे वालिद की दिलचस्पी न हो।"

"तो क्या हुआ। ज़रूरी नहीं कि बाप-बेटी के ख़्यालात मिलते हों। अक्सर ऐसा होता है कि बाप का तरीक़ा बेटी को बिल्कुल पसन्द नहीं आता और वह महज़ इसलिए उसकी ताईद करती रहती है क्योंकि इसके अलावा कोई और रास्ता नहीं होता। ऐसा भी होता है कि रास्ता मिल जाने पर वह अपने अज़ीज़ बाप के ख़िलाफ़ बग़ावत तक करने पर

आमादा हो जाती है और उसी पर कायम रहती है।

इशरत इस व्याख्या से सोच में पड़ गया। बानो ने आज पहली बार ऐसी बातें नहीं की थीं। पहले कई मरतबा उसने इशरत के कानों में यह डाल दिया था कि वह जरूर किसी विशेष कारण से रेजीडेंसी में नौकरी कर रहा है। अक्सर मीर साहब के समझाते समय बानो उपस्थित रहा करती और बीच-बीच में ऐसे चुटकुले छोड़ती जिनसे इशरत को महसूस होता जैसे उसका भेद अब खुला अब खुला। लेकिन मीर साहब की बुद्धि में कुछ न आता। अगर वह समझ रहे होते तो क्या बार कहते जाते—"बेटा स्लीमन साहेब ने तुम्हें भरोसे लायक माना है यह तुम्हारी खुशकिस्मती है। अब तो तुम ऐसे काम करो कि वह जल्द तुम्हें तरक्की दे।

और बानो हँसकर बात काटती। कह देती 'अब्बा हुजूर, इनके दिल में क्या है खुदा जाने। कल मुझसे स्लीमन साहेब की बुराई कर रहे थे और कह रहे थे इस मक्कार को तो गोली मार दी जाए।

मीर साहब सुनकर घबराई मुद्रा में इशरत को देखने लगते। इशरत उत्तर में प्रतिवाद करता। बानो खिलखिलाकर हँस देती। तब मीर साहब आश्वस्त होते। दोनों की बेतकल्लुफी उनको पसन्द आ रही थी और वे मन ही मन एक नया मनसूबा बना चुके थे। उन्हें ख्याल तक न आता था कि बानो के कथन में सच्चाई की मात्रा भी किसी सीमा तक हो सकती है। लेकिन इशरत बहुत अच्छी तरह इन व्यंग्यों का कारण समझता था। बानो को सन्देह हो गया था प्रकट था। कई बार ऐसा होता कि वह सिराज आदि से मिलने रात को सबके सो जाने पर रेजीडेंसी से निकलता। उस वक्त बानो जाग रही होती। न जाने कैसे आहट पा लेती और सुबह सबेरे इशरत के लौटने पर रास्ते में खड़ी-खड़ी मुस्कराकर पूछती—"कहाँ गए थे?" इशरत जवाब में इधर उधर के बहाने बनाता वहां से खिसक जाता। बानो जोर से खिलखिला देती।

और यही थी कि मीर साहब के सामने कभी उसके इन प्रयासों का प्रसंग उसने नहीं छेड़ा।

कठिनाई से समझा-बुझाकर इशरत बाहर निकला। रेजीडेंसी से कुछ ही फासले पर मियाँ खान उसकी तरफ आते मिले। इशरत जल्दी से उनके निकट आया और अपनी धुनी का आधार बनाकर उन्हें फौरन वापिस लौटने की हिदायत देने लगा। तब मियाँ खान बोले "यह तो गजब हो गया। मैं तो विहाब और मिस्त्री के साथ आज सुबह भी रेजीडेंसी गया था। वहाँ मैंने अपना रिश्ता भी बता दिया था। अब तुम कहते हो कि मेरी बीमारी का बहाना करके घूमने आए हो।"

"आपने किससे कहा था?"

"एक लड़की बाहर घूम रही थी। वो मुसलमान लड़की पर्दा नहीं था। उसी से मैंने तुम्हारे बारे में पूछा। उसने कहा तुम काम पर चले गए होंगे तो मैं विहाब का पैगाम छोड़कर लौट आया।"

"जरूर बानो थी।" इशरत मन ही मन सोचता-विचारता कहने लगा "लेकिन उसने मुझे नहीं बताया।"

"क्या उसकी तरफ से कोई खतरा है?"

"खतरा नहीं है अम्मा हुजूर। बल्कि उल्टा मैं उसकी तरफ से परेशान हूँ।"

"क्यों?"

"वह मीर मुंशी साहब की बेटी है। मीर मुंशी को तो आप जानते हैं। जितने भी अफसर हैं सब उनके बारे समझते हैं। बेटी का यह हाल है कि मन ही मन सिरफिरों में शरारत करती है। मेरी काम-काज पर उसे शुरू से शुबा है। कई बार इशारा कर चुकी है कि मैं उसे अपने सलीम से लेकर अपना भेद बता दूँ। मगर मैं सोचता हूँ एक वफादार बाप की बेटी को अपना बनाकर हम क्या पाएँगे। रेजीडेंसी में उसका मददगार हो जायगा। मुनासिब के खातिर इसीलिए तो हुजूर के सिरहाने रखने

गए हैं। जहाँ कोई खतरा हो वहीं तोपों से उनके बाल-बच्चों को भून दिया जाए। नाना के साथ मीर मुंशी भी बरबाद हो जायेंगे।"

"उसकी बरबादी की तुम्हें क्या फिक्र। तुम नहीं जानते इशरत वह कैसा कम्बख्त आदमी है। सिर्फ अंग्रेजों का वफादार होता तो भी कोई बात नहीं थी। वह अपने ही मुल्क वालों से गहरी-गहरी रकमों की रिश्वत लेता है। उसे किसी से हमदर्दी नहीं। वास्तव में अपने भाई-बहनों का गला भी काट सकता है।

इशरत ने कोई उत्तर न दिया। बाप से पूछा तो उसने पुराने पुरते चलने की हिदायत दी। घोड़े के मुँह को उस तरफ आगे बढ़ते हुए इशरत ने सवाल किया "कल दावत की वजह से मेरा जाना नामुमकिन हो गया। लेकिन बात क्या है ?"

"हकीम साहेब के यहाँ पता चलेगा। शिहाब कई बार तुम्हें बुलाने के लिए मेरे पास आया। अभी तक मुझे भी मालूम नहीं कि बात क्या है। मगर है कोई जरूरी काम। शिहाब कह रहा था कल दिन में बेगम साहब अमीनुद्दौला और वलीद अली खाँ हकीम से मिलने आए थे।

"अब तक कितने जवान अखाड़े में शामिल हो चुके हैं ?" इशरत ने नया प्रश्न पूछा। पिता ने बारह सौ की गिनती बताई, तब इशरत खामोशी से चलने लगा।

हकीम साहेब के मकान पर उस वक्त अमीनुद्दौला और शिहाब के साथ सिरसी भी मौजूद थी। बेगम साहेब का इन्तजार था किन्तु अभी तक आये न थे। शिहाब के आस-पास करीब बीस-पच्चीस नौजवान और बैठे थे। इशरत के पहुँचने पर उसी ने उठ कर वहाँ उपस्थित व्यक्तियों को इशरत और उसके पिता का परिचय दिया। हकीम साहेब ने आगे बढ़कर इशरत की पीठ पर हाथ फेरते हुए उसे अपने पास बैठा लिया। कुछ देर तक लोगों का आगमन जारी रहा। इशरत ध्यान से

उन्हें देखता और सोचता रहा। आने वालों में न कुछ ऐसे थे जिन्हें वह बखूबी पहचानता था। बल्कि उनके मित्रों में गिने जा सकते थे। कुछ ऐसे थे जिन्हें शक्ल से जानता था और कुछ ऐसे जिनके बारे में सुना था। लेकिन यह सब हकीम अर्दबानी के मकान पर आए थे इसका इशरत को आश्चर्य था। वह देर तक एक ही विचार में खोया रहा। लखनऊ की रंगीन जिन्दगी में कितना परिवर्तन आ गया है। सिराज की जुबानी हकीम साहब की योजना पर इशरत को समझने का मौका अभी प्रकार मिल चुका था। बेगम हजरत ने मुल्क में जो नया उत्साह पैदा किया था उसकी प्रशंसा में इशरत की जबान न थकती थी। लेकिन इसके सोचने का विषय थे वे नौजवान जिनके जीवन में नाचने की पायलों ने और तवायफों के नाचों ने अपना विशिष्ट स्थान बना रक्खा था। जो दिन-दिन और रात रात भर नाचने गाने मौज मनाने थकते न थे। आज उन्हें क्या हो गया है। नाटक महफिलें और राग रंग छोड़ कर वह हकीम अर्दबानी के यहां उपस्थित हुए हैं ताकि अपने जीवन की बाजी लगा कर अपने देश के प्रति अपना प्रेम सिद्ध कर सकें। उसकी आंखों में आंसू आ गए। यह लोग हैं मुल्क के सच्चे वफादार। क्या इतना सब कुछ हो जाने के बाद भी फिरंगी राजनीति का बेदाबाज सौदा शाह को जीवित छोड़ेगा। अगर ऐसा है तो शाह दुर्भाग्यशाली हैं। अवध के भाग्य का पतन है। मालूम है मुसीबतें वे जो टाले नहीं टल सकेंगी।

थोड़ी समय बाद जब सब लोगों के आ जाने का अनुमान हुआ तो हकीम अर्दबानी अपने स्थान से उठ कर लोगों के मध्य आए। उनके भारी भरकम शरीर पर लम्बी भूरी दाढ़ी मखमल-मसनद पर सिमटी सुनहरी उनके व्यक्तित्व का बखान कर रही थी। वह गम्भीर थे और गम्भीरता से बोल उठे "हाजरीने मजलिस आज हम सब इकट्ठा हुए हैं कुछ जानने और कुछ समझने के लिए। वजीर आला यहीं मौजूद हैं। बेगम साहबा भी दूसरे भेष में आपकी खिदमत में कुछ अर्ज करेंगी। अब

फ़ैसला आप को करना है, कि हम मुसीबत का मुकाबला किस तरह और किस तौर करें।"

वह बैठे तो वज़ीर अमीनुद्दौला अपने स्थान से खड़े हुए और बोले 'बच्चो, हमारी मजलिस उन परवानों की मजलिस है जो अपनी शमा पर कुरबान हो जाना अपना फ़र्ज़ समझते हैं। बहुत दिन नहीं बीते जब मिर्ज़ा वलीद अली मुझे यहाँ लाए थे और उस दिन मुझे ऐसा महसूस हुआ था जैसे स्लीमन साहेब का तजुरबा नाकामयाब साबित होगा और हम मुट्ठी भर दीवाने कुछ भी करने के काबिल न होंगे। लेकिन आज हमारी ताकत पहले से कई गुना ज़्यादा हो गई तो मेरा यकीन अपनी जगह से हिल गया है और मैं समझ रहा हूँ हम बहुत कुछ हैं और बहुत कुछ कर सकते हैं। हकीम साहेब जैसे मुल्कपरस्त बहादुर ने एक-एक मिला कर आपकी इतनी बड़ी जमायत बना दी है और अब मैं आप से उम्मीद करता हूँ कि आप इस जमायत को ज़्यादा से ज़्यादा मज़बूत और ज़्यादा से ज़्यादा ताकतवर बनायेंगे। हमें ज़रूरत है पूरे पचास हज़ार नौजवानों की जो वतन की ज़मीन के लिये अपना सर हथेली पर लिये जान देने को तैयार रहें। हमें ज़रूरत है ऐसे बहादुरों की जो गुलामी की ज़िन्दगी से आज़ादी की मौत मरना ज़्यादा बेहतर समझते हैं। मेरे अज़ीज़ दोस्तों अब वक्त आ गया है जब हमें कुछ करना है और अपने मुल्क को तबाही से बचाने के लिए कुछ सोचना है। वह दिन दूर नहीं जब हमारी आज़ादी को ललकारा जायेगा और उस वक्त हमारा बादशाह हमारी फौजें हमारी तोपें और हमारी तलवारें किसी मजबूरी में बेबस और बेइख़्तियार होंगी और काँपती रहेंगी। तब मुल्क को तुम्हारी ज़रूरत होगी। तुम उसे गुलामी के खतरनाक पंजों से बचाओगे। अपनी जान की बाज़ी लगा कर तुम फिरंगियों को समझाओगे कि तुम्हारा बादशाह तुम्हारा सरपरस्त है और तुम उसी की गुलामी कुबूल कर सकते हो। मेरे बच्चो अपने-अपने हाथों में शमशीरें लेकर मैदाने जंग में

में दौरे की नई हिदायत मौसूम हुई। शायद यह नौजवान इस बारे में तफ़सील से बता सके।" ब्रैंडन ने इशरत की ओर इशारा किया चूँकि उसे रेज़ीडेंसी में देख लेने के बाद यह भी ज्ञात हो चुका था कि वह अपना आदमी है।

इशरत ने उत्तर दिया "मोहतरिम हज़रत का सोचना बिल्कुल बजा है। कल रात जनाब के तशरीफ़ ले जाने के बाद स्लीमन ने वर्ड साहब को गवर्नर के किसी चहेते को शहंशाह तक पहुँचाने की हिदायत दी थी। उसने अपनी किसी ख़तोकिताबत का सिलसिला ज़ाहिर किया था और बताया था वह कोई अहम दौरा करने जा रहा है।

"दौरा नहीं मेरे अज़ीज़" अमीनुद्दौला ने कहा "यह एक ख़तरनाक नश्तर है जो अवध की पीठ में भोंका जाएगा। दौरा नहीं यह सारे अवध के मुँह पर थप्पड़ होगा।"

ब्रैंडन ने कहा "आप का फ़रमाना बिल्कुल बजा है। यह स्लीमन की ज़बरदस्त चाल है। दो साल हुए शाह अवध को नोटिस दिया जा चुका है कि वह अपनी हुकूमत में फ़ौरी ख़ुशइन्तज़ामिया तब्दीली करे। अब उसने रिपोर्ट की होगी कि कम्पनी का हुक्म नहीं माना गया है। इस दौरे के बाद वह गवर्नर को शाही हुकूमत की कराफ़ातें लिख भेजेगा और तब हुकूमत पर कम्पनी सरकार का क़ब्ज़ा जम जायेगा। दुनिया की नज़र में क़ानूनन और अरसन हमारी हुकूमत छीन ली जायेगी। और सबूत इस में पेश किया जाएगा १८०१ का मुआहदानामा।"

"इजाज़त हो तो मैं कुछ अर्ज़ करूँ' सहसा सिल्वी बोली।

"कहो बेटी!" अमीनुद्दौला ने प्रोत्साहित किया।

अब हमारी जमायत की ताक़त बहुत बढ़ चुकी है। अगर हम दुनिया के सामने स्लीमन की चालाकी ज़ाहिर कर सकें तो शायद"

"सिल्वी ठीक कहती है" ब्रैंडन बोले "मैं उसका रास्ता निकाल चुका हूँ। इस नौजवान के वालिद कौन हैं जो रेज़ीडेंसी में नौकरी कर

लेकिन "

"नहीं" डैगन ने टोका 'तुम अकेले नहीं होगे। शिहाब और सिल्वी तुम्हारे साथ रहेंगे। क्यों शिहाब ?

'जनाब का हुक्म सर आँखों पर।" शिहाब ने झट उत्तर दिया "उम्र भर कभी चोरी नहीं की। खुदा ने चाहा तो यह हसरत भी दिल में न रहेगी। बिना काम पूरा किये आपको शक्ल न दिखाऊँगा।"

'यह बातें ज्यादा बनाते हैं डैडी' सिल्वी ने हँस कर कहा "क्या चोरी के अलावा कोई और रास्ता नहीं है ?"

"सिल्वी डियर' डैगन ने बताया 'मेरी शिहाब से बात हो चुकी है। उसका रास्ता सब से अच्छा है। किसी रात इशरत रेजीडेंसी के दफ्तर में छिपा रहेगा। मौका तलाश कर तुम और शिहाब भी अन्दर घुसोगे। फिर तीनों झट पट अलमारी खोल कर कागजों की नकल कर डालना। अलमारी के बारे में शिहाब पता लगा रखेगा। चूंकि इशरत को अभी रेजीडेंसी में रहना जरूरी है इसलिये कागजात चुराने से अच्छा उनकी नकल कर लेना होगा।'

सिल्वी ने आगे कुछ न कहा। अन्त में यही निश्चित हो गया। गुप्त मन्त्रणा में एक और हिदायत इशरत को मिली। अगर बदनसीबी से दौरा हो तो वह सम्भल साथ जाने की कोशिश करे। इशरत को यह आसान मालूम हुआ। स्लीमन उससे खुश था। कागजात की नकल लेने में कोई गड़बड़ न हुई तो वह आसानी से साथ जाने के लिये उसकी स्वीकृति दे देगा।

पुराने बुर्ज से निकल कर अपने घर की ओर जाते समय सिर्फ शिहाब और सिल्वी इशरत के साथ थे।

इशरत अपने मित्र से बातों के बारे में परामर्श करना चाहता था।

उसने कहा "मैं मीर मुन्शी की बेटी बानो के बारे में बहुत परेशान हूँ ज़िहाब।" लेकिन ज़िहाब उसकी परेशानी पर उदास होने के स्थान पर हँसा और कहने लगा "मुझ से ज्यादा नहीं मेरे दोस्त। आज सुबह से मैं उसके बारे में बहुत कुछ सोच चुका हूँ।

"क्या सोचा है तुमने ? इशरत उसका तात्पर्य न समझ पूछने लगा "क्या उसके साथ तुम्हारी कोई बातचीत हुई थी ?"

"नहीं ज़िहाब ने उत्तर दिया 'बातचीत नहीं हो सकी मगर आँखों से हकीकत खोज निकालना मेरा पुराना काम है। बहरहाल तुम्हारा इन्तखाब अच्छा है।"

"क्या मतलब ? इशरत उसका मतलब ताड़ते ही सिम्मी की ओर देखने लगा जो धीमे-धीमे मुस्करा रही थी फिर बोला "मगर प्यारे तुम्हारे इन्तखाब से अच्छा नहीं।"

"आप लोग अपने चक्कर में किसी तीसरे को क्यों घसीट रहे हैं ?" सिम्मी ने जल्दी से कहा।

वाह" ज़िहाब बोला "मिस साहेबा को गलतफहमी होने लगी। जनाब आपके बारे में किस ने कहा ?"

सिम्मी ने शर्म से अपनी गर्दन झुका ली। इशरत ज़ोर से हँस दिया "असलियत नाजुक के फूल नहीं जो छिपी रहे। बेटा मिस साहेबा तुम से ज्यादा समझदार हैं।" उसने तिलमिला कर कहा। ज़िहाब को कोई उत्तर न सूझ सका। तब तुरन्त वह प्रसंग बानो पर ले आया। "लेकिन तुम बहुत छिपे रुस्तम निकले इशरत। इन्तखाब भी मीर मुन्शी की छोकरी की। बस यहीं तुम्हारी बुद्धि पर पहरा लगा है तो मामला चौपट हो जाय। कुछ सोचा तो होता ?"

"मैं बिना सोचे-समझे काम नहीं करता जनाब। आप अपनी तरह तो देख लेते। मैंने तो फिरंगियों के मुन्शी की लड़की चुनी है और आपने ... "

"इशरत भाई" सिम्मी ने तत्काल गम्भीरता धारण कर ली और टोका "कहने से पहले ख्याल जरूर कर लेना कहीं मुझे गाली न लगे।

"ओह—मुआफ करना बहिन" इशरत बोला "मेरा मतलब तुम्हें नाराज करने से नहीं था। हमें तो फख्र है तुम पर और तुम्हारे वैरी पर। अगर तुम लोग न होते तो न जाने हिन्दोस्तान वाले तुम्हारे मुल्क और मुल्क के लोगों के बारे में क्या सोचते।"

सिम्मी मुस्कुरा दी। बात समझ गई। इशरत इसके बाद फिर वालों के बारे में कहने लगा। सिहाब गम्भीरता से सुनता रहा। इस बार उसने व्यंग्य नहीं किया। बल्कि इशरत की बातचीत के अन्त में बोला "नहीं भाई। मेरी राय नहीं है। तुम इन रेजीडेंसी वालों के चक्कर नहीं समझते। कहीं तुम्हें टटोलने के लिये यह कोई चाल न हो। उसके साथ चाहे प्यार मोहब्बत का नाटक भले रच लो मगर भूल कर भी अपना भेद मत खोलना। क्या पता वह भी जासूसी कर रही हो। आखिर एक वफादार बाप की वफादार बेटी साबित होने मे देर कितनी लगती है?"

इशरत ने उत्तर न दिया। बात समाप्त हो गई। इसके बाद सिम्मी और सिहाब उसके घर आये। तीनों ने मिल कर खाना खाया। तभी इशरत को सिम्मी और सिहाब के मध्य बढ़ जाने वाले सम्बन्धों का भान हुआ। वास्तव में सिम्मी के प्रभाव से सिहाब के जीवन में मोड़ आजाने से उसे प्रसन्नता हुई। वैसे पहले दिन उसके व्यक्तित्व से लोहा मान सिहाब और इशरत दोनों एक साथ बदले थे। खुशी की बात थी कि नाच-गाने का अभ्यस्त सिहाब इशरत से नहीं अधिक मुल्क के लिये कुरबानी का जज्बा पैदा कर चुका था। इसका श्रेय सिम्मी को था जो अब शायद उसे चाहने लगी थी। इशरत ने मन ही मन कई बार अपने खुदा से दुआ की कि उन दोनों की जोड़ी हमेशा-हमेशा सलामत रहे।

रेजीडेंसी में प्रवेश के लिये छुट्टी से वापिस लौटने वाला दिन उस

पर चढ़ गया। प्रहरियों का सन्देह पुष्ट हो गया। चारों तरफ शोर मच गया। स्लीमन का बंगला ज्यादा दूर नहीं था। इसरत के बाद सिस्री और तब शिहाब भी दीवार पर चढ़ कर कूदने लगे तो हल्ला मच गया। चोर चोर की आवाजें आने लगीं। स्लीमन और बड़े अपने-अपने निवास से बाहर आये और प्रहरियों के स्वर की दिशा में भागने लगे। प्रहरियों में से एक ने फायर भी किया। बड़ी कठिनाई उपस्थित हुई। इसरत बाहर कूद गया। पीछे सिस्री और शिहाब आये। और फिर हल्ले-गुल्ले में अपनी पूरी शक्ति से भाग खोब आये। रेजीडेंसी का मुख्य द्वार वहीं से दूर था। जब तक प्रहरी पीछा करते उस तरफ से आये यह चले जंगल में जा छिपे। यहां किसी की नजर पड़ना एकदम असम्भव था। तीनों असफलता और परेशानी से दुखी थे। सारा बना-बनाया काम चौपट हो गया। जान तो बची मगर बेकार घबराहट उठाई। शिहाब ने तो इस वक्त भी मजाक किया। नौसिखिये चोरों का यही होता है। प्रहरी उस तरफ देख भाल कर लौट गये। इसरत को शिहाब का चुटकुला पसन्द नहीं आया। वह एक और बात से परेशान था। सुबह उसको रेजीडेंसी से गायब पाया गया तो परिणाम भयंकर हो सकता है। उसके पिता का मकान मीर साहिब को मालूम था। चोरी में उसके ऊपर सन्देह गया तो रेजीडेंट घर को मटियामेट किये बिना नहीं मानेगा। बार-बार अपनी मूर्खता पर रोता सा रहा था। क्यों न वह खुद क्वार्टर की तरफ आया। सिस्री और शिहाब को इधर से निकाल देता। मगर भाग्य का लिखा किस से टला है। जो कुछ हो गया था बहुत बुरा हो गया था और अब उसे टालना असम्भव था।

इन तीनों में सिस्री के होश-हवास अभी कायम थे। इसरत की आफ़त का अन्दाजा उसे ज्यादा अच्छी तरह था। फिर भी उसने इसरत को सुबह रेजीडेंसी जाने की राय दी।

उसने कहा "जब तुम जानते हो कि चोरी का शुबा होने पर आफ़त

जाने बिना नहीं रहेगी तो थोड़ी हिम्मत से काम लेकर बचाव की कार्रवाई सूरत क्यों नहीं करते । सुबह जाना और वापसे से इन्कार करते हुए कह देना कि वाजिद साहेब की रात में अचानक तबियत खराब हो जाने से तुम्हें जाना पड़ा । खान साहेब को हम तैयार रक्खेंगे । बात जम गई तो मुसीबत से छुटकारा मिल जायेगा । वरना फिर कभी कोशिश करेंगे । और देखो कि रक्षीमन का शक पक्का नहीं होता तो मौका लगते ही भाग जाना । एक मकान नहीं तो दूसरा मकान सही । कम्पनी की सारी फ़ौज तलाश करे तब भी तुम्हारा पता न चले ।"

इशरत अभी असमंजस में था कि सिराज ने इसका विरोध किया । शिब्बी और सिराज तक बहस में उलझ गये । शाम के उन नीरव क्षणों में अन्त तक इशरत के टोके बिना वह खामोश न हुए । मगर इस बीच इशरत को शिब्बी का विचार आ गया । दिन निकलने में कुछ समय शेष रहा तो वह उन लोगों को वापिस जाने की हिदायत देता रेजीडेन्सी लौटा ।

द्वार पर पहरा सख्त कर दिया गया था । दो हथियार बन्द सिपाही बराबर गश्त रहे थे । देखते ही तुरन्त नजदीक आये । मगर इशरत पर नजर पड़ी तो बड़ी रहस्यमयी मुस्कराहट से उसका स्वागत किया और अन्दर जाने से न रोका । वह इस मुस्कराहट का कारण न समझ सका किन्तु मन ही मन डर गया । क्या इन लोगों ने अपने कुहेरान में चले जाने की आज्ञा देते हुए उसकी दुर्दशा पर मुस्कराहट बखेरी है । वह सोचता रहा भीतर की ओर प्रहरी मिले । उनके चेहरे पर भी वैसी ही मुस्कराहट मिली । इशरत परेशान हो गया । यहाँ से चला तो क्वार्टरों तक सन्नाटा था । चारों क्वार्टरों के लोग सो रहे थे । रक्षीमन इस वक्त तक उठ कर बंगले के बाहर इशरत की प्रतीक्षा किया करता था ताकि कुछ दूर तक टहल आये । किन्तु रात की घटना ने उसकी चाल भी शायद भुला दी थी । वह आज भी कुछ रहने वाला था । मीर मुन्शी हमेशा

पैर से खोले और पैर से बांधते थे। उनकी तरफ निस्तब्धता छायी हुई थी। कुत्ता क्वार्टर के बाहर बैठा था। एक बार गुर्रा कर वह इरशाद के नजदीक आ गया और पैर चाटने लगा। उससे न रुका गया। उसने पैर की ठोकर मारते हुए कुत्ते को गन्दी गाली दी। फिर आगे बढ़ गया। दरवाजा खुला था। चलते समय उसने किवाड़ फेर दिये थे। इस वक्त भी वैसे मिले। वह धक्का देकर भीतर जाना चाहता था कि बराबर मीर साहब वाले क्वार्टर से बानो तेजी से निकली और उसके बराबर आकर धीमे से बोली— "भीतर चलो। मुझे कुछ जरूरी बातें करनी है।"

इरशाद घबराया बानो की मनोदशा जानता नहीं था इसलिये परेशानी महसूस की। वह अपनी ही समस्या में उलझा हुआ था। और यह लड़की न जाने क्या सोचे बैठी है। उसने टोकना चाहा "इस वक्त मेरे साथ अकेले क्वार्टर में क्या काम है बानो। जरूर तुम्हारा भेजा फिर गया है। जाकर घर आराम करो। सुबह बातें करेंगे।

"वक्त बरबाद मत करो! जल्दी करो! बानो ने दोबारा कहा और उत्तर की प्रतीक्षा किये बिना अन्दर चली गई।

इरशाद ने वहां पहुंचकर दिया जलाया। बानो को देखते ही चौंक गया। गाल पर तमाचों के ताजे निशान थे। आंखें रोने के कारण सूज रही थीं। खुदा जाने क्या है? रात तक ठीक थी। अब न जाने क्या हो गया है। इरशाद ने अपनी सहानुभूति और आश्चर्य व्यक्त किया। बानो ने टोक दिया।

"इन बातों का वक्त नहीं है। जो कहती हूं ध्यान से सुनो। रात शोर होने पर मेरी आंख भी अम्मा के साथ-साथ ही खुल गई। वह बाहर दौड़े और मैं किसी खुदाई ताकत के बल बीच की खिड़की पार कर तुम्हारे क्वार्टर में आई। बाहर चोर-चोर की आवाज आ रही थी और किसी का पीछा हो रहा था। मुझे न जाने क्या सूझा और मैं

अपने क्वार्टर की छत से चहारदीवारी फलांघकर बाहर आ गई। अम्मा मुझे मेरे कमरे में छोड़ गये थे। आते वक्त मुझे देखा नहीं था। थोड़ा रास्ता बचा था। मैंने तुमको भागते देखा। मैं चहारदीवारी से सिमटी खड़ी थी। सिपाही ने मुझे देख लिया और शोर मचाया। जल्द मुझे काबू कर लिया गया और साहब के सामने पेशी हुई। मैं रोती रही। उधर हम सबके क्वार्टरों की तलाशी भी हो चुकी थी। तुम गायब थे। मैंने रोते रोते एक बहाना बनाया। खुदा का शुक्र है स्लीमन की समझ में बात आ गई। मैंने उसके सामने बेशर्मी से कबूल किया। तुम्हारे साथ मेरी आशनाई है और मैं तुम्हें लेकर चहारदीवारी पार भागने इरादे से गई थी। शोर होने पर तुम डर कर भाग गए। अम्मा की आँखों में खून उतर आया। उन्होंने बड़े साहब के सामने ही मुझे बुरी तरह से मारा। लेकिन उसकी कोई चिन्ता नहीं। अब तुम बेफिक्र हो गये हो साहब का तुम्हारी तरफ जरा शक नहीं गया। उसे पता है शायद अवध ने कोई आदमी उसकी जान लेने भेजे थे। बहरहाल तुम मेरी सब बातों की ताईद करना।

बानो इतना कहकर जैसे वह आई थी वैसे ही चली गई। इशरत किंकर्तव्यविमूढ़ खड़ा सोचता रहा। क्या एक शरीफ लड़की इतनी तोहमत उठा सकती है? क्या जानबूझ कर आवारा की उपाधि स्वीकार कर सकती है? अगर हां तो क्यों? क्या बानो ने अपनी मोहब्बत के आधार पर इतना बड़ा त्याग किया है? या कोई और भावना है? कोई और वही भावना जो मोहब्बत से भी ऊंचे दर्जे की और पवित्र हो। कोई ऐसा अनहोना विचार जिसके लिये मान-सम्मान मान-मर्यादा तन-मन सभी कुछ कुरबान किया जा सके? इशरत की आंखों से दो बूंद आंसू आ गिरे। अपने आप से शर्म आई जब उसने सोचा कि इसी बानो के बारे में आज तक वह न जाने क्या-क्या सोचता रहा है, क्या-क्या सुनता रहा है और न जाने क्या-क्या कहता रहा है।

सुबह मीर मुन्शी उसके क्वार्टर में आये। इशरत सो रहा था। उसे जगाकर बड़ी देर तक वह बड़बड़ाते रहे। बहुत-सी ऊल-जलूल बातें कीं। बल्कि कहा जाय परीखाना वालों में गालियाँ सुनाईं तो भी अतिशयोक्ति नहीं। इशरत सुनता रहा। उसे शर्म आई। इस धिक्कार पर नहीं बल्कि उस यातना पर जो बानो को सहन करनी पड़ी होगी। क्रोध से कांपते मीर मुन्शी बार-बार उसे और बानो को कोस रहे थे। यह लड़की के जीवन का प्रश्न था। ठीक भी है। मार-पीट से बानो पर क्रोध उतारना व्यर्थ था। सलीमन की एक बात उन्हें पसन्द आई थी। वही अपना रोना-पीटना समाप्त करने के बाद उन्होंने इशरत के सामने रख दी—
'बरखुरदार, क्या तुम बानो से शादी कर सकते हो ?'

इशरत की ज़बान को ताला लग गया। वह कुछ कह न सका। हां या ना। बानो के जीवन की तबाही का प्रश्न था। वह खामोश खड़ा रहा। बूढ़े मुन्शी ने खून के आंसू रोते हुए आगे कहा—'मैं खुद इस रिश्ते की बाबत सोच रहा था। लेकिन तुमने मेरे यकीन को ठोकर मार दी। लड़की नादान और भोली होती है। तुमने उसकी ज़िन्दगी तबाह कर दी। अब खुदा के लिये शादी से इन्कार मत कर देना। मैं बरबाद हो जाऊँगा। मेरी इज्जत मिट्टी में मिल चुकी है। बड़े साहेब ने रहम किया जो सबको इस बारे में खामोश कर दिया है। अब भलाई इसी में है कि तुम उसके साथ निकाह कर लो।

"कर लूंगा मीर साहेब।" सुनते-सुनते इशरत की ज़बान अन्त में अपने आप फिसल पड़ी 'उस नेक लड़की को अपनी बीवी पाकर मैं खुशनसीब कहाऊँगा। आप निकाह का बन्दोबस्त करें।"

इस तरह ऐसी घटना जिसका कोई परोक्ष या अपरोक्ष सम्बन्ध बानो या इशरत के जीवन से नहीं था ठोस सच्चाई बन गई। दो-चार ही दिन बीतने पर बाकायदा इशरत ने मौलवियों के सामने बानो को बीवी तस्लीम किया। उस वक्त सलीमन मौजूद था और बार-बार उस रात

की घटना का प्रसंग फिर स्लीमन को शर्मिन्दा कर रहा था। उधर यही घटना शाह अवध के लिए ठोस अपमान की वजह सी बैठी। स्लीमन के प्रहरियों ने चोरों की संख्या चार बताई। स्लीमन ने अपने अनुमान से उनकी संख्या छः कर डाली। न केवल यह बल्कि उसने यह प्रसिद्ध किया हमलावरों का ध्येय उसकी जान लेने से था। पहरेदारों का बयान आया चोरों को देखने पर ऐसा लगा जैसे वह शाही फौज के कपड़ों में हों। अर्थात् स्लीमन की तरफ से जोर-शोर का चर्चा उठा कि हमलावर स्लीमन की जान लेने आये थे और बादशाह की तरफ से भेजे गये थे। हाल महल तक पहुँचा। अफवाह भी पहुँची। स्लीमन से मिलकर उन्होंने इसका निराकरण चाहा। रेजीडेंट भला निराकरण कैसे करता। वह तो चाहता था वाजिद अली को जरा अवसर मिले वहाँ जलील करना। मिलकर अफवाहों की पुष्टि न केवल कर ही दी बल्कि घुमा फिराकर अपना सन्देह भी व्यक्त कर डाला। भोले शाह रेजीडेंट के ऐसे सन्देह पर मन ही मन दुःखी हो उठे। उन्होंने कब किसी का बुरा चाहा था? फिर हत्या करवाना तो एक नीच काम है। मिलकर स्लीमन को अपने हुजूर में बुलवाया। स्लीमन दरबार में चला गया। शाह ने कहा 'बखुदा आप मेरे दोस्त हैं। आपको ऐसी गलतफहमी क्यों हुई?' स्लीमन बोला 'एक्सक्यूज मी हिज मैजेस्टी जंग और मोहब्बत में सब कुछ जायज है।'

'मगर यहाँ जंग कहाँ?' शाह ने दूसरा सवाल किया।

"मैंने आपके खिलाफ गवर्नर साहेब को बहुत शिकायतें लिखी हैं।"

"तो क्या हुआ?" शाह बोले "अगर हमारे मुकद्दर में अवध की हुकूमत खत्म हो चुकी है तो हमें तुमसे या किसी और से क्या गिला। फिर हम इतने कमीने किस तरह हो सकते हैं कि अपने वतन में रहने वाले हमदर्द के खून की ख्वाहिश करें?"

लेकिन स्लीमन नहीं माना।

वह चारों ओर की चिन्ताओं से स्वतन्त्र सिर्फ मनोविनोद में समय बिताने के आदी बन चुके थे।

बर्ड अपनी गम्भीर आकृति लिए पहुँचा और आज्ञा पाकर शाह के सामने बैठ गया। नकी खां के चेहरे पर उदासी के लक्षण कम थे और जो थे उन्हें वह अपने चकित मन प्रकट न करने को प्रयत्नशील था। शाह नहीं जानते थे वह कौन-सा नया अपमान ले उनके सम्मुख आये हैं। वह प्रसन्नमुख थे और हमेशा की तरह हँसकर बर्ड का स्वागत कर रहे थे। वास्तव में पूरी रैजीडेंसी में अकेला बर्ड एक ऐसा व्यक्ति था जिसे उनका हृदय निष्कपट और निर्लिप्त पाता आया था। उसके साथ उनकी मित्रता थी। उन्होंने स्लीमन साहेब की बेहूदगी के सम्बन्ध में हुई दावत का उल्लेख करते हुए बैंग्सन की ओर देख बर्ड से शिकायत की "बैंग्सन साहेब को शिकायत है मिस्टर बर्ड कि स्लीमन दावत के रोज इनके साथ बहुत बुरी तरह पेश आए। क्या यह सच है ?

बर्ड ने कहा "हिज मैजेस्टी को शायद पूरे वाक्यात नहीं बताये गए। मेरी नजर में बैंग्सन साहेब खुद मिस्टर स्लीमन का अपमान करने पर तैयार थे।'

बैंग्सन ने बीच में कहा सच बात से किसी का अपमान होता हो तो वह उसका नसीब है। आप तो बहुत नेक और समझदार हैं मिस्टर बर्ड क्या आपकी नजर में किसी एक जमायत के अफराद के लिए पूरी अपनी कौम चालाकी और मक्कारी की कसूरवार हो सकती है। जिस पर उन्होंने फरमाया कि मैं मुसलमान होने वाला हूँ !"

बर्ड बोला "अपनी राय क मुतल्लिक कुछ अर्ज न कर मैं सिर्फ रखना चाहूँगा मिस्टर बैंग्सन कि आदमी को उसी जगह तालीम देना मुनासिब है जहाँ उसका कोई असर होना मुमकिन हो। स्लीमन साहेब को आप सच्चाई और ईमानदारी का सबक देने चले मेरा ख्याल है वह उनकी तौहीन थी। फिर अपनी ताकत और अपने हुकूक के भरोसे जैसा

को धक्का लगने से बच सके। रेज़ीडेंट के पास वक्त कम है और वह हिज़ मैजेस्टी के ऐतराज़ को गवर्नर जनरल तक भेजने का मौका नहीं पा सकेगा और मजबूरन तौरे पर बिना हिज़ मैजेस्टी की इजाज़त चल देगा। ऐसी सूरत में अपने एतराज़ात बाद में गवर्नर जनरल को लिखकर रवाना कर सकते हैं। फ़क़त।"

अली खां एक साँस में पूरा मज़मून पढ़ गये और जल्दी से खत लपेट कर लिया। बैगन के चेहरे पर मुस्कुराहट खेलने लगी। और शाहे अवध की अवस्था न तो कही जा सकती है न बयान की जा सकती है। गवर्नर जनरल ने अपने खत में जिसे इस्तफ़ा कहा था वह वास्तव में क्या थी इस पर तनिक सन्देह करने की अवस्था न थी। शाहे अवध को मालूम था और खूब था कि आज उनके पास सचमुच बैगन के कथनानुसार हुक्मनामे आने लगे। अभी कुछ देर की तो बात है जब उन्होंने बैगन को टोका था। मगर जान पड़ा जैसे बैगन में भविष्य की लकीरें पढ़ने की असीम क्षमता हो। गवर्नर जनरल ने वाजिद अली के चेहरे पर तमाचा मारा था। इतना अपमान? वाजिद अली के चेहरे पर पल-पल में कई रंग आये और गये। आरम्भ में क्रोध से उनका चेहरा सुर्ख हो गया फिर अपमान से काला पड़ने लगा अन्त में निराशा से पीला पड़ गया। क्या कहें, किससे कहें? गवर्नर जनरल उनके दोस्त हैं? दोस्तों की ओर से प्रार्थना के रूप में उनकी आज्ञा प्राप्त हुई है। अवध के बादशाह को आज्ञा मिलने लगी? शाह यह दुर्दिन उनके जीवन में शेष था। बहुत देर तक वह खामोश और निस्पन्द बैठे रहे। उनके मुख से न कोई शब्द निकला और न शरीर में कोई गति हुई। लगता जैसे आज के बाद उनकी जबान हमेशा के लिये बन्द हो जायेगी इसलिये उसका पूर्वाभ्यास कर रहे हैं। बैगन खूब परेशान नज़र आया। वह असफल अपनी दृष्टि शाह की दृष्टि से बचाकर इधर-उधर ताक-झांक कर रहा था।

बहुत देर बाद एक आह की मद्धिम आवाज़ के साथ शाह बैंग्टन की ओर देखते कप्तान बर्ड से बोले—"तुम ने सच कहा था बैंग्टन बर्ड हमारे लिये गवर्नर जनरल की तरफ से हुक्मनामे की शक्ल में तोहफ़ा लाये हैं। ऐसा तोहफ़ा जो न हमें ज़हनी परेशानी देगा और न जिस्मानी तकलीफ़। यह हमारी दोस्ती का सिला है भाई जो गवर्नर जनरल साहेब ने बहुत देर के बाद हम अता किया।

बर्ड की आवाज़ थरथरा गई। उसने सहानुभूति पूर्ण शब्दों में कहा "ऐसा न कहिये योर हाइनेस। खुदा न करे आप के दुश्मनों को किसी तकलीफ़ का सामना करना पड़े। इस बात का मज़मून कुछ फीका ज़रूर है मगर इसका यह मतलब नहीं—"

बैंग्टन ने टोका "मिस्टर बर्ड रहने दीजिये। हालांकि मैं जानता हूँ आप असिस्टेंट रेज़ीडेंट के ओहदे पर हैं, लेकिन इंसाफ़ और सच्चाई का खून कर बैठे हैं। मैं आप ही से पूछता हूँ, गवर्नर जनरल को क्या हक है शहंशाह अवध को इस तरह हुक्म भेजने का? इजाज़त न दी गई तो स्लीमन साहेब बिना पूछे दौरे पर जायेंगे। आखिर इसका मतलब क्या होता है?"

"क्यों पूछते हो मतलब बैंग्टन?" शाह बीच में बोले "किसी की बदकिस्मती आसमानों में नहीं लिखी होती। तौहीन का सामना करना पड़ रहा है। क्यों? क्योंकि हम हमेशा सच्चाई और वफ़ादारी से कम्पनी के दोस्त बने रहे। हमने किसी ऐसी साज़िश में हिस्सा लेने की ज़रूरत नहीं समझी जो विरोधियों के खिलाफ़ मुल्क के चारों कोनों में की जा रही है? हमने और हमारे बुजुर्गों ने हमेशा वही किया जो कम्पनी सरकार की मन्शा में था। हमारे किले हमसे छीन कर हमीं को दे दिये गए। बर्ड तुमने तवारीख तो देखी होगी न? हमें मजबूर किया गया हम अपनी फौज की तादाद में कमी कर दें और कम्पनी के रिसालों को सरकारी खज़ाने से खर्च देकर अवध में कायम रखें। क्यों? सिर्फ़ इस

लिये कि हम उनके दोस्त थे। हमसे कर्ज लिये गये। हमसे जंगे नेपाल होने पर फौजी मदद भी गई। आह! बड़ी लम्बी कहानी है जनाब जिसका मतलब तुम मुझ से पूछ रहे हो।"

"योर मैजेस्टी की परेशानी मैं समझ रहा हूँ। बर्ड ने बड़ी सहानुभूति से कांपती आवाज में कहा "मगर खुद भी मजबूर हूँ। बतौर असिस्टेंट रेजीडेंट गवर्नर साहब की हिदायतों के मुताबिक अर्ज करूँगा स्लीमन साहब को दौरे की इजाजत का परवाना अता किया जाये।"

'आह बर्ड हम तुम्हारे मुँह से ऐसे अलफ़ाज़ सुनने की तमन्ना नहीं रखते। क्या तुम इंसाफ की तराजू पर तोलकर हमसे ऐसी बातें करते हो। खुदा के लिये असिस्टेंट रेजीडेंट के नाते हमसे अर्ज मत करो बल्कि एक दोस्त के नाते हमें मशविरा दो? क्या हम इस जुल्म को बर्दाश्त करें? क्या यह जिल्लत नहीं हमारी तौहीन नहीं?"

बर्ड को उत्तर न सूझ सका। उसने अपना सिर झुका लिया। शाह देर तक उसकी ओर देखते रहे और अन्त में फिर बोले 'हम तुम्हारी नाजुक हालत का अन्दाजा बखूबी कर रहे हैं बर्ड। लेकिन तुमने हमेशा सच्चाई और ईमानदारी की तरफदारी की है। बोलो क्या तुम्हारी राय में हमें इस दौरे की इजाजत दे देनी चाहिये? क्या जानबूझ कर इस जबरदस्त तौहीन को मन्जूर करना होगा? हम क्या करें बर्ड। हमें रास्ता बताओ। तुम गवर्नर के नुमायन्दे जरूर हो लेकिन हमारे दोस्त भी। क्या तुम्हारी नजर में हम पर जुल्म नहीं हो रहा? हमारी तौहीन नहीं की जा रही? आखिर यह क्या माजरा है? क्या होने वाला है? हमें बताओ बर्ड बताओ? हम तुम्हारे अहसानमन्द होंगे।"

"कांटों में मत घसीटिये योर मैजेस्टी।" अन्त में बर्ड की खामोशी टूटी "मैं अन्धा नहीं हूँ। सब देख रहा हूँ। सब समझ रहा हूँ। गवर्नर जनरल के मन में क्या है अच्छी तरह जानता हूँ। लेकिन मजबूर हूँ। एक मुलाजिम के फर्जों से बंधा हूँ। मत कहलाइये क्या होने वाला है।

हजार फौज कम्पनी सरकार के कहने पर घटाकर पचास हजार न की होती। काश उन पचास हजार जवानों को हमारे वालिद हुजूर ने ती और बीस हजार न बना दिया होता। काश हमारे पन्द्रह हजार जांबा के मुकाबले में कम्पनी के अनगिनत रिसाले न होते।"

"गुस्ताखी मुआफ आला हुजूर।" नकी खाँ ने अपना असल मु किया "अब इन बातों के सोचने का वक्त नहीं है। मुकाबला करना न तो आसान है और न मुमकिन। फिरंगी हुकूमत के हाथों हमारी किस्मत का फैसला नहीं है। और इस दौरे का कोई ताल्लुक किसी बे जानी से नहीं हो सकता। ज्यादा से ज्यादा स्लीमन साहेब हमें इत्तला के मुताबिक अपने मशवरे देंगे। देने दें आला हुजरत। हम उन्हें मंजू करने पर मजबूर नहीं।"

"खामोश रहिए वजीर साहेब।" सहसा ब्रॅगम तीव्र स्वर में क उठा "आप आलमपनाह को बच्चों की तरह बहलाने की कोशिश क रहे हैं। मालूम होता है, आपको सियासी जानकारी नहीं है या आ स्लीमन से ज्यादा अपने बादशाह को हकीर समझते हैं।

"यह मेरी तौहीन है ब्रॅगम साहेब। नकी खाँ ने तमक कर कह "आप शाही हुजूर में मेरी बेइज्जती कर रहे हैं।"

'आप वजीर हैं इसलिए नकी खाँ साहेब वरना यही बात को और कहता तो उसकी बेइज्जती करने की जगह मैं चाहे अवध को तो सजा देने पर जोर देता। आप जानते हैं आप क्या कह रहे हैं। य अवध की बरबादी का मसला है। यह कोरा नहीं सियासी शतरंज क वह मोहरा है जिसकी मार कमोबेश साबित होगी। और आपने मामूली मसखरों से इसकी इजाजत देना कुबूल कर लिया।"

"हाँ नकी खाँ।" शाह ने सीधा हाथ उठाकर दोनों पक्षों को थाम रहने का आदेश देते हुए कहा "ब्रॅगम साहेब ठीक फरमाते हैं। हम इ दौरे की इजाजत नहीं दे सकते।"

"जो हुक्म आलमपनाह !" नकी खाँ को कहना पड़ा। लेकिन इस के बाद वह बेगम को बुरी नज़रों घूरता मुंह फेरकर बैठ गया। कुछ देर बाद शाह आरामगाह की तरफ़ तशरीफ़ ले गए। किन्तु जाने से पहले उन्होंने यही फ़ैसला दोहराया कि वह कभी इस दौरे की आज्ञा नहीं देंगे।

उसी रात वाजिद अली शाह की भेंट मरियम महल से हुई। वह पहली दृष्टि में शाह की उदासी ताड़ गई।

शाह ने शराब का घूंट भरा और मरियम को आज के गवर्नरी दल का पूरा हाल सुनाया। मरियम सुन कर मुस्कुराई, बिगड़ी और त्योरियाँ बदल कर स्लीमन को कोसने लगी।

पिछले दिनों उसकी तबीयत ख़राब चल रही थी इसलिए वह पलंग पर लेटी थी। शाह निकट जाकर उसे रोकने लगे।

"आपको गुस्सा करना लाज़िम नहीं मुम्ताज़ मरियम। आपकी तबियत ख़राब है।"

मरियम ने कहा "इस ज़िन्दगी से मौत हज़ार दर्जे बेहतर है हुज़ूरे अनवर। कम से कम यह ज़िल्लत तो बर्दाश्त नहीं करनी होगी।"

"हम आपके जज़्बातों की क़द्र करते हैं। लेकिन आपको ख़ुश हो जाना चाहिए मुम्ताज़ मरियम कि हमने दौरे की इजाज़त न देने का फ़ैसला किया है।" शाह ने उत्तर दिया।

मरियम बिस्तरे पर उठकर बैठ गई। उसने अपनी बड़ी-बड़ी आँखें शाह पर गड़ा दीं और पूछा "सच?"

"हाँ हाँ सच!" शाह ने दूसरा जाम उठाया और मरियम से पूछने लगे "मगर आपको हैरानी क्यों हुई? क्या हमारा फ़ैसला ग़लत है?"

मरियम कुछ न बोली। शाह अचम्भित हुए। अपने निर्णय पर

कम से कम अपनी प्यारी बेगम का समर्थन प्राप्त करना उनकी चाह थी। यूँ मलिका किश्वर, अमन और राजा बालकृष्ण जैसे कुछ दूसरे दरबारियों ने इसे स्वीकार कर लिया था। बेगम अख्तर (नकी खाँ की पुत्री जिसे बादशाह ने यही खिताब दिया था) सुनते ही कुरमुरा गई थी और अपनी अस्वीकृति प्रकट करने लगी थी। लेकिन बादशाह ने उसका कोई विचार न किया। वह नयी उम्र की नयी बेगम थी जो सियासत के बारे में अलिफ-बे भी शायद ही जानती हो। मरियम की बात और थी। वह सियासती दिमाग रखती थी और अक्सर इसका प्रमाण दे चुकी थी। दर्जन दफनाने के बाद उसकी समझ पर सन्देह किया जाना असम्भव था। उसका समर्थन मूल्यवान होता। अस्वीकृति ठोस होती और फैसला मान्य होता।

दो तीन बार पूछे जाने पर भी मरियम कुछ न बोली। इसकी खुमारी में शाह अवध को उसका यह आचरण विचित्र लगा। वह बैठे जिद पर उतर आए और उसकी राय जानने पर ज़ोर देने लगे।

तब मरियम बड़ी नाटकीयता से कहने लगी "कनीज़ को आलम पनाह के मुकाबले अपनी अक्ल को अहमियत देना मुनासिब नज़र नहीं आता। लेकिन जब इसरार है तो हुज़ूर के रोबरू अर्ज़ किये देती हूँ कि मैं आलमपनाह के फैसले से मुत्तफ़िक नहीं।"

"क्यों ?" शाह ने झट से सवाल किया। ऐसी बात नयी बेगम अख्तर ने भी दस्तरख़्वान पर कही थी मगर उस वक्त भोजन समाप्त होने वाला था अतः बिना कोई जवाब किए शाह उठ आए। मरियम ने उसी विचार का समर्थन किया तो उनकी उत्सुकता नये के साथ-साथ बढ़ने लगी।

मरियम ने कहा "गुस्ताखी मुआफ हो तो अर्ज करूँ" यह एक तरह की नादानी साबित होगी। वैसे किसी सूरत अच्छी बात नहीं। जब गैर साहेब जाहिर कर चुके हैं। हुज़ूर ने इत्मीनान देने में आनाकानी की

था ।"

"तो क्या मुकदमा [illegible] ?"

"मामा हुजूर [illegible]
इसे सिद्ध कर देना जरूरी है। [illegible]
भी काम क्या है। दौलत [illegible]
बहुत बदइन्तज़ामी है। [illegible]
आपने इन्तज़ाम न [illegible]
दिखेगा कि इस बदइन्तज़ामी का [illegible]
नहीं दी।"

शाह पर इस सम्भावना ने बुरा असर किया। [illegible]
मन के भीगे चेहरे को देखते रहे। [illegible]
थी। वह गहराई में मग्न थे।

मरियम आगे बोली "[illegible]
बात को हम उमर का फिर[illegible] [illegible]
काम कैसा है कैसा नहीं सब ने सब [illegible]
जिसकी जायदाद है जिसकी नहीं वह भी हम जानते हैं। [illegible]
अगर कभी फिरंगी भारी ताकत लगा दें फिर भी [illegible]
उन्हें नहीं मिलेगा कि वह शाह अवध के [illegible]
मन के मुताबिक नहीं। ऐसी सूरत में [illegible]
से कम उसके ऐलान को समझदार कर दूसरा [illegible]
हम सच्चाई और ईमानदारी पर मजबूत हैं। [illegible]
हम कमज़ोर नहीं तो क्यों डरें ? वह हुकूमत का इन्तज़ाम देखना चाहते
हैं तो देखें। झूठी रिपोर्ट दी फिर भी परिणाम हमारे साथ रहेगा।
रियाया खुद रेज़ीडेंट की रिपोर्ट के खिलाफ गवाही खड़ा कर देगी।"

शाह पर रंग चढ़ गया। कहते कहते मरियम जज़्बाती के कारण
हाँफने लगी थी। शाह ने प्यार से उसके बालों में हाथ फेरते उसकी

योग्यता की दाद दी और मन ही मन दोपहर में किया फैसला उलट देने का विचार ले वहां से चले आए। चलते समय मरियम देर तक उनको देखती रही। चेहरे पर जो उत्साह उसकी लम्बी तकरीर से आ गया था वह उसकी आँखों में बस गया। उसने फिर एक बार भोले बादशाह को ठगने में सफलता प्राप्त की थी। लम्बी सांस लेने के बाद पलंग पर लेटने को आतुर उसके मुख से निकल गया—मेरे गुनाह मुआफ कर परवरदिगार।

इसके बाद फैसला बदल गया और जल्द दौरे की इजाजत का परवाना तैयार किये जाने का फरमान निकला कहना एक प्रकार बिल्कुल व्यर्थ है। मरियम के बाद अख्तर महल से भेंट होने पर जब शाह ने हँसते हुए उसे अपना नया फैसला बताया और कहा कि उन्होंने अपनी अख्तर की बात रख ली तो नयी बेगम सन्न रह गई। उसने एक बार सिर्फ यही कहा कि शायद उसकी मन्शा ऐसी नहीं थी। जिसपर बेगम व खान अमीनुद्दौला और नूर खाँ एक बार इन शब्दों में शाह को समझाने आये। पर उन सब के लिए अब एक निश्चित उत्तर था। जब डर नहीं तो डर क्यों। हमारी रियासत में न कोई बदइन्तजामी है और न कोई हुक्मउदूली। चोर डाकू हर जगह होते हैं। रियाया अपने बादशाह की वफादार है। स्लीमन साहब चाहे नाक रगड़ें लेकिन शिकायत नहीं मिलेगी। तब जानबूझ कर कहने का मौका क्यों दिया जाए कि बादशाह ने डरकर इजाजत देने से इन्कार कर दिया।

नकी खाँ बहुत खुश था। स्लीमन से एक बार प्रशंसा प्राप्त कर आया था। उसने देर लगाना नामुनासिब समझा। फरमान मिलने के चौथे ही दिन परवाना तैयार हो गया। बल्कि शाहे अवध की ओर से इशारा मिला तो गवर्नर के पत्र के अनुसार पूरे दौरे का सारा इन्तजाम भी

करवा दिया। रास्ते का सब खर्च हुकूमत पर डालने की तजवीज की। शाह देखते रहे और चूं न करी। मक्कारी और चालाकी से बेचारे कोसों दूर थे। क्या जानते अपनी मौत का खुद प्रबंध कर रहे हैं। मलिका किश्वर हों या बेगम, अमीनुद्दौला वज़ीर हों या बड़ उनकी बुद्धि में मरियम की प्रभावशाली दलील के आगे सबकी दलीलें फीकी रहीं। बेचारे अपने लोकप्रिय बादशाह होने की भ्रांति पर मरियम के उलझाव में उलझ गए। स्लीमन को तारीख से बहुत पहले आज्ञापत्र मिल गया और मिल गई उस प्रबंध की रूपरेखा जो अली खां ने तैयार की थी। अन्त में दिन आ गया जब उसका लवाज़मी दौरा प्रारम्भ हुआ। उसके साथ रसाला या रसाले की नयी पल्टी कामों की बीस नौकर चाकर के पचास सिपाही थे और था मेम साहब सहित परिवार। अली खां आगे वाले दो हाथियों में से एक पर खुद सवार और दूसरे पर शराब की बोतलें लदवा स्लीमन साहब दूसरे पर गये। और अली खां के सुप्रबंध में इन सब पर किया जाने वाला करीब तीन लाख का व्यय सरकारी खजाने से अदा हुआ। शाह रे विदेशी हुक्काम और हिन्दोस्तानी नौकरशाही। एक अपने मालिक के लिए झूठ-फरेब बेईमानी चालाकी मक्कारी दगाबाज़ी किसी की परवाह किए बिना अपने मतलब को बना रहा था और दूसरा अपने नेक और रहमदिल बादशाह का गला काटने की तैयारियों में योग दे रहा था। क्यों? क्योंकि वह उसी बादशाह का वज़ीर था।

नौ

सुल्ताना (बेगम अख्तर) नकी खां के साथ कुछ दिनों के लिए हरम से अपने मकान आ गई। निकाह हुए अभी कुछ दिन बीते थे। मन में अदम्य उत्पीड़न लिए वह इस विवाह पर तैयार हुई थी। परन्तु वज़ीर का कहना था मरियम का प्रभाव कम करने के लिए अख्तर का हरम में पहुँचना ज़रूरी है। अवध की धरती पर उसका जन्म हुआ था और रक्त में इस मिट्टी के लिए निरन्तर उत्साह दौड़ता रहा था। शाह से प्रेम नहीं था — ऐसे व्यक्ति की कल्पना ही उसे दुखद लगती थी जो धन के बल पत्नियों को दरबे के भीतर धकेलने का इच्छुक रहा हो। पर शादी करने पर अवध सब के सामने स्वीकृति दी। इसके बाद शाह को नज़दीक से देखने पर उसे तरस आ गया। वाजिद अवध और अवध के बादशाह रहम के काबिल थे। इस बीच साहित्यकार को चारों तरफ से मिल कर दरबारी के अड्डे में ढकेला जा रहा था। मरियम से उसकी भेंट हुई थी। उसे देखने पर मन ही मन उथल पुथल मच गई। दरबार का समाचार अक्सर मिला ही करता था। देशी-विदेशी मौसीकी, नृत्य और गीत की बाढ़ में चापलूस दरबारी शाह को अपनी ओर से विलास में डाले जैसे किसी गहरी साजिश में उलझे नज़र आते। वह सब नकी खां के साथ रहने वाले थे। वातावरण चारों ओर वाजिद अली शाह के विरुद्ध नज़र आया। दूसरे शब्दों में अवध और अवध के स्वतन्त्र नागरिकों के विरुद्ध नज़र आया। हरम से शाह मिले तो अपमान के अथाह दुख से पीड़ित और दुखी। शायद उसी रोज़ सलीमन ने भरे दरबार में कसम उठाई थी। अख्तर की आँखों में पहले आँसू और फिर क्रोध उभर निकला। वह अपने पिता से

पूछने का फ़ैसला लिए अपने मकान लौटी कि आखिर यह सब क्यों हो रहा है। नकी खाँ से जानना चाहती थी कि बेचारे वाजिद अली शाह के भोले पन का फ़ायदा फिरंगी मरियम स्लीमन नकी खाँ कर चाहे और खुद अख्तर बगरात क्यों उठा रहा है। उस वक्त तक दौरे की समस्या हल हो चुकी थी। स्लीमन के पास परवाना आ चुका था।

मौका मिलते ही उसने वज़ीर से सवाल किया—"क्या यह बात बिल्कुल तय हो चुकी है अब्बा हुज़ूर कि अवध पर फ़िरंगियों का राज होगा ? नकी खाँ चौंका उसने बेटी का मुंह देखते हुए उसका मतलब ताड़ने की कोशिश की।

"तुम्हें कैसे मालूम हुआ बेटी ? उसने धीमी आवाज़ से सवाल किया।

"दौरे के लिये बादशाह सलामत को इजाज़त देने पर जिन्होंने मजबूर किया उनमें न सिर्फ़ मरियम थी बल्कि खुद बादशाह का वज़ीर भी था। क्या मैं सवाल कर सकती हूँ अब्बा हुज़ूर कि आप सरकारी की इस साज़िश में क्यों दामनगीर हुए ?"

नकी खाँ ने उत्तर दिया—"एक कमज़ोर बादशाह के लिए इसके अलावा दूसरा रास्ता नहीं था मुस्ताफ़ा। मैंने जो कुछ किया अपने और तेरे फ़ायदे के लिए किया।

"मुल्क के मफ़ाद के सामने आपका या मेरा फ़ायदा कोई मायने नहीं रखता अब्बा हुज़ूर। फिर मैं आपसे एक और सवाल पूछना चाहती हूँ। अगर बादशाह की बादशाहत न रही तो उनकी मलिका या उनका वज़ीर कहाँ रहेगा ? क्या आप यह समझ रहे हैं कि हुकूमत छिन जाने के बाद आप अंग्रेज़ों की तरफ़ से यहाँ के मुलाज़िम करार किए जायेंगे और मौज उड़ायेंगे ?"

"यह सब तुम्हें किसने बहकाया है ? क्या अंग्रेज़ इतने बेवकूफ़ हैं कि वह मुझे यहाँ का मुलाज़िम बना दें ?"

"तो क्या आप अपनी अक्ल से काम नहीं लेते ? आप वज़ीर हैं। वज़ीर बादशाह का दांया हाथ होता है। क्यों आप अंग्रेज़ों से इस कदर खौफ खाते हैं ? क्या मजाल थी शाहे अवध की कि आपकी नामन्ज़ूरी पर इतनी आसानी से दौरे की इजाज़त दे देते। अब्बा हुज़ूर, अब शाहे अवध मेरे शौहर भी हैं। मैं उसी शौहर की इज़्ज़त का वास्ता देकर आप से इल्तजा करती हूं कि आप जिस रास्ते बढ़ रहे हैं उसे छोड़ दें। अंग्रेज़ आपके हमवतन नहीं अंग्रेज़ आपके दोस्त नहीं अंग्रेज़ आपको देने नहीं कुछ लेने आये हैं। फिर भी मैं देख रही हूं आपके फ़ैसले अंग्रेज़ों के हक में होते हैं। आखिर क्यों। अब्बा हुज़ूर ऐसा क्यों है ?"

नकी खां का सिर झुक गया। वह उत्तर न दे सका। अख्तर की बात उसके दिमाग़ में आज पहली बार नहीं उभरी थी। कई बार और उसने सोचा था। विशेषकर अपनी बेटी शाही हरम में पहुंचा देने के बाद। जिस वज़ारत के लिए वह खेल खेल रहा है, बादशाहत न रही तो वह कहां रहेगी। अंग्रेज़ उसके दोस्त बने उसकी राय-मशविरे के मोहताज इसीलिए तो हैं कि अवध को दबोच लें। नकी खां सोचता ऐसी सूरत में वज़ारत का क्या होगा। मगर उसे दूसरा रास्ता न सूझता। वज़ारत का मोह त्यागना एकदम असम्भव था। अंग्रेज़ों की नीति के विरुद्ध होने का अर्थ था वज़ारत की समाप्ति। वज़ारत की समाप्ति के बाद यहां फिरंगियों की हुकूमत में उसका मान उसकी मर्यादा किस प्रकार शेष रहती। सूरज डूब रहा था। बादशाह की बादशाहत की सन्ध्या आ पहुंची थी। रात में प्रकाश की एक किरण थी। फिरंगी दोस्त अपनी वफ़ादारी के सिले में उसे ऊंचा ओहदा अता कर देंगे। लेकिन अख्तर के सामने कैसे इसे स्वीकार करे। गर्दन झुका लेने के अतिरिक्त और रास्ता क्या था।

अख्तर नकी खां की खामोशी देख आगे न पूछ सकी। सवाल का जवाब देने से नकी खां ने इन्कार कर दिया था। दूसरे शब्दों में उसका

दिल मुझे ऐसा यकीन हो गया मैं खुदकुशी कर लूंगी। इसलिए मैंने फैसला किया है, ग़ालिबन उस दिन तक इस घर में कदम नहीं रखूंगी जिस दिन तक आपकी वज़ारत कायम है। इन्शाअल्लाह इसके बाद फिर बाप-बेटी में मुलाकात होगी। अब यह आपके सोचने की बात है कि उस दिन बेटी किस शक्ल में हो। एक बादशाह की बेगम की शक्ल में या भिखारी की भिखारिन की शक्ल में। जाहिरा आप भी अपनी बेटी के इतने खौफनाक अंजाम की तमन्ना नहीं कर सकेंगे। फिर भी वक्त और वक्त की मजबूरियां बहुत ताकतवर साबित हुई हैं।

मकी बां बेटी की मर्मभरी वाणी से आहत हुए। उत्तर तो उत्तर इतना साहस भी न हुआ कि वह अख्तर को रोक सकते या दुबारा मकान पर आने के लिए मजबूर करते। जब उन्होंने खुद एक सौते की नीव डाली थी तो बेटी का प्रतिवाद प्रतिघात कैसे करते। सच सच है और झूठ झूठ। और सच क्या है यहां वह खुद जानते थे वहीं समझ चुके थे कि उनकी बेटी भी जानती है। यह सवाल दूसरा था कि नसीह अली के यहां जाने की इजाजत देकर अख्तर को इतना जानकार बनने का मौका देने के बाद अब वह बार-बार पछता रहे थे।

उसके दिन सुल्ताना महल वापिस आ गई। लेकिन अब वह शाह अवध के नज़दीक पहुँचने की ज़्यादा से ज़्यादा कोशिश करने लगी। मरियम का प्रभाव उस पर प्रकट था। नयी बेगम के साथ शाह ने चन्द रातें बिताईं थीं। मरियम बीमार थी। पर अब भी वह उबर आते। हार कर अख्तर ने एक रास्ता निकाला। नवीदौला ख्वाजासरा को उसने भी पहली बार रिश्वत दी। शाह तक पैगाम पहुँचाया गया। शायर जौहर को शायरा बीवी अपना कलाम सुनाना चाहती है। बादशाह खुशी से फूल गए। नयी बेगम शेरो-शायरी में दिलचस्पी रखती है? तत्काल ज़नाने मुशायरे का आयोजन हुआ। शहर की शायरा खातून इसमें हिस्सा लेने आईं। अख्तर ने कलाम सुनाया। चारों तरफ से दाद मिली। मासूम

शेरों को मअतरतार बना कर अख्तर की ज़ुबान ने आग बरसाई थी। उनकी पढ़ने का शौक था 'मगरिब'। शाह खुद समझे कुछ नहीं। मगर मुशायरे के बाद अख्तर में उनकी रुचि जाग पड़ी। बीमार मरियम के साथ-साथ अब वह अख्तर को भी समय देते। शेरो-शायरी के चर्चे होते। शाह अपनी शायरी कहते। अख्तर तरन्नुम से जवाब पेश करती। नज़दीक पहुँचने को यही माध्यम पता हुआ। कुछ दिन बीतते न बीतते अख्तर शाह को भाने लगी। अन्त में उन्होंने शायरी में अपना उपनाम ही अख्तर रख लिया।

लेकिन इतने पर भी अख्तर की ज़बान से एक शब्द प्यार का न निकला। अभी वह शाहे अवध को तौल रही थी। स्लीमन का दौरा चल रहा था। उसकी कामयाबी में देर थी। और बहुत देर थी उस दिन में जब अख्तर शाहे अवध का हाथ पकड़कर कुछ करने या कुछ कहने से रोक सकती।

सोचने के बाद न सोचने पर मजबूर हो जाते। भविष्य की चिन्ता जब भी होती तो वह नहीं सोचते कि गले में अटकी दोस्ती शायद आड़े वक्त काम आवे। कभी यह न सोचा कि इस दोस्ती को निकाल बाहर कर वह नए सिरे से नयी दोस्ती गले डालें। वह दोस्ती होती अवध और अवध की स्वतन्त्रता से—उसके बादशाह और उसकी प्रजा से। काश वह ऐसा सोचते तो बरबादी कुछ दिनों के लिए टल जाती। आनी तो जरूर थी। पर कम से कम नकी खां पर उसका दाग तो न लगता। बरसा आज के इतिहासज्ञ आँखें पोंछते नकी खां को दोष देते हैं। कहते हैं काश वह वज़ीर न होता। काश उसने वक्त रहते अपनी आँखें खोल ली होतीं तो शायद तस्वीर के रंग इतने सुर्ख न होते—इतने सुर्ख कि देखते-देखते देखनेवाले की आँखों में ही लाल डोरे पड़ जाएं।

दस

मरियम की देख भाल मरियम के अनुरोध पर रेजीडेंसी के डाक्टर के सिपुर्द कर दी गई थी। वह नित्य आया करता था। उसके साथ हुआ करता उसका असिस्टेंट। पर वह रोज नहीं आता था। किसी किसी दिन उसकी जरूरत होती तब डाक्टर उसे साथ ले आता। उस दिन दास-दासियों को कमरे से बाहर निकाल कर मरियम की विलायती चिकित्सा पद्धति के अनुसार विशेष दवा-दारू होती। और दास-दासियां भी अपनी होतीं। किसी को सन्देह न होता और जोसफ बड़ी सरलता से अपनी प्रियतमा मरियम से मिल जाता।

एक दिन डाक्टर के स्थान पर वह अकेला आ गया। अब रोकने की सम्भावना खत्म हो चुकी थी। लेकिन मरियम ने फिर भी आश्चर्य व्यक्त किया।

"अकेले कैसे आ गये जोसफ? किसी को शक हुआ तो?" उसने पूछा।

जोसफ पलंग के नजदीक आया। दासी कमरे से बाहर जा चुकी थी। उसने व्यग्रता से मरियम का हाथ पकड़ लिया और बोला—"तुम्हारे लिए जान भी जाये तो जाने दे। मैं नहीं डरता। पहले बताओ आज तुम्हारी तबियत कैसी है?"

"झूठ मत बोलो"—मरियम ने कहा—"तुम मेरी तन्दुरुस्ती का हालचाल पूछने नहीं आये। शायद इस बार कोई नया हुक्म लाये हो।"

जोसफ उत्तर न दे खामोशी से बैठा रहा। मरियम की बात में सच्चाई का वह अंश था जिसे एकबारगी काट फेंकना उसकी सामर्थ्य से बाहर था। दूसरे क्षण उसने मरियम को बहलाने का प्रयत्न किया—छोड़ो इसे। यह देखो डाक्टर ने यह नयी दवा खाने के लिए दी है।

बहुत कीमती और पुरअसर है। उसका कहना है, इस दवा के बाद तुम्हारे बदन में सुन आना बिल्कुल बन्द हो जायेगा।

"यह भरोसे बेकार हैं जोसफ" मरियम निराशा से कहने लगी 'अब दवा की नहीं मुझे तुम्हारी जरूरत है। मुझे चंगा देखना चाहते हो तो यहाँ से ले चलो। मैं थक गई हूँ इस जिंदगी से। यहाँ की ऐशो इशरत मुझे और मेरे जमीर को हर वक्त कचोटती रहती है जोसेफ, चूंकि मैं अच्छी तरह जानती हूँ मुझे इस जिन्दगी और इस आराम का कितना हक है।"

"तुम फिर बहकने लगी मरियम।" जोसफ ने मरियम के बालों में हाथ फेरते हुए प्यार बिखेरा और सन्तुलित स्वर में कहा "अभी यहाँ बहुत काम है तुम्हें। स्लीमन साहेब दौरे से वापिस लौटेंगे तो तुम्हारे बिना उनका मकसद पूरा न हो सकेगा। दौरे की इजाजत जैसे तुम्हारी वजह से मुमकिन हो सकी है उसी तरह हुकूमत सौंपने वाले अहदनामे पर भी "

"ओफ खुदा" मरियम कांप गई क्या नौबत यहाँ तक आएगी? जोसफ क्या इस जुल्म से तुम्हारा दिल नहीं कांपता!"

'पागल हुई हो मेरी!" उसने चट कहा 'मजहब के लिए लोग अपनी जान गंवा देते हैं। हम तो महज एक ताकतवर हुकूमत के खिलाफ दूसरी ज्यादा ताकतवर हुकूमत की मदद कर रहे हैं। जो हमारे मजहब को मानने वाली है और "

"प्यारे जोसफ' सहसा मरियम ने आर्द्र स्वर में कहा "तुम्हारे हुक्म पर सर कटाना पड़ा तो भी इनकार नहीं करूंगी मैं। लेकिन एक मुल्क और उसके कुछ बाशिन्दों का मजहब छोड़ अगर तुम सारी दुनिया के मजहब का ख्याल करो तो जरूर तुम्हारी आँखें खुल जायें। इंसानियत के खिलाफ गद्दारी करना सबसे बड़ा गुनाह है। बादशाह को धोखे से मारना इसी तरह है जिस तरह

"छोड़ भी" जोमक ने बहुत अच्छा बात टाल दी। "जवानी मेरी, तुमने पिछली बार मुझे कुछ देने को कहा था। प्यारी, मैं बहुत तंगदस्त हूँ। कामकाज कुछ नहीं। एक-एक पैसे की किल्लत पड़ रही है। क्या तुम मेरी कुछ मदद नहीं करोगी?"

मरियम ने उत्तर दिया, "मेरे पास हर माह जेबखर्च के लिये पांच हजार आते हैं। उसमें से पैसे को बहुत कुछ देना पड़ता है। मैं ज्यादा से ज्यादा नहीं बचा सकती। अभी तुरन्त न कहा न माँगूँ। तुम कुछ दिनों और इन्तजार नहीं कर सकते जोमक? इस बार जेब खर्च मिलने पर मैं सबका सब तुम्हीं को दे दूँगी।"

"कलीमन साहेब के यहां जाने पर तो उनसे मैं कुछ ले सकता हूँ खालिस। जरूरत तो इस वक्त है। पिछली बार तुम कह रही थीं तुम्हारे पास मोतियों का एक हार है।" जोमक मुस्कराहट से मुस्कुराकर कहने लगा, "चाहे मलका कमीदिया एक नहीं ऐसे-ऐसे न जाने कितने हार तुम्हारी खिदमत में पेश कर दिये जायेंगे। चाहो तो इस वक्त मेरी मुसीबत में मदद कर सकती हो।"

मरियम का हाथ रुक गया। मोतियों की चमचमाती माला उसके गले में पड़ी थी। जोमक दो बार पहले इसकी मांग कर चुका था। उसे बड़े-बड़े मोती पसन्द आ गए थे और लेना चाहता था। मरियम हां कर चुकी थी। इस वक्त दोबारा इसका प्रसंग उठने के बाद मरियम मना न कर सकी। उसने गले से हार निकाल लिया और जोमक के हाथों में थमाते हुए बोली, "काश इस कीमती हार के बाद भी तुम चाहो मरियम को बरस भर यहां से निकाल लो जोमक। मैं महलों में ऐसे कुछ नहीं खोना।"

बात पूरी न हो सकी कि शाहिबा बेगम दरवाजा खोल अंदर आईं और सौतेली-अम्मा ... करने लगी। मरियम ने पूछा, "क्या है सलीमा बी?" उसने हंसकर कहा, "..."

मतलब स्पष्ट हो गया । जोसफ हार सम्हाल कर रख भी न सका कि दूसरे क्षण वाजिद अली शाह की मुस्कुराती आकृति कमरे के द्वार पर *नज़र आई । वह सहम गया और मरियम की आँखों में भय अंकित हो* उठा । उधर शाह प्रथम जोसफ की उपस्थिति से एकदम मौन बारीकी से मरियम और जोसेफ को घूरने लगे । उनके चेहरे की मुस्कुराहट गायब हो गई और वह किसी सोच में पड़ गये । इसके बाद जोसफ के हाथ का हार देखते हुए वह गम्भीरता से आगे बढ़े ।

"आलम पनाह   मैं मैं   रेजीडेंसी से आया हूँ ।" जोसफ घबराहट बरबस छुपाकर अपनी स्थिति साफ करने लगा "सुल्तान मरियम महल के लिये डाक्टर की दवा लेकर आया था ।"

"आप के हाथ में क्या है ?" शाह ने निकट पहुँचने पर जोसफ को देखकर केवल इतना पूछा "यह हार कैसा है ? क्या मरियम महल ने आपको दिया है ?"

"हाँ" जोसफ ने सिर हिला दिया । उसकी जबान को ताला लग गया था और अब उसकी घबराहट छुपाये न बन रही थी । कठिनाई से वह बोला "यह"   "यह   माला मलिका हुजूर ने दिया है   खुद दिया है आलम पनाह   "

"क्यों दिया है ?" शाह ने सवाल किया ।

"मुझे   मुझे नहीं दिया   आलमपनाह   मैंने नहीं लिया है अपने लिये । इनके   इनके वाजिद साहब ने मदद माँगी थी । वह किसी के कर्जदार हो गये हैं ।   मलिका हुजूर से   जो   "

"ओह" शाह ने वक्र दृष्टि से जोसफ पर अविश्वास प्रकट किया और मरियम की ओर घूमे जो सहमी तकिये पर सिर टिकाये अपलक भविष्य की चिन्ताओं से व्याकुल नज़र आ रही थी ।

"आप कहिये मरियम महल क्या इनका कहना सच है ?" उन्होंने सवाल किया और बारीकी से मरियम को देखने लगे ।

मरियम के माथे पर पसीने की हल्की बूंदें उभर आईं। वह सोचती रही। किन्तु अधिक देर शाह को सन्देहशील बनाये रखना बड़ा अटपटा था। उसका सर स्वीकारात्मक हिल गया। योसफ ने आराम की सांस ली। शाह के चेहरे पर दोबारा मुस्कुराहट आ गई और उन्होंने हाथ की ताली बजाकर खादिमा साहिबा को उपस्थित होने की आज्ञा दी।

दासी आई तो उसे हुक्म दिया 'खजांची साहेब को हुक्म दो वह डाक्टर बासवेल को बीस हजार रुपया भिजवा दें। आज ही अभी—"

दासी चली गई। योसफ ने तुरन्त हार मरियम को वापिस कर दिया। कुछ देर खड़ा वह शाह और मरियम की आकृति देखता रहा। अन्त में दवा सम्बन्धी कुछ अन्य हिदायतें देने के बाद उसने चलने का विचार प्रकट किया। शाह ने रोका और कहा "आयन्दा आप ऐसी कुछ-रत होने पर हमारी बीमार मलिका को परेशान करने की हिम्मत न किया करें। जिसे भी जो चाहिये वह हम से कहें। हम अपनी मुमताज मरियम पर अपनी सारी हुकूमत न्योछावर कर सकते हैं। जानते हैं यह खुद हमसे कुछ कह नहीं सकतीं लेकिन हम इनकी मदद और मोहब्बत के लिये में जो भी दें थोड़ा होगा। हमें अपनी बेगम पर फख्र है—

योसफ चला गया। शाह भी इसके बाद वहाँ से चल आये। मरियम की आँखों में आँसू छलक आये। क्या हुजूरों की एवज बादशाह सलामत अपनी बीवियों से मरियम को पछाड़ना चाहते हैं। कैसी है उनकी मोहब्बत? और कैसी है योसफ की मोहब्बत? उसे अपनी जेब भरने के अलावा मरियम के अहसासों का भी ख्याल नहीं। उसने कितनी बड़ी कुरबानी दी यह भी नहीं सोचता। बस आँखें मूँदे अपने फायदे के लिये इन विदेशियों की मदद करने पर आमादा है जो वाजिद अली जैसे मोहब्बत परस्त और नेक बादशाह की बरबादी का षड्यन्त्र कर रहे हैं। और इस साजिश में उसने मरियम को उलझा दिया। खुदा के सामने उसे सच्चा गुनाहगार बना दिया। उसकी मोहब्बत और उसके अहसानों

का नाजायज फायदा उठाया। क्या आगे भी ऐसा होता रहेगा? क्या हमेशा बादशाह सलामत उसके धोखे-फरेब से गाफिल रहेंगे। नहीं? क्या मरियम में इतनी जुर्रत नहीं कि वह अपने गुनाहों का इकबाल कर ले और खुद को शाही इंसाफ पर छोड़ दे? उस दिन वाजिद अली शाह का दिल टूट जायेगा? मोहब्बत जैसे पाक जज्बे में भी किसी ने उन्हें धोखा दिया सोच कर क्या वह कभी मरियम को क्षमा कर सकेंगे? नहीं! कभी नहीं!! तब मरियम क्या करे। क्या खुदकुशी कर ले। या शायद खुदा मेहरबान हो जाये। उसके भीतर पनपने वाली बीमारी घुन की तरह उसके चिपट जाये। और वह शाह की ऐसी ही मोहब्बत और इज्जत लिये इस फानी दुनिया से चली जाये।

मरियम इस घटना के बाद परेशान रहने लगी। भीतर का विक्षोभ उसकी बीमारी से ज्यादा कष्टदायक सिद्ध हो रहा था। यूसुफ ने महल आना छोड़ दिया था। फातिमा से खबर मिल चुकी थी डाक्टर बालफौर बड़ी आसानी से इनाम में मिलने वाली बीस हजार की रकम का आधा यूसुफ को देने पर आमादा हो गये थे। यूसुफ का न आना इसके बाद स्वाभाविक था। मरियम को ठेस लगी। जिस सन्देह को बरबस वह अपने मस्तिष्क से बाहर धकेलने को प्रयत्नशील रहा करती अब उसका निराकरण असम्भव हो गया। वह समझ गई यूसुफ ने किसी वक्त उससे प्यार किया हो या न किया हो मगर उसे अपने फायदे का दांव बहुर बना रहा है। उसका मकसद है सिर्फ अपनी जेबें भरना। और तभी पहली बार उसे प्रतीत हुआ कि कोई स्वाभिमानी व्यक्ति मजहब या किसी और भावना के अन्तर्गत अपनी होने वाली पत्नी को किसी और के अन्तःपुर में प्रविष्ट कराने का साहस नहीं कर सकता। यूसुफ ने ऐसा किया चूँकि वह मरियम से सच्चा प्यार नहीं करता था। मरि

मन भर तक उससे रमी गई।

धीरे-धीरे उसकी बीमारी असाध्य होने लगी। अवस्था दिनों दिन गिरने लगी। कहावत है मन चंगा न हो तो दवा-दारू व्यर्थ है। उसे केंसरे की बीमारी थी। बलगम में खून आता। बेहोशी के सख्त दौरे पड़ते। उधर उसने खाना-पीना छोड़ दिया था। शाह पूरी सतर्कता से उसकी देखभाल पर कटिबद्ध थे। रेजीडेंसी का डाक्टर और शाही हकीम दोनों अपना विचार विमर्श कर रहे थे। कभी-कभी मरियम के चेहरे पर रौनक आ जाती। फिर किसी दिन ढेर सारा खून आता और वह निश्चेष्ट कई दिनों तक कभी बेहोश कभी सोती रह जाती। दास-दासियों ने दिन के ऐलान के बाद उससे बचना आरम्भ कर दिया था। किस्मा अवश्य अपनी जान की चिन्ता छोड़े मरियम की सेवा पर कटिबद्ध नजर आई। मरियम उसे देखती तो मन पर भार प्रतीत करती। ममिता सिरबर या दूसरी महलात के आने का तो प्रश्न क्या था। मरियम अपने चारों ओर फैले घृणा के वातावरण से ऊब जाने लगी। गुनाहों की एवज ऐश्वर्यपूर्ण जीवन में भगवान का ऐसा कठोर विधान उसे रहस्यपूर्ण नजर आया।

एक बार फिर भयानक दौरा पड़ा और मरियम तीन दिन तक पूरे होश से बाहर रही। इस बीच उसने अपनी सेवा में एक नयी, आकृति देखी। नयी थी किन्तु अपरिचित नहीं। शाह की नयी बेगम सिकन्दर से मुलाकात हो चुकी थी। वह मरियम के सिरहाने से सट कर दिन रात सेवा में उपस्थित रही। किन्नो के साथ अपनी बड़ी मरियम की सच्ची हमदर्द नजर आई। इसका प्रभाव न केवल शाह पर पड़ा पर मरियम भी तीन दिन बाद आभार प्रकट करने लगी। उसकी आवाज में सच्चा दर्द और सच्ची सहानुभूति उत्पन्न हुई। सिकन्दर के प्रति वह बार-बार अनुगृहीत होने लगी। लेकिन सिकन्दर ने हँसते हुए उसे सावधान किया। बीमार मरियम का मनोरंजन करने की बातें कीं और अन्त में बोली

"इस खिदमत की ऐवज में तुमसे कुछ मांगे बिना न रहूँगी मरियम आपा। तैयार रहना।"

मरियम ने स्वीकार किया। ऐसी नेक स्त्रियों के लिये प्राण भी जाए तो कोई चिन्ता नहीं। मख्तर ने बहस न की। मरियम से कहा वह वाका यदा खाने-पीने की ओर ध्यान दे। अपनी बीमारी से लड़े। इस तरह जान-बूझ कर मौत को गले न लगाये। मरियम इन्कार न कर सकी। इस निस्वार्थ प्रेम में छोटी बहन सी ममता ने उसका रोम रोम सिक्त कर दिया। कहां अनुभव कर सकी ऐसे प्यार का आज तक? अगर यह कहानी न होकर सच है तो उसे सर झुका कर मख्तर की सभी बातें स्वीकार कर लेनी होंगी। अगले दिन से वह निरन्तर पथ्य लेने लगी। दवा ने असर करना प्रारम्भ किया। फलों का रस शरीर में शक्ति भरने लगा। मख्तर के अनुरोधों और शाह के प्रोत्साहन में जीवन की कामना जाग्रत हुई। कुछ दिन बीतने पर मरियम की अवस्था सुधर गई। चेहरा भर गया और वह चलने फिरने के योग्य हुई। अब जोसफ का ध्यान उसके मस्तिष्क से निकल चुका था। एक नये विचार ने उसकी जगह स्थान ले लिया था। उसने मौत को पछाड़ा है? शायद प्रायश्चित करने के लिये? अब वह शाह को और अधिक धोखा नहीं देगी। बता देगी कि वह कितनी बड़ी गुनाहगार है। कितना बड़ा पाप कर चुकी है। कैसा कुटिल प्यार करती है।

किन्तु क्या उसमें ऐसा साहस उत्पन्न हो सका। नहीं शाह की तेज वाम दृष्टि से दृष्टि मिलाकर अपना अपराध स्वीकार कर लेना साधारण काम नहीं था। मरियम अन्दर इसे भांप गई। उसका इरादा कमजोर होने लगा। ईश्वर शायद उसके फैसले का इन्तजार कर रहा था। बीमारी ने उभरकर दोबारा करवट ली। आखिर दिक की बीमारी थी। मख्तर उसके पास आई। सेवा सुश्रूषा चलने लगी। लेकिन इस बार बीमारी असाध्य या भयंकर न हो सकी। कुछ मरियम में जीने की लालसा थी।

हुए उसके भोजन की व्यवस्था ने सहारा दिया। बार-बार मरियम में एक चाह उत्पन्न होती। वह मरना नहीं चाहती। कम से कम उस समय तक नहीं मरना चाहती जब तक जोसफ से उसका आखिरी बदला न चुका ले। उस समय तक नहीं मरना चाहती जब तक शाह के सम्मुख अपना अपराध स्वीकार कर वह क्षमा की इल्तजा न कर दे। तब तक उसे जीना था और वह जीने का प्रयत्न कर रही थी।

ग्यारह

हकीम बर्दबानी ने उपस्थित जन समुदाय में जोशभरी वक्तृता दी। "बेईमानी की हद हो चुकी। इधर रेजीडेंट खबरें भेज रहा है। और मैं स्लीमन बारीकी से उन वाक़यात के बारे में सोचता और समझता है जो हुकूमत के लिए मुज़िर साबित हों। जान-बूझ वह लोगों से शाह के खिलाफ दरख्वास्तें ले रहा है। कहीं लालच और कहीं खौफ़ से अपनी रिपोर्ट के लिये झूठा मसाला तैयार कर रहा है। यह बर्दाश्त के काबिल नहीं। बादशाह सलामत अपनी रैयत पर भरोसा किये आँखें मूँदे बैठे रह सकते हैं लेकिन हम नहीं। हमें कुछ करना होगा और हम कुछ करेंगे। अब हमारी ताक़त हज़ारों पर पहुँच चुकी है और लखनऊ का बच्चा-बच्चा हमारा हमदर्द है।"

बैरम अमीनुद्दौला सिराज और सिब्ती के अतिरिक्त मिया जान भी मौजूद थे। सब उदास और परेशान नज़र आए। हकीम बर्दबानी का कहना कहाँ तक सच था यह जानते थे। लेकिन इसके उपाय में क्या किया जा सकता है उनमें से किसी की समझ में न आ रहा था।

एक नौजवान जो सिराज के बराबर बैठा था अपनी जगह से उठा और कहने लगा 'हुक्म हो तो रेज़ीडेंसी की ईंट से ईंट बजा दी जाये। दुश्मनों की लाशों से लखनऊ की सड़कें भर दी जायें। सिर्फ़ एक इशारे की देर है। अब तो शाही फौज के हज़ारों आदमी हमारे हमराज़ बन चुके हैं।"

बैरम ने टोका 'कोई ऐसा काम मत करो अमीनो जिससे हुकूमत और हाकिम बदनाम हों। हमारा मुकाबला बेईमानी और चालाकी से है और उसके खिलाफ जोर जुल्म कमज़ोर साबित होगा। हमें कोई ऐसा

ग्यारह

हकीम बर्दबानी ने उपस्थित जन समुदाय में जोशभरी तकरीर की। "बेईमानी की हद हो चुकी। इधर रोजाना खबरें भेज रहा है। दौरे में स्लीमन बारीकी से उन वाकयात के बारे में सोचता और समझता है जो हुकूमत के लिए मुज़िर साबित हों। जान-बूझ कर वह लोगों से शाह के खिलाफ दरख्वास्तें ले रहा है। कहीं लालच और कहीं खौफ से अपनी रिपोर्ट के लिये झूठा मसाला तैयार कर रहा है। यह बर्दाश्त के काबिल नहीं। बादशाह सलामत अपनी रैयत पर भरोसा किये आँखें मूंदे बैठे रह सकते हैं लेकिन हम नहीं। हमें कुछ करना होगा और हम कुछ करेंगे। अब हमारी ताकत हजारों पर पहुंच चुकी है और लखनऊ का बच्चा-बच्चा हमारा हमदर्द है।"

बेगम अमीनुद्दौला सिराज और सिब्ती के अतिरिक्त मिया जान भी मौजूद थे। सब उदास और परेशान नज़र आए। हकीम बर्दबानी का कहना कहां तक सच था वह जानते थे। लेकिन इसके जवाब में क्या किया जा सकता है उनमें से किसी की समझ में न आ रहा था।

एक नौजवान जो सिराज के बराबर बैठा था अपनी जगह से उठा और कहने लगा 'हुक्म हो तो रेज़ीडेंसी की ईंट से ईंट बजा दी जाये। दुश्मनों की लाशों से लखनऊ की सड़कें भर दी जायें। सिर्फ एक इशारे की देर है। अब तो शाही फौज के हजारों आदमी हमारे हमराज़ बन चुके हैं।"

बेगम ने टोका 'कोई ऐसा काम मत करो अमीजो जिससे हुकूमत और हाकिम बदनाम हों। हमारा मुकाबला बेईमानी और चालाकी से है और उसके खिलाफ जोर जुल्म कमज़ोर साबित होगा। हमें कोई ऐसा

रास्ता निकालना होगा जो मक्कारी की काट कर सके। गोरे का असल मक्सद अवध की बरबादी से है। हमें खून बहाने से अपना ईमान बचाने की जगह इस बरबादी को रोकना होगा।

एक दूसरे नौजवान ने अपना असन्तोष प्रकट किया 'जहाँ दुश्मन नापाक और बेईमान हो वहाँ ईमानदार रहने से काम नहीं चल सकता। आज उनके खून से लखनऊ की जमीन पर आबपाशी की जाये तो उन्हें मालूम होगा कि यहाँ अपने खूंखार इरादों की कामयाबी के लिये उन्हें बेशकीमती तोहफे अदा करने होंगे।

चारो ओर आवाजें उठी 'यह सच है। यह सच है। बेईमानों के खून से होली खेली जाने की इजाजत हो। हम उनके नापाक इरादों को पूरा होने से पहले ही कुचल डालेंगे।

"ठहरो" सहसा अमीनुद्दौला अपने स्थान से उठे और गर्जती आवाज में कहने लगे बेमौका अपनी हिम्मत और हौसलों की नुमाइश दिखा कर तुम लोग अपने पैरों पर आप कुल्हाड़ी मारने की बेवकूफी हमारे रहते नहीं कर सकोगे। दोस्तो जिस दुश्मन को तुम कमजोर और बेवकूफ समझने की गलती कर रहे हो वो ताकतवर और समझदार है। उसने तिजारत के बहाने निकालते-निकालते हुकूमत के बहाने निकाल लिये हैं। उसके पास अच्छे से अच्छे हथियार और अच्छे से अच्छे सिपाही हैं। मैं तुम्हें खतरा उठाने की इजाजत नहीं दे सकता।

चारों तरफ सन्नाटा छा गया। वजीर की गर्जन-तर्जन से भरी आवाज के बाद किसी में आगे कहने का साहस न रहा। वह आपस में एक दूसरे का मुख देखते हुए जैसे प्रश्न पूछने लगे। क्या वजीर का कहना गलत है? अगर नहीं तो दूसरा क्या रास्ता है जिससे हमें और हमारे वतन को फिरंगियों की कामयाबी से राहत मिले?

बैजनाथ उठकर वजीर के बराबर आ गये और हकीम अहसानी से कहने लगे "हकीम साहेब इजाजत दें तो मैं एक ऐसा रास्ता बता सकता

हैं जो इस वक्त मौजूद रहे।"

हकीम साहेब ने दाढ़ी हिलाते हुए नम्रता से निवेदन किया "अरे अरे क्या फरमाते हैं साहेबे आला। हम लोग आपके बल बूते पर तो उम्मीदें लगाये बैठे हैं।"

बैग्सन ने आगे कहा "तो मेरी राय है हमें सियासती शतरंज के काबिल खिलाड़ियों की तरह कम्पनी हुकूमत का पासा उलट देना चाहिये।

अमीनुद्दौला न समझ सके इसलिये पूछ बैठे "किस तरह बैग्सन साहेब। ज़रा खुलासा बयान कीजिये।"

बैग्सन ने कहा "इशरत के वालिद मियाँ खान यहां मौजूद हैं। इनका कहना है वजीर साहेब को वजारत से हटाने के लिये स्लीमन ने साजिश की थी। मशहूर डाकू गंगा बख्श सिंह इसमें में शरीक था और वजीर साहब ने खुद देखा था। इशरत खान साहब को बता गया है, एक दिन टहलते गंगा बख्श सिंह स्लीमन के खून का प्यासा उस पर चढ़ बैठा था। इसी हादसे में स्लीमन की टांग टूटी जो अखबारों पर जाहिर नहीं किया गया। वही गंगा सिंह स्लीमन का दोस्त बन गया और बाद में कई बार स्लीमन से मिलने आया। जाहिर है, इशरत चाहे खुद न सका हो लेकिन इन दोनों के बीच चक्कर वजीर साहेब को हटाने की साजिश हुई होगी। इसी तरह उन सबूत का सिलसिला उसकी बेईमानी साबित कर सकता है जो उसने वक्तनबवक्तन गवर्नर जनरल को लिखे हैं। उधर नकी खाँ और उसके साथी स्लीमन की चालबाजियाँ बखूबी साबित कर सकते हैं। ब्रिटिश कम्पनी इंसाफ और हक का नाटक रचा कर बादशाह सलामत को हुकूमत से महरूम करने की साजिश कर रही है। सुलहनामे और दौरे की रिपोर्टों की आड़ में दुनिया की नज़र में ईमानदार बनी वह जबरदस्त जुल्म करने की तैयारियां कर रही है। हम स्लीमन के सबूत गंगा सिंह और नकी खां की गवाहियां मौजूद कर सकें तो पासा पलट सकता है। कम्पनी को दिखा दिया जायेगा वह कितनी

ईमानदारी से काम कर रही है। दुनियाँ पर भी जाहिर हो जायेगा कि इस हुकूमत की बुनियाद किस मिट्टी पर रखी जा रही है। तब कम्पनी सरकार को अपना नाटक छोड़ कर या तो साफ तौर बेईमानी पर उतर आना पड़ेगा और या दुनियाँ की नजरों से शर्म उठा अपना इरादा खत्म लेना होगा। हमारा मकसद हल हो जायेगा। हीरे के पीछे छिपा राज बेकार साबित होगा और हमारी आजादी बरकरार रह सकेगी।"

"खूब" बात पूरे होने न होने पूरपूर वज़ीर का चेहरा खिल उठा और वह बोले "मैं आपके मशवरे से मुत्तफिक हूँ मिस्टर हैंगन। चालाक और बेईमान कम्पनी के हथकण्डों के मुकाबले अवध की ईमानदारी की ढाल बनाते हुए आपने एक सही रास्ता बयान किया है। मैं इससे सौ फीसदी इत्तफाक करता हूँ।

मगर हकीम बदवानी ने सुर्ख चेहरा बना कर इन दोनों की ओर देखा और सवाल किया "अगर कम्पनी सरकार अपना राज़ ख़त्म होता देख वाकई खुली बेईमानी पर उतर आई तब क्या होगा?"

"तब हमारे नौजवानों का गर्म खून उन्हें माकूल जवाब देगा हकीम साहेब" हैंगन ने जवाब दिया "जो हौसले आज दिखाये जा रहे हैं उस दिन काम आवेंगे जिस दिन हमारी सल्तनत का नीलाम किया जाएगा।'

"आप ठीक कहते हैं।" सिराज न रुक सका और बोला "इजाज़त हो तो नकी खाँ साहेब को उनके तोशखाने से गायब कर दिया जाए और उस वक्त तक हिरासत में रक्खा जावे जब तक हुजूर का मिज़ाज दुरुस्त न हो।

"नहीं अमीनुद्दौला ने निर्णय सुनाया "बादशाह की हिमायत में बादशाह का कानून नज़रअन्दाज़ करना हिमाकत है। नहीं अज़ीज़ सिराज हम ऐसा कोई रास्ता अख्तियार करने पर आमादा नहीं। अभी तो दूसरे रास्ते से काम लिया जा रहा है। तुम्हें उनकी फिक्र छोड़ देनी चाहिये। उनकी बेटी गुलनार हमारी अपनी हमदर्द है।"

शेरमन ने समर्थन किया "तुम्हारे लिये इससे भी ज्यादा जरूरी काम है। गंगा बख्श सिंह डाकू का जमीर जगाना हर किसी के बस नहीं। तुम जंगलों में उसे तलाश करने के बाद उससे मिलोगे और बादशाह के मुतल्लिक उसकी इन्सानियत का वास्ता दोगे। उसे इस बात पर तैयार करोगे कि वह स्लीमन की पूरी साजिश पारे की तरह साफ कर दे।"

'माह' लिका प्रसन्नता से झूमकर कहने लगी "यह बड़ा खुश गवार काम है। डैडी आपकी इजाजत से मैं भी शिहाब साहब के साथ जाना चाहती हूँ।"

'जरूर।" शेरमन मुस्कुरा कर बोले "मैं पहले से जानता था डियर। लेकिन शिहाब, तुम्हें होशियार रहना होगा। गंगा बख्श सिंह खतरनाक हैवान है।

'अवध के हैवानों में भी वाजिद अली के लिये अहसास हुआ करते हैं बुजुर्गवार। अगर गंगा सिंह ने उन्हें दिल की गहराइयों में छिपा रक्खा होगा तो मैं उन्हें उभारने के लिये वैसा ही माहौल पैदा करूंगा।"

"और मियां खान आपके जिम्मे दूसरा काम है।"

"हुक्म इरशाद।" मियां खाने बोले।

शेरमन ने कहा "स्लीमन साहेब इस वक्त लखनऊ जिले के मानपुर गाँव के आस-पास दौरा कर रहे हैं। आप फौरन इशरत से मिलें और कहें वह उन सब लोगों के नाम-पते हमारे पास रवाना करता रहे जिनसे स्लीमन की कोई ऐसी बातचीत हुई हो जिसमें हुकूमत की बुराई हो। मैंने यह भी सुना है स्लीमन लोगों से जान-बूझ कर शिकायती दरख्वास्तें ले रहा है। इशरत को चाहिये जहाँ तक मुमकिन हो उन शिकायतों का पूरा ब्यौरा मालूम करे और शिकायत करने वालों की हालात पर नजर रखे। हो सकता है किसी वक्त हम उन्हीं को दुनिया के सामने पेश कर सकें।"

मियां खान ने स्वीकार किया।

इसके कुछ देर बाद तक इधर-उधर की बातें होती रहीं। ग्रैहम अपने स्थान पर बैठ गए थे। शिहाब पंचा बख्त सिंह की खोज के संबंध में अपना प्रोग्राम बना रहा था। अमीनुद्दौला बैठे-बैठे सोच रहे थे। तभी सहसा न जाने क्या सूझा और वह खड़े होकर ग्रैहम से बोले "इतना सब कुछ हो जाने के बाद भी एक ज़रूरी काम बाकी रह जाएगा मिस्टर ग्रैहम। आपने उसका तज़किरा नहीं किया।

"आपका इशारा किस तरफ है वज़ीर साहब? ग्रैहम ने पूछा।

"मैं और आप मिर्ज़ा खान और हकीम साहब गरज़ यहाँ हाज़िर यह सब नौजवान जिस नेक हस्ती के लिए अपनी जानों का दाँव लगाने की तैयारियाँ कर रहे हैं बल्कि उसके कानों में भी तो आवाज़ पहुँचा दें कि वह अपनी आँखें खोल लें। वक्त को पहचानने और खुशामद व मतलब परस्त लोगों की तरफ से होशियार हो जाएँ। मेरा इशारा शहंशाहे अवध की तरफ है जो सारी दुनिया पर एतबार करते हुए धोखा खाने के आदी हो गए हैं। इस वक्त जिनकी नज़र में किसी दूसरे की रोशनी और आवाज़ में किसी दूसरे का दम खम है, क्या उनमें भी इतनी हिम्मत है कि वह नेकी का जामा उतार कर अपने उन दोस्तों के खिलाफ़ जंगे आज़ादी का ऐलान कर सकें जो पर्दे की आड़ से उन पर छुरी भोंकने की तैयारियाँ कर रहे हैं?"

"बजा वज़ीर साहब बजा।" ग्रैहम ने कहा "वक्त इन्सान का सबसे बड़ा उस्ताद साबित हुआ। आप शाहे अवध को लाख समझाओ वह स्लीमन और उनके इशारों पर जान-बूझ कर नाइत्तिफ़ाकी नहीं कर सकते। वजह इसमें उनकी कमज़ोरी हो या दोस्ती का अहसास। मगर कल जब यही दोस्त जान के लेवा बन जायेंगे तो अपने आप उनकी आँखें खुल जाएँगी। दोस्तों की हकीकत सामने आ जायेगी। मेरे दोस्त उस वक्त न कुछ कहने की ज़रूरत रहेगी और न कुछ सुनने की। आखिर अवध की ज़मीन पर उन्हें भी नाज़ है। वह हमारे

कंधा मिलाकर आफ़तों का मुकाबला करेंगे और इस मिट्टी को गुलामी के दाग से महफ़ूज़ रक्खेंगे।"

चारों ओर इस वक्तव्य से उत्साह प्रदर्शन में ज़ोरदार फुसफुसाहट आरम्भ हुई। अमीनुद्दौला खामोश बैठे रहे। पर कुछ देर बाद वह गम्भीरता से शैगन की ओर देखते हुए कह उठे 'खुदा आपकी नेक ज़ुबान का एक-एक अलफ़ाज़ सही साबित करे। लेकिन शैगन साहब मुझे कुछ और खतरा है। हम उनके दोस्त स्लीमन और उनकी कम्पनी के मफ़ाद के खिलाफ़ यहां इकट्ठा होते हैं मिलते और पोशीदा बातें करते हैं। कहीं ऐसा न हो कि वक्त से पहले हमारा राज़ फ़ाश हो जाय और हमारे यह कंधे जिन्हें बादशाह के कन्धों के सहारे की ज़रूरत होगी चीर कर फेंक दिये जाएं। शाह अवध किस मिज़ाज के हैं आप नहीं जानते। उनकी नज़र में हमारी हमदर्दी जो हम स्लीमन के खिलाफ़ साज़िशों की आड़ में कर रहे होंगे मुल्क का सबसे अहम जुर्म बन जायेगी और हममें से एक-एक को उसका हर्जाना देना होगा। इसलिए मेरी गुज़ारिश है आप खुद शाह अवध को समझाने की कोशिश करें। बेइन्तहा मायूसी और नाउम्मीदी की वजह से उनमें जो कमज़ोरी आ गई है उसे दूर करने की रफ़्ता रफ़्ता कोशिश करें। अगर वह इसी तरह भोले और नेक बने रहे दोस्तों के हमदर्द और वफ़ादार रहने का दम भरते रहे तो हमारी आवाज़ और हमारे हौसले बेकार साबित होंगे। हम एक ऐसी तस्वीर बन कर रह जाएंगे जिसका सम्हालने वाला शराब के नशे में मदहोश हो। एक ऐसी तस्वीर, जिसे बनाकर बनाने वाला खुद मिटाने की तैयारी में हो।

अगले दिन शिहाब मिस्त्री से पूछने लगा "क्या तुम मेरे साथ सिर्फ़ इसलिए आना चाहते हो मिस्त्री कि यह काम मुनाफ़ादार है?"

सिल्वी ने जवाब दिया 'हां।"

पिहाब धागे बोला "और मैं साथ लेने से इन्कार करूं ?

'तब मैं बिना कहे भी तुम्हारे पीछे जरूर जाऊंगी।" सिल्वी ने कहा 'मुझे ताज्जुब है तुम इस तरह की बातें क्यों कर रहे हो। इतने भारी खतरे में अकेले जाने की इजाजत मैं नहीं दे सकती।

'यही बात मेरी तरफ से सुन लो सिल्वी इतने भारी खतरे में तुम्हें ले जाने की हिम्मत मुझ में नहीं।

सिल्वी इस उत्तर से उदास हो गई। उसने अपना मुंह छिपाए लिया और मुंह झुकाए एक तरफ बैठी रही। पिहाब विचारमग्न था। वह पास आया और पिछली ओर से सिल्वी के कन्धे थपथपाता मीठी आवाज़ में बोला 'बुरा मान गईं ?

सिल्वी कुछ न बोली।

पिहाब आगे कहने लगा 'यह तुम्हारी ज्यादती है। कुछ महीने पहले तुमने एक मातमग्रस्त इन्सान को उसकी जिन्दगी का मकसद सिखा कर उस पर भारी अहसान किया है। आज किसी लायक हो सका है वह। मैं अच्छी तरह जानता हूं तुम मेरे साथ क्यों जाना चाहती हो। लेकिन सिल्वी मैं जान बूझकर इतना बड़ा जुल्म कैसे कर सकता हूं। तुम ठहरी फूल सी नाजुक और ओस की तरह कमजोर। बियाबान जंगलों में दर-दर ठोकरें खाना और गंगा सिंह से मुकाबला करना तुम्हारा काम नहीं। अपने पिहाब पर यह अहसान और कर दो। जाने दो अकेला और 'और' 'सिल्वी क्या कहूं कैसे कहूं ?"

'मत कहो।" सिल्वी ने तेज आवाज़ में उत्तर दिया 'मैं नहीं सुनना चाहती वह फिजूल बातें जो मेरा दिल दुखायें। तुम जाना चाहते हो तो जाओ। लेकिन उससे पहले उससे पहले मेरी लाश "

पिहाब से न रुका गया। दूसरे क्षण सिल्वी का कोमल शरीर उस की पुष्ट भुजाओं में जकड़ा हुआ था। सिल्वी ने अपना सिर उसकी

चौड़ी छाती से टिका लिया था और सुबक-सुबक कर रो रही थी। आज अनायास एक आवरण का अनावरण हो गया। प्रेरणा प्राप्त करने वाला एक दिन प्रेरित करने वाले दूसरे हृदय के कितना निकट पहुँच चुका है दोनों जान कर भी अनजान बनने का प्रयत्न कर रहे थे। अब एक की विपद् दूसरे की पीड़ा बन गई तो आत्मीयता की भावना लोक-लाज की सीमाएँ पार कर गई और परिणामतः सुप्त भावनायें सजीव हो उठीं। भूत भविष्य और वर्तमान तीन युगों का रहस्य तीन पलों में स्पष्ट हो गया। गैर मज़हब की सिम्मी से जो बात सिराज आज तक कह न सका आज बिना कहे स्पष्ट हो गई।

और इस तरह निश्चय पुष्ट हो गया कि सिम्मी सिराज को बगावत में नहीं जाने देगी। उसका तात्पर्य था, अब उनकी आत्माएँ एक दूसरे से अभिन्न हैं। एक दूसरे की पूरक हैं। एक कष्ट में रही तो दूसरी घुट घुट कर कलपा करेगी। सिराज के बिना सिम्मी का जीवित रहना संदिग्ध है। इसलिए दोनों साथ-साथ देश के बलिदान के लिए तैयारियाँ करें उचित है। यथा सिंह हैवान है। उसे सीधे रास्ते लाना आसान काम नहीं। यह भी सम्भव है तात्पर्य पूरा होने से पहले बिना सिराज को बात सुने वह जानकर कोई खतरनाक कदम उठा बैठे। आनन्द तभी होगा जब उस वक्त सिम्मी और सिराज दोनों साथ रहें। शायद इसी भावना के वश हैगल साहेब ने अपनी बेटी को साथ जाने की इजाजत दे दी थी। पाश्चात्य सभ्यता में युवा युवक-युवतियों को अपने जीवन साथी के चुनाव करने का पूरा पूरा अधिकार प्राप्त होता है।

सिराज इसके बाद अपनी तैयारियों में लग गया। चंगा बख्श सिंह की तलाश के बाद उससे भेंट करना पहला और सबसे कठिन काम था। जेल से फरार होने के बाद उसका कोई पता ठिकाना न था। बादशाह के आदमियों ने कार्नियगंज की अमलदारी में देखा गाँव वाला उसका मकान कई बार देखा और छापा था। वहाँ गया बख्श का बेटा रणजीत

सिंह मिला और उसने अपने पिता के बारे में कोई जानकारी देने से इन्कार कर दिया। आमिलदार दर्शन सिंह ने देवा के चारों ओर शाही जासूस और खबर नवीसों को तैनात कर दिया। किन्तु लाभ फिर भी न हुआ। घटना को काफी समय व्यतीत हो चुका था। अब दर्शन सिंह ने भी बादशाह की खिदमत में गंगा सिंह के लापता होने सम्बन्धी अपनी रिपोर्ट भेज कर कर्त्तव्य से छुट्टी पा ली थी। ऐसी स्थिति में यह ज्ञात करना गंगा सिंह कहां है कहां नहीं एक कठिन काम था उसके बाद उस से भेंट करना और अपना मतलब हल करना अपना भयानक कर्त्तव्य माना जा सकता है।

यहां गंगा बख्श का कुछ परिचय दिए बिना आगे बढ़ना एक प्रकार अनुचित होगा। देवा का यह जमींदार जबरदस्त और साहसी था। दर्शन सिंह आमिलदार के खिलाफ आरम्भ से विरोधी हो गया था। दर्शनसिंह खुद उसके प्रति जिद और हठ से काम लेता था। लगान का वक्त आता तो अपने आप देवा पहुंचता और गंगा बख्श सिंह को तरह तरह से अपमानित करता। लगान की रकम गंगा सिंह के पास कभी होती कभी न होती। न होने पर दर्शन सिंह उसके साथ सख्ती से पेश आता। गंगा सिंह को सहन न होता। धीरे-धीरे उसने दर्शन सिंह को आड़े हाथों लेना शुरू किया। लगान लेने आता तो उसे और उसके कारिन्दों को परेशान किया जाता। देवा भर में उसकी बात चलती थी। जमाना यह था जब शाही फकीर का भय कोसों दूर रहा करता। साबिर अली शाह के सम्मुख आते-आते दयनीय मुद्रा में क्षमा की भिक्षा मांग ली और बात समाप्त हो गई। यह अपनी प्रजा से करते थे प्यार। लगान एक बार न भी मिला तो यह अपराध नहीं था। किसान कभी न कभी अदा कर दे बस। दर्शन सिंह और उसके कारिन्दे लगान लेने आते तो साधारण बातों पर भी गंगा बख्श सिंह की ओर से झगड़ा खड़ा किया जाता और आमिलदार

को जान के भय से भाग जाना पड़ता। शाह मौके की तलाश में था। एक बार झगड़े में उस दल ने सिपाही और दर्शन सिंह के दो सिपाहियों को जान से हाथ धोना पड़ा। इस अपराध से छुटकारा पाना असम्भव था। उधर दर्शन सिंह ने शाही खिलवत में अपनी रिपोर्ट भेजी कि गंगा सिंह डाकू है और लगान मांगने पर हत्याओं पर उतर आते हैं, और उधर गंगा बख्श सिंह तथा जोध कासिमगंज में जा छिपे। दरबार से फरमान जारी हुआ। उस वक्त अमीनुद्दौला वज़ीर थे। बादशाह की इच्छा देखते हुए उन्होंने दर्शन सिंह की सिफारिश पर गंगा सिंह के बेटे रणजीत सिंह पर कोई फरमान नहीं निकाला। इंसाफ की कसौटी पर पिता के अपराध की सजा बेटे को दी जानी असम्भव थी। उधर रेज़ीडेंट की ओर से भी गंगा सिंह के विरुद्ध अपील की गई। कासिमगंज में किसी आते-जाते अंग्रेज व्यापारी को गंगा सिंह ने लूट लिया था। शाह के परामर्श पर तब उसके विरुद्ध सम्मिलित मोर्चा बनाया गया। मुखबिरी होने पर कासिमगंज में गंगा सिंह का पता चल गया। दर्शन सिंह अंग्रेजी फौज के एक कप्तान के साथ उसे घेरने गये और थोड़ी-बहुत झड़पों के बाद पकड़ लाये। मुकदमा चला। उन दिनों कोतवाली में अदालत होती थी। रेज़ीडेंट और अमीनुद्दौला मुकदमे के समय मौजूद थे। सज़ा दी गई तो गंगा सिंह ने इन दोनों के विरुद्ध भयानक सौगन्ध उठाई। फिर कुछ दिनों बाद लखनऊ जेल से अचानक उसकी फरारी हो गई। आगे क्या हुआ पाठक जानते हैं। बेटा रणजीत सिंह सेना में उपस्थित था और नियमित रूप से लगान दे रहा था। दर्शन सिंह लगान लेने आता तो खून का घूंट पीता अपने अपमान पर शान्त रह जाता। पर इस बीच उसने असाधारण काम किया। चुपके-चुपके लूट-खसोट और डाकों से बहुत-सा रुपया जमा किया। कासिम गंज के बाहर एक टूटा-फूटा पुराना किला खरीद कर अपने किसी भाई बन्द के नाम उसकी मरम्मत करवाई और उसे योग्य बनवाया। शायद पिता की वापसी की तैयारियां

थी यह। जेल से निकल कर लखनऊ रहने के कुछ दिनों बाद यमा सिंह अपने बेटे से मिला और गुप्त रूप से इसी बुर्ज में रहने लगा।

किन्तु शिहाब को यह कहानी ज्ञात न हो सकी। बहुत खोज के बाद वह सिर्फ इस नतीजे पर पहुंच सका कि यमा सिंह शाह वहां भी हो अपने बेटे से अवश्य मिलता-जुलता होगा। अत देवा एक ऐसा स्थान था जहां से उसका पता मिल पाना सम्भव था।

और एक दिन मियां खान व नवाब अमीनुद्दौला वजीर अली हकीम साहेब जैसे हमदर्द बुजुर्गों का आशीर्वाद ले वह देवा के लिए प्रस्थान कर गया। कहना व्यर्थ होगा उस समय किस्मी बड़े अभिमान से उसके साथ थी और खुश थी कि वह अपने कर्तव्य के लिए अपनी जान की बाजी लगाने अपने शिहाब के साथ खतरों से टक्कर लेने जा रही है।

जो काम मियां खान के जिम्मे था वह उसकी तैयारियां करने लगे। इस सम्बन्ध में भाग्य अथवा दुर्भाग्यवश वह एक दिन मीर मुन्शी अली नकी खां के यहां जा पहुंचे। इशरत और उसके साहेब का ठीक-ठीक पता ठिकाना रेजीडेंसी से मालूम होना ज्यादा आसान था।

मीर साहेब ने उनका स्वागत गम्भीरता और उदासी से किया। यह नयी बात नहीं थी। इशरत के विवाह के बाद पहली बार मियां खान से उनकी के तौर भेंट होने पर भी वह इसी प्रकार उदास और खिन्न हो गये थे बातचीत में लुत्फ न आ सका था। मियां खान ने इसे लक्ष्य कर लिया था। किन्तु उन असाधारण घटनाओं को दृष्टि में रख जिनमें इशरत और बानो के विवाह का विधान हुआ था मियां खान समझ गये कोई बाप ऐसे रिश्ते या रिश्तेदारों से खुश नहीं रह सकते। उनका मन उसी दिन हुआ कि वह अपने बेटे पर लगा दुश्चरित्रता का दाग धो डालें। पर किसी अज्ञात प्रेरणावश रुक गए। बानो के लिए

को जान के भय से भाग जाना पड़ता। वह मौके की तलाश में था। एक बार झगड़े ने उग्र रूप ले लिया और दर्शन सिंह के दो सिपाहियों को जान से हाथ धोना पड़ा। इस अपराध से छुटकारा पाना असम्भव था। उधर दर्शन सिंह ने शाही खिदमत में अपनी रिपोर्ट भेजी कि गंगा सिंह डाकू है और लगान मांगने पर हत्याओं पर उतर आते हैं, और उधर गंगा बख्श सिंह देश छोड़ कासिमगंज में जा छिपे। दरबार से फरमान जारी हुआ। उस वक्त अमीनुद्दौला वज़ीर थे। बादशाह की इच्छा देखते हुए उन्होंने दर्शन सिंह की सिफारिश पर गंगा सिंह के बेटे रणजीत सिंह पर कोई फरमान नहीं निकाला। इंसाफ की कसौटी पर पिता के अपराध की सज़ा बेटे को दी जानी असम्भव थी। उधर रेज़ी-डेंट की ओर से भी गंगा सिंह के विरुद्ध अपील की गई। कासिमगंज में किसी आते-जाते अंग्रेज व्यापारी को गंगा सिंह ने लूट लिया था। शाह के परामर्श पर तब उसके विरुद्ध सम्मिलित मोर्चा बनाया गया। मुखबिरी होने पर कासिमगंज में गंगा सिंह का पता लग गया। दर्शन सिंह अंग्रेजी फौज के एक कप्तान के साथ जा घेरने गये और थोड़ी-बहुत झड़पों के बाद पकड़ लाये। मुकदमा चला। कुछ दिनों कोतवाली में अदालत होती थी। रेज़ीडेंट और अमीनुद्दौला मुकदमे के वक्त मौजूद थे। सज़ा दी गई तो गंगा सिंह ने इन दोनों के विरुद्ध भयानक सौगन्ध उठाई। फिर कुछ दिनों बाद लखनऊ जेल से अचानक उसकी फरारी हो गई। आगे क्या हुआ पाठक जानते हैं। बेटा रणजीत सिंह देश में उपस्थित था और नियमित रूप से लगान दे रहा था। दर्शन सिंह लगान लेने जाता तो खून का घूंट पीता अपने अपमान पर शान्त रह जाता। पर इस बीच उसने असाधारण काम किया। चुपके-चुपके लूट-खसोट और डाकों से बहुत-सा रुपया जमा किया। कासिम गंज के बाहर एक टूटा-फूटा पुराना किला खरीद कर अपने किसी भाई बन्द के नाम उसकी मरम्मत करवाई और रहने योग्य बनवाया। शायद पिता की वापसी की तैयारियां

थी यह। जेल से निकल कर लखनऊ रहने के कुछ दिनों बाद गया सिंह अपने बेटे से मिला और गुप्त रूप से इसी दुर्ग में रहने लगा।

किन्तु सिराज को यह कहानी ज्ञात न हो सकी। बहुत खोज के बाद वह सिर्फ इस नतीजे पर पहुँच सका कि गया सिंह डाकू यहाँ भी हो अपने बेटे से अवश्य मिलता-जुलता होगा। अत देवा एक ऐसा स्थान था जहाँ से उसका पता मिल पाना सम्भव था।

और एक दिन मियां जान व मदन अमीनुद्दौला वजीह अली हकीम साहेब जैसे हमदर्द बुजुर्गों का आशीर्वाद ले वह देवा के लिए प्रस्थान कर गया। कहना व्यर्थ होगा उस समय सिल्वी बड़े अभिमान से उसके साथ थी और खुश थी कि वह अपने कर्तव्य के लिए अपनी जान की बाजी लगाने अपने सिराज के साथ खतरों से टक्कर लेने जा रही है।

जो काम मियां जान के जिम्मे था वह उसकी तैयारियां करने लगे। इस सम्बन्ध में भाग्य अथवा दुर्भाग्यवश वह एक दिन मीर मुन्शी अली नकी खाँ के यहाँ जा पहुँचे। इशरत और उसके साहेब का ठीक-ठीक पता ठिकाना रेजीडेंसी से मालूम होना ज्यादा आसान था।

मीर साहेब ने उनका स्वागत गम्भीरता और उदासी से किया। यह नयी बात नहीं थी। इशरत के विवाह के बाद पहली बार मियां जान से समधी के तौर भेंट होने पर भी वह इसी प्रकार उदास और खिन्न हो गये थे बातचीत में खुल न पा सका था। मियां जान ने इसे लक्ष्य कर लिया था। किन्तु उन असाधारण घटनाओं को दृष्टि में रख, जिनमें इशरत और बानो के विवाह का विधान हुआ था मियां जान समझ गये कोई बाप ऐसे रिश्ते या रिश्तेदारों से खुश नहीं रह सकते। उनका मन उसी दिन हुआ कि वह अपने बेटे पर लगा दुश्चरित्रता का दाग धो डालें। पर किसी अभाव प्रेरणावश रुक गए। बानो के लिए—

उनके मन में आदर जाग्रत हो चुका था। मीर साहेब को भी उसी रंग में रंगकर वह देश सेवा का नया उदाहरण देना चाहते थे। किन्तु उधर से प्रेरणा नहीं मिली। पुर्खों से नसों में दौड़ने वाला फिरंगी-प्रेमी रक्त एकाएक अपना रंग नहीं बदल सकता था। अतः मीर साहेब की शिकायत का तात्पर्य जानते-बूझते वह खामोश रह गए। बड़े काम के लिए छोटी-मोटी हानियाँ सहन करना स्वाभाविक होता है। मीर साहेब को पता नहीं शिकायत थी कि उनकी बेटी एक चालाक व्यक्ति के हाथों कठ-पुतली बन कर इज्जत का नाच नचाने पर तैयार हो गई। जिस दिन पता चला यह नाच वास्तव में किस अवस्था में देखा गया था उसी दिन उनका विरोध आप से आप समाप्त हो जाएगा।

किन्तु आज मिर्ज़ा खान मीर साहेब की उदासी से भविष्य की प्रतीक्षा में अकारण प्रतीत करने लगे। इशरत का पता-ठिकाना बताने में मीर साहेब ने विरोध न किया था। परन्तु उनकी बातचीत और आकृति से पता चल रहा था जैसे वह बहुत ज्यादा असन्तुष्ट और क्षुब्ध हों। वहीं नहीं मिर्ज़ा खान की अनुभवी दृष्टि उस क्षुब्धता की सीमा का भी ठीक-ठीक अनुमान कर बैठी। मीर साहेब पिछले दिनों कुछ कमजोर हो गए थे। बातचीत में न स्फूर्ति रह गई थी और न जोश। वसीह अली ने यहाँ तक बताया था कि मीर साहेब रेजीडेंसी में भी सिर्फ मशीन के समान काम करने के आदी हो गए हैं। इससे मिर्ज़ा खान को समझते देर न लगी कि बानो और इशरत का आचरण उनमें मर्म से चिपक गया है। गैरतदार आदमी के लिए सचमुच मौत है जब वह अपनी बेटी के चरित्र सम्बन्धी बुरा दोष दिखाई दे। मीर साहेब के लिए यह घटना घातक सिद्ध हो सकती थी मिर्ज़ा खान प्रतीत करने लगे।

अतः लौटने से पूर्व उन्होंने साहस किया। मीर साहेब से कहने लगे आप मेरे बेटे और अपनी बेटी के रिश्ते से बहुत ज्यादा नाराज़ मालूम देते हैं मीर साहेब। चूंकि आपकी नज़र में उनकी जवानी

गुनाहों की याद में नापाक होने लगी थी और उन्होंने मेरे व आपके मर्तबे को बिल्कुल भुला दिया। मगर अर्ज है जिस तरह हर चीज जो सोने की तरह चमकती है सोना नहीं होती उसी तरह हर चीज जिस की बास चीतल की तरह हो चीतल नहीं होती। कभी-कभी पत्थर का टुकड़ा हीरा निकल आता है और हम समझ नहीं पाते। इसलिए मेरी इल्तजा है आप इस मसले पर अपने आप को परेशान न करें। आपकी बानो और मेरा इशरत दोनों बखुदा समझदार और जहीन हैं और उन्होंने कभी कोई ऐसा काम करने की हिम्मत न की होगी जो मेरे या आपके शर्म का बायस हो।"

"शुक्रिया" मीर साहेब ने गम्भीरता से केवल एक शब्द कहने के उपरान्त अपनी गर्दन नीचे झुका ली। दूसरे शब्दों में मिर्जा खान की चोट उनके पल्ले नहीं पड़ी या उन्होंने इस पर अविश्वास किया। मिर्जा खान टाल जाए यह रुकने वाले नहीं थे। बात जब आरम्भ हो गया था तो खत्म किये बिना चले जाना गुनाह था। उन्होंने प्रसंग दोबारा उठाया और इस बार ज्यादा असरदार शब्दों में कहने लगे "इस छोटे शुक्रिया से मेरी तस्कीन नहीं हो सकती बिरादरे अजीज। यह मसला मामूली नहीं जो इस तरह फैसला हो सके। क्या आप वाकई जानना चाहते हैं कि मैंने किस लिये अपने आवारा बच्चों की आवारगी पर बेइत्मीनानी जाहिर की है? मीर साहेब मैं आपको परेशान और फिक्रमन्द नहीं देख सकता।" मीर खाँ का सिर यह सुनते ही उठ गया। उनकी स्याह आँखें विचित्रता से मिर्जा खान को घूरने लगीं। और वह सीधे बैठ गये जैसे मिर्जा खान को उत्तर देने की तैयारी कर रहे हों।

बहुत देर बाद उन्होंने खाँसते-खखारते अपना गला साफ किया और पुरअसर गम्भीर आवाज में कहा "आप गलत समझे हैं मिर्जा खान। मेरी परेशानी का बायस कुछ दूसरा है जिसका ताल्लुक इशरत या बानो से नहीं। उन्होंने तो जो किया निकाह के तौर पर उसे निभा लिया। मेरी

तकलीफ कुछ ऐसी है ऐसी है जिसका ताल्लुक शायद खुद आप से हो।"

'मुझ से ? मिर्ज़ा खान ने आश्चर्य व्यक्त किया और आपने मुझ से कभी कहा नहीं। क्या रिश्ते नाते इसीलिए के लिए होते हैं भाई ? आपने मुझ पर ज़ुल्म किया।

'ज़ुल्म आप किसे कहते हैं। मेरा ख्याल है वक्त की नज़ाकत सबसे बड़ी ज़ुल्म परस्त है। आज जो कुछ वाक्ये हैं कल वही हम सब को मौत के घाट उतार सकती है।" मीर साहेब कहते-कहते रुक गए। मिर्ज़ा खान की समझ में पहेली बिल्कुल न आई, वह उनकी शक्ल देखने लगे। उन्होंने मीर साहेब को साफ-साफ कहने के लिए उत्साहित किया तब मीर साहेब कहने लगे 'अगर चोर देते हैं तो एक बात पूछता हूँ। आप वही मिर्ज़ा खान तो हैं जो कुछ वक्त पहले शाही हुक्म पर बावर्ची खाने के मुन्तज़िम होकर रेज़ीडेंसी में नौकर हुए थे और बाद में इस लिये वहां से निकाले गए थे चूंकि आपने शाह के खिलाफ रेज़ीडेंट के मुंह से कुछ सुनते ही पूरी ताकत से न सिर्फ उसकी मुखालफत की थी बल्कि रेज़ीडेंट साहेब की बदज़बानी भी कर डाली थी ?'

'यकीनन। मिर्ज़ा खान ने सरलता से स्वीकार कर लिया।

'और आप ही का बेटा इशरत दोबारा रेज़ीडेंसी में नौकरी करने आया। आप बता सकते हैं क्यों ? आपकी गैरत कैसे गवारा कर गई कि आपका इशरत एक ऐसी जगह नौकरी करे जहां शाहे अवध की रुसवाई होती है ?"

"समझा" इस बार मिर्ज़ा खान तनिक मुस्कुराए और बोले "तो यह है आपकी तकलीफ का असल बायस। आप को खौफ है आप की बातें किसी ऐसे नौजवान के कानों पड़ गई हैं जो आपकी तहज़ीब और मज़हब के खिलाफ दूसरी किस्म और दूसरे ख्यालात का मालिक है ?"

'मैंने आपसे सवाल पूछा था साहेब सवाल करने के लिए नहीं कहा था।" मीर साहेब गम्भीरता से बोले 'मेरी तकलीफ की वजह जो भी

है मेरे मज़हब या तहज़ीब से ताल्लुक नहीं रखती। उसका ताल्लुक है मेरी और आपकी औलादों की बेहतरी से। बताइये क्यों इनायत की आपने जब कि आप फिरंगियों से मन ही मन नफरत करना पसन्द करते हैं ?"

मियां खान कुछ देर के लिए खामोश हो गए। अब स्थिति जो भी थी गम्भीर थी। वह एक ऐसे आदमी के सामने बैठे थे जिसकी जिन्दगी का एक बड़ा भाग विदेशियों की सेवा करते हुए बीता था। जिसने दूसरे देश के स्वार्थी जानवरों की सेवा और अपने वतनी भाइयों की शत्रुता करने का ध्येय बनाया हुआ था। रेजीडेंसी का एक ऐसा सेवक था वह जिसे मीरी का ओहदा देने से पूर्व भली प्रकार जांच-पड़ताल कर विश्वासी और अंधविश्वासी पाया जा चुका था। मियां खान के सामने यही का सवाल था। यही सवाल जिसके एक जवाब पर शाही हितचिन्तकों में से दो चार काम के पाश में पड़ सकते थे। बानो मीर साहब की बेटी और इशरत दामाद था। किन्तु मियां खान को समझने में देर लगी कि मीर साहब की वफादारी उन्हें अन्धा बना सकेगी अथवा नहीं। बेटी का मोह अफीम के पंखों में ऊंचा बहुत ऊंचा उठ जाना स्वाभाविक होता किन्तु वफादारी की सच्ची लगन या किसी के सख्त अंकुश का आतंकित कर देने वाला भय इस ऊंचाई को पार कर जाता है। मीर साहब का निश्चय किस के पक्ष में होगा मियां खान देर तक सोचते रहे।

अन्त में बहुत जल्द उन्होंने फैसला कर लिया। चेहरा किसी आशा से दमकने लगा। वह अपने पुत्र का बलिदान करने जा रहे थे। पर दूसरी ओर लाडली बेटी का बलिदान था। रेजीडेंसी के चपल और मक्कारी भरे वातावरण में मीर साहब अपनी वफादारी का चाहे जितना दम भरते रहें किन्तु बेटी के बलिदान देने जैसा साहस उत्पन्न कर लेना असम्भव था। वहां तो सीखा या सिखाया जाता था मजा लेना कुछ देना। देने की यह भावना मीर मुन्शी में उपजती पर कहां से ?

पेट भरना आया है बल्कि देना आया है उसे अपनी मोहब्बत और इज्जत का इनाम। यह है आपका असली मालिक। इसरत इसी मालिक के लिए अपनी मासिक को तकलीफ देने से मजबूर है। अकेला इसरत ही नहीं हिन्दोस्तान के कुल हजार नौजवान इसी अकीदे पर अपना ईमान ला चुके हैं। किनारे मीर आप भी आँखें खोलिए। देखिए अवध में शाम हो रही है। दिन दूर नहीं जब चारों तरफ गहरा अन्धेरा फैल जाएगा। उस अन्धेरे से लड़ने के लिए मुल्क को आपकी जरूरत है जानो और इसरत की जरूरत है। खुदा के लिए पर्दा हटा दीजिए मीर साहेब वरना देर हो जाएगी। इतनी देर कि हम बरबाद हो जाएँगे। हमारा सब कुछ हमारी आँखों देखे छीन लिया जाएगा। हमारी बादशाहत और हमारा भरतबा मुसीबत की दीवारों में बन्द कर सड़कों का कायम हो जायेगा।"

"नहीं।" मीर साहेब पर जैसे क्रोध का पागलपन चढ़ा और वह चीख कर बोले "यह बिल्कुल नामुमकिन है। मैं अपने और अपने बाल बच्चों की मौत अपने जानते गले लगाने को तैयार नहीं। मैंने सालों जिस मालिक का नमक खाया हो उसी के साथ गद्दारी करूँ नामुमकिन है। इसरत को अपनी गलती का खमियाजा भुगतना होगा। मैं हुजूर साहेब के सामने असलियत खोल दूँगा। आप मुझे समझाने आये हैं बहलाने आये हैं मिर्या ग़ाम। आपने मुझे बरबाद करने के मनसूबे बना कर अब दूसरा कुँआ खोदा है और चाहते हैं मैं उसमें छलांग लगा दूँ। नहीं मैं इतना बेवकूफ नहीं। अवध की शाम आ रही है। हाँ अवध में अंधेरा फैलेगा। उस अंधेरे में आप सब खो जायेंगे इसरत और इसरत जैसे दूसरे नौजवानों की कब्रों का भी पता न मिलेगा। तब रोशन होगा फिरंगियों का नया सूरज। नया सूरज जिसकी रोशनी में हमें राहत मिलेगी। मरतबा और बादशाहत मिलेगी। पर्दा मेरे सामने नहीं आपके सामने गिरा है मिर्या ग़ाम आपके सामने। डूबते सूरज को

बेवकूफ़ पूछते हैं। जाइये और जाकर ख़ुदा की इबादत में परवरदिगार की रहमतें माँगिये ताकि अपने बेटे की मौत का सदमा आप बर्दाश्त कर सकें। मेरा नाम अली नकी है। जिसने मुझे बरबाद किया है मैं उसे बरबाद करूँ, इतना बुज़दिल नहीं।"

अब कोई फ़ासला नहीं था। वह उठ कर वहाँ से चले आये और उसी दिन इशरत से मुलाक़ात करने के लिये चल दिये। उन्हें आश्चर्य और दुख की गहन अनुभूतियों ने इतना पीड़ित किया कि वह अपने स्वभाव के अनुकूल इतनी बातें सुन लेने पर भी मीर साहेब को बुरा भला न कह सके। उन्हें एक भयानक चिन्ता हो गई थी। इशरत की मौत का भय नहीं था किन्तु आने वाले भविष्य से गहरी निराशा थी। वह सोच रहे थे जिस देश में ऐसे नागरिक हों उस देश का अन्त क्या हो सकता है? गुलामी? ज़िल्लत? तबाही? या कोई और ऐसी बद किस्मती जिसके बारे में न कभी सुना हो और न कभी देखा? आख़िर मीर साहेब की आँखों में इतनी बमुरव्वती क्यों? क्या वह इन्सान नहीं? उनके सीने में दिल की जगह पत्थर है? या कोई आतंक है भय है? मौत की स्मृति ने उन्हें सारे संसार के प्रति अपने कर्तव्यों की इतिश्री समझने पर मजबूर किया है?

इशरत का पता तो और मीर साहेब ने बता दिया था। अब मियाँ जान को जल्दी थी कि कम से कम मौत से पहले अपने बेटे को एक बार तो गले लगा ही लें। एक अख़बार कम्पनी-सेना-रत मीर मुन्शी इसका इशारा ज़ाहिर कर चुका था। सन्देह करता दूसरे शब्दों इशरत की मौत थी। लेकिन देखिये दुर्भाग्य मौत ने धीमना की ओर आ पहुँची। किन्तु इशरत के लिये नहीं मियाँ जान के लिये। वह लखनौटी होते हुए आये थे कि मकौड़ी मोड़ में दिल का भयानक दौरा पड़ा। उसे साथ वालियों ने चार छः दिन टिका कर सेवा सुश्रुषा की किन्तु मियाँ जान का यह दौरा जीवन का पहला और आख़िरी दौरा था। एक दिन सोते

बारह

स्लीमन का ऐतिहासिक दौरा शान-बान से प्रारम्भ हुआ। लखनऊ के नाके तक शुभेच्छायें प्रकट करने रेजीडेंसी के अनेक कर्मचारी नकी खाँ वजीर, दरबारी और शाह के भाई मिर्जा हशमत साथ आये। रेजीडेंसी का चार्ज बर्ड को मिला था। स्लीमन उसे बहुत से पुख्ता आदेश दे गया था। उनमें अधिकतर शाह के निजी खर्चों और सम्बन्धों का ब्योरा था। उदाहरणार्थ दरबार में नियुक्त शाही वैद्यों और हिजड़ों की समाप्ति का स्लीमन ने बर्ड से एक प्रकार से वचन ले लिया और कहा वह भरसक शाह को इनके अलग करने पर बाध्य करे। इसी प्रकार दूसरी फिजूल खर्चियों के सम्बन्ध में समझाते हुए उसने बर्ड से कह दिया उसकी रेजीडेंसी-काल के मध्य भविष्य में कम्पनी सरकार पर पड़ने वाला हानि स्वरूप यह भार जितना कम हो सका उतनी ही बर्ड की प्रतिष्ठा ऊँची उठेगी। चूंकि अब वह दिन दूर नहीं जब दौरे के बाद स्लीमन अवध की हुकूमत की पोल खोल देगा और मजबूरन गवर्नर को अवध की ज़ब्ती का आदेश देते हुए शाहे अवध और दूसरे उनके सम्बन्धियों आश्रित व्यक्तियों के मुआवजे की घोषणा करनी होगी। तब तक शाही दरबार से जितने व्यर्थ के नौकरों को कम किया जा सका उतना ही कम्पनी सरकार के हक में अच्छा और लाभकारी सिद्ध होगा।

पहले कहा जा चुका है सवारी हाथी पर चली। पैर की हड्डी टूट जाने के बाद स्लीमन घोड़े पर चलने में कठिनाई प्रतीत किया करता था। अतः हाथी या तामझाम दो ही सवारियों का प्रयोग सुविधाजनक था। इसका एक महत्त्व यह हुआ कि हाथी के कारण सवारी प्रमुखता प्राप्त कर गई। उसकी आहिस्ता चाल से आगे तक उसके आने की

सूचना पहले पहुँच जाती जिससे उसका स्वागत सम्पन्न होता जाता था। घोड़ा घोड़ा होता है और हाथी हाथी। अनजान लोगों में यह अफवाह फैलने लगी कि रेजीडेंट हुकूमत अपने हाथों लेने का इन्तजाम करने पूरे मुल्क का दौरा कर रहा है।

इसरत दौरे के समय स्लीमन का मुन्शी नियत किया गया था। स्लीमन ने कृतज्ञता से उसके लिये एक घोड़े और कागजों के लिये पालकी का प्रबन्ध करवा दिया था। स्लीमन की अंग्रेज बीबी व बच्चे घोड़ों पर थे। शेष नौकर चाकर पैदल जा रहे थे। इस तरह यह लम्बा काफिला जहाँ रुकता वहीं धूम मच जाती। शाही आदेश आगे-आगे जा चुके थे। आमिलदार, नाजिम और ताल्लुकेदार काफिले की सेवा में ओर-छोर से उपस्थित हो जाते।

दौरे का वास्तविक कारण स्लीमन के मन में था। कम लोग जानते थे इसका असल कारण क्या है। शाही ऐलान में कहा गया था हुकूमत में बेहतरी और तरक्की पैदा करने के लिये साहब लोगों से मिलने और उनकी हालात देखने आ रहे हैं। इसरत इस पर विश्वास नहीं करता था। लखनऊ के उत्साही समुदाय में इस दौरे का राजनैतिक महत्त्व भली प्रकार सुस्पष्ट था। अतः उसका प्रयत्न स्लीमन पर अधिक से अधिक दृष्टि रख यह जानने का रहता कि आखिर अवध की सम्पन्नता मिटाने के लिये यह किस आधार पर बुनियादें रख रहा है। दूसरे में स्लीमन के साथ रहने का एक यही लाभ था जो कालान्तर में वाजिद अली के पक्ष को सबल करने में सहायक सिद्ध होता।

इस सम्बन्ध में स्लीमन का मन टटोलने का इसरत जब-तब प्रयत्न करता। दौरे का प्रारम्भ बहराइच जिले के नवाबगंज गाँव से हुआ। नवाबगंज परगना सिधोर, मिठवल राम नगर, कुकरपुर आदि जमींदारियों घूमते हुए वहाँ की हरी भरी उपजाऊ धरती देखते समय इसरत आगे साहब का ध्यान इस ओर दिलाता गया। कैसी अच्छी मिट्टी है।

अभाव के रूप में सोना उगलने वाली। लेकिन स्लीमन मुस्कुरा जाता और बताया करता—तुम अवध के सोने पर अपनी नजरें मत फेंको। पूरा हिन्दोस्तान सुनहरा मालूम देता है। हमें तो देखनी है इन इलाकों के जमींदारों की काली करतूतें। गाँव-गाँव पूछो और वहाँ कोई दिलचस्प किस्सा सुनने को मिले हमें बताओ। इससे अस्पष्ट स्लीमन के मन की आन्तरिक स्थिति का कुछ भान होता। इबरत ने जमीन्दारों के किस्से इकट्ठा करने का काम शुरू नहीं किया। किन्तु स्लीमन जहाँ भी जाता, वहाँ के आमिल से तत्कालीन जमीन्दार का उसके पूर्वजों तथा उनके भी पूर्वजों का इतिहास बड़े चाव से सुनता।

एक दिन काफिला गोंडा-बहराइच की सीमा में पहुँचा तो स्लीमन इबरत पर अनायास क्रुद्ध हो बैठा। कारण बड़ा ठोस था। यहाँ के लगान वसूली का ठेका आमिलदार दर्शन सिंह के बेटे के पास था। बेटा बाप की तरह जुल्म और जोर से काम लेने का आदी था। दर्शन सिंह ने गंगा बख्श सिंह को जानबूझ कर किसान से डाकू बना दिया था। यही कहानी रघुबर सिंह ने बम्हनौती गाँव के हरदत्त सिंह की रियासत में दोहराई। हरदत्त सिंह की लड़की के लिये दर्शन सिंह की ओर से रघुबर सिंह का समाचार गया था जो किन्हीं कारणोंवश उसने अस्वीकार कर दिया। बस दोनों परिवारों में शत्रुता हो गई। आमिलदार होने के बाद रघुबर सिंह ने हरदत्त से अपने अपमान का बदला लेना शुरू किया। अमान बख्श पर मिलता था। अन्य उपाय न पा अपने आदमियों से गाँव के लोगों को भड़काना और डराना शुरू किया। इसमें सफलता मिल गई और लोग हरदत्त सिंह की रियासत छोड़ भागने लगे। चारों ओर झूठा समाचार फैल गया कि रघुबर सिंह ने बम्हनौती के तमाम हल-बैल नष्ट कर दिये। स्लीमन के कानों में इसकी भनक पड़ गई। रघुबर सिंह तो उसकी सेवा में उपस्थित था। खुद इस कहानी को कैसे बयान करता। स्लीमन ने इबरत को डांटा कि उसने इतने बड़े हादसे के बारे में यहाँ रहकर

जानकारी नहीं की तो और क्या कर सकता है ? इशरत की बद किस्मती इन्कार करने के स्थान वह स्लीमन के सम्मुख स्वीकार कर बैठा कि उसने इस घटना के बारे में कुछ-कुछ सुना जरूर था किन्तु उसे महत्वहीन समझ साहेब को बताया नहीं।

स्लीमन का क्रोध शान्त हो गया किन्तु इशरत को समझाने लगा "यह मामूली हादसा नहीं है। किसी गाँव से पच्चीस हजार हल-बैलों का खत्म हो जाना कुछ मायने रखता है। अवध के खजाने में उसके जाना हाकिमों की वजह से हजारों रुपये की कमी हो गई है।"

एक गाँव में पच्चीस हजार हल बैल होना सम्भव नहीं। लेकिन उस समय इशरत शान्त रहा। रात के समय स्लीमन शराब पिया करता था। उसके बाद अपने कमरे में बैठा बच्चों कुछ लिखा करता था। शायद वह दौरे की कच्ची रिपोर्ट या डायरी होती। उस समय इशरत वहाँ उपस्थित रहता और साहेब उससे कुछ बातें मालूम करता। दिन भर की घटनाओं में कहीं कुछ छूटे नहीं कुछ भूल न हो जाये, इसलिये आरम्भ से यह नियम बन चुका था। शराब पीते समय इशरत उसकी सेवा में रहे और जो सवाल पूछे उसके उत्तर दे।

इशरत उसी रात बम्हनौली के प्रसंग पर खुल आ गया। उसकी समझ में अपने साहेब की धारणा न आ सकी थी। दो परिवारों के झगड़े में हुकूमत की लापरवाही क्योंकर साबित हो सकती है यह जानना चाहता था।

उसने जाम हाथ में देते वक्त पूछ लिया "आमिलदार कसूरवार है सरकार, उसकी बाबत जरूर लिखा-पढ़ी होनी चाहिये। मगर बादशाह क्या करे ? हुकूमत में अच्छे-बुरे सभी किस्म के हाकिम होते हैं।"

"नहीं।" स्लीमन ने जवाब दिया "२१००० हल-बैलों का सफाया किसी बादशाह के आमिलदारों का कसूर नहीं माना जा सकता। इसके लिये खुद बादशाह जिम्मेवार है जो आँखें बन्द किये रिआया की तरफ

से बेखबर है।"

"गुस्ताखी मुआफ हो तो अर्ज करूं।" इशरत ने साहस किया 'एक गांव में २१००० हल बस होता "

"ओह मुन्शी। हमें अपनी अक्ल दौड़ाने की जरूरत नहीं। सारी दुनिया जिसे तस्लीम करती है वही सच है। हम अपने दौरे में ऐसे वाक्यात का तज़किरा किये बिना नहीं रह सकते। इससे जाहिर होता है यहां का बादशाह किस कदर बेहोश और ऐयाश है। यहां के जमींदार और आमिलदार किस कदर ज़ालिम हैं। पच्चीस हजार लोगों को बेघरबार कर देना" "शराब दो" यह मामूली बात मत समझो मुन्शी।"

इशरत खामोश हो गया। बात स्पष्ट थी। स्लीमन के मन में क्या है या क्या हो सकता है बिल्कुल जाहिर था। बयाबा मनका बढ़ाने का दूसरे शब्दों में तात्पर्य अपनी ओर से सर्वाधिक करना था।

दो-चार दिन बाद एक नयी घटना हुई। स्लीमन अब अपने मनो भाव छिपाने का प्रयत्न कम कर रहा था। उसे बादशाह के विरुद्ध मसाला चाहिये था और वैसे भी हो इकट्ठा करता था। रसूलाबाद में एक हिन्दू राजा थे। उनके यहां परम्परा से चले आने वाले कुसंस्कार पूर्ण रीति-रिवाज अब भी चल रहे थे। लड़कियों को पैदा होते ही मार दिया जाता था। मारने के घृणित तरीके थे। पूछने पर कुछ और रियासतों में भी इसका प्रचलन पाया गया। स्लीमन आरम्भ में आश्चर्य और विचार करता रहा। रसूलाबाद में विचार को कार्यक्रम में परिणत होना पड़ा। एक राजपूत स्त्री रोते बिलखते उसके खेमे में प्रविष्ट हो गई। उसकी नवजात कन्या को ज़ालिम परिवार वालों ने नमक चटा चटा कर मार डाला था। पागलों जैसी अवस्था में स्त्री रेज़ीडेंट साहब से अपनी बेटी मांगने आई थी। स्लीमन इस बारे में क्या कर सकता था यह जानता था। फिर भी उसने दिलचस्पी से स्त्री की पुकार सुनी।

उसने पूछा "क्या तुम चाहती हो तुम्हारे जालिम सास-ससुर को इसकी सजा दी जाय ?" औरत ने झिझककर इसका प्रतिवाद किया "उन लोगों को सजा देने से क्या होगा ?" वह बोली "आयन्दा वह ऐसा जुल्म न करें कम से कम यही कर दीजिये ।"

स्लीमन ने कहा "कानून बनवा दें ? कोई लड़की को न मारे ?" औरत ने हामी भरी। इसके बाद किसी नये विचार में स्लीमन बहुत देर खोया रहा। अन्त में किसी निर्णय पर पहुँच उसने औरत से कहा "तुम लिखी पढ़ी नहीं हो इसलिये मीर मुन्शी तुम्हारे लिये दरख्वास्त लिख देंगे। तुम उस पर निशानी कर देना। बहुत जल्द कानून बना दिया जायेगा जिससे आयन्दा ऐसा जुल्म न हो सके।"

औरत मान गई। उस बैठक स्लीमन इशरत को साथ ले खेमे के भीतर पहुँचा। वहाँ प्रार्थनापत्र उसने इशरत को खुद बोला। इशरत के हाथ काँप-काँप गये। किन्तु मजबूरी थी। जैसे-तैसे लिखता गया। स्लीमन ने हिन्दू रीति-रिवाजों की आड़ में फिर एक बार शाही मरतबे को ललकारा था। औरत की तरफ से कितने ही ऐसे बयान लिखवा मारे थे जिनका ताल्लुक स्त्री की शिकायत से बिल्कुल नहीं था। और अन्त में लिखवाया—मैंने कई बार हाकिमों तक इसकी फरियाद करवाई। वह सब मुसलमान हैं। कहते हैं बादशाह मुसलमान है और मुसलमानों के बारे में सोच और समझ सकते हैं। उनको हम हिन्दुओं की जरा भी फिक्र नहीं। लगान में दो दिन की देरी हो तो माल कुर्क करने आ जाते हैं। मुसलमान रआयाओं को पन्द्रह-पन्द्रह दिनों की छूट रहती है। हम हिन्दुओं में इन पुरानी रीतियों के बन्द कराने के लिये बादशाह जान बूझ कर कुछ नहीं करते। ऐसी हुकूमत न होना अच्छा है। हम कम्पनी सरकार की कृपा चाह रहे हैं।—औरत ने इस पर दस्तखत कर दिये। स्लीमन ने उसे अपने कब्जे में महफूज रख लिया। तब इशरत को ज्ञात हुआ चतुर रेजीडेंट साम्प्रदायिकता के जहर में बादशाह का नाम और

काम सभी दुबारा चाहता है। हालांकि एक वक्त वह था जब लखनऊ में उसने कुछ होली के अवसर पर घृणा से मुंह सिकोड़ कर बादशाह के धार्मिक अस्तित्व को फटकार बताई थी जो कुछ हिन्दुओं की तरह होली पर अबीर और गुलाल से विभोर होता था। स्लीमन ने तब कहा था—बादशाह नाम के मुसलमान हैं। उनके काम हिन्दुओं जैसे हैं। फिर भी ताज्जुब है, मौलवी और इमाम कैसे बर्दाश्त कर लेते हैं। हिन्दू मोहर्रम नहीं मनाते तो बादशाह होली क्यों मनाता है?

स्लीमन के मार्ग में एक गांव पड़ा बहुमनी पीर। काफिला रात होने से कुछ पहले गांव से बारा आगे निकल आया। एक तालाब मिला जिसके किनारे पड़ाव हुआ। जगह सुन्दर थी। सामने आमों का एक बड़ा बाग था। उस इलाके का मुसलमान आमिलदार फैजुल्ला खान था। उसने झटपट सब प्रबन्ध करवाया। थोड़े में सब और गांव में शोर मच गया। सुबह होते-होते आस-पास के छोटे-मोटे जमींदार रेजीडेंट के दर्शन पाने जुटने लगे।

बड़े साहब के पेट में अचानक दर्द उठ आया और उन्हें अगले दिन और फिर अगले दिन वहीं रुकना पड़ा।

रात में गुलाल की हल्की आग का आनन्द उठाते फैजुल्ला और इरारत में बहुत-सी बातें हुईं। प्रसंग बहुमनी पीर गांव और वहां के लोगों का आ गया। फैजुल्ला ने गांव के ऊपर एक मनोरंजक कहानी सुनाई। बहुमनी पीर का धार्मिक धर्म होता है ब्राह्मणों की पीर—उस का दुःख। फैजुल्ला मुस्कराता बता "इस गांव में पिछले कई सालों से ब्राह्मणों की जमींदारी है। मगर वह बेचारे कभी सर सब्ज नहीं होते।" इरारत को कथा में आनन्द आया। उसने जानकारी जानने की इच्छा व्यक्त की तो फैजुल्ला ने एक पुरानी कहानी बयान की "एक बार एक

साधू कहीं से घूमते-फिरते यहाँ आए। उन्होंने बड़ के नीचे अपना आसन जमाया और चालीस तोले सोने की माँग उस वक्त के जमींदार के यहाँ भेजी। कहलवाया अगर माँग पूरी न हुई तो शाप दे देंगे। जमींदार साहेब ने इसका असर उल्टा लिया। हुक्म दिया साधू जी महाराज अपना डेरा डंडा उठा कर गाँव से चल जायँ। साधू नहीं माना। वह आसन जमाए डटा रहा और जोर-जोर से बुरा भला कहता रहा। जमींदार कुछ दिन टालते रहे। फिर एक दिन गुस्से में साधू को अपनी हवेली के बाहर पकड़वा मँगाया और इतना मारा कि साधू वहीं ढेर हो गया। लाश उन्होंने इसी तालाब में फिकवा दी। कहते हैं कुछ दिनों के बाद वही साधू जमींदार की हवेली में जीता-जागता फिर आ पहुँचा और कह गया इस जमींदारी के जमींदार हमेशा किसी न किसी के हाथों कत्ल होते रहेंगे। आगे चलकर फैजुल्ला ने साधू के शाप का प्रमाण दिया, 'उस जमींदार एक अँधेरी रात में डाकुओं के हाथों शिकार हुए। उनके बाद उनका बेटा अपने छोटे भाई की साजिश से मारा गया। पश्चात् वह हजरत भी जहर देकर मार दिये गये।

इफ्तखार ने वर्तमान जमींदार का किस्सा पूछा। तब फैजुल्ला ने बताया इन जनाब का किस्सा भी कुछ ऐसा है। इन से पहले इनके भाई रामदत्त की जमींदारी थी। जनाब ने उनको हलाक करवा कर खुद जमींदारी समेट ली। अब यहाँ के नाजिम की मेहरबानियों का शिकार बने हुए हैं। लम्बी-लम्बी रिश्वतें देते हैं ताकि बात ऊपर न जाए पीछे यही नाजिम की बुराई करते हैं। मुझे खौफ है जिस दिन नाजिम को इनकी हरकतों का पता चला उसी दिन वह बखेड़ा खड़ा कर देगा और हजरत शाही मेहमान खाने की रोटियाँ तोड़ते होंगे। ताज्जुब नहीं फाँसी हो जाए।'

इफ्तखार बड़ी जोर से हँसा। फैजुल्ला ने विनोदपूर्ण स्वर में अभिन

बात कुछ इस तरह कही थी कि वह हँसे बिना न रह सका। लेकिन तभी बाग की ओर से स्लीमन साहेब की आवाज सुनाई दी और इशरत को जाना पड़ा।

वहाँ पता चला स्लीमन टहलता हुआ चीम से बाहर आकर फैजुल्ला की सब बातें सुन रहा था। उसने कुछ सवाल किये और इशरत ने उन की पुष्टि की। स्लीमन ने तब इशरत के द्वारा अगले दिन फैजुल्ला को अपने सम्मुख उपस्थित होने का आदेश दिया।

फैजुल्ला उलझन में पड़ा। उसने इशरत को जो कुछ बताया वही था जो सबमें प्रसिद्ध था। रेजीडेंट के कानों में बात पड़ जाने का मतलब है वर्तमान नाजिम की मुसीबत। नाज़िम उसका हाकिम था। वह डरता हुआ स्लीमन की पेशी में हाज़िर हुआ।

रात का प्रसंग लाते हुए स्लीमन ने दोबारा फैजुल्ला के मुख से सारी कहानी सुनने की आकांक्षा की। कुछ शब्दों में फैजुल्ला उसका आदेश पालन कर बड़ी सावधानी से स्थिति सम्हालने का प्रयत्न करने लगा। उसने कहा "हुजूर से अर्ज करूँ कि यह किस्सा बतौर अफवाह यहाँ के आवाम में मशहूर है। असलियत जो बादशाहे आली के हुजूर तक पहुँची इससे जुदा और मुख्तलिफ है।

स्लीमन मुस्कुरा कर उसके बारे में जानने को उत्सुक हो गया। तब फैजुल्ला ने कहानी का दूसरा पक्ष प्रस्तुत किया। बोला "मौजूदा जमींदार किशनचन्द के भाई रामदत्त मक्कार और बदमिजाज आदमी थे। दस-बारह हजार की मालगुजारी बकाया हो गई पर मांगने पर नाजिम साहेब से बदतमीजी से पेश आया करते थे। एक बार वसूली के लिए नाजिम साहेब खुद वहाँ आए। अभी वह दूसरे मौजे में थे कि रामदत्त को इत्तिला मिल गई और वह तीर्थ का बहाना बना वहाँ से भागने लगे ताकि नाजिम से मुलाकात न हो। नाज़िम साहेब ताड़ गये और इत्तिला भेजी जब तक रुपया अदा न हो रामदत्त कहीं न जावे। मगर पलायनार्थी मैं

गुज़ारी है तो उन्होंने रामदत्त को अपने खीमे में मिलने के लिये बुलवाया। रामदत्त दस-बारह आदमियों के साथ मिलने गये। आगे पता नहीं क्या हुआ। रामदत्त की लाश खीमे के नज़दीक पाई गई। बड़े नाज़िम साहब ने बयान दिया मालगुज़ारी की वसूलयाबी का ज़िक्र होते वक्त रामदत्त और छोटे नाज़िम जाफ़र अली में कहा सुनी हो गई थी। जाफ़र अली ने अपना रिवाल्वर निकाल लिया था मगर सामने मारा नहीं। सिपाही जाफ़र साहब को पकड़ ले गये मगर बाद में छोड़ दिया और इस इलाके से दूसरी जगह बदल दिया। तब से लोग जाफ़र अली वाली बात पर यकीन नहीं करते। उनका कहना है किसनचन्द साहब ने ज़मींदारी हड़पने के लिये खुद रामदत्त को मरवा दिया और नाज़िम साहब से मिलकर बचने की साज़िश की। लेकिन जाफ़र अली ने ऐसा होना बिल्कुल तस्लीम नहीं किया। उसने कहा गोली मैंने नहीं चलाई थी किसने चलाई इसके बारे में कह नहीं सकता। लोग समझते हैं हवालात से छूटने के बाद किसनचन्द ने उसे भी मोटी रकम देकर खरीद लिया है।"

अन्धे को आँखें मिलीं। इतने बड़े गोलमाल की सूचना कम महत्त्वपूर्ण नहीं थी। बादशाह के लिए इससे बड़ी शर्म की बात और क्या हो सकती थी कि उसके नाज़िम के खीमे में ज़मींदार की लाश मिली और उस नाज़िम का बाल बाँका नहीं हुआ। स्लीमन प्रसन्न हुआ। रातभर लम्बा चिट्ठा लिखता रहा। इत्तला के दूसरे दिन किसनचन्द को भी अपने यहाँ हाज़िर होने का संदेश भेजा। फ़ैज़ुल्ला को चलते समय पुरस्कार स्वरूप कुछ [illegible]। वह समझ गया नाज़िम की मौत नज़दीक लाने के सिले में उसे इनाम दिया गया है।

किसनचन्द से रास्ते में बात हुई। वह डर गया। असलियत क्या थी इत्तला के पहुँचने के बाद भी उसने स्वीकार नहीं किया। इत्तला कहना चाहता था स्लीमन के डाँटने-फटकारने से विचलित हो गई वह

और किसी ने जमींदारों के जुल्म बयान किये। लेकिन अब का मामला बादशाह के विरोध और आने वाली किसी नयी हुकूमत के पक्ष में होता था। और वहाँ भी हर जगह किसानपक्ष बड़े मददगार नहीं थे। बहुत कोशिश करने पर भी कुल मिला कर दस बारह सौ दरख्वास्तें मिल सकीं। लेकिन स्लीमन के लिए यही बहुत थी। कौन पूछ रहा था लाखों की आबादी में इतनी शिकायतों का क्या मूल्य है। मुकदमे के लिए कागजपत्र तैयार करने में इन्हीं कुछ दरख्वास्तों से बहुत कुछ किया जा सकता था।

चित्रकूट दौरे का अंतिम स्थान था। अभी वह स्थान पचास-पचपन मील दूर था। इस बीच इशरत को अपने साहेब के नये विचारों का अनुभव हुआ। पूरे रास्ते जगह जगह तालाब और पक्के कुंए मिलते थे। लोगों के आने-जाने को नाममात्र सड़कें थीं। मगर स्लीमन बार बार दुहराया करता रहा। रास्ते भर न कुएँ हैं न सड़कें। राहगीरों के लिए कोई प्रबंध नहीं। मीलों तक छाया न मिल सके। हुकूमत ने कभी इस तरफ ख्याल नहीं किया। मालगुजारी की रकम वसूल करने के बाद जो बादशाह नाच-गानों और रहस नाटक में मस्त रहे वह इस बारे में क्या सोच सकता है। इशरत समझा स्लीमन न केवल बेईमान और मक्कार है बरन घोर नास्तिक भी जिसे अपने खुदा का डर नहीं जो एक सच बात को झूठ और झूठ बात को सच इसलिए कर रहा है कि उसका लाभ उसके देश के लोगों को प्राप्त होगा और हानि एक ऐसे व्यक्ति को जिसे वह मन ही मन नफरत करता है।

रहम खानों से कहा— "हम लोगों का दौरे में साथ रहना बिल्कुल बेकार साबित हो रहा है। वह मनमानी कर रहा है और हम कुछ नहीं कर सकते।"

खानो ने उत्तर दिया— "हम इसकी बेईमानी के सब से बड़े गवाह यही क्या कम है। हमारी वजह से लोगों को मालूम हो सकेगा और

का राज क्या था स्लीमन ने क्या-क्या बेईमानियाँ की हैं। वास्तव उस वक्त जरूर आयेगा जिस वक्त स्लीमन के मुखालिफ खड़े हम लोगों की असलियत जाहिर करेंगे और यह हमारी तरफ खूँखार आँखों से घूरता रहेगा।"

"मैं उस दिन की तवक्को नहीं करता जानो। इरादत ने लम्बी साँस ले उत्तर में कहा—"मुसीबत यह है कि वाजिद अली शाह के सामने इसका जिक्र किया गया तो पहले वह स्लीमन पर इतमिनान करेंगे और फिर अपनी रिआया से इतने बड़े झूठ और फरेब की उम्मीद नहीं करेंगे। हमारी दास्तान अलिफ लैला की दास्तान बनी मजाक का बायस होगी।"

अवधी मह में स्लीमन को डाकू महीपत के किस्से सुनने को मिले। डाकुओं की आम शिकायत उनके पास पहले से मौजूद थी। किन्तु महीपत शातिर डाकू था और उसकी वारदातों का सप्रमाण विवरण आमिलदार व इलाकेदारों से मिल सकता था। अब उसने हर शाही मुलाजिम से महीपत के किस्से लिखित मंगवा कर अपने पास रख लिए। इन किस्सों की ज्यादा से ज्यादा गिनती करना उसका खास लक्ष्य था। जिन कर्मचारियों ने उसका मतलब ताड़कर सच्ची घटनाओं के साथ-साथ दो चार और मिला दीं स्लीमन ने उनकी प्रशंसा की। किन्तु जो लोग ऐसा न कर सके या जिन्होंने सच्चाई से मुख मोड़ना अस्वीकार कर दिया वह नाकाबिल कहाये। यही भाव बस्त स्लीमन ने पूरे दौरे में अपनाये रखता था। पर सरकारी नौकरों में से भी कम स्लीमन के सहायक निकले। अतः इरादत से वह समय-कुसमय कहता रहता था—

जिस हुकूमत के हाकिम इतने बेवकूफ और बेकार हों उस हुकूमत का खुदा हाफिज्। बादशाह को राग रंग से फुरसत मिल तो वह इस तरफ तवज्जोह करे। नतीजा यह है कि आज सारे अवध के सरकारी मुलाजिम मतलबी और नाफरमाबरदार हैं। अपनी कुर्सी पर बैठ कर अपने आप

को अवध का बादशाह समझते हैं।" जाहिर है, अपनी दौरे की रिपोर्ट में स्लीमन ने ऐसे ही शब्दों का प्रयोग शासन के विरोध में किया होगा।

यहीं अथामी बड़ के बीमे में एक दिन अचानक मीर मुन्शी के दर्शन हुए। बड़ी अस्त-व्यस्त अवस्था में एक दिन वह काफिले से आ मिले। पूछने पर बानो को उन्होंने सिर्फ यह बताया कि वह साहब को सलाम देने आये हैं। मगर इशरत उनकी आँखों में रहस्य की गन्ध पा विचलित हो उठा। बातचीत के मध्य भी कुछ ऐसा लगा जैसे वह इश रत के विरुद्ध बरबस मन की बात की बाढ़ रोकने में असमर्थ हो रहे हैं।

स्लीमन दोपहर तक तालिबदार के साथ अथामीबड़ के जंगलों में शिकार खेलता रहा। इसलिए मीर साहेब की मुलाकात शाम से पहले न हो सकी। इस बीच इशरत ने बानो को सचेत करने का प्रयत्न किया 'मीर साहेब का यहां आना मायने रखता है। वह बुरी नज़रों से मुझे घूर रहे थे। मालूम करने की कोशिश करो उनके मन में है क्या—"

उसने कहा तो पहले बानो विश्वास न कर सकी। फिर इशरत ने जोर दिया तो मौका देखने लगी। किन्तु इसकी आवश्यकता नहीं पड़ी चूंकि दोपहर के भोजन के बाद आराम करते हुए मीर साहेब ने एकांत पा खुद बानो को पास बुला लिया और कहने लगे—"कल तुम मेरे साथ वापिस लखनऊ चलोगी। तैयारियाँ कर रखना।" कारण पूछा तो वह एकदम गर्म हो गये और चिल्ला पड़े—"जो हुक्म दिया है वही करो। मैं नहीं चाहता जानते-बूझते तुम्हें आग से खेलने का मौका दूँ। इशरत के साथ हमारी गुज़र मुश्किल है।"

बानो चुपचाप लौट आई। इशरत समझ गया बात कुछ है ज़रूर। लेकिन बानो में इतना साहस न था कि वह अपने पिता से आगे प्रश्न सवाल करे। तब इशरत ने यह काम अपने ज़िम्मे लिया। वह मीर साहेब के पास आया और बानो को ले जाने का कारण पूछने लगा।

मीर साहब ने पहले कोई जवाब न दिया मगर अन्त में गम्भीर स्वर में कहने लगे— 'बरखुरदार बाला पर मेरा हक आज भी बरकरार है। मैं उसे लेने आया हूँ और लेकर जाऊँगा। वजह जानना चाहते हो तो तैयार रहो। खुदबखुद मालूम हो जायगी।

इस उत्तर के बाद बालो बहुत डर गई। देशप्रेम के छिपे छिपे उत्साह के वश उसने इशरत को अपना लक्ष्य बनाया था उसी उत्साह ने पिता की आकृति में भय और ताड़ना की भावना प्रतीत की। उसमें साहस कम नहीं था। एक बार इशरत के लिए अपनी इज्जत का जूआ खेलकर उसने एक बड़ी समस्या सुलझाई थी। रेजीडेंसी में निवास करने वाली एकमात्र वही ऐसी लड़की थी जिसे अंग्रेजों से घृणा और अपने अज्ञात बादशाह से प्यार था। इशरत में यही भाव पहिली भेंट में ताड़ने पर उसका मन पुलक गया। कालान्तर मे उसकी पुष्टि हुई तो वह इशरत के पक्ष म बहुत कुछ सोच बैठी। समय आने पर अपनी बुद्धि और योग्यता से वह परिस्थिति भांप कर इशरत को बचाने का साधन भी कर सकी। आज फिर उसी प्रकार की दूसरी परीक्षा के लिए उसने अपना हृदय परिपक्व किया।

इशरत से उसने कहा— 'इनका इरादा नेक मालूम नहीं देता। मुमकिन है लखनऊ में इन्हें कुछ पता चल गया हो और यह स्लीमन को बताने आये हों। मेरी राय है तुम मुझे यहीं छोड़ दो और खुद चले जाओ। अभी तक रास्ता साफ है। स्लीमन वापिस आया और अब्बा हुजूर से मुलाकात होने के बाद खतरा न हुआ तो मैं इत्तिला करवा दूंगी। कोई बहाना कर देना और गैरहाजिरी की माकूल वजह बता कर आ जाना।"

इशरत इस पर तैयार न हुआ। उसने कहा— 'मैं बुजदिल नहीं। हम तुम दोनों बराबर के गुनाहगार हैं। मीर साहब समझते हैं स्लीमन उनकी बेटी होने की वजह से तुम्हें बख्श देगा यह उनकी खामख्याली

है। तुम्हें छोड़ मैं नहीं जा सकता।"

बानो निरुत्तर हो गई। उसने दोनों के भाग चलने का प्रस्ताव रक्खा किन्तु इशरत इतना शीघ्र एक मामूली सन्देह की पुष्टि हुए बिना इस पर तैयार न हो सका। दोनों ने मीर साहब की गति विधि पर दृष्टि रखना अन्त में तय किया।

साहब की वापसी पर खुद इशरत ने मीर साहब का समाचार दे दिया। किन्तु वह सीधा अपनी मेम साहब के खीमे में घुस गया और रात तक न निकला। पश्चात मीर साहब की तलबी हुई। उस वक्त इशरत मीर साहब की श्रोख बचा स्लीमन के खीमे के पिछवाड़े खड़ा कान लगाये दोनों की बातें सुन रहा था। बानो उसके साथ थी।

सलाम पेश करने के बाद मीर साहब यकायक साहब के पैरों पर गिर पड़े और गिड़गिड़ा कर भीख मांगने लगे "मैं अपनी बानो की जिन्दगी की मिन्नत करता हूँ सरकार। खुदा के लिये उसे मुआफी बख्श दीजिये।

स्लीमन इस भूमिका का कोई तात्पर्य न समझा। उसने मीर साहब को खुशामद को निषेध करते कर पूरी बात कहने का आदेश दिया। तब मीर साहब उठ कर सामने आ खड़े हुए और कहने लगे हुजूर जिस इश रत को अपना वफ़ादार और राज़दार समझ रहे हैं वह दरअस्ल हमारा दुश्मन है। आप के साथ-साथ उसने मुझे भी धोखा दिया। उस दिन रेज़ीडेंसी में आपका क़त्ल करने की नियत लिये वही चोरों की तरह दाखिल हुआ था। उस रात लोहे के पुल पर जिस अंग्रेज़ को हलाक किया गया उसके पीछे भी इशरत का हाथ है। दरअस्ल यह आस्तीन का सांप है जो बादशाह के लिये आपके साथ रह कर जासूसी कर रहा है।"

स्लीमन की क्या दशा हुई होगी कहना व्यर्थ है। पर खीमे के पीछे खड़े इशरत और बानो की अवस्था इससे भी ज्यादा खराब हो गई। स्लीमन चीख-चीख कर सिपाहियों को बुलाकर इशरत को गालियां

सुनाने की तैयारियाँ कर रहा था। बानो आगे क्या होने वाला था जानती थी। एक प्रकार जबरन इशरत का हाथ पकड़े वह भागती हुई सामने वाले बाग के बाग में घुस गई। यहाँ सघन अँधेरा था और बिना रोशनी कुछ सूझना असम्भव था।

उसने इशरत के हाथ जोड़े और प्रार्थना की 'जैसे भी हो तुम भाग जाओ। अब्बा जान की खुशामद मिन्नत पर शायद सलीमन पसीज जाये और मुझ से कुछ न कहे। लेकिन तुम यहाँ रहे तो गजब हो जायेगा। गोरे के कत्ल की एवज वह तुम्हें भून डालेगा।"

इशरत ने प्रतिवाद किया। वह बानो को अकेला छोड़ जाने पर बिल्कुल तैयार न हुआ।

बानो की आँखों से आँसू निकल आये और तरह-तरह कसमें दिला कर उसने फिर कहा "खुदा के वास्ते मुझ पर रहम करो। खुदा ने तुम्हें सलामती दी तो हम फिर मिल जायेंगे। लेकिन यहाँ रहे तो बुरा होगा। मेरी फिक्र छोड़ दो। मुझ पर कोई जुर्म आयद नहीं होता। मौका हुआ तो मैं अपनी बेगुनाही बयान कर सकती हूँ। यह क्या जरूरी है कि तुम्हारे साथ-साथ मैं भी यहाँ में हरकत कर रही होऊँ।" इशरत इस दलील से परास्त हो गया। लेकिन उसकी हठ स्थिर रही। तब बानो ने अपनी कमर से खंजर निकाल लिया। कहा अगर वह नहीं जायगा तो खंजर बानो के सीने के पार होगा। तब इशरत न रुक सका। अन्धकार में दो प्रेमियों ने विदा ली। बाहर शोर मच रहा था और लोगों का दौड़ना-फिरना आरम्भ हो गया था।

एक प्रगाढ़ आलिंगन के बाद आँखों में आँसू लिये इशरत वहाँ से दूसरी ओर निकल गया। बानो अँधेरे में देखने का निष्फल प्रयत्न करते कुछ समय वहाँ रुकी तदुपरांत बाग के बाहर आ गई।

स्लीमन के सामने उसकी पेशी हुई तो स्लीमन बिफर गया "तुमने उसे भगा दिया' । मीर साहब गिड़गिड़ाने लगे । पर गुस्सा था जो कम होने में नहीं आ रहा था । काफी देर तक शान्ति से स्लीमन और मीर साहब की बातचीत सुनती रही ।

मीर साहब कह रहे थे 'इस लड़की का कोई गुनाह नहीं । खुदा के लिये इस पर रहम कीजिये । गलती मेरी थी जो बिना समझे इसरार के साथ मैंने इसका निकाह पढ़वा दिया । अपनी सारी वफादारियों के सिले में मैं इसकी जिन्दगी की अमान चाहता हूँ आका । इसरार के लिये चाहे जो सजा मुनासिब समझें अता फरमा दें । लेकिन मेरी बच्ची को बख्श दें । इस बेचारी को तो पता भी नहीं इसरार कैसा था । मैं इसे अपने साथ वापिस ले जाने आया हूँ और जल्द किसी नेक आदमी से दूसरा निकाह बाद तलाक पढ़वा दूँगा । हुजूर, किसी बेगुनाह को सजा मिले आपके दरबार में ऐसा जुल्म नहीं हो सकता । बन्दा गुलाम की यही गुजारिश है कि इस नादान छोकरी का गुनाह माफ करें ।"

स्लीमन काटने को दौड़ रहा था । गुस्से से उसका चेहरा सुर्ख होता और फिर अपनी स्वाभाविक अवस्था में आता । मीर मुन्शी जब इसरार का प्रसंग उठाते लगता स्लीमन तुरन्त किसी की गर्दन दबोच कर कातर मुजरिम के जुर्म का बदला ले लेगा मगर जब बानो की बात होती तो वह कुछ शान्त हो उसकी ओर देखने लगता । अलबत्ता उसकी दृष्टि में मीर साहब का कथन सही था । शायद सोच रहा था बानो को इसरार के जुर्म की सजा दी जानी उचित नहीं । लेकिन उसका मस्तिष्क कुछ और निश्चय कर रहा था । मीर साहब की गिड़गिड़ाहट अधिक होने पर उसने यही प्रकट कर दिया ।

बोला अकेला यही नहीं यह लड़की भी शामिल है । सब राज इसरार को बताने की गरज से शायद इसने अपनी झूठी बदनामी बर्दाश्त की थी । मगर यह तुम्हारी बेटी है मीर मुन्शी । तुमने हमारी नमक-

दारी से कभी मुंह नहीं मोड़ा। हम इसे मुआफ़ कर देंगे।"

बानो तड़प उठी "मुझे आपकी रहमतों की ज़रूरत नहीं स्लीमन साहेब। मैं सज़ा के लिये बिल्कुल तैयार हूँ। और ऐलानियां कुबूल करती हूँ कि मैं अपने शौहर के साथ रेज़ीडेंसी में जासूसी करने की बराबर हिस्सेदार थी। हम आपकी मक्कारियों का तमाशा देखना चाहते थे जो इस दौरे के दिनों हमने जी भर देख लिया। अब सारी दुनिया जान जायेगी आप और आपकी कम्पनी का मन्शा क्या है, उस मन्शा के पीछे आपकी ईमानदारी का ढोंग कैसा है। उस ढोंग में आप कम्पनी के एक आला हाकिम बादशाह के खिलाफ़ किस जुनून मोहब्बत और सच्चाई से हिस्सा ले रहे हैं।

मीर साहेब दौड़ कर बानो के निकट आये और बार-बार उसे रोकने का प्रयत्न करने लगे। पिता की ममता स्लीमन के बदल जाने वाले फ़ैसले का ढंग देख चुकी थी उसके बाद उनकी लाडली बेटी मौत की बाहों में नज़दीक पहुँच जाती। वह बानो को समझाने का प्रयत्न करने लगे "चुप कर नेक ज़ात दुख़्तर। एक चोरी ऊपर सीना जोरी। मौत से मुआफ़ी मांगो सरकार से। यह अवध का दरबार नहीं है इंसाफ़ की अदालत है। साहेब बहादुर तुझे बख़्श देंगे। मैं कहता हूँ लड़की अपनी कतरनी जैसी ज़ुबान को काबू रख।"

बानो सुनते ही आग हो गई। मीर साहेब अपना काम बनाने के लिये बादशाहे अवध को गाली देकर स्लीमन के बराबर जीतना चाहते थे। उसने मीर साहेब को रोका और कहा 'क्या हक़ है आपको इस दरबार के खिलाफ़ ज़हर फैलाने का जिसका आप को तजुरबा नहीं। आप की नज़र में यहां इंसाफ़ नहीं होगा? आप समझते हैं आपके यह फ़िरंगी हाकिम इंसाफ़ करना जानते हैं जो बेईमानी और मक्कारी से एक नेक और हमदर्द दोस्त के हक़ूक़ समेटने की कोशिश कर रहे हैं। चुप रहिये अब्बा हुज़ूर चुप रहिये। मैं इस ज़िन्दगी से मौत हज़ार दर्जे

बेहतर समझती हूँ जिसमें अवध का कोई वाशिन्दा अपने बादशाह को गालियां देकर मेरे महल को नापाक करने की नाकामयाब कोशिश करे।"

स्लीमन गुस्से में कहने लगा 'सुना मीर मुन्शी   तुम इसी की सिफारिश कर रहे थे। मैं इसे नहीं बख्श सकता। यह अपने बद-चलन की सजा पायेगी और देखेगी अंग्रेज कैसा इंसाफ करते हैं।"

"देख चुकी हूँ साहेब बहादुर, देख चुकी हूँ" वाजो मुस्कराती आकृति से कहती रही "कम्पनीजी का कर्मचार इसकी शहादत देगा। बहुमनी मीर का किस्सा आपके इंसाफ की तारीफ करेगा। महीपत के जुल्म का शिकार वह अब मौन बना चुप-चाप कर आपकी बात का दम भरेंगे और कहेंगे महीपत की वजह से उन्हें उतना ही नुकसान हुआ है जितना आप कहते हैं। गांव-गांव और सड़क-सड़क अभी अपनी सड़कें और कुंए, मुल्क की हरी-भरी ज़मीन, यहां की खुशहाली और आबादी, सब चीख चीख कर आपके इंसाफ की दोहाई देगी और सारे आलम को बता देगी कि आप कितने बड़े इंसाफ पसन्द हैं। यह इंसाफ नहीं जुल्म है। मैं मौत से नहीं डरती। मैं ऐसे इंसाफ और इंसाफ करने वालों पर थूकती हूँ।

स्लीमन का सारा शरीर कांप गया। बहुत रोकने पर भी वह न रुक सका और आगे बढ़ एक तमाचा वाजो के सीधे गाल पर लगा दिया। इसके बाद उसने बाहर तैनात पहरेवाले को बुलाया और कहा "इस लड़की को हिरासत में लो। कल लखनऊ भेजा जायेगा। मिस्टर बाट सन के क़त्ल में इसकी परमन्त थी। रेजीडेंसी में इसी ने मेरी मौत की साज़िश की थी। इस पर बाक़ायदा मुक़दमा चलेगा।"

पहरेवाला वाजो को ले जाने लगा तो मीर साहेब स्लीमन के पांव पड़ गए। उनकी आंखों से आंसू बहने लगे और उन्होंने स्लीमन से अपनी बेटी की ज़िन्दगी की खैर चाही। गिड़गिड़ाते हुए उन्होंने अपने मालिक से विनती की "मैं हुज़ूर के पांव की क़सम खाकर यकीन दिलाता हूँ कि

आगे इस लड़की की जबान से ऐसा बाहर कभी नहीं निकलेगा। खुदा के लिये इस बार उसे बख्श दीजिये। शायद वह पागल हो गई है। उस पर रहम कीजिये मेरे अच्छे मालिक। मैंने बरसों आपकी खिदमत की है। हमेशा आप लोगों को अपना माई-बाप मानता रहा। आज उसी खिदमत का वास्ता देकर आप से अपनी बेटी की भीख मांगता हूँ।

स्लीमन ने पहरेवाले को इशारा किया और सम्भल अपना पैर मीर साहेब की पकड़ से छुड़ाता हुआ बोला 'तुमने इफरत के बारे में इत्तिला देकर बड़ी भारी वफादारी का सबूत दिया है मीर मुन्शी। हम उसकी कद्र करते हैं लेकिन तुम्हारी बेटी को रिहा करने का हुक्म नहीं दे सकते। वह हमारी नहीं अब ईस्ट इंडिया कम्पनी की गुनाहगार है। उसका मुकदमा महकमे मुराफिआ के सामने पेश होगा। लेकिन हम वादा करते हैं। हिज मैजेस्टी से सिफारिश करवा कर उसे कम से कम सजा का हुक्म दिलवायेंगे। तुम्हारी वफादारी की ऐवज आज से तुम्हारी तनख्वाह में हम पांच रुपया माहाना का इजाफा करते हैं।

मीर साहेब के उत्तर की प्रतीक्षा किये बिना इसके बाद स्लीमन दूसरे खीमे में घुस गया। जाने से पहले उसने पहरेवाले को कुछ आदेश दिया और मीर साहेब की तरफ इशारा किया। मीर साहेब समझ गए। पहरेवाला मुस्तैद होकर बाट देख रहा था कि कब मीर साहेब दूसरे खीमे में जाने का अवसर देखें और कब वह अपनी वफादारी का प्रमाण देने के लिये उन्हें रोकने का अवसर पाए।

वह उदास और परेशान खीमे के बाहर आए। कुछ फासले पर पहरेवाले के साथ बानो खड़ी दिखाई दी। वह कुछ देर उसे देखते रहे और तब दौड़ कर उससे लिपट गए। उनकी आँखों से निरन्तर आँसू बहने लगे और वह बानो को अपने शरीर से चिमटाए देर तक रोते रहे। बानो उनकी दशा से चकित हो रही थी। तभी मीर साहब ने उसे और अधिक आश्चर्यविमूढ़ कर दिया। वह बोले "खुशनसीब हो मेरे बच्चो

को अपने वतन पर कुरबान होने का जज़्बा पैदा कर सके। खुशनसीब है इसरत, और खुशनसीब है मिर्जा जान जिसके नाम पर बग़ावत का दाग नहीं। आज तक मैंने गुनाह किया। धोखा दिया अपने वतन को, अपने बादशाह को और खुद अपने आप को। मुझे मुआफ कर बेटी मुझे बख्श।'

और यह कह कर वह दोबारा स्लीमन के दूसरे खीमे की ओर बढ़े जहाँ पहरेवाला सतर्क खड़ा था। खीमे के सामने पहुँच वह दो क्षण रुके और फिर ज़ोर से हँस दिये। उनके अट्टहास से वातावरण सिहर उठा। पहरेवाला बन्दूक सम्हालने लगा। स्लीमन खीमे से बाहर निकल आया। मीर साहेब की हँसी थी जो बन्द होने में नहीं आ रही थी।

स्लीमन ने बाहर निकल मीर साहेब को देखते हुए भृकुटियां तान कर सवाल किया "क्या है ?" लेकिन तभी मीर साहेब अचानक लौट कर स्लीमन की ओर पीठ किए खड़े हो गए और ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाते वहाँ से भागे।

"कम्पनी सरकार बेईमान है। स्लीमन बदमाश है। बादशाह अच्छा है। बादशाह की हुकूमत अच्छी है।

आगे चलकर वह फिर ज़ोर से हँस दिये। आवाज़ आम के बाग में सिमट गई। स्लीमन ने वापिस लौटते हुए कहा "पागल हो गया।" बानो ने सुना समझा और उसकी आँखों से दो बूंद आँसू आ गये। मीर साहेब के ऐसे भयंकर परिवर्तन का विचार तो उसे कभी न आया था। वह सोच रही थी काश इनमें वतनपरस्ती का कुछ जज़्बा वक्त रहते पहले पैदा हो जाता तो अपने बादशाह की जिन्दगी कीमती चिर गत अंजाम से बचते। लेकिन सब कुछ वक्त बीत जाने पर गुजर रहा है। भगवान् जाने क्या होने वाला था। कहानी सीमता से उपसंहार की ओर बढ़ रही है। मीर साहेब दीवाने हो गए। इसरत फरार घोषित हो जायेगा। खुद उस पर मुकदमा चलने की बात तय है। फिर कैसे

काम चलेगा। कौन दुनियाँ को बेईमानी की दास्तान और किस त
बयान करेगा? क्या बादशाह उन लोगों की ज़बान पर भरोसा कर स
जो मुखबिरों के कटघरे में खड़े उनकी वफ़ादारी का दम भरेंगे। क
स्लीमन के सामने ऐसा सम्भव हो सकता है? शायद नहीं और क
नहीं। इसी का दूसरा नाम दुर्भाग्य है। इमारत और बागों का दुर्भाग्
बागों और इमारत के साथ अवध के दीगर लाखों लोगों का दुर्भाग्
खुद बादशाह वाजिद अली शाह का दुर्भाग्य। किसी ने सच कहा
अवध की शम्मा प्रसिद्ध है। लेकिन उससे भी प्रसिद्ध है शम्मा क
बीत जाने पर अंधेरे में दमकनेवाले जो जुगनू जो अपना शरीर फूँक
प्रकाश की व्यवस्था करते हैं। अफ़सोस बच्चे खेल खेल में उन पर
जुगनुओं को भी कपड़ में बन्द कर लेते हैं। यह दुर्भाग्य है! क
और कैसा दुर्भाग्य!

तेरह

लखनऊ की सीमा से निकल डाकू गंगाबख्श सिंह रेवा में अपने पुत्र रणजीत सिंह के पास आ गया। एक बार खून मुंह लग जाने के बाद रणजीत सिंह अब नियमित रूप से डकैती डाल रहा था। दिखावे के लिए जमींदारी थी जिसका लगान वह समय-समय पर देता रहता था, किन्तु आय का ठोस उपाय डकैती ही था जिसके द्वारा आते-जाते राहगीरों काफिलों और बारातों इत्यादि से उसे मोटी रकमें प्राप्त होतीं।

गंगा सिंह वहां गुप्त रूप से रह रहा था। आमिलदार दसम सिंह अभी तक इस इलाके में था और लखनऊ से सूचना पाकर कई बार रणजीत सिंह के मकान की तलाशी ले चुका था। गंगा सिंह उस वक्त जंगलों में छिपा रहा करता। मकान के भीतरी हिस्से में एक तहखाना भी था जहां लूट का माल जुटा करता और गंगा सिंह जंगल के जीवन से ऊब कर रहने आ जाया करता।

रात के समय रेवा के जंगलों से निकलना बहुत ज्यादा खतरनाक था। कोई भाग्यशाली ऐसा होगा जो गंगा सिंह के कोप का भाजन न बने। कभी-कभी दिन में भी आक्रमण हो जाया करता था। यहां यह बात स्वीकार कर लेना न्यायसंगत रहेगा कि अवध की बादशाहत इस दिशा में सचमुच परास्त हो चुकी थी। हालांकि इसका कारण शाही प्रबन्ध की ढील न होने के स्थान अन्धेरी ऊबड़-खाबड़ सड़कें घने जंगल और चौकियों की अपर्याप्त संख्या जो रेजीडेंट के दबाव से चाहते हुए भी बढ़ न सकी थीं। किन्तु दोष अवध के शासन पर आना स्वाभाविक था। कुछ लोगों की लापरवाही भी थी। जानते-बूझते वह रातों में रुपया पैसा लेकर सफर कर बैठते और लुट जाते। पुलिस तक नौबत

कभी तब तक शत्रुओं का पता न चलता। इस तरह दिनों-दिन शत्रुओं का हौसला बढ़ता चला था।

एक बार इसी देश के जंगल में रणजीत सिंह और उसके पिता को दो एक राहगीर मिले जो देखने में अमीर जान पड़े। वह सिक्ख और सिपाही थे। रात होने में कुछ समय बाकी था और वह अपनी-अपनी देखा दाव परखने का विचार करते कदम बढ़ाए जा रहे थे। किन्तु जब आखिरी कोस पड़ा तो ऐसा जंगल मिला जहाँ दिन में अंधेरा रहे। तब इन्हें अपनी भूल ज्ञात हुई। उसी समय रणजीत सिंह ने इन पर धावा बोल दिया।

सिपाही चारों ओर से घिर जाने के बाद साहस करता आगे रणजीतसिंह के बिल्कुल नजदीक आ गया और कहने लगा "अगर आप लोग गंगा बख्श सिंह के आदमी हैं तो हमें अपने घिर जाने की खुशी है। लेकिन अगर आप दूसरे डाकू हैं तो हमारी जमा जोखी लेकर बाहर हमें चलता कर दीजिए। हमारे पास दस-बारह रुपये के अलावा और कुछ नहीं है जो आपको मिल सके। अलबत्ता इस बेचारे गाड़ीवान के दो बैल जरूर हैं जो शायद आप लेना पसन्द न करें।

इस पर रणजीत सिंह ने अपने पिता की ओर देखा जो वहीं खड़ा था। गंगाबख्श सिंह ने कोई विशेष इशारा किया जिस पर रणजीत सिंह ने घुमा फिरा कर सिपाही से हर्ष का कारण पूछा जो गंगा बख्श सिंह से मिलने पर उसे प्राप्त होने वाला था। सिपाही ने उत्तर दिया "हमें उनसे कुछ जरूरी काम है इसलिये मिलना चाहते थे।

उत्तर सुन कर गंगा सिंह स्वयं हँसता हुआ आगे आया और बोला 'उस डाकू से तुम्हें काम हो सकता है बड़े ताज्जुब की बात है। बहरहाल तुम्हारे साथ जो लड़की है अंग्रेज मालूम देती है। हम इसे अपने पास रखेंगे और मोटी रकम लेकर छोड़ेंगे। सुना है फिरंगी अपनी जान बचाने की एवज बहुत कुछ देने पर तैयार हो जाते हैं। और जब

गया सिंह हारकर लौट आया और अपने बेटे से परामर्श करने लगा।

अब स्थिति यह हुई कि गंगा सिंह सिराज और सिस्की से होने वाली भेंट सम्बन्धी बातचीत का मर्म जानने के लिए बहुत उत्सुक हो गया। यह स्वाभाविक था। उधर वह दोनों कोई ठोस कारण बताने से इन्कार कर रहे थे। रणजीत सिंह की राय थी यह अवश्य जासूस है गंगा सिंह को पकड़ने का ढोंग कर रहे हैं। दुर्भाग्यवश उसे पहचानते नहीं मगर जानना चाहते हैं वास्तव में वह देश में मिल सकता है या नहीं। इसके बाद यहां से छूटने पर शाही मदद से उसे पकड़ने का कोई उपाय करेंगे। इस सम्बन्ध में उसने अपनी धारणा व्यक्त की इनके नाटक का सिर्फ इतना मतलब है कि आप के यहां होने का प्रमाण पा लें। इसके बाद मुझे पकड़ कर अच्छी तरह मारा-पीटा जायेगा ताकि मैं आपका पता बता दूं। वरना इन लोगों को आप से काम क्या हो सकता है। जरूर यह आदमी शाही दरबार का और लड़की रेजीडेंसी की तरफ से मुकर्रर हुई है। आप ने सुना होगा फिरंगी औरतें बड़ी दिलेर होती हैं।

गया सिंह इस को एकदम अस्वीकार न कर सका। पर उसका कहना था जैसा रणजीत सिंह चाहता है जासूसों को उनके जुर्म की सजा देने से पहले किसी तरह यह निश्चय कर लिया जाये कि कहीं वास्तव में उनका कहना ठीक तो नहीं। सम्भव है वह लोग सचमुच गंगा सिंह से मिलने आये हों। लेकिन रणजीत सिंह इसके लिए बिल्कुल तयार न हुआ। मार जबरदस्ती के अतिरिक्त अलमगलाहट से या यह बता कर कि यही गया सिंह और उसका लड़का है सिवाय मुसीबत खरीदने के और कोई लाभ नहीं था। बूढ़े गया सिंह को अपने बेटे की बात मानने के अतिरिक्त कोई चारा न रहा।

अत रात के समय आखिरी प्रयत्न किया गया। गंगा सिंह ने सिस्की पर कठोरता न बरतने की हिदायत दी। लेकिन रणजीत सिंह पुराना बाप था। उसने अपने दोनों कैदियों के मध्य प्रेम की अज्ञात भावना का

धारपा लिया था। उनका विचार था, अब सिम्मी के सामने उसके सा
पर सख्ती की जायगी तो वह फौरन पत्र लिखने पर तत्पर हो जायगी

रात के वक्त गंगा सिंह और रणजीत उन लोगों के सामने भाये
रणजीत सिंह शराब पिये हुए था। उसकी आँखें सुर्ख और भयानक
रही थी। गंगा सिंह अनिश्चित मनोदशा में उसके साथ था। दो औ
व्यक्ति उनके पीछे भा रहे थे जो विभिन्न प्रकार लोगों को पीड़ित क
की कला में पारंगत थे। अभागियों से रुपया ऐंठने या माल का प
ठिकाना खोजते समय इन सबसे चौड़े डील डौल के व्यक्तियों का हु
देखते बनता था और सिगर से सिगैर आदमी पानी मांग जाता। ग
सिंह का मन इन तैयारियों से शायद ज्यादा खुश नहीं था। हाला
यह बातें उसके लिए नयी नहीं थी। लेकिन बार-बार यही वहम उठ
कि कहीं इस लड़की और इसके साथी को वास्तव में उससे मिलना हु
तो उसके पक्ष में इससे बड़ी और जुल्म की मिसाल नहीं मिल सकेगी
फिर भी वह अपने बेटे क साथ तहखाने गया जरूर।

सिम्मी इन लोगों को देखकर परेशान हुई। उसे एक और कों
गया था और शिहाब को रणजीत सिंह के सम्मुख ले जाया गया था
इरादा बिल्कुल स्पष्ट था। आँखों ही आँखों शिहाब को विवशता प्रक
कर वह शान्त और गम्भीर भाव की मुद्रा पर विचार करने लगी।

पीड़ा देने में विशेषज्ञ दोनों व्यक्तियों ने रणजीत का इशारा
शिहाब के पीछे जा उसके दोनों हाथ एक ही झटके में मोड़ दिये
शिहाब दर्द से कराह उठा। लेकिन उसने अपनी सिसकारी बराबर
में दबाये रखी। सिम्मी ने अपनी आँखें बन्द कर ली। रणजीत सि
ने सवाल किया—"बोलो क्या तुम लोग शाही जासूस हो?" शिहाब
जल्दी से सर हिला दिया। यह आरोप अब से पहले उसके सम्मुख न
या गया था। सिम्मी कारण सोचती मन ही मन शिहाब की पीड़ा
विषय में दुखी होने लगी।

रणजीत सिंह ने प्रगला सवाल किया—"तब तुम खत लिख कर अपने घर वालों से रुपया क्यों नहीं मंगवाते ? हम प्राखिरी बार पूछना चाहते हैं।" उसने सिख्खी की तरफ देखा जो प्रब नकरात्मक सर हिलाने लगी थी।

सिहाब कठिनाई से उत्तर दे सका— 'हमें अपने मरने का डर नहीं। लेकिन हम आपको यकीन दिलाते हैं, हमारे वाल्दैन इतने अमीर नहीं जितना आप समझ रहे हैं। शाही जासूस होने का सवाल तो बिल्कुल जुदा है। हम दोनों किसी खास काम से गंगा सिंह से मिलने यहाँ आये थे। मगर आप शाही जासूस होने का तलावार समझ कर हमें सजा दे रहे हैं तो यह आपकी भूल है।"

रणजीत सिंह उसकी बात से प्रभावित नहीं हुआ। उसने दूसरा इशारा किया और पीछे हाथ पकड़े बड़े साथियों ने उंगलियों में उंगलियां उमस्च मरोड़ना शुरू किया। इससे सिख्खी का हौंसला पस्त हो गया। सिहाब के चेहरे पर दुख की अभिव्यक्ति सजीव हो उठी। वह न रुक सकी और चिल्ला कर बोली—"ठहरो जालिमो ! इस तरह तकलीफ देने से अच्छा है कि तुम हमें मार डालो। तुम्हें रुपया चाहिए न। मैं खत लिख दूंगी। मेरे वालिद तुम्हारी मांग पूरी कर देंगे। लेकिन इससे पहले तुम हमें वादा दोगे कि हमारी मुलाकात गंगा सिंह से करवा दोगे।"

रणजीत सिंह विजय का उत्साह लिए सिख्खी के बराबर आया और कहने लगा—"हम यह वादा कैसे दे सकते हैं ? गंगा सिंह को हम नहीं जानते। तुमसे उसकी मुलाकात कैसे करवा देंगें ?"

सिहाब ने कहा— 'तुम हमें धोखे में नहीं रख सकते भाई। अब हमें यकीन हो गया है कि तुम जरूर गंगा सिंह के गिरोह के आदमी हो। देश में दूसरे इलाके का डाकू हिम्मत नहीं कर सकता। इसीलिए तुम्हें हम पर शाही जासूस होने का शक हुआ ? लेकिन हम तुम्हें यकीन दिलाते हैं हमारा शाही मुलाजमत से कोई तालुक नहीं। असलवत्ता

हम अपने बादशाह के हमदर्द चाकर हैं। उसी हमदर्दी के नाते गंगा सिंह से मिल कर कुछ पूछना चाहते थे।

इस बार गंगा सिंह बीच में बोल पड़ा। उसने जानना चाहा कि वह लोग क्या पूछना चाहते थे।

"जब तक बतायोगे नहीं तुम्हारा छुटकारा नामुमकिन है।" उसने गम्भीरता से अपने बेटे की ओर देखते हुए कहा और वजह मालूम होने पर, हो सकता है, हम तुम पर रहम कर दें। पर तुम्हें यकीन दिलाना होगा कि तुम हमें धोखा नहीं दे रहे। और अपने वाजिद को खत लिख कर हमारे लिये रकम का बन्दोबस्त करना होगा।

सिहाम ने कहा आप फिर उसी बात पर उतर आए। हम कह चुके हैं गंगा सिंह के अलावा हम और किसी को नहीं बता सकते हम उससे क्यों मिलने आए हैं।'

रणजीत सिंह रुख स्वर में बोला "इसका दूसरा मतलब तुम्हारी मौत है। तुम लोग बातों से मानने वाले नहीं। हमें न तुम्हारे काम से मतलब है और न तुम्हारे जासूस न होने से। हमें रुपया चाहिए, तुम खत लिख दो रुपया आ जाए, हम तुम्हें छोड़ देंगे। उसके बाद जिससे जी चाहे मिलते रहना।"

सिल्वी कहने लगी "मैं खत लिख दूँगी। लेकिन तुम लोग सिहाम पर जुल्म न करो।

सिहाम ने टोका "खत नहीं लिखा जायेगा। हम बुज़दिल नहीं हैं सिल्वी। हमारे साथी हमारी लाश पर आँसू बहायेंगे जब उन्हें पता चलेगा हम किस काम के लिए रवाना हुए थे और किस तरह एक मामूली खतरे से हार गये। इन लोगों का जो मिज़ाज चाहे करने दो।"

रणजीत सिंह बेंच पर बौखला गया। उसने अपने साथियों को इशारा किया और वह नई पीड़ा की तैयारियाँ करने लगे। पर पर रस्सी खोली गई। उसे एक तख्त पर लेटा दिया। सिहाम की आँखें

फँसनी आरम्भ हुई। सिम्मी उसका कष्ट देख अपने होंठ काटने लगी। रणजीत सिंह उन्मत्त हो अट्टहास करने लगा। गंगा सिंह कुछ देर देखता रहा। इसके बाद उसके साहस ने न जाने क्यों जवाब दे दिया और वह उस कमरे से अपने सोने के स्थान पर आ गया।

बहुत देर बाद रणजीत सिंह लौटा तो गंगा सिंह ने उदास स्वर में सवाल किया "कुछ मिला ?" नकारात्मक सिर हिला रणजीत सिंह ने अपनी असफलता बयान की। रणजीत इसके बाद वहां से जाने लगा। तब गंगा सिंह ने रोका और कहा 'यह लोग कितने बहादुर और दिलेर हैं। अब मुझे शक नहीं यह जरूर मुझसे मिलने आये होंगे।'

"काबिल जासूस हमेशा दिलेरी और बहादुरी दिखाते हैं। अभी वह सिर्फ घबराया हुआ है। कल तक होश ठिकाने आ जाएंगे। खुद मान लेगा कि वह कौन है और क्यों यहाँ आया था। तभी चुपचाप बात निकाल देगा।" रणजीत का जवाब आया।

गंगा सिंह उदास हो गया। उसने अपना सिर हिलाया और प्रतिवाद किया तुम भूलते हो रणजीत। यह लोग इतने कमजोर नहीं। तुमने सुना होगा यह अपने आप को बादशाह का हमदर्द बता रहे थे। सच्ची हमदर्दी रखने वाले मौत से नहीं डरते।'

सिम्मी चूंकि अंग्रेज लड़की थी इसलिये रणजीत को हंसी आ गई। उसने अपने पिता को समझाने का प्रयत्न किया "यही दलील उनकी मक्कारी साबित करने के लिये बहुत काफी है बापू। अंग्रेज लड़की चाहे जनम की हमदर्द नहीं हो सकती।"

गंगा सिंह न माना। उसने जवाब दिया 'इतनी तकलीफ के बाद भी वह अपनी जबान खोलने को तैयार नहीं। पाँचों उँगली बराबर नहीं होतीं।"

रणजीत ने फैसला सुना दिया 'कुछ भी हो। मैं कतई राय नहीं दूंगा कि आप अपने असली नाम और ठिकाने से उन लोगों पर यकीन करते या मिलें। आप की इच्छा हो तो उन्हें बिना कुछ मालूम किये छोड़ा जा सकता है। लेकिन हम गिरफ्तारी का कोई खतरा उठाने को तैयार नहीं। लखनऊ जेल का जेलर बदल चुका है और अब किसी को छुड़ा लेना एकदम असम्भव है।"

सोते समय गंगा सिंह बेचैन रहा। जिस्मी के शब्द बार-बार याद आये। शाह की हमदर्दी में कोई अंग्रेज लड़की अपनी जान गंवाने पर आमादा रह सकती है तो क्या गंगा सिंह अपनी गिरफ्तारी का जरा सा खतरा नहीं उठा सकता ? उठा सकता है। बादशाह के प्रति उसके दिल में कभी-कभी ममता जाग पड़ती थी। उसे शिकायत रहा करती आमिलदार और दूसरे सरकारी कर्मचारियों से। वाजिद अली के बारे में उसने जो भी सुना अच्छा सुना। बड़ा नम्र और सीधा है। लोगों पर यकीन कर लेता है। मुजरिम उसके सम्मुख पहुंच याचना करे तो छोड़ भी देता है। आज उसके चारों तरफ मुसीबत छाई हुई है। सुनते हैं रेजीडेंट ने मुल्क का दौरा किया है। हुकूमत लेने की तैयारियां हो रही हैं। दूसरे मुल्क के लोग यहां राज्य करेंगे। बादशाह को दूध की मक्खी की तरह निकाल फेंका जायेगा। उसी बादशाह के लिये यह लड़की मिटना चाहती है। शायद कोई भेद की बात है जो जबान पर तैयार नहीं। मौत कुबूल करने पर तैयार है मगर अपनी बात पर अड़ी हुई है।

गंगा सिंह को बार-बार अपने आप पर क्रोध आया। ऐसा भी क्या जुर्म और क्या डर ? उन दोनों के मालूम रहने पर भी क्या बुराई हो सकती है ? आमिलदार कई बार मकान की तलाशी ले चुका है। क्या मिला ? मन की शान्ति कर लेने के लिये जरा सा खतरा और उठा लेने में क्या बुराई है। बादशाह के लिए गैर मुल्क और गैर मज़हब की लड़की जब इतना कुछ कर सकती है तो क्या यहां का बाशिन्दा

कुछ नहीं करेगा ?

सुबह रणजीत से बिना कोई बात किये वह सिल्की और सिहाब के सामने आ पहुँचा ।

बिना भूमिका उसने कह दिया "अगर मैं कहूँ मैं गंगा सिंह हूँ, तो क्या तुम मुझ पर यकीन कर लोगी और बता दोगी तुम मुझ से क्यों मिलना चाहती हो ?"

सिहाब की पीठ पर हंटरों के निशान थे । वह औंधा पड़ा था । सिल्की बराबर बैठी उन्हें देख रही थी । गंगा सिंह के उत्तर में सिहाब सीधा हो गया और सिल्की कहने लगी 'हम पहले से जानते थे । खुदा का शुक्र है आपने मौत से पहले हम पर ज़ाहिर कर दिया । हम आपसे कुछ मांगने आये थे ।"

गंगा सिंह सिल्की की मीठी वाणी से प्रभावित हुआ । अन्तःकरण में छिपी कभी भावनायें सजीव हो उठीं । जीवन में पहली बार आज किसी ने उससे कुछ मांगा था । और जो मांगा गया था प्रत्यक्ष उसके पीछे बादशाह का हित रहा होगा । वह प्रसन्न और सन्तुष्ट हो गया ।

उसके मुख से निकल गया "बेटी, अगर मैं तुम्हें कुछ दे सका तो ज़रूर दूंगा । बोलो क्या मांगना चाहती हो । यहाँ से रिहा होना चाहती हो ?"

"नहीं !" सिल्की ने उत्तर दिया मैं आपके हाथों हलाक हो जाऊँ यही चाहती हूँ मगर मरने से पहले आप से एक वादा ।

"वादा !" गंगा सिंह की उत्सुकता सजीव हुई । वह आगे बढ़कर सिहाब के पास बैठने और उसके सर पर किसी अज्ञात प्रेरणावश सहानुभूति पूर्ण हाथ फेरने लगा ।

सिल्की ने कहा "हाँ वादा चाहती हूँ हुजूर । आप को अपने धर्म की कसम खानी होगी । हम आस से बड़ी-बड़ी उम्मीदें लेकर आये हैं ।"

गंगा सिंह का उत्तर था 'मैंने तुम्हें बेटी कह दिया है । हमारे यहाँ

की रीत है, जिसे एक बार बेटी कहा हमेशा उसे बेटी की तरह मानते हैं। भौर बेटी को हमेशा कुछ देते रहना हमारा धर्म है। तुम समझ लो मैंने कसम उठा ली।"

सिल्वी सिहाब की भोर देखने लगी। अब वह उठ खड़ा हुआ था और अपनी पीड़ा की अभिव्यक्ति करती आँखें गंगा सिंह की ओर लगाये कुछ सोच रहा था। तभी उसे कुछ विचार आया और सिल्वी के बोलने से पहले वह कहने लगा "बुजुर्गवार, आप तस्लीम करते हैं, अमीनुद्दौला वजीर पर हमला करने के लिये आप से रेज़ीडेंट स्लीमन ने कहा था ?

"नहीं।" गंगासिंह ने वास्तविकता बता दी "उसने मुझे गिरफ्तार कराया था इसलिये मैंने अपना बदला लिया।"

सिहाब तुरंत बोला—"लेकिन उस आदमी का बयान कुछ और है जो उस दिन आप और रेज़ीडेंट स्लीमन के दर्मयान तसफ़िया कराने में कामयाब हुआ था। उसका कहना है वह न होता तो शायद आप स्लीमन को हलाक कर डालते।"

गंगा सिंह ने इसे स्वीकार किया। बोला— 'उसका कहना बिल कुल सच है। भौर अगर उसने तुमसे कहा है कि वजीर से बदला लेने के लिए मुझे स्लीमन ने भड़काया है तो वह बिल्कुल गलत होगा। कारण वह अच्छी तरह जानता था मैं वजीर को मटियामेट करने की कसम खा चुका था।

'आपने बजा फरमाया" इस बार सिल्वी बोली—"उसने यह बात तस्लीम की है। लेकिन उसने हमें कुछ और बताया है। वह स्लीमन का मुलाज़िम है। उसका कहना है, स्लीमन ने आपकी पीठ पर बंदूक रखकर बादशाह पर गोली चलाई है। हम जानना चाहते हैं क्या वजीर के साथ-साथ आपको बादशाह सलामत से भी बदला लेना था ?"

गंगा सिल्वी का तात्पर्य न समझ सका। यह बात राजनीति से सम्बन्ध रखती थी। गंगा सिंह अपढ़ गंवार था। उसे आता था मारना

या मरना। ' मैं तुम्हारा मतलब नहीं समझा बेटी।" उसने कहा।

सिरती नजदीक आ गई और प्रभावशाली शब्दों में बताने लगी— "यह सबकी बदकिस्मती है वजीर अमीनुद्दौला से आपकी दुश्मनी हुई और आपने उनसे बदला लेने में शानदार कामयाबी हासिल की। लेकिन बुजुर्गवार आप नहीं जानते आप की वजह से स्लीमन कितनी बड़ी साजिश करने में कामयाब हो गया और वजीर को बरतरफ करा कर अवध को कितना कमजोर बना गया।"

'हां हां।" गंगासिंह ने स्वीकार किया— 'मैंने सुना था बादशाह इस झगड़े के बाद वजीर से नाराज हो गये थे और उन्हें निकाल दिया था।"

'नाराज किया गया था बुजुर्गवार।" शिहाब ने कहा 'एक साजिश थी जिसकी कामयाबी से अवध की हुकूमत के हाथ काट डाले गये।"

"मैं यह सब नहीं समझता। गंगा सिंह ने कहा— 'मुझे वजीर से बदला लेना था। रेजीडेंट ने मुझे रास्ता बताया और मैंने उस पर अमल किया। हां, शायद उसने अपना कौल नहीं निभाया। ठीक वक्त पर वह मौके पर पहुंच गया था और मेरे चार साथियों को पकड़ ले गया। हालांकि मुझे इसकी ज्यादा फिक्र न हुई। वह सब आदमी साहेब बहादुर की मारफत मेरी मदद करने आये थे।"

'आह!" शिहाब लम्बा सांस लेते हुए कहने लगा— अब सुनिए उसने आपकी मदद से किस तरह अवध की पूरी रियाया को तबाह बरबाद करने की चाल खेली है। जनाब आप नहीं जानते अंग्रेज हमारी जमीन पर कब्जा करना चाहते हैं। वजीर चाहे कितने बुरे थे मगर अपने ओहदे के काबिल और समझदार थे। फिरंगियों की बीन पर उनका सर सांप के बच्चे की तरह हिलने पर मजबूर न हुआ। उसे हटाये बिना रेजीडेंट अपना माहेरा फैंकने के काबिल न था। आप से उसने कहकर हमले की तजवीज की। और उधर बादशाह को समझाया गया, हमला मसनूई था। नतीजे में वजीर साहेब को हटाया गया।

और उनकी जगह हुआ एक ऐसा वज़ीर जो बज़ारत की चमक में अंधा होकर फिरंगी हुक्कामों की खुशामद में अपनी बेहतरी समझ रहा है। आप समझ सकते हैं आगे क्या होगा ? एक दिन न वज़ीर रहेगा और न वज़ारत बादशाह रहेगा और न बादसाहत। यहाँ स्लीमन की हुकूमत होगी। तब वह सबसे पहले आप की तबाह करायेगा। आप उसकी साजिश साबित करने वाले पहले गवाह हैं।

"यकीनन" इस बार गंगा सिंह के काले चेहरे पर लाली के कुछ आसार प्रकट हुए। वह बोला "उस मक्कार ने मुझे धोखा दिया। मैं अपने की आग में बुरी तरह जल रहा था। मैं नहीं जानता था वह बड़ा फायदा उठायेगा। तुम कहो तो गंगाजली उठा कर कसम खा लूँ बेटी। उस साहेब के बच्चे को जिन्दा नहीं छोड़ूंगा। उसने हमारे भोलेपन से फायदा उठाया।"

सिराज ने टोका—"गुस्सा और बदला हमारा मकसद कामयाब नहीं कर सकेंगे सूबेदार। अपनी जान का खतरा उठाकर हम आप से मिलने इस लिए नहीं आये थे कि आप से स्लीमन के बदले की कसम खटायें। हम आपकी और आपके बालबच्चों की आज़ादी मांगने आये हैं। आज़ादी मांगने आये हैं अपने मुल्क की जिसके छीने जाने का वक्त करीब आ गया है। क्या आप गवारा करेंगे कि स्लीमन जैसे चालाक और मक्कार रेजीडेंट हमारे नेक और शरीफ बादशाह पर हावी हो जाएं और उन्हें दर-दर का भिखारी बना दें ? क्या आप की गैरत गवारा करेगी कुछ कि यहाँ दूसरे मुल्क के बाशिन्दों की हुकूमत हो और हम गुलाम कहलायें। उसी के लिए हम आप से कुछ मांगने आये हैं। कुछ कुरबानी। अगर आपको वाजिद अली शाह से लगाव है कुछ उनसियत है अपने वतन और अपनी जन्मभूमि से, तो वादा कीजिए कि आप हमें मायूस नहीं लौटायेंगे।"

गंगा सिंह को ऐसा प्रतीत हुआ जैसे कोई उसकी अन्तरात्मा

कचोट रहा हो। देशप्रेम के बारे में सोचने का अवसर उसे कभी नहीं मिला था। और न उसने ऐसा प्रतीत किया जैसे गुलामी कोई चीज होती है। स्लीमन की मक्कारी और धोखे की मार खाते ही उसके तन में आग भभक लगा रही थी। और उधर एक ऐसी लड़की खड़ी थी जो उसकी बेटी संबोधित हो चुकी थी। एक अजीब लड़की? उसी मजहब की मानने वाली जिसका रेस्टोरेंट था। किन्तु वाजिद अली शाह के लिये वही हमदर्द बन कर आई थी। कितना दर्द और कितना प्यार उसकी आवाज में अपने बादशाह के लिए बोलते समय जाहिर होता था। वाजिद अली शाह की हस्ती तब कैसे बुरी हो सकती थी? और जो बुरा न हो उसके लिए गंगा सिंह क्यों बुराई करे? वह अकेली नहीं थी। इस पेशे में तो लूट-पाट और कत्ल-मौत के अलावा कुछ नहीं मिला। उसकी नयी बेटी ने एक नया रास्ता खोल दिया। वह वतनपरस्ती की आजादी की जंग थी सच्चाई की आवाज थी। जीवन में एक बार गंगा सिंह ने उस आवाज का महत्त्व समझा था। इसीलिए वह देर तक कोई उत्तर न दे सका। सिपाह को पागलों के समान कुछ कुछ सोचता रहा।

सिल्वी ने उसे संकेत किया "आपने मुझे अपनी बेटी तस्लीम करते हुए सब कुछ देने का वादा किया है बुज़ुर्गवार। आप नहीं जानते। फिरंगी आई बेईमानी और चालाकी से बादशाह को महरूम करना चाहते हैं। हम सिलीयान से उसे रोकना चाहते हैं। हम सच्चाई के लिए अपनी जानों की बाजी लगा देने का फैसला कर चुके हैं। हमें बड़ी या ऐसा मालमी जागीर नहीं चाहिए। आप हमारा साथ दें तो दुनिया की आँखों के सामने से स्लीमन की मक्कारी का राज़ खुल ही जायेगा। बेईमानी अपनी ज़बान से मक्कारी की कहानी बयान कर देगी। और हमारा बादशाह बदकिस्मती के चक्कर से निकल आयेगा। बुज़ुर्गवार, आपकी एक कुरबानी अवध के हज़ारों-लाखों लोगों की किस्मत बन

बातेंगी। मुझसा [illegible] दुनिया के [illegible] बहादुर से कहीं [illegible] है इससे भी [illegible] [illegible] कर [illegible]। [illegible] दीजिये इस [illegible] के जानवर को [illegible] [illegible] और [illegible] पर [illegible] की बातें बनाना [illegible] है। [illegible] और [illegible] है या [illegible] की [illegible] पर पैसा और [illegible] [illegible] है। [illegible] है, [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] हो [illegible] के बाद [illegible] [illegible] किसी [illegible] है छोड़ जाता है। यही है [illegible] से [illegible] [illegible] हैं। [illegible] में [illegible] बैठी [illegible] के [illegible] [illegible] की [illegible] की [illegible] है। [illegible] की [illegible] [illegible] एक बार [illegible] [illegible] और [illegible] से [illegible] लेने। [illegible] अभी [illegible] के [illegible] [illegible] [illegible] कर [illegible] दीजिये [illegible] [illegible] [illegible] की [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] का [illegible] न [illegible] [illegible] रख सके।"

"[illegible] था!" [illegible] सिंह की [illegible] [illegible] [illegible] गई और वह [illegible] "[illegible] [illegible] हो मैं [illegible] [illegible] को [illegible] कर [illegible] [illegible] [illegible] कर दूँ [illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] सिंह की [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] और [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] की। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] कर दूँगा। [illegible] [illegible] में [illegible] [illegible] के [illegible] [illegible] [illegible] की [illegible] [illegible] दूँगा। [illegible] [illegible] [illegible] है। [illegible] में [illegible] है [illegible] में [illegible] [illegible] नहीं। [illegible] [illegible] को [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] के लिये मैं [illegible] [illegible] [illegible] में [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] मुझे [illegible] [illegible] [illegible] न [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] है [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]!"

सिम्मी और सिराज पर फिर कोई जुल्म नहीं हुआ। रणजीत सिंह आया किन्तु किसी विवशता से उसे तुरंत वापिस लौट गया। अभी आज़ादी का फैसला आखिर न हो सका था। मंगा सिंह एक बार धावा करने के बाद न जाने कहाँ लुप्त हो गया था।

रात के समय रणजीत से खुल कर बातें हुईं। वह नाराज नजर आया। इन लोगों ने उसके पिता को भड़का कर पागल कर दिया था। उसने कहा 'वह अपने गिरोह को खत्म करने की बातें करने लगे हैं। यह सब तुम्हारी वजह से हुआ है। मैं इसका बदला लूँगा।" किसी ने जवाब न दिया। वह और बहुत कुछ बड़बड़ाता रहा। "हमें जेल जाने का शौक नहीं है। बापू चाहे कुछ कहें। लेकिन होगा वही जो मैं चाहता हूँ। हमारी बला से यहाँ बादशाह की हुकूमत रहे या फिरंगियों की। हमारी रोटी हमें बदस्तूर मिलती रहेगी। तुम लोग हमारे लिये राहु बन कर आये हो। आज़ाद करने से पहले हम ” और जाने से पहले उसने अपने एक साथी को बुला कर सिम्मी के संबंध में कुछ विशेष आदेश दिये।

सिराज नहीं समझा। रणजीत के साथी सिम्मी को बहलाने से बाहर ले जाने आये। तब उसके कान खड़े हुए।

उसने पूछा "इन्हें यहाँ से ले जाने से पहले मंगा सिंह साहब को इत्तिला कर दो। हम उनसे मिलना चाहते हैं।" साथी हँसा। उनमें से एक ने सिम्मी को घसीटते हुए कहा "उन्हीं का हुक्म बजा ला रहे हैं। तुम लोगों ने उनको दीवाना से हैवान बनाया है। वह इनाम देने पर तैयार हैं।

सिराज कुछ और कहता उससे पहले सिम्मी को ले जाया गया। दरवाजा बाहर से बन्द हुआ तो वह बेचारा सिम्मी के बारे में सोचता रह गया।

एक दूसरे कमरे में सिम्मी रणजीत के सामने लाई गई। उसके

सामने बोतल खुली थी। कपड़े अस्त-व्यस्त थे। नशे से उसके पाँव डग मगा रहे थे। सिल्वी को देख उसने उठने का प्रयत्न किया किन्तु उससे पहले गिर पड़ा। साथी जैसे आये थे वैसे कमरे से चले गए।

सिल्वी की कुशाग्र बुद्धि परिस्थिति बहुत जल्द भाँप गई। पिता के प्रति विक्षोभ काम की अग्नि में सिल्वी का निष्कलंक शरीर झुलसा कर शान्त होगा। अब वह क्या करे? रात्रि का एक प्रहर बीत चुका था। माताजी भी शायद बाहर जायें। किन्तु आत्मरक्षा के लिए वह बिफरी हुई शेरनी के समान तैयार हो गई।

आखिरी जाम समाप्त कर रणजीत लड़खड़ाता उसकी तरफ बढ़ने लगा। सिल्वी सचेत हिरनी के समान पीछे हटी और बोली "शायद तुम्हें गंगा सिंह का खौफ नहीं रहा। वह मुझे अपनी बेटी बना चुके हैं।"

"जानता हूँ।" रणजीत ने उत्तर में कहा "मुझ से कहा था। इसीलिये तुम्हें बुलवा लिया है प्यारी।"

"शर्म करो। सिल्वी चिल्लाई अपने मजहब की तरफ देखो बहन की पूजा करते हो तुम लोग?"

"तुम्हारी पूजा जरूर करूँगा मेरी जान। रणजीत बहकते शब्दों में कहता हुआ आगे बढ़ने लगा 'बापू पर जादू का डंडा फेरा तो वह बोली भूल गए। कुरबानी की बातें कर रहे हैं। तुम्हारी पूजा किये बिना कैसे काम चलेगा। आज मेरे सीने से लग कर आराम की नींद लो प्यारी। कल मामिलतदार के सामने जाकर अपने आप को उनके हवाले कर देंगे।' यह कह कर रणजीत जोर से हँसा।

अब फासला कुछ ही कदमों का शेष था। रणजीत के कदम रुकने वाले नहीं थे। सिल्वी को कोई रास्ता न सूझा। वह जोर से चिल्ला कर सहायता की पुकार करने लगी। रणजीत के मस्त कदम पल भर रुके और इसके बाद दूनी से सिल्वी की ओर बढ़ने लगे।

गहरी निस्तब्धता में सिल्वी का तेज स्वर चारों ओर गूँजने

गया। रणजीत के कहकहे उसे दबाने का निष्फल प्रयत्न कर रहे थे। सिम्मी उसकी पकड़ में आती और निकल जाती। एक का सतीत्व दूसरे की कामुकता पर रह रहकर विजयी हो जाता। किन्तु सिम्मी जानती थी यह विजय अस्थायी है। यहीं से निकल भागना असम्भव होगा, और अन्त में उसे   "पाये यह न सोच सकी।

तभी कमरे के द्वार को किसी का भारी धक्का लगा जिससे पाट खुल गए। सामने गंगा सिंह की क्रुद्ध आकृति दिखाई दी। सिम्मी दौड़ कर उसके बराबर जा खड़ी हुई। रणजीत पल भर सहमा देखता रहा।

गंगा सिंह ने आगे बढ़ रणजीत से कहा "तूने समझा होगा रणजीत कि मैं तेरी कैद से निकल न सकूँगा। मगर शायद तू भूल गया, मैंने तुझे पैदा किया है। मैं तेरा बाप हूँ।"

"बापू!" रणजीत पूरे बल से चिल्लाया और हाथों में चमकदार खंजर निकाल कहने लगा "तुम बीच में मत पड़ो। चले जाओ यहाँ से। वरना   "

"वरना तू मुझे मार देगा।   यही न" गंगा सिंह सिम्मी को हाथ की थपथपाहट से आश्वासन देता आगे बढ़ा "शैतान है इसलिये बाप पर हाथ उठा सकता है। लेकिन मैं नहीं। मैं तुझे जिन्दा छोड़ कर जाऊँगा रणजीत। मैंने तुझ से दूर भगकर दरबार में हाजिर होने की भीख मांगी थी। अर्जी तो बहुत दिनों कर चुके बेटा। तू नहीं आया। कैद में डाल कर सोचता था तू जीत जाएगा। मगर अब देख सरकारी आदमी तुझे पकड़ने आवेंगे। मैं खुद उन्हें तेरे सब अड्डे बता दूँगा। क्यों? क्योंकि मैं तेरा बाप हूँ। मैंने तुझे गलत रास्ता बताया और अब मैं ही सही रास्ता बताऊँगा। हम पेशेवर या खानदानी डकैत नहीं हैं। हमने बगावत का रास्ता अपना लिया था। गलत पाया है तो उसे छोड़ना होगा। इस लड़की ने सच कहा है। जिस देश के अपराधी खुद अपना अपराध स्वीकार करके इंसाफ के सामने आवें वह देश महान

है। दुनिया की कोई ताकत उसके खिलाफ आवाज नहीं उठा सकती। तूने इस मौके का फायदा उठाने से इन्कार कर दिया। यह तेरी बद किस्मती है।'

इतना कहते हुए गंगा सिंह का वामन शरीर एक फुर्तीली छलांग में रणजीत के निकट आ पहुँचा। रणजीत सोच भी न पाया कि उसे क्या करना होगा उससे पहले उसके हाथ का खंजर गंगा सिंह के हाथों में और उसका शरीर धरती पर औंधा पड़ा दिखाई दिया। हमले से बचने के लिये रणजीत उठने का उपक्रम करने लगा किन्तु तभी गंगा सिंह के बलिष्ठ पैर की एक ठोकर उसकी नाभि दूसरी उसके पेडू और तीसरी पीठ पर पड़ी। रणजीत अचेत हो वहीं लेट गया।

इसके बाद गंगा सिंह खिल्ली को साथ लिए आसानी से तहखाने के बाहर आ गया। चलते समय शिहाब को उसने अपनी पीठ पर लाद लिया। बाहर की ठंडी हवा के झोंके लगते ही शिहाब की आँखें खुलीं। उसने गंगा सिंह को कष्ट न दे खुद आहिस्ता-आहिस्ता चलने की भिक्षा माँगी। गंगा सिंह ने गाँव के किसी विश्वस्त आदमी से गाड़ी का प्रबंध कराया। इसके बाद रातोंरात वह लखनऊ आ गए। इशरत का मकान बन्द था। शिहाब गंगा सिंह को ले सीधा हकीम बर्दवाली के यहाँ आया। वहाँ वहीद अली से भेंट हुई। कुछ सोचते-विचारते गंगा सिंह को वह अपने साथ ले आए। शिहाब को मियाँ खान की मृत्यु का समाचार मिला। वह दुखी हो गया। इशरत के बारे में ज्ञात हुआ वह सलीमन से बच कर भाग निकला है। किन्तु अभी तक यहाँ न आ पाया था। शिहाब को लगा जैसे उसका कुल प्रयत्न व्यर्थ सिद्ध होगा। तमाशा कुछ विचित्र नज़र आ रहा था। इशरत के ऊपर अनायास मुसीबत आई जान उसका साहस टूट गया। कठिनाई से आँसू रोके वह खिल्ली से विदा हुआ। खिल्ली अपने मकान आ गई। वहाँ इशरत मौजूद था। और साथ थे रेजीडेंसी के मीर मुन्शी। व्याकुल और अव्यवस्थित। एक

दिन पहले वहां पहुंचे थे। स्लीमन ने अपने भीतरी कमरों में से एक में उनके ठहरने की व्यवस्था कर दी थी और आदेश दिया था जब तक आगे सुविधा न हो हजरत घर से बाहर न निकलें। हकीम मर्दवामी के यहां जाना सम्भव न हो सका था। अतः यह सूचना बाहर न जा सकी।

उधर स्लीमन के लौटने का समाचार आ चुका था। स्लीमन की दृष्टि में हजरत को एकदम छिपाए रखना उचित मालूम हुआ।

चौदह

हरम और महलसरा में ख्वाजासरा का विशेष महत्त्व हुआ करता था। वाजिद अली शाह के काल में पचासों नपुंसक नौकर थे। स्लीमन इन से जलता था। यह बहुत वफादार और समझदार होते। कई ख्वाजासरा बेगमात के हिसाब किताब तक रखते। लाखों का लेन-देन रहा करता। समय पर मुसीबतों के अचूक नुस्खे बताते। स्लीमन सोचता यह नवाबी चलाने में सब से बड़े मददगार हैं और इन पर खर्च होने वाला लाखों रुपया बेकार जाता है।

बशीरुद्दौला वाजिद अली की सेवा में विशेष ख्वाजासरा था। हुकूमत के कामों में वज़ीर और दूसरे मन्त्रीगणों की सहायता पड़ती तो महल में ख्वाजासरा बशीरुद्दौला के बिना शाह के हाथ-पांव टूट जाते चालीस-चालीस पचास-पचास बेगमात और बादशाह के मध्य अच्छे *सम्बन्ध बनाए रखने की पूरी जिम्मेदारी बशीरुद्दौला के कन्धों पर थी।* हालांकि बशीरुद्दौला नामर्द था। महलात (बेगमात) से लम्बी-लम्बी तनख्वाहें मारता। पर वाजिद अली के लिए उसके हृदय में प्रेम था। उसके प्रति हमेशा सच्ची निष्ठा रखता था। और अवसर पड़ने पर इस स्वामिभक्ति को बड़े से बड़े लालच से अधिक मानता था।

अख्तर महल हरम में प्रविष्ट हुई तो मरियम अपने पूरे प्रभाव से बादशाह पर छाई हुई थी। बशीरुद्दौला इसमें पूरा योग दे रहा था। इसका कारण मरियम के इनाम इकराम या शाह की इच्छा दोनों में से एक जरूर थी। शाहंशाह मरियम को पसन्द करते थे और मरियम अपने लक्ष्य तक पहुँचने के लिए बहुत कुछ खर्च करने पर तैयार थी। अतः कहा जाए, बशीरुद्दौला दोनों में प्रगाढ़ता उत्पन्न कराने में सहायक

परिचारिकाओं से दूसरे पक्ष को बचाने में या तो मैं कामयाब होने वाली हूँ और या एक और हस्ती शाह के पास ख्वाजासरा बेगमात की वकील जनाब बशीरुद्दौला।"

बशीरुद्दौला पर इस बातचीत का अच्छा प्रभाव पड़ा। अब वह मरियम की ओर सशंकित दृष्टि रखने लगा। मरियम बीमारी से उठी और दोबारा बीमार पड़ी तो मरियम की तमाम दाद-फरियाद की उपेक्षा कर उसने शाह अवध को बीमारी की ठीक-ठीक खबर देना अस्वीकार कर दिया। इसके स्थान पर वह अख्तर की प्रशंसा के पुल बांधने लगा। शाह के सामने हर समय उसी के गीत गाता। शाह पर प्रभाव पड़ना स्वाभाविक था। वह दिनों-दिन अख्तर के निकट आते गए। मरियम को भूलना तो असम्भव था किन्तु बीमारी के दूसरे आक्रमण के बाद उनके जीवन से निराश वह कुछ अन्यमनस्क अवश्य हो गए। हाँ, वह उनके मस्तिष्क में कभी नहीं आया कि मरियम ने उनके प्यार को धोखा दिया है, उनको ठगा है या उनकी नेकी का नाजायज लाभ उठाया है।

बातों ही बातों में उस दिन बशीरुद्दौला की उपस्थिति में अख्तर ने शराब का प्रसंग छेड़ा। उस दिन शाह कुछ उदास थे। क्योंकि अख्तर की बारगाह में आते ही शराब की मांग कर दी। बशीरुद्दौला उस समय तक उपस्थित रहा करता था जब तक विशेषतया उसे ठहरने की आज्ञा न हो जाती। वह दौड़ कर शराब ले आया। तभी अख्तर ने वाजिद अली को टोका "इजाजत हो तो अर्ज करूँ आपके लिए शराब ज्यादा मुफीद नहीं है सरकारे आला।"

वाजिद अली ने उत्तर दिया "जानता हूँ अख्तर बेगम फिर भी पीता जरूर हूँ।"

"क्यों ?" अख्तर ने प्रश्न किया। वह शाह अवध की आवाज में छिपी निराशा और दुःख भांप चुकी थी। क्योंकि वैसे उत्तर में अपना

हृदय स्पष्ट कर दिया हो।

उधर बशीरुद्दौला ने मौका देखा। बोला 'इस नामुराद चीज को न तो ईमान बख्शा गया है और न फर्ज। आला हजरत मरियम बेगम के आने से पहले हाथ तक न लगाते थे। अब न जाने क्या हो गया है।

शाह न चाहते हुए भी बशीर की बातों पर मुस्करा कर कहने लगे तेरी जबान को ताला लगाना होगा बशीर। शायद मस्तर महल से तूने कोई इनाम पा लिया है तभी उनकी हां में हां मिला रहा है।

"गुस्ताखी मुआफ बशीर ने तत्परता से उत्तर दिया 'कुछ दिनों पहले इनाम इकराम का काम धन्धा चल रहा था। जब से बेगम साहब आई हैं उन्होंने मामला ठप करा दिया। मैंने तो सरकारे आला से अपने दिल की बात कही। मुई शराब कोई पीने की चीज नहीं।

"है बशीर है" शाह ने इस बार यकायक गम्भीर स्वर में चेहरे पर उदासी लाते हुए उत्तर दिया 'तू क्या जाने इसमें क्या है। कह कर उन्होंने जाम गले के नीचे उतार लिया।

'इसीलिए तो कनीज ने सलाम करने की जुर्रत की आला हजरत।" मस्तर ने कहा 'बशीर की समझ में न आये मगर शायद मैं समझ सकूं।

शाह खामोशी से कुछ सोचने लगे। फिर सहसा उन्होंने बशीर को चले जाने की आज्ञा दी। जब वह चला गया तो मस्तर से बोले 'जब हम परेशान होते हैं बेगम तो मैं का सरूर हमें आराम पहुँचाता है। इसीलिए पीते हैं।

'गुस्ताखी मुआफ" मस्तर ने पूछा "हमारे दुश्मनों को क्या परेशानी हो सकती है। आला हजरत ने कनीज के सामने आज तक ऐसी बातें नहीं की फिर क्यों आज इस तरह मायूसी जाहिर की जा रही है?

"मायूसी नहीं बेगम। मायूसी नहीं" शाह बोले "थके हुए मुसाफिर का इत्मिनान है यह। वह आमदा है मंजिल तक पहुँचना उसकी

किस्मत में नहीं। तब वह गहरी नींद में डूब कर थकावट मिटाने को मजबूर हो जाता है। सोचता है कहीं न आराम से सोता रहे जब "

'खुदा न करे।" अख्तर ने शाह के मुंह पर अपना मुलायम हाथ रख दिया 'आप के दुश्मनों को नींद आए। आला हजरत, शायराना जुबान में आप किस मायूसी को क्योंकर करना चाहते हैं। कनीज आज इसरार करेगी कि

"हम इसरार कुबूल करेंगे अख्तर!" बादशाह बोले "शराब का जाम दो और सुनो हम एक पुरदर्द कहानी बयान करेंगे। शायद तुम्हारी समझ में हमारे बाद की तकलीफ आ जाये।"

अख्तर ने जल्दी से शराब का जाम भरा और शाह के होंठों से लगा दिया। वह नशीली आँखों से अपने चारों ओर देख रहे थे। अख्तर को उनकी आज जैसी अवस्था कभी न मिली थी। वह हैरान और परेशान थी। किन्तु अब सन्देह न रहा वाजिद अली शाह आज किसी कारण दुखी और परेशान हैं। और उसी परेशानी में कुछ कहना चाहते हैं। कुछ ऐसा जो उनके दिल की गहराइयों में छिपा हुआ था। अख्तर बेचैनी से वो दास्तान सुनने की प्रतीक्षा करने लगी।

'हाँ जानेमन" वाजिद अली शाह ने अपनी दृष्टि अख्तर पर जमा दी और कहना शुरू किया— 'हम जिस रोज तख्त पर बैठे एक अजीब हादसा हुआ। एक मनहूस अपशकुन वाक्या आया। हम उसे टाल गये। लेकिन हम उस कहानी को नहीं टाल सके जो अवध में हमारे बुजुर्गों के साथ कायम हो गई थी। मरहूम नवाब सआदत अली साहेब के इन्तकाल के वक्त हमारे खजाने में चौदह करोड़ रुपया था और फौज में एक लाख सिपाही। नवाब गाजीउद्दीन हैदर के जमाने में यह गिनती चार करोड़ और नब्बे हजार पर आई। नवाब नासिरउद्दीन मरहूम के बाद मोहम्मद अली साहेब तक यह सिर्फ एक करोड़ और अस्सी हजार हो गई। हमारे वालिद साहेब ने हमारे लिए १२ लाख रुपया

और तीस हजार सिपाही छोड़े। और यह सब धीरे धीरे ईस्ट इंडिया कम्पनी की नज़र हुआ। कहीं नेपाल की जंग का बहाना पैदा हो गया, कहीं कम्पनी की तंगदस्ती हालात की कमज़ोरी सबब बन बैठी। हमने मदद दी और दोस्ती का फ़र्ज़ निभाते हुए क़र्ज़ अदा किये। हमारा सभी सब हमारे हाथों से धीरे-धीरे छीन लिया गया। आज हमारी फ़ौज में न ताक़त है और न हिम्मत। हम सोचते हैं, अवध की नवाबी की राजधानी इतनी बेरौनक क्यों बन गई है! हमारी फ़ौज हमी से क्यों जुदा हो गई? अब हमारे रेज़ीडेंट साहेब दौरे पर रवाना हुए हैं। हमारे इन नुजूमियों का कहना है यह दौर अहम है। खुदा जाने। लेकिन हमारे बुजुर्गों की कहानी हमारे सामने है। न जाने क्या होने वाला है और क्या होगा। बस हम घबराते हैं और हमें शराब की याद सताती है। इसका नशा हममें जोश पैदा करता है। हम अपनी मौत का गम भूल जाते हैं।"

"आलमपनाह की तबीयत शायद नासाज़ है।" शाहे अवध का हाथ पीछे पांचवें जाम की ओर बढ़ते देख अख्तर ने टालना चाहा "आराम करना ज्यादा मुफ़ीद होगा।"

"आराम कहां?" शाह ने उत्तर दिया "आज दिन के पीछे मैं तुम्हें असलियत दिखाना चाहते हैं बेगम। सुनो। स्लीमन ने कहा हमें रिआया पर इस क़दर भरोसा नहीं करना चाहिए, जितना हम कर रहे हैं। उन्हें शुबा था हमारी रिआया हमारे इन्तज़ाम के खिलाफ़ शायद शिकायतें पेश करे। हमने मना किया। वह कहते थे दौरे की इजाज़त मत दो, लेकिन हमने इजाज़त दे दी। अब अखबार नवीस नयी बातें कहते जा रहे हैं। स्लीमन साहेब जानबूझ कर लोगों को हमारे खिलाफ़ उकसा रहे हैं। बेगम जब हम ऐसी बातें सुनते हैं तो हमें शराब याद आती है। हम उसके नशे में अपने आप को डुबो देना चाहते हैं।'

"अच्छा हुजूर" अख्तर शाह की विचित्र मनस्थिति से

भीत उन्हें टोकने का उपाय करने के लिये बोलने पर उत्सुक हुई, किन्तु शाह ने न माना। वह आगे और भी कुछ कहने के लिए उत्सुक थे। अतः रुके नहीं और बोलते गये "हमें शराब पीने की ख्वाहिश होती है उस वक्त अख्तर जिस वक्त हम देखते हैं सच्चाई और ईमानदारी की कीमत आज क्या है। स्लीमन ने हमें यकीन दिलाया गवर्नर जनरल के खत से जाहिर था धीरे से हमें जलील किये जाने की कोई मन्शा नहीं। अब यह नया रवैया अख्तयार किया गया है। हम बिना शराब पिए इन बातों पर और भी नहीं कर सकते। बावेमन बिना पिये हमारा होश हवास जाता रहता है।

अख्तर ने खामोशी धारण कर ली। शाह अवध और भी बहुत कुछ कहते रहे। अन्त में नींद आने लगी तो पलंग पर आ लेटे। अख्तर उनके पैरों के पास आ बैठी। कुछ देर बाद सो गए। लेकिन अख्तर को नींद न आई। आज की बातों से शाह अवध के भीतर की पीड़ा और निराशा कितनी स्पष्ट थी। उन्होंने कैसे शराब पीने का दोष स्वीकार करते हुए उसका कारण बता दिया था। लोगों की मक्कारी और चालाकी में जब उन्हें अपनी और अपने अस्तित्व की सुरक्षा न जान पड़ी तो वह क्या करते? एक निराश क्या कर सकता है? ऐयाशी। जिस की गर्मी में सर्दी बने वाला अपमान का भाव बह जाए। वाजिद अली शाह को यही रास्ता पसन्द आया था। कमठ राजा निराशा की जलन से बचने के लिए शराब की प्यालियों और हरम की पत्नियों में खोने को बाध्य हो गया। आरम्भ से जिसे हुकूमत की हविसी नजर आ रही हो वह षटनाओं के मुकाबले क्या करेगा? यही कि पूर्व कल्पित दुर्भाग्य की विभीषिका रूपी ज्वालामुखी से बचने को यहाँ-वहाँ दुबकता फिरे। दरिद्र और असम्पन्न ऐसी स्थिति में आत्म-हत्या कर सकते हैं, आत्माभिमानी के लिए वह भी कठिन है। और जिसके पास आमोद प्रमोद के सर्वस्व साधन हों वह तो नृत्य-गीत दैरो-सामरी, शराब

और मरकाओं में अपना सब कुछ न्यौछावर करने पर बड़ी सरलता से तैयार हो जाएगा। वाजिद अली की स्थिति यही थी। जब उन्होंने देखा लुटेरे लूटने की तैयारियों पर कमर कस चुके हैं और उनके करने को कुछ भी शेष न रह जाएगा तो उनकी प्रकृति ने जीवन के सुख चाहे। रूप और मरियम का आनन्द पाया। शराब का नशा चढ़ा। उन्होंने सोच लिया जब सभी कुछ जाना है तो व्यर्थ का यत्न क्यों करें। क्यों जीवन के महत्वपूर्ण पल उन चिन्ताओं में डूब कर गंवा दें जिनका कोई हल नहीं कोई उपाय नहीं! और मरियम के आने ही मस्तिष्क में सुप्तावस्था में यह विचार सचेत हो गया। जाग गया।

सुबह शाह जफ़र को देखने पर रात का कोई प्रभाव नहीं प्रकट हुआ। वह हँस रहे थे और जफ़र से बहुत सी बातें कर रहे थे। ऐसा लगा जैसे रात वह सचमुच नशे में थे। जफ़र हैरान हुई। आखिर यह पुरुष किस मिट्टी का बना हुआ है। और उस वक्त तो उसकी आँखें भय भीत हो गईं जब उन्होंने स्लीमन के सम्बन्ध में मिली नई से नई सूचना पर अपना दृष्टिकोण प्रस्तुत किया।

यह मक्कार है बोले कम्बख्त अख्तरनवीस कहता है स्लीमन साहब दौरे में हमारे खिलाफ छांट-छांटकर वाकयात इकट्ठा कर रहे हैं। भला यह कैसे मुमकिन है। वह हमारे दोस्त हैं। अभी कल ही नकी तो साहेब उनसे मिल कर लौटे हैं। उनकी मारफत स्लीमन साहब ने कहलवाया है सारा मुल्क हरा-भरा और सरसब्ज मिला। कहीं किसी ने शिकायत नहीं की। जरूर अख्तरनवीस का दिमाग बहक गया है।"

शाह के जाने के कुछ देर बाद वजीरद्दौला जफ़र के पास आया। मरियम ने जफ़र से मिलने की इच्छा व्यक्त की थी। वजीरद्दौला ने कहा "तुम्हें शायद याद आ गया हो कि पिछली बार आप उनकी खिदमत करती रही थी। इसीलिए पूछता रहा हूँ। मेरी राय है आप मना कर दें। आप का वक्त कायम नहीं।" जफ़र हँस दी। वजीर को

समझा-बुझा वह मरियम से मिलने बारादरी चल दी।

मरियम बीमार थी और उदास भी। अख्तर ने पहुंचकर देखा तो प्रतीत हुआ जैसे वह अपने बिस्तरे पर पड़ी अख्तर की प्रतीक्षा कर रही हो। अख्तर ने पूछ लिया आपने याद किया था मरियम आपा। तबियत कैसी है?"

मरियम तबियत का हाल बताने के स्थान पर कहने लगी "सुल्ताने कैसर ने बारादरी आना कम कर दिया है अजीज अख्तर। मैं तुम्हारी मदद से उनकी ज़ियारत लेना चाहती थी। कहा जाता है आज कल तुम्हारे यहां उनकी आमद अकसर होती है।"

"उनकी नवाज़िश है यह आपा। लेकिन आप क्या चाहती हैं? क्या कैसरे ज़मां से मिलने को दिल बेकरार है? आपने कहलवाया होता तो वह सौ काम भूलकर आपके पास दौड़े आते। उनका मिज़ाज बहुत नर्म है।" अख्तर ने कहा।

"मैं जानती हूं। लेकिन खुद मेरा दिल उनके हुजूर में धड़कता है अख्तर महल। इसीलिए बुलवाना मुनासिब नहीं समझा। अब तुम मेरी मदद करो तो कहूं। यहां तुम्हारे अलावा और कोई ऐसा है भी नहीं जो मुझ से हमदर्दी करे।"

"हुक्म दो आपा हुजूर। मैं हर सूरत उसे पूरा करने की कोशिश करूंगी।"

"कल इतवार है। ईसाइयों का पाक दिन। बहुत दिन हो गए मैं गिर्जे नहीं गई। चाहती हूं कल अपने ईसाई भाइयों के साथ मिलकर पादरी के सामने खुदा की इबादत में बाइबल की नसीहतें दोहराऊं। जिन्दगी का भरोसा नहीं। मज़हब बदला जा चुका है। मगर दिल नहीं बदल सका। चाहती हूं अपने खुदा से दुआ मांगना। इसलिए "

"मैं समझ गई हुजूर आपके [illegible] ऐसे कि [illegible]। लेकिन ऐसा नहीं है। मैं खुद उनसे गुफ्तगू करूँगी।"

उसी रोज़ मुख्तार ने [illegible] की [illegible] से [illegible] के एक भेंट की इजाज़त ली। दोपहर के बाद कुछ [illegible] [illegible] करते थे। [illegible] [illegible] को यहीं आने का वक्त दे दिया गया। मुख्तार दोनों को [illegible] [illegible] [illegible] ने था। उन्होंने कहा मलिका मुअज्ज़मा ईसाई की [illegible] के [illegible] हो गई हैं। क्या उन्हें [illegible] नहीं हो रहा कि ईसाइयों और मुसलमानों व हिन्दुओं का खुदा एक ही है। बहरहाल इसे कोई ऐतराज नहीं। वह अपनी [illegible] जा सकती हैं।"

मुख्तार [illegible] [illegible] करती वहाँ से लौटने लगी। तभी शाह ने मलिका का [illegible] [illegible] हुआ और [illegible] में बोले "हमारी सल्तनत की बेगम वह गिर्जे में क्या से क्या दुआ करने जा रही हैं!"

'खैरख्वाह होने की भीख माँगने वाला हुजूर इसके अलावा उन्हें और तकलीफ क्या हो सकती है? खुदा का दिया सब कुछ उनके पास है। और सबसे बड़ी आपकी मोहब्बत उनके लिए दस्तबस्ता मौजूद है। ऐसी सूरत में और क्या दुआ कर सकती हैं वह!"

शाह हँस दिए। उत्तर में बोले 'यह तो हम नहीं जानते। लेकिन इतना ज़रूर जानते हैं कि पिछले कुछ महीनों से हम उन्हें बदला बदला पा रहे हैं। उनके प्यार में वह गर्मजोशी नहीं रही जो पहले थी। मुमकिन है वह इसी की वापसी के लिए खुदा से दुआ करना चाहती हों। आखिर वह ईसाई थीं जिस वक्त खुदा से उनकी दुआयें सुनकर हमारे हरम की बेगम का खिताब दिया था। इसलिए गिर्जे का खुदा ही उन की मदद कर सकता है।"

मुख्तार चुप न बोली। शाह के प्रश्न और उनके अपने उत्तर से वह

एक नयी समस्या में उलझ गई थी। क्या मरियम के अन्तर में छिपी कुटिलता तक शाह की भोली दृष्टि पहुँच चुकी है। अगर नहीं तो उन्होंने ऐसा प्रश्न क्यों पूछा ?

उसी समय शाह ने फिर कहा "हमारी राय है मरियम बेगम के साथ आप कल भी गिर्जे जायें। दुआ के फौरन बाद यही सवाल मरियम से करें। जो जवाब दें हमें उससे आगाह करें। हम उसके मुन्तज़िर रहेंगे।

मरियम ने शाह की आज्ञा अख्तर को सुनाई तो वह अस्वीकार न कर सकी। बल्कि कहने लगी वह खुद पहले से अख्तर को अपने साथ ले जाने का विचार कर रही थी। अख्तर ने शाह का प्रश्न उस पर प्रकट न किया। किन्तु मन ही मन उसका उत्तर सुनने की वह बहुत बेचैनी से प्रतीक्षा करती रही।

अगले दिन पालकी में बैठा मरियम को गिर्जे ले जाया गया। दूसरी पालकी में अख्तर बैठी। दोनों पालकियां गिर्जे के बाहर रोक दी गईं। मरियम चली गई किन्तु अख्तर वहीं बैठी रही। कुछ देर बाद गिर्जे से लोग निकलने लगे। साथ की बांदी से पूछा तो पता चला मरियम घंटा आधा घंटा पादरी साहब से बातें करने के बाद आती है। वह पालकी में बैठी रही।

उस समय मरियम जोसफ के मकान में पहुँच चुकी थी। हालांकि उसकी तबियत ठीक नहीं थी किन्तु पादरी साहब ने उसके लिए दूसरी पालकी का प्रबंध करवा दिया। जोसफ उसे देख हैरान रह गया। उस ने पूछा "इस हालत में यहां तक क्यों चली आई मेरी ? मुझे इत्तिला करवा दी होती। मैं खुद आ जाता।

मरियम ने इसका उत्तर न दिया। उसने अपनी बात कही "डियर, मैं नाउम्मीद हो जाने से पहले तुम्हारा जवाब सुनना चाहती थी जोसफ। तुम जानते हो मैंने दिलो दिमाग से हमेशा तुम्हें प्यार किया है। तुम्हारे

महल पर मैंने अपना मज़हब बेचा अपना ईमान और अपना ज़मीर बेचा। अब मुझमें ज्यादा बर्दाश्त नहीं। शाह अवध को धोखा देते मेरी रूह कांपती है। तुमने कहा था काम पूरा हो जाने के बाद तुम मुझे साथ लेकर अवध की हुकूमत की पहुँच से बहुत दूर ले जाओगे। बोलो क्या अब भी इस पर तयार हो?'

जोसफ कुटिलता से मुस्कुराया और बोला "बहुत ज्यादा सोचने की वजह से तुम परेशान नज़र आ रही हो। मगर मेरा दिमाग अभी बेकार नहीं हुआ। काम पूरा हुआ ही कहां है जो अभी इन बातों पर माथा पच्ची की जाये।"

"क्या तुम्हारा मन्शा है मैं वाजिद अली शाह को ज़हर दे दूं या शराब देकर मार डालूं? क्या उस वक्त तुम्हारा काम पूरा होगा? क्या मैंने आज तक तुम लोगों के कहने पर वह सब कुछ नहीं किया जो मुझे नहीं करना चाहिए था। वज़ीर के खिलाफ नेक बादशाह को ग़लतफ़हमी में उलझाना मेरी वजह से मुमकिन हुआ है। स्लीमन साहब के मातुराद दौरे पर शाहे आला ने मेरे कहने पर घर भुलाया है। जोसफ क्या यह सब काफी नहीं? क्या तुम लोगों के दिलों में रहम बिल्कुल नहीं। तुम बेईमानी से किसी बदनसीब को उजाड़ने की साज़िश में क्यों हिस्सा ले रहे हो? क्या मिलेगा तुम्हें और तुम्हारे स्लीमन साहब को?"

जोसफ मरियम की मर्मभरी बातों से विचलित हो गया। उसने एकदम गम्भीरता धारण कर ली और तब उत्तर दिया 'स्लीमन साहब को क्या मिलेगा क्या नहीं इतना मैं नहीं जानता। लेकिन मेरी अपनी और तुम्हारी बाबत ज़रूर जानता हूं। अवध की बादशाहत का खात्मा नज़दीक आ चुका है। कोई रोकना चाहे तब भी रोक नहीं सकता। हम इस काम में अपने मज़हबी भाइयों की खिदमत कर रहे हैं यह हमारा फ़र्ज़ है। हम न सही अपने दूसरे पदा हो जाएंगे। और हम

बेग्मन और वसीह अली भी शामिल हैं।"

शाह ने विरोध किया 'लार्ड साहेब को जरूर गलत इत्तला मिली है। बेग्मन जैसे आदमी से ऐसी उम्मीद नहीं की जा सकती। वह आखिर गद्दारी किससे करेंगे अपने दोस्त वाजिद अली शाह से ?

नकी खां बोले रेजीडेंसी से इत्तिला हुई है इन गद्दारों के खिलाफ फौजी कार्यवाही की जानी चाहिए। जिल्ले सुभानी के हुजूर में मैं इसीलिये हाजिर हुआ हूँ। इजाजत हो तो हकीम बर्दवानी के मकान पर मौका देखकर छापा मारा जाए।"

'नहीं वजीर साहेब नहीं। शाह ने भरे हुए कण्ठ से उत्तर दिया 'आप बजरन एक नामुमकिन बात को सच साबित करने की कोशिश क्यों कर रहे हैं ? हम कैसे यकीन कर लें कि हमारी वही रियाया जो हम से बजाहिर मोहब्बत करती है हमारे खिलाफ गद्दारी करेगी। और उनकी सरपरस्ती के लिए बेग्मन तैयार होंगे। वही बेग्मन जिन्हें हम अपनी जानों से ज्यादा अजीज मानते हैं।

"गुस्ताखी मुआफ आलमपनाह" नकी खां ने कहा 'रेजीडेंसी में इस खबर तक पहुँचने का कोई न कोई मालूम जरिया जरूर होगा। लार्ड साहेब को आप जानते हैं। वह कभी गलतबयानी से काम नहीं करते। फिर मैंने सुना है उनके बड़े साहब तक भी यह बात पहुँच चुकी है। ऐसी सूरत में हमें फौरन इन्तजाम करना चाहिए। हकीम बर्दवानी के यहाँ बहुत से लोग जमा होते हैं जो जिल्लेसुभानी के खिलाफ गैर कानूनी मशवरे करते हैं। उनके नापाक इरादे पूरे हों इससे पहले उनके विरोध को नेस्तोनाबूद कर दिया जाना चाहिए।"

'मगर उनके इरादे क्या हैं, जब तक यह पता न चले हम कैसे कोई कदम उठा सकते हैं ? अभी तो बगावत की जाती है उस बादशाह के खिलाफ जो जुल्मपरस्त हो ऐयाश और जालिम हो। हमसे इस तरह की शिकायत किसी को नहीं। फिर कैसे मुमकिन है लोग हमारे

खिलाफ गद्दारी पर आमादा हो सकते हैं। नहीं जब तक हम स्लीमन से इस मुतअल्लिक बात न करें कुछ भी करना गैर मुनासिब है।

नकी खाँ ने अपनी शंका प्रकट की "बात ज़ाहिर हो गई तो मुजरिम फरार हो जायेंगे। हमारे हाथ कुछ न लगेगा।"

मगर बादशाह फिर भी न माने। नकी खाँ चला गया। बादशाह ने उसे हिदायत दी कि रेजीडेंसी को क्या जवाब दिया जाना है। इसके बाद वह उदासी से अख्तर को घूरते हुए कहने लगे "आपने सुना बेगम हमारे खिलाफ गद्दारी का इंतज़ाम हो चुका है। अवध की रियासत में यह नई बात है। तभी तो हमें शराब की ज़रूरत होती है। क्या एक वफ़ादार बादशाह इस तौहीन को बर्दाश्त कर सकता है?"

उन्होंने कनीज भेज कर स्लीमन को तलब करवा लिया था। कनीज गई तो अख्तर ने मीठे स्वर में बादशाह को आश्वासन दिया 'हुज़ूरे आली की मायूसी फिजूल है आका। हमारी हुकूमत में बगावत नामुमकिन है। वज़ीर साहब अपना कसूर की बात जान दीजिए। वह रेजीडेंट के सामने जवाब नहीं दे सकते। लेकिन हम जानते हैं हमारा वज़ीर जानता है। हमारी रियासत हमसे जुदा नहीं। ऐसी सूरत में गद्दारी का सवाल नहीं उठता। स्लीमन साहब से मालूम हुआ तो शायद असलियत मालूम दे।"

करीब आध घंटे बाद स्लीमन आ गए। अख्तर को वहीं छोड़ बादशाह सलामत आरामगाह के बड़े कमरे में आए। उन्होंने स्लीमन को अपने बराबर बैठा लिया और नकी खाँ की दी गई सूचना प्रकट की। स्लीमन सुनकर एकदम घबरा गए, फिर सहसा अपने आप को संभाल कर उत्तर देने लगे "योर मैजेस्टी को इत्तिला गलत नहीं मिली। हकीम बरकाती के यहाँ कुछ लोग जमा होते हैं। उनमें मैं और वज़ीर भी शामिल हैं। लेकिन हमारा मकसद हुकूमत के खिलाफ गद्दारी करने का नहीं है। हम मिल बैठकर आने वाली मुसीबत से छुटकारा पाने की

बेगम और वलीद अली भी शामिल हैं।
शाह ने विरोध किया बर्ड साहेब को पकड़ कर अमल इतना मिली
है। बेगम जैसे आदमी से ऐसी उम्मीद नहीं की जा सकती। वह
आखिर गद्दारी किससे करेंगे अपने दोस्त वाजिद अली शाह से ?"
नकी खां बोले रेजीडेंसी से इत्तिला हुई है इन गद्दारों के खिलाफ
फौजी कार्यवाही की जानी चाहिए। जिल्ले सुभानी के हुजूर में मैं
इसीलिये हाजिर हुआ हूँ। इजाजत हो तो हकीम बर्दवाली के मकान
पर मौका देखकर छापा मारा जाए।

'नहीं वजीर साहेब नहीं।' शाह ने भरे हुए कण्ठ से उत्तर दिया
'आप बवरम एक नामुमकिन बात को तब साबित करने की कोशिश
क्यों कर रहे हैं ? हम कैसे यकीन कर लें कि हमारी वही रियाया जो
हम से बेहद मोहब्बत करती है हमारे खिलाफ गद्दारी करेगी। और
उनकी सरपरस्ती के लिए बेगम तैयार होंगे। वही बेगम जिन्हें हम
अपनी आंखों से ज्यादा अजीज मानते हैं।

"गुस्ताखी मुआफ आलमपनाह" नकी खां ने कहा "रेजीडेंसी में
इस खबर तक पहुँचने का कोई न कोई माकूल जरिया जरूर होगा।
बर्ड साहेब को आप जानते हैं। वह कभी गलतख्याली से काम नहीं
करते। फिर मैंने सुना है उनके बड़े साहब तक भी यह बात पहुँच चुकी
है। ऐसी सूरत में हमें फौरन इन्तजाम करना चाहिए। हकीम बर्दवाली
के यहाँ बहुत से लोग जमा होते हैं जो जिल्लेसुभानी के खिलाफ गैर
कानूनी बातें करते हैं। उनके नापाक इरादे पूरे हों इससे पहले उनके
गिरोह को नेस्तोनाबूद कर दिया जाना चाहिए।"

"मगर उनके इरादे क्या हैं जब तक यह पता न चले हम कैसे
कोई कदम उठा सकते हैं ? नकी खां बगावत की जाती है उस बादशाह
के खिलाफ जो जुल्मपरस्त हो बरिस्ता और जालिम हो। हमसे इस
तरह की शिकायत किसी को नहीं। फिर कैसे मुमकिन है आम हमारे

खिलाफ़ गद्दारी पर आमादा हो सकते हैं। नहीं जब तक हम बेगम से इस मुतालिक बात न करें कुछ भी करना गैर मुनासिब है।"

नकी खाँ ने अपनी शंका प्रकट की "बात ज़ाहिर हो गई तो मुजरिम फ़रार हो जायेंगे। हमारे हाथ कुछ न लगेगा।"

मगर बादशाह फिर भी न माने। नकी खाँ चला गया। बादशाह ने उसे हिदायत दी कि रेजीडेंसी को क्या जवाब दिया जाना है। इसके बाद वह उदासी से अख्तर को पूछते हुए कहने लगे "आपने सुना बेशक हमारे खिलाफ़ गद्दारी का इंतज़ाम हो चुका है। अवध की रियासत में यह नई बात है। तभी तो हमें शराब की तलबकी होती है। क्या एक गैरतदार बादशाह इस तौहीन को बर्दाश्त कर सकता है ?

उन्होंने कनीज़ भेज कर बेगम को तलब करवा लिया था। कनीज़ गई तो अख्तर ने मीठे स्वर में बादशाह को आश्वासन दिया "हुज़ूरे आली की मायूसी फ़िज़ूल है आका। हमारी हुकूमत में बगावत नामुमकिन है। वज़ीर साहब अम्मा हुज़ूर की बात जाने दीजिए। वह रेजीडेंट के सामने जवाब नहीं दे सकते। लेकिन हम जानते हैं हमारा वज़ीर जानता है। हमारी रियाया हमसे खफ़ा नहीं। ऐसी सूरत में गद्दारी का सवाल नहीं उठता। बेगम साहब से मालूम हुआ तो शायद असलियत मालूम दे।"

करीब आध घंटे बाद बेगम आ गए। अख्तर को वहीं छोड़ बादशाह सलामत अंदरमंजिल के बड़े कमरे में आए। उन्होंने बेगम को अपने बराबर बैठा लिया और नकी खाँ की दी गई सूचना प्रकट की। बेगम सुनकर एकदम घबरा गए, फिर अकस्मात अपने आप को संभल कर उत्तर देने लगे 'योर मैजेस्टी को इत्तिला गलत नहीं मिली। हकीम अरमानी से यहां कुछ लोग जमा होते हैं। उनमें मैं और वजीह अली भी शामिल हूँ। लेकिन हमारा मकसद हुकूमत के खिलाफ़ गद्दारी करने से नहीं है। हम मिल बैठकर आने वाली मुसीबत से छुटकारा पाने की

पन्द्रह

स्लीमन की वापसी का समाचार मिला तो लखनऊ के नाके पर दरबार के खास हाकिम, रेजीडेंसी के नौकर-चाकर और शाह अवध की ओर से मिर्जा हज़रत स्वागत के लिए आए। स्लीमन तपाक से मिला और दौरे का महत्त्व प्रकट न करने को मुल्क की तरक्की और खुशहाली का ज़िक्र करने लगा। यह समाचार शाह अवध तक पहुँचा जिससे वह मन ही मन सन्तुष्ट हुए।

भेंट होने पर स्लीमन ने उनके सम्मुख भी ऐसा ही प्रकट किया। अवध की आबादी और तरक्की का ज़िक्र करते हुए बोला "गवर्नर जनरल की हिदायतों के मुताबिक मैं दौरा कर वापस आया हूँ। मगर मुझे इन्तज़ाम में कोई खामी नज़र नहीं आई जिसे बेइन्तज़ामी कहा जा सके। चोर डाकू किस मुल्क में नहीं होते। लाखों की आबादी में शिकायत करने वाले दो-चार हज़ार आदमी निकल आना भी मामूली बात है। मैं आपको मुबारकबाद पेश करता हूँ, और मैजेस्टी की हुकूमत पर लगा हुआ कलंक बेबुनियाद साबित हुआ।

शाह की बाँछें खिल गईं। स्लीमन ने उनके मन की बात कह दी। उनकी प्रसन्नता के लिये उन्होंने तुरंत उस लड़की का ज़िक्र किया जिसे हिरासत में ले शाही इंसाफ के लिए लाया गया था। जिस मुकदमे का मुद्दई खुद स्लीमन था। उन्होंने पूछा "क्या आप उस लड़की को सज़ा देना चाहते हैं, उसने आपके साथ रहते आपके खिलाफ कोई साजिश की?"

"सिर्फ़ उस लड़की के खिलाफ नहीं योर मैजेस्टी" स्लीमन ने कहा "मुझे पूरे एक गिरोह के खिलाफ शिकायत है। इस लड़की के साथ

लखनऊ में हजारों आदमी हैं। उन सब का मकसद बगावत के खिलाफ बगावत करने से है। वह मुझे रेज़ीडेंट नहीं देखना चाहते, आपको बादशाह और वज़ीर को वज़ीर नहीं देखने की ताब रखते। और खुद बेगम उनकी मदद कर रही हैं।"

"हमें बताया गया था मिस्टर स्लीमन" शाह ने उदास स्वर में उत्तर दिया "मगर हमने बेगम से बात की तो ऐसा मालूम हुआ जैसे यह बगावत नहीं।"

"योर मैजेस्टी" स्लीमन ने तपाक से कहा "बगावत की तारीफ किस तरह की जा सकती है। क्या मैं जान सकता हूं ?"

"बगावत गैर कानूनी होती है रेज़ीडेंट साहब। मगर कुछ लोग मिल बैठ कर आपस में बातचीत करें तो उसे बगावत नहीं कहा जा सकता।"

"योर मैजेस्टी मैं मुआफी चाहूंगा। मगर एक सवाल मेरा ज़रूर होता है।" स्लीमन ने सोचते-विचारते जवाब दिया "कुछ लोग मिल बैठें और फैसला करें कि स्लीमन को अवध से भगा देना चाहिए तो आप उन्हें रोकेंगे नहीं ?'

"ज़रूर रोकेंगे। यह हमारा फर्ज़ हो जाता है।"

"और उनमें आगे यह फैसला हो कि अगर आपकी तरफ से कोई ऐसा कदम उठाया जाये कि अवध की बादशाहत आपसे छीन कर आप के भाई मिर्ज़ा हसन को दे दी जाय तब ?'

"यह नामुमकिन है मिस्टर स्लीमन। यह हकीकतन बगावत है। हम· "

"मैंने यही बात खुद उस लड़की के मुंह से सुनी है। उसका कहना है हकीम मर्दमानी के यहां वही लोग जमा होते हैं जो आपके खिलाफ हैं और जिन्हें आपकी बादशाहत मंजूर नहीं। उसकी आंखों में हमारी आपकी दोस्ती बुरी तरह खटक रही है।"

शाही पनाह मिली तो बीरे की रिपोर्ट में तब्दीली होना मुमकिन है।"

कांपती आवाज को बरबस संयत कर शाह ने मुस्कुराने का विफल प्रयत्न करते हुए उत्तर दिया "हम अपने दोस्त को नाराज करने का विचार कभी नहीं करते वज़ीर साहेब। उन्हें इत्तिला भेज दी जाय कि अगर बैगम और वलीहू अली का इस गैरकानूनी काम में हाथ हुआ तो उन्हें ज़रूर सज़ा दी जाएगी। च्वाह उनसे हमारे कैसे ही तास्लुक क्यों न हो।"

नकी खां को उन्होंने अलग आदेश दिया "मौके की तलाश रखें। हकीम साहेब के मकान पर सिपाही तैनात कर दिए जाएं। आयन्दा उनकी मजलिस हो, और लोग वहां जमा हों तो उन्हें फौरन गिरफ्तार करवा दिया जावे।"

नकी खां सिर हिलाता वहां से चला गया।

समाचार स्लीमन के पास पहुंचा। वह सन्तुष्ट नज़र आया। उस समय वह और जोसफ निकट बैठे थे। स्लीमन ने जोसफ से कहा "अगर तुम्हारी इत्तिला सही है तो कम्पनी सरकार तुम्हारी एहसानमंद होगी। आगे जो होने वाला है आवाम की हरकतें गड़बड़ी पैदा कर सकती हैं।"

जोसफ ने उत्तर दिया "मैं बहुत छानबीन के बाद इस नतीजे पर पहुंचा हूं। उस दिन मीर मुन्शी नकी खां हकीम के मकान से निकल रहा था। मैंने अपने एक मुसलमान दोस्त की मारफत पता लगवाया। उसने तो यहां तक कहा इनके साथ अपने पुराने वज़ीर साहेब भी हैं।"

'आह!" स्लीमन ने उत्तर दिया "अगर यह सच हुआ और अमी-नुद्दौला भी और लोगों के साथ पकड़े गये तो हमारा रास्ता बिल्कुल साफ होगा। लेकिन मीर मुन्शी की बात का कोई इतमिनान नहीं। वह

पागल हो गया है।"

"अब उसका दिमाग ठीक है जनाब।" जोसफ ने कहा "वह इरशद के मकान पर रह रहा है।

"और इरशद? उसके बारे में क्या पता चला?" स्लीमन ने सवाल किया।

"उसका कुछ पता नहीं। एक और खतरनाक खबर है। सुनते हैं राजा चंपा सिंह को काशी जी से पकड़ लाये हैं। कानो के मुकदमे में उसे वजीर गवाह पेश किये जाने की तजवीज है। वह साबित करेगा जनाब ने साजिश करके अमीनुद्दौला को निकलवाया है।

"बकने दो" स्लीमन हँसता हुआ बोला 'वाजिद अली शाह किसी बात का यकीन नहीं कर सकते। मैंने उन्हें साफ तौर पर अपनी शर्त कहलवा भेजी है। अगर उन्होंने मेरी मर्जी के खिलाफ काम किया तो मैं उनकी दोस्ती भुला दूंगा।"

इस बार बर्ड से न रहा गया। वह बोल उठा "यह धोखा है। सर, हमारे लिये ऐसी ओछी तरकीबों का इस्तेमाल मुनासिब नहीं। जब आप गवर्नर को अवध की हुकूमत कब्जे में लिये जाने की सिफारिश कर चुके हैं और अब वहां से बादशाह के लिये नए हुक्म आने का इन्तजार कर रहे हैं तो हिज मैजेस्टी को इस तरह क्यों बहकाया जा रहा है?"

"यह पालिसी है बर्ड। तुम नहीं समझोगे। ब्रिटिश लोग हमेशा एक उसूल को मानते आये हैं। दुश्मन को मोहब्बत की बातों से आखिर तक भरमाए रक्खो। तुम देखना, हम यहां से तबादले पर जब अलग जायेंगे जब बादशाह की बादशाहत खतम हो जायेगी तब भी वाजिद अली हमारी शानदार विदाई करेंगे। उन्हें आखिर वक्त तक हमारी सियासत नीति पर शुबा न होगा।"

"क्या डीप्लोमेसी सर" बर्ड से न रहा गया। स्लीमन की मक्कारी भरी बातों से पीड़ित हो उसने कहा "आपने बादशाह सलामत को बिल्कुल

नादान समझ रक्खा है। आप का ख्याल है वह आपकी हरकतों से आगाह नहीं और आपको अपना हमदर्द समझते हैं। मगर यह बिल्कुल गलत है। वह आपसे और आपकी कम्पनी सरकार से चौकन्ने हैं और इसलिए आपकी दोस्ती का दम भरते हुए आपको मुखालिफ़ करना चाहते हैं। लेकिन वह बेचारे नहीं जानते आप अंग्रेज़ पहले हैं, दोस्त बाद में।"

"तुम हमारी तौहीन कर रहे हो बर्ड।' स्लीमन ने तेज़ स्वर में कहा 'तुमने दूसरे अलफ़ाज़ में हमें बेईमान और मक्कार कहा है।"

"मैं खुद ऐसी गलती नहीं कर सकता सर, चूंकि इसमें बराबर आपका साथ दे रहा हूं। लेकिन जिसकी जो असलियत होती है, सामने आकर रहती है। आज यह बात हमारे हक़ में है कल तमाम दुनिया के हक़ में होगी। लेकिन इसका नतीजा मुझे साफ़ नज़र आ रहा है। मगर हम इसी तरह एक के बाद एक रियासत तबाह करते गए और बादशाहों को उनके जायज़ हक़ से महरूम करते गए तो एक दिन बगावत की खतरनाक आग हमारे और हमारे बालबच्चों को झुलस डालेगी। वह दिन ज़्यादा दूर नहीं। नागपुर, सतारा दिल्ली पंजाब राजपूताना, चारों तरफ़ के बादशाह हम से नाराज़ हैं। हमने इन्हें बेजुबान बच्चों की तरह इस्तेमाल किया है। इसका बदला वह हमारे बच्चों से लेंगे। और तब कम्पनी सरकार को महसूस होगा हिन्दोस्तान में हुकूमत के लिए पांव जमाने हैं तो इनकी दुश्मनी से नहीं दोस्ती से काम निकालना होगा। जो कुछ हमारे कब्ज़े में है हमें उसी पर सब्र करना होगा। ज़्यादा पांव फैलाये गए तो एक दिन उन्हीं पांवों को काट फेंका जाएगा।"

"बर्ड" स्लीमन ने टोकते हुए कहा "तुम्हारे मुंह से बगावत की बू आ रही है। हम जानते हैं तुम शाही घराने से ताल्लुक रखते हो और बहुत दूर तक तुम्हारी पहुंच है। लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि तुम अपने मालिकों के खिलाफ़ ज़हर उगलो। हम इसकी रिपोर्ट गवर्नर

अमल को करने पर मजबूर होंगे।"

"सर की मुखालफ़त महँगी पड़ती है जनाब।" बर्ड ने निडरता से उत्तर दिया "मैं नौकरी चले जाने से या कैद काटने से नहीं डरता। लेकिन इससे पहले आपको कुछ उन गवर्नर जनरलों की कहानी से सबक लेना होगा जो हिन्दोस्तान में ब्रिटिश हुकूमत जमाने में अपना खून पसीना एक कर गए मगर ज्यों ही इंगलैंड में उनकी जालिमाना दास्तानें आम हुईं, चारों ओर से उन पर शर्म बरसाई गई और उनके खिलाफ कानूनी तौर पर कार्रवाही हुई। यह आप भी जानते हैं और मैं भी। हमारी पार्लमेंट ईमानदारी और इंसाफ का नाटक खेलने में माहिर है। इस चक्कर के नीचे आने वाला तबाह हो जाता है। चाहे वह आप हों या मैं। अवध की दास्तान असलियत के साथ जाहिर हुई तो इंग्लैंड के शरीफ लोग आपके खिलाफ आवाजें बुलन्द करेंगे। नतीजा क्या होगा आप समझ सकते हैं। मैंने बादशाह की मजबूरी पर रहम खाते हुए चन्द अलफ़ाज़ कहे हैं अगर उनमें आपको बगावत की बू नज़र आती है तो मैं कहूँगा आप जो कुछ यहाँ कर रहे हैं वह सरासर बगावत है। कम्पनी सरकार के साथ खुली बगावत। क्या कम्पनी सरकार आप से झूठी रिपोर्ट करने के लिए कहती है? क्या उसका यह हुक्म है कि आप वाजिद अली शाह को धोखा देते रहें? क्या उसने यह कहा था कि गंगा सिंह शाह के ज़रिये । पर यह सब आपकी जाती दुश्मनी है जो रंग ला रही है। बादशाह के खिलाफ आप में मुखालफ़त भरी हुई है। आप न जाने क्यों मन ही मन उस बेचारे से जलते हैं। और तभी जानबूझ कर उसे तबाह करने की तदबीरें कर रहे हैं।"

बर्ड उठ कर चला आया। स्लीमन का चेहरा उतर गया। जोसफ शान्ति से सब कुछ सुन रहा था। उसमें साहस न था कि वह स्लीमन से अपने मन की बात कहता। स्लीमन खुद इस स्थिति में था कि कुछ न सुन सके और न कह सके। बहुत देर इसी तरह शान्ति रही। कमरे

का वातावरण अनायास सकंपित हो गया ।

बहुत देर बाद स्लीमन जोसफ से बोला "बर्क की बातों को दिमाग से निकाल दो । कम्पनी सरकार क्या चाहती है क्या नहीं, इसे नहीं मालुम । हमें काम के लिये मुनासिब खबरदारी रखनी होगी । अब वक्त नजदीक है जब मरियम और नकी खां की मारफत हमें अपना सब से अहम काम पूरा करना है ।"

जोसफ ने वातावरण की गम्भीरता प्रतीत करते हुए धीमी आवाज में उत्तर दिया "यह बहुत मुश्किल होगा सर । मरियम बदल चुकी है । नकी खां महसूस करने लगा है कि बादशाह की मौत उसकी वज़ारत की मौत होगी ।"

स्लीमन आश्चर्य से जोसफ को देखने लगा । बर्क के शब्दों का प्रभाव अब तक मस्तिष्क पर भारीपन पैदा किये हुए था । जोसफ के इस वाक्य ने जैसे ज्वालामुखी सजीव कर दिया । उसने मरियम के स्थान पर नकी खां को बुरा भला कहते हुए जोसफ को समझाया "उस कुत्ते की इतनी मजाल कि वह हमारी मुखालफत करे । तुमने उसे बता नहीं दिया, उसकी वज़ारत और उसकी जिन्दगी दोनों हमारे हाथ है । उसे समझ लेना चाहिये जिस बादशाह की हमदर्दी में वह हमारा दुश्मन बनेगा वही उसे गद्दारी की सजा देने पर बहुत जल्द तैयार हो जायेगा ।"

"सर शायद उसकी बेटी की शादी ने उसकी आँखों पर से पर्दा हटा दिया है ।" जोसफ बोला और विवशता से स्लीमन को देखने लगा । स्लीमन की त्यौरियों के बल अनायास बढ़ गये और उसने हेय दृष्टि से जोसफ की बात का प्रतिवाद किया । जोसफ समझ गया और तुरन्त प्रसंग बदल कर दूसरी बात कहने लगा 'मगर अब आप को खुद उससे बात करनी होगी । हमारे पास ऐसा मसाला मौजूद है जिससे न सिर्फ

और पुण्य के उलझावे में उलझ कर ऐन वक्त पर धोखा दे रही है। कोई उपाय न समझ आ सका जिससे उसे कब्जे में करने का रास्ता निकल आता।

योसफ बोला "वैसे मैं एक बार महल जाकर उसे समझाने की कोशिश और करता मगर मुझे डर है कहीं वह जोश में कोई बखेड़ा न कर बैठे। तब बड़ी मुश्किल होगी। हमारा बनाया किरौंदा मिट्टी में मिल जायेगा।"

स्लीमन ने नई बात कही "अगर वह हमारी मदद पर तैयार नहीं तो न सही। मगर तुम्हें उससे मिलकर उसकी ज़बान को ताला ज़रूर लगवाना होगा। उसने कुछ उगल दिया तो हमारी बदनामी होगी।

योसफ ने उत्तर दिया "इतनी हिम्मत उसमें नहीं है। नहीं तो अब तक कह देती। मगर उसे अब तक मेरी मोहब्बत पर यकीन है। बादशाह का खौफ दूसरी चीज़ है। जिस बात को उसने बहानी तक-लीफ कहकर छिपाने की कोशिश की वह दरअसल शाही ग़ज़ब का डर है जो उसे ज़बान बन्द रखने पर मजबूर किये हुए है। वाजिद अली मोहब्बत में इतना ज़बरदस्त धोखा खाकर चैन से बैठने वाले नहीं। वह मरियम की हड्डियाँ तुड़वा डालेंगे।

स्लीमन शान्त हो गया।

कुछ देर बाद बोला 'उसका ज़िन्दा रहना भी खतरनाक है। खैर" हकीम बदेखानी के बारे में तुम्हारा क्या ख्याल है?"

"ही फीसदी आप से मिलता हुआ। नकी खाँ वज़ीर हमारी मदद करे तो हम उन सब लोगों को एक ही बार में खत्म कर सकते हैं जो हमारे खिलाफ आवाज़ उठायेंगे। और आप जानते हैं ऐसा होना कम्पनी गवर्नमेंट के पैर जमाने के लिए बहुत ज़रूरी है।"

"हमने नकी खाँ को समझा दिया है। हकीम बदेखानी के घर उसी वक्त छापा मारा जायेगा जब वहाँ इकबाल अमीनुद्दौला और वहीद अली जैसे बड़े-बड़े लोग मौजूद हों। बाँसरी का मुंह तोड़ दिया तो आवाज़

निकलना आप से आप बन्द हो जायेगी।"

"खुदा हमारी मदद करेगा। हम अपने मजहब और अपने मुल्क के लिये सब कुछ नेक कर रहे हैं। इसमें रुकावटें नहीं पड़ सकती।

"आमीन। स्लीमन अपने तखे में पड़े क्रास पर हाथ रखते हुए कहने लगा— 'एक दिन ग्रैम्डन से मैंने कहा था जोसफ कि उसकी एक-एक बात का बदला लिया जायेगा। मैं बेचैनी से उस दिन का इन्तजार कर रहा हूँ। मुझे उन लोगों से सख्त नफरत है जो हिन्दोस्तानी बादशाहों के साथ हमदर्दी और मोहब्बत का हाथ बढ़ाते हैं। यह मामहूल जाहिल और बेकार हिन्दोस्तान के बादशाह हैं। उन्हें कम्पनी सरकार की पनाह में जल्द से जल्द आ जाना जरूरी है। ग्रैम्डन अंग्रेज होते हुए अंग्रेजों का दुश्मन है। वह रूहानी और कस्बी बातें करता है। उसे याद नहीं रहा अपने घरों से हजारों मील दूर आ जाने के बाद एक अंग्रेज को अपने अंग्रेज भाइयों के नफा के अलावा किसी रूहानी या जिस्मानी तकलीफ का ख्याल नहीं करना चाहिए। उसका सब से बड़ा फर्ज, सब से बड़ा ईमान सब से बड़ा मजहब अपने मुल्क के लोगों की भलाई करने में है। भलाई सोचने और भलाई समझने में है। उस दिन उसने मुझे जलील किया था। अब उसे मालूम होगा वही वाजिद अली शाह जिसकी हमदर्दी में वह अपने मुल्क के भाइयों को भूल गया है, उसे सजा देगा। इन्साफ की तराजू पर उसकी हमदर्दी को गद्दारी करार दे उसे ठोकर मारेगा। वह दिन खुशनसीब होगा जोसफ। वह दिन जल्द आना चाहिए मेरे अजीज। बहुत जल्द।"

जोसफ रेजीडेंसी से निकला वहीं बख्त बर्ड ने उसे पुकार लिया। जोसफ इसका कारण सोचता कप्तान बर्ड की प्रतीक्षा करने लगा।

बर्ड आया और बोला—"आज मैंने छिपकर तुम लोगों की बातें

सुनी हैं। मुझे पहले से शक था मगर स्लीमन साहेब ने हमेशा मुझसे छिपाने की कोशिश की। आज यकीन हो गया तुम्हारी बीवी मरियम क्योंकर शाही महल में पहुँचाई गई। जोसफ क्या यह सच है कि तुमने वाजिद अली को इस नाजुक हथियार से तबाह किया है ?"

जोसफ ने बात टालने का प्रयत्न किया। लेकिन बर्ड उसके साथ हो लिया और बार-बार पूछने लगा। तब जोसफ ने अपना मत व्यक्त किया— "क्या आप बादशाह से मेरे खिलाफ शिकायत करेंगे ? मगर इसका कोई फायदा नहीं होगा। उन्हें मरियम पर बेहद यकीन है।"

"मैं किसी से शिकायत नहीं करना चाहता जोसफ" बर्ड ने उदास स्वर में कहा— "मैं तुम्हीं से एक सवाल पूछना चाहता था। क्या तुम्हारा जमीर इस जुल्म पर बखुशी आमादा हो गया ?"

जोसफ ने उत्तर दूसरे शब्दों में दिया— "ताज्जुब है बर्ड साहेब। आपने ऐसा सवाल पूछा है। आप नायब रेजीडेंट हैं। कम्पनी सरकार के नुमायन्दे। आपका फर्ज "

"मेरा फर्ज मेरे सब्र के इम्तहान में टुकड़े-टुकड़े हो गया है दोस्त। शराफत और लूट खसोट में पुश्तैनी दुश्मनी है। यहाँ जो हो रहा है डकैती है। मैं इसमें ज्यादा शिरकत नहीं कर सकता।"

"तो क्या आप नौकरी छोड़ देंगे कम्पनी सरकार से गद्दारी करेंगे ?"

"अभी तक यह फैसला मैंने नहीं किया है। मगर ताज्जुब नहीं किसी दिन अपनी नौकरी से इस्तीफा देकर बादशाह की तरफ से वकील बनकर अपने ही हाथों किये गये जुल्मों का कम्पनी सरकार से जवाब माँगूँ। लेकिन इस वक्त तुमसे महज एक बात पूछना चाहता हूँ। तुम इंग्लैंड की जमीन पर पैदा होने वाले अंग्रेज नहीं हो। इसी अवध में तुम्हारे बुजुर्ग इन्हीं बादशाहों के साये में पले और बड़े हुए हैं। ईसाई मजहब अख्तियार कर लेने का यह मतलब नहीं होता कि तुम्हारा मुल्क भी बदल गया। तब कैसे तुम्हारे कलम पर बादशाह की बेबसी दस्त

पैदा न कर सकी ? बताओ योसफ कल हम न रहे, हमारी हुकूमत न रही तो तुम कहाँ जाओगे ? क्या तुम्हें हमारे मुल्क वाले कुबूल कर लेंगे ? नहीं वह तुमसे नफरत करेंगे। तब तुम्हें इसी हिन्दोस्तान में रहना होगा। उस वक्त यह हाकिम यह राजे-महाराजे तुम्हें किस नजर से देखेंगे। क्या सजा तुम्हारे लिए तजवीज करेंगे बोलो ?"

योसफ के चेहरे पर बेशर्मी की हँसी दौड़ गई। उसने बर्ड को उत्तर दिया—"मैं इतना आगे तक सोचने का आदी नहीं। जो कुछ आज है उसी को देखना और समझना पसन्द करता हूँ। और हिन्दोस्तान के इन बुज़दिल व ऐयाश बादशाहों के बारे में अच्छी तरह जानता और समझता हूँ। अपनी कम्पनी सरकार के मुकाबले यह ईसाई मजहब के ज्यादा मुवाफिक नहीं हो सकते। सीधी सी बात है। हमारा मजूर जहाँ हो हम उसी को अपना सब कुछ निछावर कर देंगे।"

"मगर इन्सानियत और ईमानियत को देखने और समझने की कोशिश तो करोगे न मेरे दोस्त। मैं वाजिद अली की कमजोरी जानता हूँ। मरियम मोहब्बत के सदके में उसकी जान माँग ले तो वह खुशी खुशी दे डालेंगे। लेकिन मेरे भाई, मैं तुमसे इल्तजा करूँगा तुम ऐसा जुल्म मत कर डालना। मरियम को समझाने की कोशिश मत करना जैसा तुम स्लीमन से कह रहे थे। ईमानियत से काम लो योसफ। तुम्हें खुदा को जवाब देना है।

योसफ ने व्यंग्य किया—'जवाब आपको भी देना है। आप खुद मरियम को क्यों नहीं समझा देते। बादशाह से हमदर्दी है तो ?'

'मेरी मजबूरियाँ मेरे लिए सबसे बड़ी दीवारें हैं। योसफ, काश मैं कम्पनी का मुलाज़िम न होता। काश मैं अपने फर्ज से वाकिफ होकर मरियम की आँखें खोलने लायक हिम्मत पैदा कर सकता। मगर नहीं जब तक मेरे बदन पर कम्पनी सरकार की यह पोशाक और कन्धों पर यह बिल्ले लगे हैं मैं कुछ नहीं कर सकता। मैं बिल्कुल मजबूर हूँ। कर

सकता हूँ तो सिर्फ इतना कि तुम्हारे आगे हाथ पसार कर किसी नेक और शरीफ इन्सान के लिए भीख मांगूं। कहूँ कि खुदा के लिए चाल बाज़ी का रास्ता छोड़ दो। कहूँ कि हिन्दोस्तान के बाशिन्दे गैर मुल्क के चालाक और ऐयार लोगों के दिये हुए सब्ज़बागों की रोशनी में अपने मुल्क और मुल्क की आज़ादी को न भुला। गुनाह कर मगर इन्तहा न कर।

जोसेफ चला गया। बर्ड खड़ा रहा। उसकी बातों का जोसेफ पर कोई असर हुआ हो ऐसा न लगा। वह अपने बंगले वापिस आ गया। उसका मस्तिष्क बहुत विच्छिन्न था। बार-बार वह अपने आप से घृणा कर रहा था। बार-बार उसे स्लीमन के व्यवहार के भीतर छिपा षड्यंत्र नज़र आ रहा था। कैसा है यह व्यक्ति ? इसने अपनी आत्मा का हनन कर डाला है ? कम्पनी सरकार के लिए अपने ईमान और इन्सानियत की बाज़ी लगा दी है। क्या यह सब इसलिये कि उसके मुल्क के लोगों का लाभ हो ? उफ़। वह खुद उसी देश का निवासी है। नागरिक है और नागरिक के कर्तव्य भी समझता है। किन्तु स्लीमन और उसमें कितना अन्तर है ? न जाने यह अन्तर क्यों उत्पन्न हुआ। क्या इसलिए कि स्लीमन का दिल बर्ड के दिल के प्रतिकूल हिन्दोस्तानी बादशाहों राजों महाराजों और नवाबों को अपना और अपने देश का शत्रु समझता है और ऐसा है तो क्यों ? क्या वह ठीक करता है ? क्या कोई पाप नहीं कर रहा वह ?

मरियम बर्ड को नहीं पहचानती थी। दो चार दिन बीतते न बीतते बर्ड से न रहा गया तो एक दिन वह बशीरुद्दौला के द्वारा मरियम से भेंट करने उसकी तबियत का बहाना लेकर आ पहुँचा। ख्वाजासरा ने इसलिए इस पर आपत्ति न की चूंकि वह और वाजिद

अली शाह की मित्रता का उसे भली प्रकार ज्ञान था। लेकिन मरियम कनीज़ से उसका समाचार सुन एकाएक चौंक पड़ गई। उसकी समझ में न आया कि बर्ड क्यों उससे मिलने आया है।

आरम्भ में वह मरियम महल से उसके हाल-चाल पूछता रहा। मरियम उत्तर देती रही। पलंग के चारों ओर छत तक जाने वाली ऊँची बड़ी मसहरी लगी हुई थी। इसी को पर्दे का उपनाम दिया जा सकता है। उसकी जाली के भीतर बैठी वह बर्ड से हरम की मर्यादा के अनुसार बात कर रही थी। तभी बर्ड ने उससे पर्दा हटवा देने की अपील की। उदास और गम्भीर शब्दों में वह बोला "मैं वाजिद अली शाह की बेगम मरियम सुल्ताना से मुलाकात करने नहीं आया था। ईसू मसीह का एक नाचीज़ बन्दा अपनी ईसाई बहिन से कुछ कहने और कुछ सुनने आया था। उसके लिये यह पर्दा बिल्कुल बेकार होगा। मुनासिब हो तो कनीज़ को मसहरी हटाने का हुक्म देते हुए उसे भाई बहिनों की बातें न सुनने का हुक्म देकर कमरे से बाहर कर दें।"

मरियम पर बर्ड के प्रभावशाली शब्दों का प्रभाव हुआ। वह पल भर सोचती रही और तब दासी को मसहरी उठाने की आज्ञा देते हुए वह ये बोली "बहिन खुशनसीब है कि एक आला अफसर उस पर करम करता है। क्या करूँ, बीमार हूँ वरना उठ कर अपने भाई का इस्तकबाल करती।"

पर्दा उठाकर दासी आज्ञानुसार कमरे से बाहर चली गई। बर्ड ने मरियम को देखा। आँखों के चारों ओर काले गड्ढे धँसे हुए थे। बहुत कमज़ोर थी। बीमारी ने उसकी सुन्दरता नष्टप्राय कर दी थी। फिर भी आमने वाला ओज प्रकाशित था। चेहरे से प्रतीत हुआ वाजिद अली का धोखा या आभा अनुचितसंगत नहीं था।"

मरियम दासी के जाने पर बोली "हुक्म दीजिए मिस्टर बर्ड मैं बदनसीब आप की क्या खिदमत कर सकती हूँ?"

बर्ड ने गम्भीरता से उत्तर दिया "चन्द सवालों का जवाब चाहता हूँ बहिन मुझे तुमसे कुछ पूछना है।'

मरियम कारण न सोच सकी आखिर उससे क्या पूछा जाने वाला था। फिर भी वह स्वीकृति में सिर हिलाती बड़े धैर्य से बर्ड की ओर देखती रही।

बर्ड ने पूछा 'मैं अपनी मरियम बहिन के दिल की बहुत बातों से वाकिफ हूँ। वह किससे मोहब्बत करती है किससे ब्याही गई है, क्या माँगती है क्या चाहती है उन सबका ज़िक्र नहीं करूंगा। सिर्फ एक बात है जिसका मुझे जवाब चाहिए। मैं जानना चाहता हूँ जिससे मोहब्बत हो क्या उससे वफ़ा की उम्मीद करना गैर मुनासिब है?"

नहीं। मरियम बर्ड के चेहरे पर नजर गड़ाये उसके सवाल का महत्व भांपते कहने लगी 'मोहब्बत का दूसरा नाम वफ़ा है। जो वफ़ा नहीं कर सकता वह मोहब्बत नहीं करता।"

"इसका मतलब हुआ बहिन मोहब्बत के पाक जज़्बात के पीछे इंसानियत और शराफ़त का तकाज़ा रहता है कि वह कम से कम उस नेक इंसान को धोखा न दे जो किसी से दिलोजान की मोहब्बत करता हो?"

"आपका मतलब?" मरियम बर्ड का इशारा समझ गई और कांपती आवाज़ में पूछने लगी बर्ड साहेब आप किस बदनसीब के मुतालिक कह रहे हैं खुदा के लिए साफ़-साफ़ बताइये। मुझ में यह सिर्फ सुनने की हिम्मत नहीं।'

बर्ड स्पष्टवादिता से अपने तात्पर्य पर आ गया "मैं बादशाह सलामत के बारे में कह रहा हूँ। वह आप से बेइंतहा मोहब्बत करते हैं।"

"खुदा का शुक्र है।" मरियम की आवाज़ धमाकी हो गई और अब वह बर्ड के मनोभाव भली प्रकार समझ चुकने के बाद अधीरता से भविष्य की आशंका में डूबने-उतराने लगी। बर्ड के पहले वाक्य से स्पष्ट

हो चुका था, मरियम के प्रति बेवफा होने का आक्षेप सिद्ध है, और अब मरियम को चिन्ता हुई यह सोच कर कि बर्ड न जाने क्यों इस अप्रिय प्रसंग को उठा रहा है।

बर्ड ने कहा "हरम में ऐसी बेगमात की कमी नहीं है मरियम बहिन जो बादशाह के प्यार मोहब्बत की चाह में अपने शिकार खेला करती हैं। जब उनकी अहमियत में खामख और कमजोरी होती है इसलिये मैं शिकायत नहीं कर सकता। जब मुझे पता चलता है कि किसी बेगम का ताल्लुक किसी हकीम से है किसी दरबारी या वजीर से है तो मैं यह सोचकर खामोश रह जाता हूँ कि जब बादशाह सलामत खुद उनसे मुतमईन नहीं तो उन्हें पूरा हक ऐसी मुराश्लतों के लिए मौजूद हो जाता है। मगर जब मुझे यह पता चलता है कि बादशाह सलामत किसी खास बेगम से बजाहिर मोहब्बत करते हैं उसके लिए सब कुछ करने पर आमादा हैं उसे सहरों की धूप से बचा कर महलों की रौनक बना सकते हैं तो मैं सोचने पर मजबूर हो जाता हूँ, वह कौन सी वजह हो सकती है जो उस बेगम को हिज मैजेस्टी का दिल तोड़ने या उन्हें बरबाद करने के मनसूबे तैयार करने पर मजबूर करे। आज रैजीडेंसी से चलते वक्त इसी सवाल का जवाब पूछने मैं यहां तुम्हारे सामने आने पर आमादा हो गया। बहिन क्या तुम जोसफ के लिए एक नेक और भोले बादशाह को उसकी बादशाहत से महरूम कराने की साजिश में हिस्सा ले रही हो?"

'बर्ड साहेब" मरियम कांप गई और थरथराई आवाज में बोली "आपने बजाहिर इतना सब कहने की हिम्मत कर ली बड़े ताज्जुब की बात है। मालूम होता है आपकी जानकारी काबिले तारीफ है। खुदा का शुक्र है, आजकल जिस दिमागी हालात में मैं चल रही हूँ उसमें आपकी बात मैंने बर्दाश्त कर ली। लेकिन अब खुदा के लिए साफ-साफ बता दीजिए। क्या आपका यहाँ आने से मतलब मुझे जलील और पामाल

करता है ? या आप भी मुझे धमकाने आये हैं ? चाहते हैं मैं जोसफ के कहे मुताबिक अपने वज़ीर को किसी की शराफ़त से टकराने पर आमादा हो जाऊं ? आपका असल मंशा है क्या ?"

"मैं तुम्हें धमकाने या डराने नहीं आया मेरी बहिन । मैं यह भी नहीं चाहता कि तुम अपने वज़ीर के खिलाफ़ कोई बेहूदा काम करो । मैं ईसाई होने के नाते अपने खुदावन्द करीम का पैग़ाम तुम्हें सुनाने आया हूं । तुम मुसलमान हो ज़रूर गई हो मगर मेरा यक़ीन है बाइबिल की पाक नसीहतें अभी तक तुम्हारे दिली दिमाग़ से मिटी नहीं होंगी । बहिन ईसा मसीह का कहना है, किसी को धोखा न दो किसी पर ज़ुल्म न करो । जोसफ मेरे मज़हब को मानने वाला है मगर उसने तुम्हें ग़लत रास्ते पर बढ़ाया है । मैं तुमसे इल्तजा करने आया हूं तुम झूठ मज़हब की आड़ में इतना ज़ुल्म मत करो जिससे सच्चा मज़हब इंसानियत हमेशा-हमेशा को कालीखा हो जाये ।"

मरियम बर्ट की आँखों में झांक रही थी । अब सहसा उसकी आँखों से आँसू निकलने आरम्भ हुए । पहले वह रोकती रही । किन्तु धीमे-धीमे आवेग बढ़ गया । आँसुओं की अविरल धारा भीतर के धधकते ज्वालामुखी का विक्षोभ सिद्ध करने लगी । बर्ट देखता रहा । मरियम के बारे में जैसा सोच कर आया था वैसा ही पाया था । मन ही मन वह बहुत सन्तुष्ट था ।

किन्तु उसने मरियम के आँसुओं को दृष्टि में रख दूसरी बात कही । वह बोला "शायद मेरा कहना बहुत बुरा लगा मेरी बहिन को ?"

"नहीं । मरियम ने जवाब दिया "बुरा नहीं लगा मिस्टर बर्ट । मैं किसी और वजह से परेशान हो गई थी ।"

"शायद इसलिये कि मेरी जानकारी कितनी खतरनाक है । सोचो तुम्हारे लिये अब हरम में रहना कितना खतरनाक होगा । लेकिन मैं यक़ीन दिलाता हूं मैं तुम्हारा दुश्मन नहीं । वाजिद अली के ऊपर होने

आपके ज़ुल्म पर शर्म से मेरा सिर झुक रहा है। उसी शर्म बोझी में मैं तुम्हारे पास चला आया हूँ। लेकिन तुम्हें किसी ख़तरे से आगाह करने के लिये नहीं आया। आया हूँ तुम्हारे उभरते नेक जज़बात को खोने से बचाने के लिये। तुम जिस योसफ़ को अपना सब कुछ समझ कर आज अपने रहम दिल बादशाह पर ज़ुल्म कर रही हो नहीं जानती वह क्या है? उसे सिर्फ़ पैसे का लालच है। वह अपने मफ़ाद के लिये तुम्हारी मदद से तुम्हीं को गड्ढे में ढकेल रहा है।"

"जानती हूँ मिस्टर बर्ड। और यही मेरी परेशानी का बायस था" मरियम कठिनाई से अपनी हिचकियाँ रोकती कहने लगी "मैं सोच रही हूँ मैंने आज तक क्या किया है और क्यों किया है। योसफ़ ईसाई है और आप भी। उसने मुझे इंसान से हैवान बनाया और मैंने उसे क़ुबूल किया। आज आप फिर इंसानियत का पैग़ाम लेकर आये हैं और मैं उसे क़ुबूल करने से मजबूर हूँ। मिस्टर बर्ड यह मसला आज पहली बार मेरे सामने नहीं आया। आप रेज़ीडेंसी से ताल्लुक़ रखते हैं। वहीं आपको मेरी हक़ीक़त की जानकारी हुई होगी। तब आपने यह भी सुना होगा कि मैं अब बदल रही हूँ। ठीक है न। अब आप ही कोई फ़ैसला सुनाइये। जो कुछ मैं कर चुकी हूँ उसकी वापसी नामुमकिन है। तब मैं अपने गुनाहों की मुआफ़ी किस तरह हासिल करूँ। आज आपकी बातें बड़ी भली मालूम दे रही हैं। लगता है मैं आप से नहीं ख़ुद अपने आप से बातें कर रही हूँ। तभी बार-बार मेरे दिमाग में एक सवाल पैदा होता है। योसफ़ या योसफ़ का कोई दूसरा साथी अब मुझे मजबूर नहीं कर सकता कि मैं गुनाहों की काली चादर लपेट ओढ़ लूँ। बादशाहे अवध मेरे सरताज हैं और मैं उनकी मोहब्बत की ताउम्र मजबूर रहूँगी। मगर कैसे उस दाग़ की सलीब अपने जिस्म से साफ़ करूँ जो योसफ़ की वजह से लग चुकी है। बदनामी और बेशर्मी। क्या यही दो रास्ते रह गए हैं जिनको साथ लिये मैं इस दुनिया से कूच कर जाऊँ।

इसी मजबूरी से मैं रो पड़ती हूँ।"

बर्ड ने कहा 'मेरी बहिन आज सचमुच खत्म चुकी है। मैंने सब सुना था। अब मुझे यकीन हो गया कि हालात चूर-चूर होगी। मैं अपने यथासम्भव ताईद लेकर अपनी बहिन का सबूत ताईद देने का उम्मीद-वार हूँ।"

"भाई" मरियम बोली "आप को समझाने आये थे अब मेरी बातें सुनने के बाद उसका इरादा बदल चुके। ठीक है। मगर मेरा सवाल ज्यों का त्यों है। मुझे अपने चारों तरफ कोई ऐसा आदमी नहीं मिला जिससे मैं यह सवाल करती। आप ही बता दीजिये मेरे गुनाहों का वजन किस तरह कम हो सकता है?"

"सच्चे सबब की हमदर्दी करने से। मरियम महल जिसने आप को सब दुख दिया है अब उसे आप की वजह से कोई नुकसान न पहुँचे यही आप का सब से बड़ा पछतावा होगा।"

मरियम की आँखों से फिर आँसू बहने लगे। उसने कहा "बेशक आप भी हैं, लेकिन आप का दिल कितना इंसाफ पसन्द है। योसफ ने मुझे धोखा दिया। उसी की वजह से आपको यहाँ आज मेरे खिलाफ शिकायत लेकर आना पड़ा। मगर मेरे लिये अब कोई रास्ता नहीं जिससे मैं अपने गुनाह धो सकूँ। मौत के अलावा चारा नहीं जिससे अपना जमीर साफ कर सकूँ।"

"नहीं बहिन। तुम बादशाह की ताकत और हिम्मत बन कर उन्हें मुसीबतों से लड़ने की कुव्वत दे सकती हो। मौत बुजदिलों के जमीरों को धोया करती है। तुम बहादुर हो। योसफ जैसे कमीने आदमियों की वजह से जो बादल अवध के चारों तरफ उमड़ पड़े हैं बादशाह की उन से हिफाजत करो। यही तुम्हारा सब से बड़ा मजहब है।"

बर्ड को इससे अधिक कहना अनुचित प्रतीत हुआ। योसफ और स्लीमन की बातों से डर कर वह मरियम से कुछ मांगने गया था किन्तु

यह उसने पासा उलटा हुआ देखा। मरियम सचमुच कुछ दूसरी मजर आई। अब वह उस मुमकिन नहीं था जिसकी स्लीमन साहेब आशा करते थे। पत्र समझाना व्यर्थ था। वह लौटते हुए मरियम को दिलासा और हिम्मत देता हुआ वापिस लौटा। उसने तो यहाँ देखा जैसे मरियम अपने किये पर बहुत ज्यादा दुखी है और किसी तरह अपने मन का चोर दबाये कठिनाई से अपने दिन पूरे कर रही है।

अगले दिन सुबह ही रेजीडेंसी में उसे हकीम बरवाली के यहाँ छापा पड़ने का समाचार ज्ञात हुआ। स्लीमन खुद जोर-शोर से यह रहा था। हकीम बर्दवाली के साथ कई आदमी गिरफ्तार हुए थे जिनके खिलाफ राजद्रोह का जुर्म था। अंग्रेज पकड़े गये थे। अमीनुद्दौला उस वक्त हकीम के घर उपस्थित नहीं मिले। इशरत मिर्जा मिस्त्री बानो इत्यादि, विद्रोहियों के सभी नेता एक साथ गिरफ्त में आ गये। बर्ड को यह भी बताया गया अब उन पर मुकदमा चलेगा। उन्होंने वाजिद अली शाह की हुकूमत पलटने की साजिश की थी जिसकी उन्हें सजा मिलेगी।

बर्ड सुनकर एक आह खींचता रह गया। वह समझ नहीं सका कि शाहे अवध की शक्ति कितनी तेजी से कदम बढ़ाती जा रही है। कहाँ तो एक बतरनाक साजिश के प्रमाण में आज तक मरियम महल शाहे अवध की प्रिय बेगम बनी महल में उपस्थित थी। और कहाँ शहर के कुछ बाइज्जत लोग बादशाह की हमदर्दी का इरादा करते-करते साजिश करने के गुनाहगार हो गये। अजीब बात थी। जो वास्तव में धोखा हो फरेब हो उसकी खबर बादशाह को मिल न सकी। और जो उनकी हमदर्दी कर रहे हों उनके विरुद्ध भयानक समाचारों से महल का कोना-कोना गूंज उठे।

लेकिन बर्ड सब कुछ सुनकर भी खामोश रहा। अवध की हलचलमें वह देख रहा था। कम्पनी का नौकर था इसलिये उसके लिये

आवश्यक था। दिल में हजार बातें हों किन्तु उनको पूछता कौन। औ
पूछने पर वह करता भी क्या जब कि किसी की कुबड़ी अपने कर्मों
प्रभाव से स्वयं सम्मुख आई हो। इसलिए वह कई बार इस समाचार प
फीकी मुस्कान भरता अपने साहब का समर्थन करता रहा।

सोलह

बहुत कुछ छुपने पर भी रेज़ीडेंसी से यह समाचार किसी न किसी प्रकार फूट निकला था कि अब शाह अवध की हुकूमत समाप्त होने का समय निकट आ गया है। तरह-तरह से अफ़वाहों के रूप में यह बात शहर के कोने-कोने में फैल गई थी। बादशाह के पास भी पहुँची किन्तु जैसे पहले कहा जा चुका है वह इसपर ध्यान न दे सके। चारों ओर गर्म खबर थी कि स्लीमन ने हुकूमत के खिलाफ़ गवर्नर को कुछ लिखा है, किन्तु शाह ने प्रथम तो इसपर अविश्वास किया किन्तु अन्त में एक दिन स्लीमन से पूछ कर बिल्कुल ही निश्चिन्त हो गये और शहर की अफ़वाहों को अपने फ़िरंगी मित्रों के विश्वास पर एक कान सुन दूसरे से निकालने लगे।

'योर मैजेस्टी को यकीन रखना चाहिये कि स्लीमन अपने हमदर्दों को धोखा देने का आदी नहीं है। मैंने जो कुछ अवध में देखा उसी को गवर्नर जनरल के लिए लिख भेजा है। और यह कहने पर मुझे ज़रा भी हिचक नहीं कि जो कुछ मैंने यहाँ देखा वह क़ाबिले तारीफ़ है।'

स्लीमन के इस उत्तर के बाद वाजिद अली शाह के मस्तिष्क में किंचित सन्देह न रहा कि स्लीमन जैसा अपना मित्र उन्हें किसी प्रकार धोखा दे सकता है।

किन्तु शहर का वह पक्ष जो फ़िरंगियों पर अविश्वास करता था और उन्हें चालाक व मक्कार मानता था सहसा इस पर यकीन न कर सका। व्यापारियों ने अपने-अपने व्यापार की गति मन्दी कर डाली। सरकारी मुलाज़िम आने वाली किसी नयी सरकार की प्रतीक्षा करने लगे। फ़ौजें और फ़ौजों के उच्चाधिकारी किसी आशंका से मन ही मन

आवश्यक था। दिल में हजार बातें हों किन्तु उनको पूछता कौन। और पूछने पर वह कहता भी क्या जब कि किसी की कुचाली अपने कर्मों के प्रभाव से स्वयं सम्मुख आई हो। इसलिए वह कई बार इस समाचार पर फीकी मुस्कान भरता अपने साहब का समर्थन करता रहा।

सोलह

बहुत गुप्त रखने पर भी रेजीडेंसी से यह समाचार किसी न किसी प्रकार फूट निकला था कि अब शाह अवध की हुकूमत समाप्त होने का समय निकट आ गया है। तरह-तरह से अफवाहों के रूप में यह बात शहर के कोने-कोने में फैल गई थी। बादशाह के पास भी पहुँची किन्तु जैसे पहले कहा जा चुका है वह इसपर ध्यान न दे सके। चारों ओर गर्म खबर थी कि स्लीमन ने हुकूमत के खिलाफ गवर्नर को कुछ लिखा है, किन्तु शाह ने प्रथम तो इसपर अविश्वास किया किन्तु अन्त में एक दिन स्लीमन से पूछ कर बिल्कुल ही निश्चिन्त हो गये और शहर की अफवाहों को अपने फिरंगी मित्रों के विश्वास पर एक कान सुन दूसरे से निकालने लगे।

"और मैजेस्टी को यकीन रखना चाहिये कि स्लीमन अपने हमदर्दों को धोखा देने का आदी नहीं है। मैंने जो कुछ अवध में देखा उसी को गवर्नर जनरल के लिए लिख भेजा है। और यह कहने पर मुझे जरा भी हिचक नहीं कि जो कुछ मैंने यहाँ देखा वह काबिले तारीफ है।

स्लीमन के इस उत्तर के बाद वाजिद अली शाह के मस्तिष्क में किंचित सन्देह न रहा कि स्लीमन जैसा उनका मित्र उन्हें किसी प्रकार धोखा दे सकता है।

किन्तु शहर का वह वर्ग जो फिरंगियों पर अविश्वास करता था और उन्हें चालाक व मक्कार मानता था सहसा इस पर यकीन न कर सका। व्यापारियों ने अपने-अपने व्यापार की गति मन्दी कर डाली। सरकारी मुलाजिम आने वाली किसी नयी सरकार की प्रतीक्षा करने लगे। फौजें और फौजों के उच्चाधिकारी किसी आशंका से मग्न हो ग

जुड़ने लगे। शाह के दिन समाप्त होने आये। अब यहाँ कम्पनी सरकार का राज्य होगा। इतने पर भी बादशाह बेखबर रहे। उन्हें अपने मित्रों पर भरोसा रहा।

हकीम बरकाती और स्लीमन तक यह समाचार पहुँचा तो उनकी गतिविधि तेज पड़ गई। अमीनुद्दौला वजीर अचानक बीमार पड़ गये थे और कानपुर जाकर इलाज कराने लगे थे। मीर मुन्शी का दिमाग ठीक हो चुका था। हजरत ने मन ही मन मैदान में कूद पड़ने का फैसला कर लिया था। सिब्ती जिहाद आदि अन्य साथियों की राय थी अब इन्तजार करना बेकार है। हमें अपनी ताकत उस दिन की तैयारी में लगा रखनी चाहिये जिस दिन कम्पनी सरकार की जड़ें जमाने वाला गवर्नर जनरल का कोई नया हुक्म शाहे अवध को प्राप्त हो।

वजीह अली डाकू गंगा सिंह को अपने यहाँ ले गये और तीन चार दिन छिपाकर रक्खा। फिर एक दिन कुछ सिपाहियों के साथ गंगा सिंह के बताये स्थान पर रणजीत सिंह को गिरफ्तार करने गये और उसे पकड़ लाये। लौट कर कुछ सोच विचार के बाद रणजीत सिंह को नकी के हिरासत में दिया। उसने वहाँ ऊधम मचाया। कहा गंगा सिंह वजीह अली के कब्जे में है। शाह के पूछने पर वजीह अली ने अस्वीकार कर दिया। उसने कहा गंगा सिंह उसके कब्जे में नहीं है।

वजीर की हिदायतों के अनुसार हकीम के मकान के चारों ओर खुफिया पहरा था। एक दिन स्लीमन और उसकी लड़की हजरत के साथ वहाँ जाते देखे गये। और भी बहुत से लोग जमा हुए। नकी खां को सूचना दी गई। नकी खां ने तुरन्त स्लीमन को समाचार भेजा। स्लीमन का इशारा मिल गया। छापा तैयार हुआ और सब पकड़े गए। उस दिन बदकिस्मती से गंगा सिंह और वजीह अली भी वहाँ मौजूद थे। नकी खां उन्हें भी पकड़ लाए।

स्लीमन ने बादशाह पर जोर दिया कि इन लोगों का मुकदमा

खुली अदालत में चलाया जाये। शाहे अवध ने स्लीमन से ऐसा न करने का अनुरोध किया। वहाँ एक तरफ वह स्लीमन की दोस्ती पर अपनी मित्रता को कुरबान करने का फैसला करने पर तैयार हो गये थे वहीं अपने दोस्तों की स्मृति दिल से निकाल फेंकना उनके लिए सम्भव न था। ईश्वर और बशीरू अली जैसे स्तम्भ आज मुजरिम करार दिये गये थे। खुद शाहे अवध ने किसी मजबूरी में ऐसा किया था। किन्तु उन्हें मामूली हालत में जलील करना भी वह गवारा न कर सके। यह शाहे अवध और अवध की हुकूमत की सख्त बदनामी होती। बड़ी कठिनाई से स्लीमन तैयार हुआ। अन्त में फैसला किया गया। बशीरू अली और ईश्वर पर मुकदमा न चलाया जाये। बादशाह बिना मुकदमे उनके लिए उपयुक्त सजा तजवीज करें। शेष अपराधियों को राजद्रोह के अभियोग में मुकदमे में लाया जाये। इरादा और बातों पर मिस्टर वाटसन नामक अंग्रेज को कत्ल करने व स्लीमन जैसे नेक मालिक के साथ गद्दारी करने का अलग मुकदमा चलाया जाये। गंगा सिंह के लिए स्लीमन ने बड़ी तत्परता से बादशाह को समझा-बुझा कर कासिम गंज के हाकिम के यहाँ रवाना कर दिया जहाँ उसके जुर्मों का फैसला होने वाला था। वह बेचारा चीखता-पुकारता रह गया और बादशाह के कानों तक यह बात न पहुँच सकी कि उसने अपनी गिरफ्तारी का दांव क्योंकर और किस लिये लगा दिया था। अमीनुद्दौला की सफाई उम्र भर के लिये गंगा सिंह के साथ कासिमगंज रवाना हो गई वहाँ फौजी लगन के बाद गंगा सिंह के साथ ही चिता की आग में जल गई।

सब से पहले राजद्रोहियों का मुकदमा प्रारम्भ हुआ। इसमें गिरफ्तार होने के अलावा कुछ और लोग भी मुजरिम थे जो नकी खां की योग्यता से तलाश किये गये थे। इसमें हकीम वर्दवाली के लगभग सभी रिश्तेदार लपेट लिये गए थे। मिर्जा खान मर चुके थे। स्लीमन ने उस चौबे को भी नहीं बख्शा जो कुलेश्वाम कुछ करते डरा करता था।

जिसका एकमात्र दोष यही था कि वह मिर्जा खान का मित्र था। इशरत की नाटक मंडली के बीसियों ऐसे नौजवान जिनका इस साजिश से कोई तास्सुक नहीं था धर लिये गए। इँग्लन के अखबार में काम करने वाले अजमी मुसाहिब भी पकड़ लिये गए। करीब पचास व्यक्ति राजद्रोह के मुकदमे के भागी हुए। इँग्लम और वसीह अली जैसे व्यक्तियों को शाही आदेश से उस वक्त तक जमानत पर छुटकारा दिया गया था जब तक बादशाह उनके बारे में माकूल आज्ञा न देते। मगर उन्हें मुकदमे की पैरवी न करने की सख्त हिदायत दी गई।

इन लोगों पर कार्रवाही कोतवाली में की गई। इंसाफ विभाग का सर्वोच्च अधिकारी इनका फैसला करने वाला था। जिहाद और सिल्वी ने पूरी ताकत से फिरंगियों के खिलाफ जहर उगला। किन्तु बाहर के लोगों को मुकदमा सुनने की इजाजत न थी। सुनने वाला सिर्फ बर्ड था जो स्लीमन की आज्ञा पा वहाँ की कारवाही देखने आया था। मुफ्ती ने आँखों और कानों पर पट्टी बाँध रखी थी। गद्दारी करने वाले चीख चीख कर कबूल कर रहे थे कि वह गद्दार होना मंजूर करते हैं किन्तु उनकी गद्दारी हुकूमत अवध से नहीं हुकूमत कम्पनी से थी। मगर इसको सुनने वाला कोई नहीं था। कम्पनी के विरुद्ध जो कहानी जिहाद और सिल्वी ने बयान की उसे बर्ड के कानों के अतिरिक्त किसी ने नहीं सुना। मुफ्ती ने सब को बारह-बारह साल की सख्त सजा का हुक्म सुना दिया। इशरत का मुकदमा इसके बाद पेश होने वाला था। बादशाह के पास सजा सुनाये जाने का समाचार पहुँचा तो वह न खुश हुए न दुखी। बल्कि स्लीमन से मुलाकात होने पर उन्होंने इसका प्रसंग उठाते हुए पूछ लिया 'अब तो आप खुश हैं न मिस्टर स्लीमन? हम हमेशा यही करना पसन्द करते हैं जिसमें हमारे दोस्त खुश रहें।

"नो नो योर मैजेस्टी।' स्लीमन ने मुस्कराते हुए उत्तर दिया 'इन गद्दारों को सजा मिलना सिर्फ मेरे लिए खुशी की बात नहीं है। बल्कि

यह सब आपका तख्ता पलटने की साजिश कर रहे थे।"

वाजिद अली शाह ने सुना तो लम्बा सांस लिया। स्लीमन उन्हें देखता रह गया कि इस सांस में अविश्वास की गन्ध है या विश्वास की सुगन्ध। किन्तु समझ कुछ न सका।

हजारों ऐसे नौजवान थे जो हकीम मसीहाली और ईमाम आदि के सम्मिलित प्रयत्नों से बादशाह पर कुरबान होने का वादा स्वीकार कर चुके थे। किन्तु सजा के समाचार से उनके हौसले टूट गए। कई दरखा स्तों के द्वारा शाह तक समाचार भेजा जा चुका था। उन्हें बताया गया था कि इन बहादुरों का असल मकसद भाखिर था क्या। किन्तु वाजिद अली शाह की ओर से सुरक्षा का आश्वासन मिलने के स्थान पर भजीब सा उत्तर आया 'जब बादशाह अपनी बरबादी का तमाशा देखने की कुव्वत रखता है तो रिआया को इतनी परेशानी क्यों ? जिन लोगों ने खुद अपने लिए कांटे बोए हैं उन्हें सजा भुगतनी होगी।"

इसके कुछ ही दिनों बाद मुफ्ती साहेब ने सब को सजा का हुक्म सुना दिया। इस तरह हजारों ऐसे नौजवानों की हिम्मत पस्त और इरादे कमजोर पड़ गए जो कम्पनी सरकार के खिलाफ जिहाद का झण्डा उठाने की तयारियां कर रहे थे। लोगों ने समझ लिया जब हमारा अपना बादशाह सब कुछ जान लेने के बावजूद हमें राजद्रोही करार दे सकता है तो हम दूसरों से दुश्मनी मोल क्यों लें? यकीनी तौर पर बादशाहत खत्म होगी और वाजिद अली सड़कों के भिखारी बनेंगे। ऐसा कौन है जो उस बुजदिल के कारण अपनी जानों की बाजी लगाए।

इशरत के मुकदमे में स्लीमन ने खुद दिलचस्पी ली। मुफ्ती के सम्मुख कई गवाह पेश कराए। अभियोग इशरत ने स्वीकार कर लिया। किन्तु उसकी बात भी राजद्रोहियों के समान एक जैसी थी। फिरंगी हुक्काम अवध की हुकूमत खत्म कर देने पर कमर कस चुके हैं, उसके रेजीडेंसी में रह कर कोई गुनाह नहीं किया। स्लीमन को मारने का

इरादा उसका कभी नहीं रहा। किन्तु उस रात रेजीडेंसी में घुसते हुए अगर कहीं स्लीमन सामने आ जाता तो वह बड़े गर्व से उसकी हत्या कर डालता। मगर जानो की उसने बचाने का प्रयत्न किया। कहा वह बेगुनाह है। नहीं जानती कि उसका शौहर आग से खेल रहा था। उसे छोड़ दिया जाए।

लेकिन जानो ने खुदा को हाजिर नाजिर जान कर अपने बयान में जाहिर कर दिया कि इफरत का कहना बिल्कुल गलत है। वह पूरी तरीक से मजबूरी वाकिफ थी। उसी के इशारों पर वाटसन का खून किया गया था। हम लोग अंग्रेजों के दुश्मन थे। अपने मुल्क के लिये उनकी दुश्मनी पर फख्र करते थे। रेजीडेंसी में घुसना कोई जुर्म नहीं था।

मीर मुन्शी कठिनाई से आज्ञा पाकर मुकदमे का हाल देखने आया था। उसने नौकरी छोड़ दी थी। पागलपन का दौरा समाप्त हो चुका था किन्तु चेहरे से उसके अस्तव्यस्त रहने की छाप स्पष्ट हो जाती। स्लीमन उसे बदनाम नहीं जानता था। उसकी आदत से भली प्रकार परिचित था अतः उसे विद्रोहियों में पकड़वाना जरूरी नहीं समझता था। बल्कि उसकी सेवाओं के बदले में उसे अनुगृहीत कर दोबारा अपनी सेवा में लेने पर आतुर भी था बशर्ते वह उसकी बेटी अपनी गुलाम की तरह रखी जाना स्वीकारती। इसी हेतु एक दिन जब मीर मुन्शी अपने बाजार की जामदा से विवश उसकी कोठी पर आ गया तो उसने कहा इफरत को बिना सजा नहीं छोड़ा जा सकता। हाँ तुम्हारी बेटी पर रहम किया जा सकता है। उससे कहो वह हमारे हक में बयान दे। लेकिन मीर मुन्शी रोते गिड़गिड़ाते वापिस आ गये। उन्होंने जानो से बेटी बाधा न होने का भय स्पष्ट किया था अपने मनोभाव प्रकट किये नहीं जायें। किन्तु उनका भाव ऐसा था जैसे वह जानो से अधिक इफरत की सलामती के प्रयत्नशील हों।

फैसला स्लीमन के हक में हुआ। कत्ल का इलज़ाम साबित हो

गया। सजाए मौत का हुक्म हुआ। बामो और इशरत को खतरनाक जानकर कहा गया। वह उस वक्त वहीं मौजूद था। मीर मुन्शी हुक्म सुनने के बाद चीख चीख कर गाने लगे। फिर रोते रोते उनकी हिचकियों ने प्रलाप का रूप ले लिया। वह अपने कपड़े फाड़ने लगे। इशरत ने उनसे अन्तिम विदा ली। मीर साहेब वहाँ कोतवाली से निकल कसरमंज़िल की तरफ भागने लगे। कुछ दूर चलने पर गिर पड़े और बेहोश हो गए।

शाह तक यह समाचार भी आया। किन्तु उन्होंने बाटसन के कातिल को सजा मिलने का समर्थन किया। उनकी दृष्टि में उस कत्ल के पीछे का रहस्य नगण्य था। जुर्म जुर्म था। जुर्म के पीछे की भावना क्या थी व्यर्थ है। और सब से बड़ी बात थी कि यह स्लीमन की इच्छा के अनुसार हुआ। इसलिये उन्होंने शान्ति से यह समाचार पचा लिया।

जब इशरत और बामो को हवालात में पहुँचाया गया तो वह से न रहा गया। वह खुद वहाँ पहुँचा और सीखचों के पीछे इशरत का हाथ पकड़ आँखों में आँसू भर कहने लगा "तुम बहादुर हो इशरत। बहुत बहादुर। यह कुरबानी जाया नहीं जायेगी। शाहे अवध की आँखें बन्द हैं लेकिन दुनियाँ की नहीं। यह अंग्रेज तुम्हारे सामने सर झुकाता है। कम से कम इसे अपने भाइयों के किये पर सच्चा पछतावा है।"

इशरत ने इसका कोई उत्तर न दिया। वह बामो के साथ मृत्यु की प्रतीक्षा में मुस्कुराहट का आह्वान कर रहा था। अवध के लिये प्राणों की बाज़ी लगा देने पर उसे गर्व था। वह आँखों में आँसू लिये वहाँ से चला आया। किन्तु इशरत मुस्कुराता रहा। उसने वीरों की भाँति अपने परिणाम का स्वागत किया। तीसरे ही दिन दिन निकलने से पहले उसे सूली चढ़ा दी गई। बामो उसके पीछे-पीछे कुरबान हो गई।

अमीनुद्दौला वज़ीर को कानपुर में यह सब समाचार अनायास मिले। डॅल्हम और वलीद अली के बारे में बादशाह और स्लीमन में कोई सम

पूरा होना बाकी था। कहीं देर न हो जाए इसलिए अपनी बीमारी की चिन्ता किये बिना वह लखनऊ को रवाना हो गए। चाहते थे एक बार और अपने बादशाह को समझाने की कोशिश करें। हालांकि ऐसा हो न सका। शाह ने उनसे भेंट करना स्वीकार न किया। हां, दरबार में उस दिन उपस्थित होने की आज्ञा प्रदान अवश्य कर दी जिस दिन ईमन का मामला पेश होने वाला था।

सत्रह

अख्तर के पास शहर के सब समाचार ज्यों के त्यों पहुँच रहे थे। अब वजीरुद्दौला और अख्तर ने मिलकर वाजिद अली की हमदर्दी का नया मौका खोज लिया था जिसके अनुसार हरम में उन्हीं व्यक्तियों से उसका मिलना-जुलना सम्भव था जो बादशाह के शुभचिन्तक बने रहें। विद्रोहियों के पकड़े जाने और फिर उनको सजा दिये जाने का समाचार वजीरुद्दौला के द्वारा अख्तर तक पहुँचा तो वह देर तक विचार मग्न रही। अमीनुद्दौला का नाम भी इन विद्रोहियों में लिया जा रहा था। किन्तु वह पकड़े न गए थे इसलिए कानूनी गिरफ्त न थी। अख्तर सोचने पर मजबूर हो गई थी क्या जैसा कहा जाता है वैसा ही विद्रोहियों के बारे में सच मानना होगा या इसके पीछे शहर के इन दीवानों की कोई और कहानी है?

उधर वजीरुद्दौला को बेगम और नसीह अली के पकड़े जाने से आश्चर्य हुआ था। अख्तर को ज्ञात न हो इस विचार से उसने अख्तर के समक्ष अपने विचार प्रकट किये। बेगम अंग्रेज जरूर है मगर उसका दिल पवित्र और भला है। वह बादशाह का शत्रु नहीं हो सकता। कहीं न कहीं भूल हो रही है। ऐसा ही हाल नसीह अली का था। उसका विश्वास था नसीह अली बादशाह के खिलाफ बगावत के बारे में सोचना भी गुनाह समझते थे। तब कैसे षड्यंत्रों में शामिल रह सकते हैं, उसने बार-बार अख्तर से यही सवाल पूछा।

अख्तर ने इसरत और नासो की कहानी सम्पूर्णतः सुन ली। मीर मुन्शी पागलों के समान बदहवासी में लखनऊ की सड़कों पर दौड़ता फिरता था। इस कारण लोगों में उसकी उत्सुकता जागी और पूछताछ

प्रारम्भ हुई। परिणामस्वरूप बानो ी
रूपों में विभिन्न कामों और गुणों से यु
या गई। किन्तु उसमें प्रतिभमोहित ए
विरूता किसी न रही। ठीक सजाये मी
ज्ञात हुआ वह मकब के और मकब के
इसी कारण दुनियाँ से जा रहे हैं। इस
ऐसी अप्रिय अवस्था हो वहाँ बुराई की
सकती है। समाज में बस दिन वह इस
हुआ करती रही। पर उस दिन उसने
महूस में आता व्यर्थ सिद्ध हुआ। अम
देना साजिद की तो मरियम अपने क
वहाँ रही पर कुछ कर न सकी। मकब है
बिमामी व्यक्ति बेमौत मारे जाते रहे।

इसी मनोदशा में एक दिन वह अपने
नकी लाँ उसे देख प्रसन्न हुए। बहुत ि
कर गई थी, उसके बाद कभी आई न
खिल उठा। किन्तु अस्तर में पहुँचते ही

वह बिना भूमिका कहने लगी "ज
आज उसे तोड़कर सिर्फ आप से एक स
क्या आप को उसी वक्त पुरुष हासि
मेकरित थौहर मकब की मिट्टी छोड़ कर
हो जायेंगे ?"

नकी लाँ अचानक पूछे गये इस प्र
स्वस्थ स्वस्थ होने के पश्चात् उन्होंने ए
समझ मुस्काया ? मेरी तरफ से क्या देर
पहुँचा सके ?"

उस कमाल की जिससे शाहे अवध का बाल भी बाँका होने से बच सके।"

"तुम पागल हो गई हो गुस्ताख़।" नकी अली अपनी बेटी के शब्दों से जैसे घबरा कर धीमी आवाज़ में कहने लगे "आज तुम इस मुल्क की बेगम हो इसलिए तुम्हें इतना ख्याल भी नहीं रहा कि बात का मतलब क्या होता है। तुम क्या कह रही हो तुम नहीं जानती।"

'सब जानती हूँ अब्बा हुज़ूर। सब समझती हूँ। अवध की एक नाचीज़ बेगम होने का दावा ही देते हैं आप तो सुन रखिये। आप हमारी तबाही और बरबादी के मन्सूबे बना रहे हैं। अंग्रेज़ों की दोस्ती की चाल में आपने अपने गले में ऐसा खतरनाक साँप लटका लिया है जो आप से अपना मतलब निकालने तक आप की हिफ़ाज़त करता रहेगा और उसके बाद आप को डस कर दूर भाग जायेगा। यह वो ज़हर है वज़ीर साहेब जिसका नशा आज आपकी ज़ुबान को बे-आवाज़ कर रहा है और कल हमेशा-हमेशा के लिये खामोश कर देगा। शरारत नहीं आप खुद अपनी ज़िन्दगी का सौदा इन अंग्रेज़ों से कर बैठे हैं।"

"कभी-कभी ऐसा हो जाता है।' इस बार नकी अली कुछ देर शान्त रहने के बाद हाथ से माथे का पसीना पोंछते गम्भीर आवाज़ में बोले "कभी-कभी ऐसा सचमुच हो जाया करता है बेटी।"

"नहीं यह गुनाह है। एक शरीफ़ आदमी के खिलाफ़ साज़िश और फ़रेब है। आप को क्या हक़ है अब्बा हुज़ूर कि आप एक बेज़ुबान और मजबूर बादशाह के नमक की ऐवज़ उन लोगों की दोस्ती का दम भरें जो हम सब के दुश्मन हैं। जो हमारी रोटी छीन कर हमें मोहताज कर देना चाहते हैं। जो अवध की ईंट से ईंट बजा देना चाहते हैं। आह कैसी बदनसीबी है यह। जो शाहे अवध आप के हाथों हुकूमत की बागडोर सम्हाल कर मुतमईन बैठे हुए हैं कि आप उनकी हिफ़ाज़त करते रहेंगे, आप उन्हीं की तबाही बरबाद कर डालने के लिये नए-नए मंसूबे जारी कर रहे हैं। कल अवध के हज़ारों हम लोगों के होठों

पर आपने पानी फेर दिया जो आड़े वक्त हमारे काम आते । आज फ़ौजों और रिसालों को यह हुक्म रवाना कर दीजिए कि वह बजाय वाजिद अली शाह के रेज़ीडेंट के हुक्मों की तामील करें । कल इंग्लैंड और वज़ीर अली जैसे लोगों को फाँसी का हुक्म लिखवा दीजिये ताकि आयन्दा कोई भूल कर भी बादशाह को नेक मश्विरे न दे सके । खुश कीजिये । अब्बा हुज़ूर अपनी बेटी के बदले में आपने वाजिद अली शाह को वतन बदरी और ठोकरें अता फरमाई हैं न। खूब अपने मन की कर लीजिये ।"

नकी खाँ की आँखों से आँसू बह निकले । सुल्ताना की थरथराई आवाज़ से बाप का दिल पानी हो गया । कुछ पलों के लिए उन्हें ऐसा लगा जैसे रेज़ीडेंट बादशाह वज़ारत अफ़सरी सब बेटी की मोहब्बत के सामने बेकार है । यह वो पाप बनता है जो इंसान की बड़ी से बड़ी मजबूरी डाँवाडोल कर देता है । उन्होंने महसूस किया उनकी बेटी नहीं उनके सामने खड़ी है अवध की मजबूरी जो उनके आचरण को धुतकार रही है । सत्य बलशाली होता है । वज़ारत के मोह में उन्होंने सचमुच अपना कर्तव्य भुला दिया था । कर लिया था उन नापाक हरिफ़ों से दोस्ताना जो वहशीपन से किसी की वफ़ादारी और मोहब्बत को खुद उनकी पीठ पर छुरी रख कर बेच रहे थे । बहुत देर वह निस्तब्ध अपनी बेटी का चेहरा देखते रहे । उनकी आँखों से अविरल आँसू बहे और वह बहुत प्रयत्न करने पर भी अपने आप को रोक न सके ।

बेटी ने उनकी अवस्था देखी तो मुलायम शब्दों में बोली "मुझे मालूम है अब्बा हुज़ूर, आपका दिल बुरा नहीं । आपको झूठे लोभ और झूठी शानो शौकत ने पामाल कर रखा है । लेकिन ऐसा कब तक होगा ? कब तक उस ताज की हिफ़ाज़त करते रहेंगे आप जिससे किसी दूसरे की जिन्दगी खतरे में पड़ जाए ? आप ने अमीनुद्दौला साहेब से यही सीख कर अपने लिये रास्ता बना लिया । सही है । लेकिन अब उस सही की लाज भी रख लीजिये । अवध की तवारीख़ में जो कुछ होता रहा है,

उसे बदल डालिये। शाह की इज्ज़त आपके हाथ है। उन्हें बचा लीजिये। फिरंगी बहुत ताकतवर है। वाजिद अली शाह की ताकत आप और आपके दूसरे वज़ीर हैं। आप की नज़र बदली तो वह क्या कर सकेंगे। कुछ नहीं। खुदा के लिए उन्हें बचा लीजिये अब्बा हुज़ूर। बचा लीजिये। मैं भीख माँगती हूँ। आप की बेटी नहीं वाजिद अली के हरम की बेगम आप से अपनी इज्ज़त का वास्ता देकर भीख माँगती है।

नकी खाँ का साहस टूट गया। आँसुओं के जिस वेग में वह अपना सन्तुलन न खोने के लिए प्रयत्नशील थे वह बिखर कर छिन्न-भिन्न हो गया। वह अपनी बेटी के नज़दीक आए और उसके मुख पर हाथ रखते हुए उसे रोक कर कहने लगे "और नश्तर मत मारो सुल्ताना। कहीं ऐसा न हो कि यह बदनसीब बाप खुदकुशी से अपने गुनाहों पर पशेमान हो। तेरा एक-एक अलफ़ाज़ सही है। मैंने यकीनन अपने नेक बादशाह को धोखा दिया है। वज़ारत की चमक ने भले बुरे की पहचान दूभर कर दी। लेकिन अब क्या हो। मैं मजबूर हूँ मेरी बच्ची। मेरी इज्ज़त और मेरा मर्तबा फिरंगी चक्कर में फँस चुका है चाहूँ भी तो मेरा पीछा नहीं छोड़ सकता। मैं पत्थर नहीं हूँ सुल्ताना। सब समझता हूँ। सोच भी सकता हूँ। लेकिन तू नहीं जानती मैं कितना मजबूर हूँ। मुझे वज़ारत की चाह नहीं लेकिन मैं ज़लालत नहीं बर्दाश्त कर सकता। अब मैं खतम चुका हूँ। मेरा खंजर तेरे सामने है। बर्दाश्त हो तो यह मेरे सीने में भोंक दे। लेकिन यह कहना कि मैं घूम कर फिरंगियों की मुखालफ़त करूँ नामुमकिन है। बेटी, अब यह हुकूमत नहीं रहेगी। वाजिद अली शाह के दबदबे नहीं रहेंगे। खुदा के लिए सब्र से काम ले। आने वाले खराब दिनों में नकी खाँ की हड्डियों को सरे बाज़ार नीलाम करने की ख्वाहिशमन्द न हो सुल्ताना तो चुप रह। चुप रह और देख क्या होने वाला है। देख तेरा बदनसीब बाप अपनी मजबूरियों से कितना बदतर मालूम होता है। देख उसकी मायूसियाँ उसे क्या-क्या करने पर

शाह शाम और कल किसी से नहीं मिलेंगे। दूसरी बार कहा गया तो खबर आई कि शाह की तबियत कुछ नासाज है और वह किसी से मिलना नहीं चाहते। मगर बदीउद्दौला मस्तर का विशेष सहायक सिद्ध हुआ। तीसरी बार उसने शाहे अवध को इस तरह प्रभावित किया कि वह शाम को खुद मस्तर के महल में हाजिर हो गए। उस वक्त मस्तर ने महसूस किया कि जैसे सचमुच वह किसी कारण बहुत ज्यादा परेशान हैं।

मस्तर उनका इस्तकबाल करने के बाद खुद अपने हाथों शराब का जाम तैयार करने लगी। यह नयी बात थी। नित्य शाह के आदेश पर मेयबूरान यह काम करती थी। किन्तु शाम शाह की उदासी देख उसने विलम्ब न किया। वाजिद अली ने प्याला होंठों से लगाया तो मस्तर से पूछने लगे "आपने बार-बार मिलने की ख्वाहिश क्यों जाहिर की बेगम। क्या कोई जरूरी मसला है?"

मस्तर बोली "मुसाहिबों से सुना था जहांपनाह की तबियत बेचैन और परेशान है। कनीज रुक न सकी और पैगाम भिजवा दिया। मन्शा यही था यहाँ आकर शायद तबियत को सुकून मिले।"

शाह ने कहा "सकून न यहाँ मिल सकता है बेगम न कहीं और। हमें तो महसूस होता है हमारी जिन्दगी से सकून खत्म हो गया। तुमने सुना होगा कल हमें वसीह अली और बैंगन की अपना हुक्म सुनाना है।'

मस्तर इस प्रसंग पर मन ही मन प्रसन्न हुई। वह अपनी तरफ से बातचीत आरम्भ करना चाहती थी। शाह ने खुद अवसर दिया तो शराब का प्याला शाह के हाथ से लेती मीठे स्वर में बोली "खुदा न करे, आलमपनाह के दुश्मनों को कोई परेशानी हो। बैंगन साहेब और वजीरे माल का मुकदमा पेश होने वाला है मैंने सुना था। लेकिन गुस्ताखी मुआफ हो तो अर्ज करूं। एक बादशाह के लिये परेशानी की

गुंजायश होने की कोई वजह नहीं जब मुजरिमों को मुआफ करने का उसे पूरा अख्तियार है।

"नहीं अख्तर महल आप नहीं समझतीं" शाह गम्भीर और परेशानी भरे स्वर में कहने लगे "यह लोग मुजरिम हैं। शहर के बहुतों के साथ उन्हें पकड़ा गया है।"

"महारानी की कई शर्तें होती हैं आलमपनाह।" अख्तर बिना रुके कहती गईं "सुनते हैं इन लोगों का मन्शा कम्पनी सरकार की मुखालफत करना था।"

"हमने भी सुना है अख्तर महल" शाह बोले "सच क्या है खुदा जाने। स्लीमन साहेब का कहना है यह हुकूमत का तख्ता पलटने की साजिश कर रहे थे। बहरहाल कायमन जुर्म उनके खिलाफ साबित है। हम परेशान हैं चूंकि मसीह अली और ईमान दोनों हमारे दोस्त थे।"

"हुजूर चाहें तो परेशानी दूर करने की आसान सूरत निकल सकती है। उन्हें एक बार तम्बीह देकर छोड़ दिया जाए। आइन्दा

"यह मुश्किल है बेगम।" शाह का शांत स्वर आया "स्लीमन साहेब ऐसा नहीं चाहते।"

"वह हुजूर के आका नहीं हैं। क्या यह जरूरी है कि वह अपने किसी निजी दुश्मनी की बिना पर आपके कहन पर बोझ बनें?"

"वह हमारे दोस्त हैं बेगम। हम उन्हें दोस्त कह चुके हैं।"

"आलमपनाह ईमान और मसीहअली को भी अपना दोस्त ही समझते थे। आला हजरत जब ऐसा मौका आ जाये तो दो में से एक की दोस्ती भुला देना लाजिम हो जाता है। आपको दोनों में से एक के लिए दूसरे को नाराज करना होगा।"

"हम स्लीमन को नाराज नहीं कर सकते अख्तर।" शाह ने घबराई आवाज में उत्तर दिया "हम ईमान के मुकाबले रेजीडेंट को खफा नहीं कर सकते अख्तर। आह "यही तो हमारी परेशानी है बेगम।

आज हम कितने कमजोर हो गये हैं।'

अख्तर को उत्तर मिल गया। और कुछ पूछना शेष न था। वाजिद अली ने अपनी कमजोरी अपने मुख से स्वीकार कर ली थी। अख्तर गम्भीर विचार में पड़ गई। आज ही एक नया रहस्य उसके सम्मुख प्रकट हुआ। उस रोज़ अपने पिता के सम्मुख क्रोधवश वह बहुत कुछ कह गई थी। नकी खां ने शाह की तरह फिरंगियों का भय प्रकट किया था। बादशाह की अवस्था यही है। सब फिरंगियों से डरते हैं। जब बादशाह की यह दशा हो तो वज़ीर को दोष क्यों दिया जाए। सवाल था इस भय का कारण क्या है, हमारी कमजोरी और सरलपन या फिरंगियों की ताकत और चालाकी? हम कमजोर नहीं थे। कम्पनी के गुमाश्ते चालाक और झूठे थे। शाह उनके शिकंजे में जकड़े महसूस हो रहे थे। नकी खां ने यही कहा था। परिणामस्वरूप अख्तर अवध के दुर्भाग्य पर खून के आंसू पी कर शाह से और प्रश्नों पर बहसें करती रही।

सुबह शाह बहुत सवेरे उठे और नमाज़ में देर तक कुछ पढ़ते रहे। उनकी आंखों में अब तक रात की खुमारी बाकी थी। नाश्ते की इत्तला मिली मगर उन्होंने इन्कार कर दिया। अख्तर उनकी अवस्था देख रही थी। सलीमन का भय हो या उसकी दोस्ती किन्तु विपद में भी सच्चाई थी। दोस्ती और हमदर्दी थी। हरम में उठा दम सरलता से दबने वाला नहीं था। दोपहर तक वाजिद अली शाह की परेशानी पल पल बढ़ती चली गई। अख्तर समझ न सकी इन दो सहचारियों के लिए शाह के दिल में ऐसी क्या शंका निश्चित हुई है जिससे वह परेशान और उदास हो गए हैं।

दरबार में वज़ीर नकी खां की ओर से मुआमला पेश किया गया। आरोप वही था, जो कोतवाली में मुकदमे के दौरान छिन्नी, सिद्दाम इत्यादि को सुनाया गया था। शब्दों का कुछ फेर था।

स्लीमन दरबार में उपस्थित था। वह ध्यान से कार्यवाही देख रहा था। वाजिद अली गम्भीरता से बैंगन और वसीह अली के उत्तर सुनने की प्रतीक्षा करते रहे।

आरोप सुन लेने के बाद वसीह अली ने सफ़ाई देने से इन्कार कर दिया। उसकी आवाज़ में जो निराशा थी वह उपस्थित सभी व्यक्तियों पर प्रकट हो गई। किन्तु बैंगन ने मुस्कुराते हुए आरोप का स्वागत किया। उसने सबल वाणी से आरोप को निराधार और झूठ कहा। बल्कि बताया वह जो कुछ कर रहा था उससे हुकूमत अवध को नुक़-सान होने की जगह फ़ायदा पहुँचने का ज़्यादा अनुमान है।

शाह ने ऊंची आवाज़ में सवाल किया "मिस्टर बैंगन आप मंज़ूर करते हैं कि हकीम मर्दवानी के यहाँ आप अक्सर आया करते थे ?"

बैंगन ने स्वीकार किया। शाह ने दूसरा सवाल पूछा "और आप को यह भी मानना होगा कि हकीम साहेब के यहाँ ग़द्दारों का मजमुआ होता था वहाँ मौजूदा सियासत के खिलाफ़ लखनऊ के नौजवानों को वरग़लाया जाता था।"

बैंगन ने इसे भी स्वीकार किया और बोले "सच्चाई और इंसाफ़ की लड़ाई के लिए अपनी ताक़त बढ़ाना ग़द्दारी है तो वहाँ वाक़ई ग़द्दार जमा होते थे और मैजेस्टी। मैं इसे तस्लीम करता हूँ।"

अली खां ने कहा "आप जो सफ़ाई देना चाहते हैं मिस्टर बैंगन वह कोतवाली में मुफ़्ती साहेब के सामने पेश की जा चुकी है और उस पर ग़ौर हो चुका है। सवाल यह है कि आप या आपके दीगर साथी होते कौन हैं हुकूमत अवध और रेज़ीडेंट या हुकूमत कम्पनी के मुआ-मलात में दख़लअन्दाज़ होने वाले ? यह सोचना हमारा काम है कि हम अपने हुकूक की हिफ़ाज़त कैसे करें। आपने जो रास्ता अपनाया था वह ग़द्दारी का रास्ता था जिसमें हज़ारों बेगुनाह नौजवानों के ख़ून की होली खेली जाती और कोई नतीजा न निकलता। आप इसका कोई

जवाब देना चाहते हैं ?"

"वज़ीर साहेब" इंग्रम अली खां की ओर घूम कर कहने लगे। "आप उस ज़माने की बात कर रहे हैं जो गुज़र चुका है। उस वक्त को जब हुकूमतें आपस में जंग कर अपनी रिआया की किस्मत के फैसले किया करती थीं। अब अवाम खुद अपनी किस्मत के मालिक हैं। वाजिद अली शाह को कोई हक नहीं कि वह लाखों लोगों को जान बूझ कर किसी बाहरी ताकत की गुलामी करने पर मजबूर करें।"

"योर मैजेस्टी" स्लीमन ने अचानक से शाह का ध्यान इंग्रम के लफ़्ज़ों की तरफ़ दिलाया और कहा "जुर्म का इकरार हो गया। मिस्टर इंग्रम ने खुले अलफ़ाज़ में मंज़ूर कर लिया कि वह योर मैजेस्टी के फैसलों पर अमल करने को पाबन्द नहीं थे। यह गद्दारी है।"

"यह गद्दारी नहीं है मिस्टर स्लीमन।" इंग्रम ने स्लीमन को उत्तर दिया "अपनी आज़ादी के लिए लड़ना गद्दारी नहीं है। गद्दारी तो वो है जो आप कर रहे हैं आप की कम्पनी और आप की हुकूमत कर रही है। स्लीमन साहेब इंसानियत और शराफ़त से दुश्मनी गद्दारी है। दूसरे के हक़ को ग़सब करना गद्दारी है। हम लोगों को आप गद्दार कह रहे हैं। जुल्म और नाइंसाफ़ी मंज़ूर होने पर भी आप की मदद नहीं कर रहे। क्यों? इसलिए कि हिस्सा क्यों नहीं बँटा रहे। मुझे उस दिन का एक-एक लफ़्ज़ याद है। आपने मुझे चेतावनी दी थी। वह सच हो गई। एक तीर से आपने दोहरा शिकार खेला। चाहे अवध को महरूम कर दिया उन दोस्तों से जो बुरे वक्त में उनका साथ देते। मैं आपकी जीत पर आपको मुबारकबाद देता हूँ। मगर मुहीम आसान नहीं। यह जीत आप की और आपके मुल्क की शराफ़त की पोल खोल देगी—सारा आलम आप की मक्कारी पर थू थू करेगा। आप"

"मिस्टर इंग्लन।" शाह यकायक गुस्से से चीख पड़े "जो बातें
कहने से ताल्लुक नहीं रखतीं उनका तज़करा बेकार है। हम आप का
बात सुनने को बेचैन हैं। क्या आप इकरार करते हैं कि हकीम अर्द
ानी के मकान पर बागियों के साथ मिलते-जुलते थे?"

"आलमपनाह" सहसा उपस्थित व्यक्तियों में अमीनुद्दौला अर्ज़ र
पने स्थान से उठ कर स्लीमन के बराबर आ खड़े हुए और बोले
हुज़ूर का गुस्सा इंग्लन साहेब पर नाज़िल हो उससे पहले मैं याद दिला
, यह वही इंग्लन हैं जिन्हें आपकी दोस्ती का फ़ख हासिल था।

"हमें याद है इमदाद खां। हमें अच्छी तरह याद है।"

"तब आलमपनाह को यह भी याद होगा कि उन दिनों इंग्लन
ाहेब हुज़ूर के रोबरू ऐसी ही बातें किया करते थे जैसी अब कर रहे
और हुज़ूर ने उन्हें कभी बग़ावत का नाम नहीं दिया।"

शाह ख़ामोश हो गए। अमीनुद्दौला ने सच कहा था। जहां अंग्रेज़ों
ा सवाल पैदा होता इंग्लन हमेशा सच्चाई और हक़ का पक्ष लेकर
ाह के साथ हमदर्दी प्रकट करते। अमीनुद्दौला उन्हें याद दिलाने का
यत्न कर रहा था। मगर वाजिद अली को दुख हुआ कि उन्हें इतना
मज़ोर क्यों समझा है। क्या इंसाफ़ की कुर्सी पर बैठने का यह मतलब
हीं कि वह सब कुछ भुला दे। इंग्लन के खिलाफ़ जुर्म साबित है।
से सज़ा देना ज़रूरी होगा। अमीनुद्दौला चाहते हैं सज़ा न दी जाए।
या यह मुमकिन है? नहीं। कभी नहीं। यह इंसाफ़ की तौहीन है।

आह! इंसाफ़ की आड़ में स्लीमन की तौहीन ने कितना ज़बरदस्त
न्दा डाल कर शाह को जकड़ लिया था। वह चाहता था इंग्लन और
सीह अली को सज़ा मिले और वाजिद अली इसी को इंसाफ़ समझ
र उन दोनों का फ़ैसला करने बैठे।

उनके मन में था वह सब कुछ भूल कर इंसाफ़ करने जा रहे हैं।
गर क्या यह सच हुआ? क्या उन्हें इंसाफ़ की कुर्सी पर बैठे

कुछ भी याद न रहा था। कुछ भी? इंग्हम की दोस्ती और स्लीमन की मर्जी उन्होंने सब कुछ भुला दी थी?

स्लीमन ने इशारा किया तो नकी खाँ ने भूतपूर्व वज़ीर को सावधान किया कि उनका इस प्रकार मुकदमे की कार्यवाही में टाँग अड़ाना अनुचित है। वह बेचारे विवशता से अपने स्थान पर जा बैठे। शाह को विचारमग्न देख इंग्हम ने शेष कठिनाई पलों में हल करने का फैसला कर लिया।

वह बोले "मैं अपने एक दोस्त पर अपनी जान कुरबान कर देना अपना फर्ज समझता हूँ। इस कुर्बानी की ज़रूरत नहीं थी। पूर्ण मुझे इत्मीनान है। सज़ा दी जाए और मैं उस पर अमल करूँगा।'

शाह ने इंग्हम की ओर मुँह उठाया। आँखों से आँखें न मिल सकीं। नकी खाँ को कुछ इशारा करते हुए वह अपने स्थान से उठे और ऊपर मंज़िल के भीतर चले गए। नकी खाँ ने उनके जाने पर मुकदमे का फैसला सुनाया।

वह गम्भीर शब्दों में बोले "शाह अवध मिस्टर इंग्हम और वज़ीर अली को हुक्म देते हैं कि वह तीन दिन के अन्दर अवध की हुकूमत से दूर चले जायें। उन्हें उस वक्त तक के लिए शहर बदर किया जाता है, जब तक उनकी वापसी के हालात मुनासिब न हों।"

इंग्हम ने झुक कर एक लम्बा साँस लिया।

वज़ीर अली घूमे और स्लीमन की ओर देखने लगे जो आदेश के अन्तिम शब्दों का अर्थ अपनी बुद्धि के अनुसार लगाता इंग्हम की ओर हेय दृष्टि डाल रहा था।

उसका कहना था वापसी के हालात उसी समय पैदा हो सकते हैं मेरे मुहतरिम दोस्त जब तुम और तुम्हारा साथी वज़ीर अली मेरी पनाह में आकर उसकी भीख माँगें।

लेकिन इंग्हम की मुद्रा इसकी आज्ञा देती, स्लीमन को इसका

अठारह

एक दिन मरियम की अवस्था शोचनीय हो गई। उठते ही सुबह उसे तीन बार उल्टी हुई जिसमें ढेर सारा खून निकला। इसके बाद आँखें चढ़ने लगीं हाथ पैरों में अचानक सूजन आ गई और जीभ ऐंठने लगी।

अख्तर ने रेज़ीडेंसी से डाक्टर बुलवाया। वह आया और दवा दे कर चला गया। हालत कुछ समय के लिए ठीक हुई मगर दोपहर को फिर बिगड़ने लगी। तब शाहे अवध को सूचना दी गई।

वह अफ़ज़ल मंज़िल में दरबार कर रहे थे। बहुत सा सरकारी काम बाकी था। रेज़ीडेंसी से बड़ साहेब के पहुँचने की खबर आयी थी। वह आने वाले थे किन्तु शाह सब कुछ छोड़ मरियम की आरामगाह में आये। अब मरियम इमामबाड़े में रह रही थी। तीन दिन हुए खुद अनुरोध कर मरियम इमामबाड़े में आ गई थी।

इससे पहले जब मरियम होश में आई तो बराबर बैठी अख्तर ने उससे बार-बार सवाल किया। उसकी माँ को बुला दे? डाक्टर वास बैंज उसके पिता को? मगर हर बार वह इन्कार करती रही। जीभ जितना बोझ सहती उससे बार-बार वाजिद अली शाह का नाम उच्चारित होता। मरियम ने उन्हीं से भेंट करने बात करने की इच्छा व्यक्त की।

शाह पहुँचे तो मरियम बेहोशी का दौरा पड़ने के कारण बेसुध पड़ी हुई थी। कई कनीज़ें और बशीरुद्दौला ख्वाजासरा सेवा में मौजूद था। शाह अख्तर की एक ओर से गए और धीमे से बोले "इसका वक़्त अब करीब है अख्तर बेगम। दवा नहीं अब इसके लिये दुआ करो।"

अख्तर ने कहा "यह आपसे मिलने को बहुत बेचैन हैं आला हज़रत। कई बार आप का नाम ले चुकी हैं।"

"हम जानते हैं।" शाह ने उत्तर दिया "शायद यह अपनी जायदाद के बारे में कुछ कहना चाहती होंगी।"

अख्तर ने जवाब न दिया। तभी मरियम को होश आया। वह नज़दीक पहुँची। शाह उनके पीछे थे। मरियम ने आँखें खोल लीं। नसीरुद्दौला ने डाक्टर की दी विदेशी दवा देने का प्रयत्न किया।

मरियम ने उसे रोका और धीमी आवाज़ में अख्तर को पुकारा। अख्तर बराबर आ गई। मरियम ने शाह को देखा। चेहरे पर हल्की मुस्कुराहट पैदा हुई मगर दूसरे क्षण गुम गई।

अख्तर ने उसे बताया "आला हज़रत आपके सामने हैं मरियम आपा। आप इनसे मिलने की ख्वाहिशमन्द थीं बहुत।

"हाँ" मरियम ने सिर हिलाया और होठों ही होठों कुछ बुदबुदाई। शाह सुन न सके अतः नज़दीक आकर पूछने लगे "कहिये मुल्ताम मरियम। हम आपके सामने हैं। आप कहें तो हम अपने हाथों आपको दवा पिलायें। खुदा ने चाहा तो आप बहुत जल्द अच्छी हो जायेंगी।

मरियम ने तेज़ी से इन्कार किया। अख्तर सिसकने से पड़ गई। शाह मरियम के मुख के पास अपना मुख ले आए। तब वह धीमे-धीमे कहने लगी "वक्त करीब आ चुका। मौत के फरिश्ते मेरी राह देख रहे हैं। आलमपनाह, आपके सिर्फ दो अलफाज़ों के लिए मेरा दम अटक रहा है।"

"हुक्म दो।" शाह ने गम्भीरता से कहा "हम अपनी अज़ीज़ मरियम के लिए सब कुछ करने पर आमादा हैं।"

"वादा।" मरियम ने कहा "मुझे आलमपनाह का वादा चाहिए।"

अख्तर आगे बढ़ आई। बोली "मरियम आपा आला हज़रत जो कहते हैं, कर दिखाते हैं। आप जो कहना चाहें बखुशी कहें।"

"नहीं नहीं ... मुझे शाहे अवध का वादा चाहिए। बस।" मरियम ने तेजी से सिर हिला कर हल्के स्वर में कहा "मैं आखिरी बार इनसे कुछ माँगना चाहती हूँ।"

"हम आलमशाह वादा को निबाह करते हैं मरियम महल।" शाह ने जल्दी से कहा "कहिये।"

"आह" मरियम ने लम्बा साँस लिया और आँखें मूँद लीं।

शाहे अवध उसे देखते रहे। अख्तर निराशा से मरियम पर आँखें टिकाये खड़ी रही। उसे भय हुआ कहीं वह दोबारा बेहोश न हो गई हो। वजीरहौला ने डाक्टर का पैगाम बताते हुए कह दिया था कहीं बेहोशी मरियम की आखिरी बेहोशी साबित हो सकती है।

लेकिन मरियम होश में थी। उसने शाह को देखा तो उसकी आँखों से दो बूँदें निकल आईं।

धीमे से बोली "मैं जानती थी आलमपनाह आप मेरी बात कभी नहीं टाल सकते। आप बहुत नेक हैं। सुनिए, मेरी तीन आखिरी ख्वाहिशें हैं—आप उन्हें पूरा कर सकें तो ..."

"हम कसम खा चुके हैं मरियम। आप अपनी ख्वाहिशें जाहिर करें।"

"जेवर, नकदी वगैरह मिला कर मेरे पास तेरह लाख रुपया है आलमपनाह।" मरियम हाँफ-हाँफ कहने लगी "यह सब मैंने आप के सदके में सरकारी खजाने से पाया है। आप का रुपया है यह जो आपने मुझे दिया था। मैं इतनी खुदगर्ज नहीं मगर ..."

"आप हुक्म दें। आप क्या चाहती हैं। यह रुपया आपके वालिद को मिले या आपकी माँ को?" शाह ने सवाल किया।

"नहीं।" मरियम बोली "मैं इसे दर्द में जाया करती मेरे आका! आप की दौलत हुआ मैं वापस देना चाहती हूँ वापिस। जो इसका मुस्तहक नहीं उसे दे या जो भी मुनासिब समझें।"

"जरूर। हमें कोई एतराज न होगा।"

"और तीसरी बात" मरियम प्रतीक्षा किये बिना आगे बोली "मेरे मसला आप तय कर चुके हैं ।"

"हम अपनी बात की बाजी भी अपने वादे पर लगा सकते हैं बेगम। आप कहिये ।"

"आलमपनाह वक्त थोड़ा है मेरे पास । मेरी तीसरी मर्जी है कि आप 'आप मुझे मुआफ कर दें' मेरे गुनाह बख्श दें—" मरियम कठिनाई से कह पाई और फिर ज़ोर-ज़ोर से रो दी ।

अख्तर उसके बालों में हाथ फेरने लगी ।

शाह प्रश्न सूचक दृष्टि से अख्तर को देखने लगे ।

बहुत देर बाद मरियम का आवेश शान्त हुआ तो वाजिद अली शाह ने सवाल किया "आप किस की मुआफी मांग रही हैं बेगम, जब तक पता न चले हम अपना यह वादा पूरा नहीं कर सकते ।"

"नहीं" मरियम पूरे वेग से उठने का प्रयत्न करते हुए ज़ोर से चीख कर बोली "खुदा के लिए ऐसा मत कहिये आलमपनाह । कहिये आपने मुझे मुआफ किया ! कहिए मेरे गुनाह बख्श दिए !"

शाह कुछ न बोले । वह विमूढ़ों की तरह देख रहे थे मरियम को जो इस प्रयत्न के बाद निढाल पलंग पर पड़ रही थी । उन्होंने फिर अपनी बात दोहराई । वह मरियम को गुनाहगार नहीं समझते इसलिये बख्शने का सवाल पैदा नहीं होता ।

मरियम ने कहा "बहुत नज़दीक है मौत । कहानी लम्बी है । लेकिन आपकी शय्या पर उसे कहे बिना नहीं मरूंगी । मुझे आपकी मुआफी चाहिये आलमपनाह । सुनिये । —मैंने आपसे कभी मोहब्बत नहीं की । मैं किसी और को चाहती थी — मैंने हमेशा आपको धोखा दिया ।"

अख्तर दो कदम पीछे हट गई । मरियम फूट-फूट कर रोने लगी । हाथ से उपस्थित कनीज़ों को बदीउद्दौला ने हाथ का इशारा कर कमरे

से बाहर कर दिया । शाह पहले अव्यवस्थित हुए किन्तु तत्काल मुस्कुरा कर मरियम को दिलासा देने लगे ।

मरियम आगे कहती रही मैं यहां आई थी एक साजिश की बिना पर । आप को गुमराह करने । शाह "धोखे के जरिये पास आ गए हैं "वह नहीं चाहते आप से मुआफी मिल सके   सुनिए मेरे शाह हुजूर आपको हमेशा गलत राय दी "आप को फरेब में डाल कर बहला वही किया जो आपके नुकसान के हक में हो मैंने अर्दास लगाई सिर्फ इसलिये कि आप को मेरी मोहब्बत का यकीन आए मेरे आक़ा मुझे मुआफ करना ये चारों तरफ किसी के हाथ फैल रहे हैं । "खुदा के लिए मुझे अंग्रेजों की जासूसी करने के लिए बख्श देना ”

मरियम बेहोश हो गई । शाह की आँखें बुरी तरह फैल गईं । अंग्रेजों की जासूस ! मोहब्बत ! फरेब ! वह अख्तर को पागलों की तरह घूरते रहे । वजीरहीमा बेहोश मरियम को बार-बार देख रहा था । उसके चेहरे पर घृणा स्पष्ट उभर आई थी । किन्तु अख्तर का हाथ अब भी मरियम के बालों में फिर रहा था । वह चाहती थी मरियम की यह बेहोशी आखिरी बेहोशी न हो ताकि शाह अमल उसे तस्कीन दे सकें । उसे गुनाह की मुआफी बख्श दें । इतने बड़े गुनाह की इतनी सी मुआफी !

शाह ने थरथराती आवाज़ में पुकार कर विचार मग्न अख्तर को अपनी ओर सम्बोधित किया 'अख्तर !' अख्तर देखने लगी । वह आगे बोले "मरियम महल ने सब कुछ गलत कहा है । इन्हें बचाना होगा । हम इनकी जुदाई नहीं सह सकते ।"

अख्तर ने उत्तर न दिया । वह शाह की आवाज़ के भीतर दबा विचित्र-सा भाव भली प्रकार समझ चुकी थी ।

उसी वक्त बाहर से वजीर ने वजीरहीमा को बुला लिया । वजी[illegible]

से इसी वक्त मिलना चाहते हैं। कोई ज़रूरी काम है।"

"इस वक्त !" शाह ने मरियम की तरफ इशारा किया।

"अर्ज़ किया था मैंने" वज़ीर मादर से कहने लगा "मगर वज़ीर साहिब घबराए और परेशान हैं। फौरी कदमबोसी की इजाज़त चाहते हैं।"

तब शाह ने उन्हें वहीं बुलवा लिया। मरियम के अन्तिम क्षणों में वह किसी भी अवस्था में हटना नहीं चाहते थे।

अली खाँ आये तो सचमुच घबराये थे। माथे पर पसीने की बड़ी बड़ी बूँदें छलक आई थीं और बुरी तरह हाँफ रहे थे।

शाह ने आने का कारण पूछा तो उन्होंने जवाब दिया "हुज़ूर के तशरीफ ले आने के बाद रेज़ीडेंसी से बड़े साहिब गवर्नर जनरल का नया खरीता लेकर आए। उसी को लेकर आया हूँ आलमपनाह। हम बरबाद हो गए ! लुट गए हुज़ूर अनवर !

शाह कुछ न बोले। चेहरे को यथासम्भव गम्भीर बनाये उन्होंने अली खाँ के हाथों से कागज़ ले लिया और उचटती नज़र डाल कर सवाल किया "क्या है यह ?"

"फ़र्दे जुर्म" अली खाँ ने रुआंसी आवाज़ में जवाब दिया "सात सवाल पूछे गये हैं आलमपनाह। और साथ धमकी है, जवाब तसल्ली बख्श न हुए तो कम्पनी सरकार हमारी हुकूमत अपने कब्ज़े में ले लेगी।"

शाह की आँखें स्वयमेव बन्द हो गयीं। वह कुछ कहते उसी समय मरियम की साँसों का तेज़ स्वर आया। उन्होंने कागज़ अली खाँ के हाथों में दिया और मरियम की ओर सम्बोधित हुए।

"अब अब वक्त नहीं है" मरियम हिचक-हिचक कर कहने लगी "मेरे आका कहिए 'आपने मुझे मुआफ किया। मेरे गुनाह—"

शाह ने सिर हिला दिया।

लेकिन शायद मरियम न देख सकी। उसने लम्बी हिचकी ली और कहानी ख़त्म हुई।

'इन्नालिल्लाहे व इन्नाइलैहे राजेऊन' शाह ने आखिरी कलमा पढ़ा और मरियम के चेहरे पर कपड़ा डाल दिया।

अख्तर रो दी।

शाह के चेहरे से पता चलता था कि जैसे वह बहुत जल्द पागल हो जाएँगे।

दरवाजे की ओर बढ़े तो नकी खां ने कागज की ओर इशारा कर कुछ कहना चाहा "आलमपनाह' ’

लेकिन वाजिद अली शाह ने चीख कर नकी खां को निषेध किया।

"मत कहो हमें आलमपनाह नकी खां हम अब अवध के शाह नहीं। हम एक गए बीते इंसान से भी गए गुजरे हैं। सारी दुनियाँ ने हमें धोखा दिया। स्लीमन हमारे दोस्त थे। तुम हमारे वज़ीर थे। मरियम हमारी बेगम थी। हम किस-किस से शिकायत करें? किस किस से गिला करें? मरियम बेगम चाहती थी तुम चाहते हो स्लीमन चाहते हैं। सारा आलम चाहता है, हम बादशाहत से हट जायें। इन्शा अल्लाह यही होगा। हम आज से अपने आप को बादशाह समझने की गलती नहीं करेंगे। नकी खां। सिर्फ दो पयाम हमारे पास इन शिकायतों का कोई जवाब नहीं। हम नाअहल हैं, नाकाबिल नाकारा और ऐयाश हैं। हमसे हुकूमत नहीं हो सकती नहीं हो सकती। हम शाह वाजिद अली नहीं, सिर्फ वाजिद अली होना कुबूल करते हैं। जाओ नकी खां जाओ। खुदा के लिए हमें सोचने का वक्त दो हम किन अलफाज़ में खुदा के शुक्रगुजार हों। सिर्फ बादशाहत नहीं, अब अपनी जिन्दगी के लिये भी शायद हमें फिरंगियों से रहम की भीख मांगनी होगी। क्या पता खुदा भी हमें धोखा दें। हमसे फरेब करे। हमारे खिलाफ साजिश करे!"

नकी खां की आँखों में आंसू आ गये और वह सिर झुकाए वहां से चले गए।

कहानी तो खत्म हो गई। उपसंहार शेष है।

स्लीमन का कार्य समाप्त हुआ और कुछ दिनों बाद सख्त बीमारी के कारण उसे छुट्टी लेनी पड़ी। तब कम्पनी सरकार ने उसे अवध से वापिस बुला लिया।

दौरे की रिपोर्ट को आधार मान शाह के विरुद्ध अभियोग तालिका तैयार की गई जिसमें सात आरोप थे। शाह ने तरह-तरह से गवर्नर जनरल को सन्तुष्ट करने का प्रयत्न किया पर विफल रहे।

तब एक दिन दोपहर जब शाहे अवध गुस्ल कर रहे थे नये रेजी-डेंट मिस्टर आउट्रम ने गवर्नर जनरल का नया आदेश उन तक पहुँचाया जिसमें अवध से बादशाहत खत्म करने का हुक्म था और साथ था एक नया सुलहनामा जिसमें बादशाह को पन्द्रह लाख सालाना की पेन्शन देकर हर तरह मौकूफ किया गया था।

बादशाह ने इस सुलहनामे पर दस्तखत न करने का फैसला किया।

बहुत दिनों यह झगड़ा चला। शाही परिवार के सभी लोगों की अलग-अलग राय थी। कुछ का कहना था इसी को गनीमत मान कर कुबूल कर लेना चाहिए, कुछ इसके विरोधी थे और कहते थे अपनी चीज का सौदा करना किसी अवस्था में उचित नहीं।

अली खां को डराया और धमकाया गया कि वह किसी भी सूरत से इस इकरारनामे पर शाह के दस्तखत करवाये। अंग्रेज तोपों की दोस्ती का फल नजर आया। आउट्रम ने सिर्फ मौत की धमकी से उनके होश ठिकाने कर दिये। एक दिन आखिर अली शाह के सामने कृपाण लेकर खड़े हो गए और कह दिया, इकरारनामे पर दस्तखत कर दो या मुझे

मार डालो। मैं इस जिन्दगी से तंग चुका हूँ। लेकिन बादशाह फिर भी न माने। हारकर उन्होंने बिना चाहे मजबूरी से पूरे कागज पर मोहर कर दी। रेजीडेंट के लिए यही काफी हुआ।

इसके बाद लखनऊ में जुल्म की तलवार चली। लूट खसोट मची। कैसरमंजिल दो घंटों में खाली करवा ली गई। हाथी जिनकी आँखों में आँसू थे कौड़ियों के मोल बेच दिए गए। बेगमात का अपमान हुआ। चारों ओर हा हाकार मच गया। शाह कैसरमंजिल में एक प्रकार से नजरबंद कर दिए गए। महलों का कीमती सामान लूट लिया गया। उनकी फेहरिस्तें बनवाई गई और जिन्होंने सरकारी काम से इनकार किया उनको सजा दी गई। दरबारियों में से शाह के हमदर्दों को छांट-छांट कर पकड़ा गया। उनके सामने एक ही रास्ता था। शाह के विरोधी और कम्पनी के हमदर्द बनो या बेवक्त मौत को गले लगाओ। बेचारे खामोश हो गये।

लखनऊ में कम्पनी सरकार की हुकूमत हो गई। नया कायदा और नया कानून अमल में लाया गया। इन लोगों की गिरफ्तारी के हुक्म जारी किये गये जो खतरनाक नजर आए। इन्हीं में नकी खां वजीर थे। इन्हें कानपुर रवाना कर दिया गया।

आउट्रम की सख्ती से शाही बेगमात का अपमान पराकाष्ठा को पहुँचा। शाह न देख सके। लखनऊ में रहना उनसे सहा न हुआ। और अन्त में खुद कम्पनी सरकार से शाह को कलकत्ते मटियाबुर्ज किले में रहने का आदेश आ पहुँचा। दूसरे शब्दों में वह किला शाह की कैदगाह नियत हो गया।

अन्त में ११ मार्च सन् १८५६ को रेजीडेंट आउट्रम ने लखनऊ छोड़ देने का हुक्म दिया। रात करीब आठ बजे वाजिद अली शाह गुप्त रूप से तैयारियाँ कर निकल गए। मगर लोगों को मालूम हो गया। हजारों आदमी उन्हें विदा देने आये। लखनऊ के नाके तक वह

रोते बिलखते साथ गये । वहाँ बादशाह ने उन्हें समझाना चाहा । उनकी आँखों में आँसू नहीं थे । उपस्थित व्यक्तियों के सम्मुख उन्होंने अपना एक प्रसिद्ध शेर कहा "सुख रहो अहले वतन हम तो सफर करते हैं" और साथ दिया छोटा भाषण । उसमें सिर्फ एक बात थी । दस वर्ष हुकूमत करने के बाद आज विदा की बेला आई है । मेरी तरफ से कुछ पहुँचा हो उसकी क्षमा चाहता हूँ । लोग उनकी कदम बोसी करते । तब उनसे न रहा गया और वह रो दिये । लोगों से कहा वह वापिस जायें ।

उस भीड़ में नसीरुद्दौला गवैया भी मौजूद था । शाह ने उसे देखा तो ठुमरी गाने को कहा

"बाबुल मोरा नैहर छूटो जाय"

गवैये का गला न चला न बस चला । स्वर हिचकियों में डूब गए ।

सुबह वाजिद अली शाह का काफला उन्नाव से आगे गंगा के पार कानपुर की सीमा में प्रविष्ट हुआ तो अँगरेज सम्मुख खड़े मिले । उन्होंने शाह के घोड़े की लगाम पकड़ ली । वाजिद अली घोड़े से उतर पड़े और अँगरेज को गले लगाये देर तक रोते रहे । अँगरेज की आँखों में भी आँसू थे । उन्होंने बार-बार शाह को समझाने का प्रयत्न किया । अन्त में उन्हें अपनी कोठी पर अपना मेहमान बना कर ले गये ।

कानपुर में अमीनुद्दौला मिले । वाजिद अली शाह उनसे आँखें न मिला सके । उन्होंने कहा—हम आपके मुजरिम नहीं, सारे लखनऊ के मुजरिम हैं वजीरे आज़म । हमारी शराफत और नालायक ओछेपन ने उन सबको गुलामकर दिया । खुदा हमें कभी मुआफ नहीं कर सकेगा ।"

वाजिद अली शाह कानपुर में रुके तो कई भी वहाँ पहुँचा । उसने लखनऊ का समाचार देते हुए कह दिया—आप के साथ-साथ लखनऊ की खुशहाली गुम हो गई और बेबसी । लोगों के घरों में फाके होने लगे । अब गोमती के किनारे शाम को वह रौनक नहीं रहती । जो

लोग शामे-अवध पर अपनी जानें निछावर करते थे वहीं अब आँसू बहा कर शामे-अवध को कोसते हैं। सचमुच अवध की शाम हो चुकी अब वहाँ अंधेरा छा गया है। इस कार्रवाई से वहाँ के लोगों के दिल दहल गये हैं।

शाह ने इसका कोई उत्तर न देकर बर्ड की सहानुभूति पर सच्चे हृदय से धन्यवाद दिया।



लोग शामे-अवध पर अपनी जानें निछावर करते थे वही अब आँसू बहा-कर शामे-अवध को कोसते हैं। सचमुच अवध की शाम हो चुकी अब वहाँ अँधेरा छा गया है। इस [illegible] से वहाँ के लोगों के दिल टूट गये हैं।

शाह ने इसका कोई उत्तर न देकर नर्स की सहानुभूति पर उन्हें हृदय से धन्यवाद दिया।

